प्राचीन जैनपद शतक

प्रकाशक :—दुलीचंद परवार
जिनवाणी प्रचारक कार्यालय,
१६१।१, हरीसन रोड, कलकत्ता।

पांच आना

बृहद्विमल पुराण ।

यह ग्रन्थ अप्राप्य था इसको संस्कृतमें प्राप्त कर उसकी सरल भाषा-टीका श्रीमान माननीय प० गजाधरलालजी, न्यायतीर्थसे लिखाकर छपाया गया है। द्वितीय वृत्तिका मूल्य ६) मात्र।

शांतिनाथ पुराण ।

यह ग्रन्थ भी संस्कृतमें था, इससे हिन्दी भाषा वाले स्वाध्यायसे वंचित ही रह जाते थे, अतएव इसका सरल भाषामें प० लालारामजी शास्त्री द्वारा अनुवाद कराया गया है। शास्त्राकार छपाया है। मूल्य ६) रुपया।

आदिपुराण ।

इस बड़े भारी ग्रन्थको सार रूपमें सरल भाषा बचनिकामें पं० बुद्धि-लाल श्रावकसे लिखवाया गया है। सिर्फ श्रृङ्गार भाग छोड़कर बाकी प्रत्येक विषयको ग्रन्थमें लानेका प्रयत्न किया है, यही कारण है कि थोड़े ही समयमें ग्रन्थकी द्वितियावृत्ति करानी पड़ी। शास्त्राकार, मूल्य ६) रुपया।

मल्लिनाथ पुराण ।

प० गजाधरलालजी शास्त्रीने संस्कृतसे हिन्दीमें इसकी भाषाटीका की है। ग्रन्थको हिन्दी जाननेवालोंके लिये ही छपाया है। जैन समाजने इसको थोड़े ही समयमें मगाकर खतम कर दिया है। यह द्वितीय वृत्ति है। न्योछावर ४) रुपया मात्र।

पुन्याश्रव कथा कोष ।

इस ग्रन्थका मिलना १५ वर्षसे बन्द हो गया था उसीको सचित्र ४८ चित्र देकर छपाया है, इसकी कथायें कितनी सुन्दर और शिक्षाप्रद हैं, यह हमारे धर्मात्मा पाठक स्वाध्याय करके ही अनुभव प्राप्त कर सक्ते हैं। भाषा वर्तमान ढगकी सरल और मुहावरेदार है। फिर भी इस ४०० पृष्ठके ग्रन्थकी न्योछावर २॥) मात्र है।

बुधजन विलास



१ प्रभाती।

प्रात भयो सब भविजन मिलिकै, जिनवर पूजन आवो ॥ प्रात० ॥ टेक ॥ अशुभ मिटावो पुन्य बढ़ावो, नैननि नींद गमावो ॥ प्रात० ॥ १ ॥ तनको धोय धारि उजरे पट, सुभग जलादिक ल्यावो। वीतरागछबि हरखि निरखिकै, आगमोक्त गुन गावो ॥ प्रा० ॥२॥ शास्तर सुनो भनो जिनवानी, तप संजम उपजावो। धरि सरधान देव गुरु आगम, सात तत्त्व रुचि लावो ॥ प्रात० ॥३॥ दुःखित जनकी दया ल्याय उर, दान चारविधि द्यावो। राग दोष तजि भजि जिन पदको बुधजन शिवपद पावो ॥ प्रा० ॥ ४ ॥

२ प्रभाती

किंकर अरज करत जिन साहिब, मेरी ओर निहारो ॥ किंकर ॥ टेक ॥ पतितउधारक दीनदयानिधि, सुन्यौ तोहि उपगारो। मेरे औगुनपै मति

जावो, अपनो सुजस विचारो ॥ किं० ॥१॥ अब-ज्ञानी दीसत हैं तिनमैं,-पक्षपात उरझारो । नाहीं मिलत महाव्रतधारी, कैसैं ह्वै निरवारो ॥ किं०॥२॥ छवी रावरी नैननि निरखी, आगम सुन्यौ तिहारो । जात नहीं भ्रम क्यों अब मेरो या दूषनको टारो ॥ किं० ॥ ३ ॥ कोटि बातकी बात कहत हूं, यो ही मतलब म्हारो । जौलौं भव तौलौं बुधजनको, दीज्ये सरन सहारो ॥ किं० ॥ ४ ॥

३ तिताला ।

पतितउधारक पतित रटत है, सुनिये अरज हमारी हो ॥ पतित० ॥ टेक ॥ तुमसो देव न आन जगतमें, जासौं करिये पुकारी हो ॥प० ॥१॥ साथ अविद्या लगि अनादिकी, रागदोष विस्तारी हो । याहीतैं सन्ति करमनिकी, जनममरनदुखकारी हो ॥ प० ॥ २ ॥ मिलै जगत जन जो भरमावै, कहै हेत संसारी हो । तुम विनकारन शिवमगदायक, निजसुभावदातारी हो ॥ प० ॥३॥ तुम जाने विन काल अनन्ता, गति गतिके भवधारी हो । अब सनमुख बुधजन जांचत है, भवदधि पार उतारी हो ॥ पतित० ॥ ४ ॥

४ तिताला ।

और ठौर क्यों हेरत प्यारा, तेरे हि घटमें जाननहारा ॥ और० ॥टेक॥ चलन हलन थल वास एकता, जात्यान्तरतैं न्यारा न्यारा ॥ और० ॥१॥ मोहउदय रागी द्वैषी है, क्रोधादिकका सरजनहारा। भ्रमत फिरत चारौं गति भीतर, जनम मरन भोगत दुख भारा ॥ और० ॥ २ ॥ गुरु उपदेश लखै पद आपा, तबहिं विभाव करै परिहारा। है एकाकी बुधजन निश्चल, पावै शिवपुर सुखद अपारा ॥औ०॥

५ तिताला ।

काल अचानक ही ले जायगा, गाफिल होकर रहना क्या रे ॥ काल० ॥ टेक ॥ छिन हूं तोकूं नाहिं बचावैं, तौ सुभटनका रखना क्यारे ।काल०। ॥१॥ रंच सबाद करिनके काजै, नरकमैं दुख भरना क्या रे। कुलजन पथिकनिके हितकाजैं, जगत जालमें परना क्या रे। काल० ॥२॥ इन्द्रादिक कोउ नाहिं बचैया, और लोकका शरना क्या रे। निश्चय हुआ जगतमें मरना, कष्ट परै तब डरना क्या रे ॥ काल० ॥ ३ ॥ अपना ध्यान करत खिर जावैं, तौ करमनिका हरना क्या रे। अब

हित करि आरत तजि बुधजन, जन्म जन्ममें जरना क्या रे ॥ काल० ॥ ४ ॥

६ भजन ।

म्हे तो छापर वारी, वारी वीतरागीजी, शांत छवी थांकी आनंदकारी जी ॥ म्हे० ॥ टेक ॥ इंद्र नरिंद्र फरिंद मिलि सेवत, मुनि सेवत रिधिधारी जी ॥ म्हे० ॥ १ ॥ लखि अविकारी परउपकारी, लोकालोकनिहारी जी ॥म्हे०॥२॥ सब त्यागी जो कृपातिहारी, बुधजन ले बलिहारी जी ॥म्हे०॥३॥

७ भजन ।

या नित चितवो उठिकै भोर, मैं हूं कौन कहांतैं आयो, कौन हमारी ठौर ॥ या नित०॥टेक॥ दीसत कौन कौन यह चितवत, कौन करत है शोर । ईश्वर कौन कौन है सेवक, कौन करे झकझोर ॥ या नित० ॥ १ ॥ उपजत कौन मरैको भाई, कौन डरे लखि घोर । गया नाहीं आवत कछु नाहीं, परिपूरन सब ओर ॥ या नित० ॥ २ ॥ और और मैं और रूप हूं, परनतिकरि लइ और । स्वांग धरैं डोलौ याहीतैं, तेरी बुधजन भोर ॥ या० ॥

८ भजन ।

श्रीजिनपूजनको हम आये, पूजत ही दुख-

दुंद मिटाये ॥ श्रीजिन० ॥ टेक ॥ विकलप गयो प्रगट भयो धीरज अदभुत सुख समता बरसाये। आधि व्याधि अब दीखत नाहीं, धरम कलपतरु आँगन थाये ॥ श्रीजिन० ॥ १ ॥ इतमैं इन्द्र चक्रवति इतमैं, इतमैं फनिंद खरे सिर नाये। मुनिजनवृंद करैं थुति हरषत, धनि हम जनमैं पद परसाये ॥ श्रीजिन० ॥ २ ॥ परमौदारिकमैं परमातम, ज्ञानमई हमको दरसाये। ऐसे ही हममें हम जानैं, बुधजन गुन मुख जात न गाये ॥श्री० ३॥

६ राग—ललित एकताली।

बधाई राजै हो आज राजै, बधाई राजै, नाभिरायके द्वार। इन्द्र सची सुर सब मिलि आये, सजि ल्याये गजराजै ॥ बधाई० ॥ १ ॥ जन्मसदनतैं सची ऋषभ ले, सौंपिदये सुरराजै ॥ बधाई० ॥ २ ॥ आठ सहस सिर कलस जु ढारे, पुनि सिंगार समाजै। ल्याय धर्यौ मरुदेवी करमैं हरि नाच्यौ सुख साजै ॥ बधाई० ॥ ३ ॥ लच्छन व्यंजन सहित सुभग तन, कंचनदुति रवि लाजै। या छवि बुधजनके उर निशि दिन, तीनज्ञानजुत राजै ॥ बधाई० ॥ ४ ॥

१० राग—ललित तितालो।

हो जिनवानी जू, तुम मोकौं तारोगी ॥ हो० ॥ टेक ॥ आदि अनन्त अविरुद्ध वचनतैं, संशय भ्रम निरवारोगी ॥ हो० ॥ १ ॥ ज्यों प्रतिपालत गाय बत्सकौं, त्यों ही मुझकौं पारोगी। सनमुख काल बाघ जब आवै, तब तत्काल उबारोगी ॥ हो० ॥ २ ॥ बुधजन दास वीनवै माता, या विनती उर धारोगी। उलझि रह्यौ हूं मोहजालमें, ताकौं तुम सुरझावोगी हो० ॥ ३ ॥

११ राग—विलावल कनड़ी।

मनकैं, हरष अपार—चित्तकैं हरष अपार वानी सुनि ॥ टेक ॥ ज्यौं तिरषातुर अम्रत पीवत, चातक अंबुद धार ॥ वानी सुनि० ॥ १ ॥ मिथ्या तिमिर गयो ततखिन हो, संशयभरम निवार। तत्त्वारथ अपने उर दरस्यौ, जानि लियो निज सार ॥ वानी सुनि० ॥ २ ॥ इन्द नरिंद फरिंद पदीधर, दीसत रंक लगार। ऐसा आनंद बुधजन के उर, उपज्यौ अपरंपार ॥ वानी सुनि० ॥ ३ ॥

१२ राग—अलहिया

चन्दजिनेसुर नाथ हमारा; महासेनसुत लागत

पियारा ॥चन्द०॥ टेक ॥ सुरपति नरपति फनिपति सेवत, मानि महा उत्तम उपगारा । मुनिजन ध्यान धरत उरमाहीं, चिदानंद पदवीका धारा । चन्द० । ॥ १ ॥ चरन शरन बुधजन जे आये, तिन पाया अपना पद सारा । मंगलकारी भवदुखहारी, स्वामी अद्भुत उपमावारा ॥ चन्द० ॥

१३ राग—अलहिया, विलावल—ताल धीमा तेताला ।

करम देत दुख जोर, हो साइँयां ॥ करम० ॥ टेक ॥ कैइ परावृत पूरन कीनै, संग न छाँड़त मोर, हो साइँयां ॥ करम० ॥ १ ॥ इनके वशतैं मोहि बचावो, महिमा सुनि अति तोर हो साइँयां ॥ करम० ॥ २ ॥ बुधजनकी विनती तुमहीसौं, तुमसा प्रभु नहिं और हो साइँयां ॥ करम० ॥३॥

१४ राग—सारंग ।

तन देखा अथिर घिनावना ॥ तन० ॥ टेक ॥ बाहर चाम चमक दिखलावै, माहीं मैल अपावना । बालक ज्वान बुढ़ापा मरना, रोगशोक उपजावना ॥ तन० ॥ १ ॥ अलख अमूरति नित्य निरंजन, एकरूप निज जानना । वरन फरस रस गंध न जाकै, पुन्य पाप विन मानना ॥ तन० ॥ २ ॥

करि विवेक उर धारि परीक्षा, भेद—विज्ञान विचारना। बुधजन तनतैं ममत मेटना, चिदानंद पद धारना ॥ तन० ॥ ३ ॥

१५ राग—सारंग लूहरी।

तेरो करि लै काज बखत फिरना ॥ तेरो० ॥ टेक ॥ नरभव तेरे वश चालत है, फिर परभव परवश परना। तेरो० ॥ १ ॥ आन अचानक कंठ दवैंगे, तब तोकौं नाही शरना। यातैं विलायन न ल्याय बावरे, अब ही कर जो करना तेरो० ॥२॥ सब जीवनकी दया धार उर दान सुपात्रनि कर धरना जिनवर पूजि शास्त्र सुनि नित प्रति, बुधजन संवर आचरना ॥ तेरो० ॥ ३ ॥

१६ राग—लूहरी मीणांकी चालमें।

अहो! देखो केवलज्ञानी, ज्ञानी छवि भली या विराजै हो--भली या विराजै हो ॥ अहो ॥ टेक ॥ सुर नर मुनि याकी सेव करत हैं, करम हरनके काजै हो ॥ अहो ॥ १ ॥ परिग्रहरहित प्रातिहारजुत, जगनायकता छाजै हो। दोष विना गुन सकल सुधारस, दिविधुनि मुखतैं गाजै हो ॥ अहो देखो ॥ २ ॥ चितमैं चितवत ही छिनमाही,

जन्म जन्म अघ भाजै हो। बुधजन याकौं कबहुं न बिसरो, अपने हितके काजै हो ॥ अहो० ॥३॥

१७ राग—सारंग लूहरि।

श्रीजी तारनहारा थे तो, मोनैं प्यारा लागो आज ॥ श्री ॥ टेक ॥ बार सभा बिच गन्धकुटीमें आज रहे महाराज श्री० ॥ १ ॥ अनन्त कालका धरम मिटत है, सुनतहिं आप अवाज ॥ श्री० ॥ २ ॥ बुधजन दास रावरो विनवै, थांसूं सुधरै काज ॥ श्री० ॥ ३ ॥

१८—राग—पूरबी एकताला।

तनके मवासी हो, अयाना ॥ तनके० ॥ टेक चहुंगति फिरत अनन्तकालतैं, अपने सदनकी सुधि भौराना ॥ तनके० ॥ १ ॥ तन जड़ फरस गन्ध रसरूपी, तू तौ दरसनज्ञान निधाना, तनसौं ममत मिथ्यात मेटिकै, बुधजन अपने शिवपुर जाना ॥ तनके० ॥ ~ ॥

१९ राग—पूरवी एकतालो।

नैन शान्त छबि देखि छके दोऊ ॥ नैन टेक ॥ अब अद्‌भुत दुति नहिं विसराऊं, बुरा भला जग कोटि कहो कोऊ ॥ नैन० ॥ १ ॥ बड़

भागन यह अवसर पाया, सुनियो जी, अब अरज मेरी कहूं। भवभवमें तुमरे चरननको, बुधजन दास सदा हि बन्यो रहूं ॥ नैन० ॥ २ ॥

२० राग—पूरवी जल्द तितालो।

हरना जी जिनराज, मोरी पीर ॥ हरना ॥ टेक ॥ आन देव सेये जगवासी, सर्यो नहीं मोर काज ॥ हरना ॥ १ ॥ जगमें वसत अनेक सहज ही, प्रनवत विविध समाज। तिनपै इष्ट अनिष्ट कलपना, मैटोगे महाराज ॥ हरना ॥ २ ॥ पुद्गल राचि अपनपौ भूल्यौ, विरथा करत इलाज। अबहिं जथाविधि वेगि बतावो, बुधजनके सिर-ताज ॥ हरना ॥ ३ ॥

२१ राग—पूरवी।

भजन विन यौं ही जनम गमायो ॥ भजन ॥ टेक ॥ पानी पैल्यां पाल न बांधी, फिर पीछैं पछतायो ॥ भज ॥ १ ॥ रामा-मोह भये दिन खोवत आशापाश बँधायो। जप तप संजम दान न दीनौं, मानुष जनम हरायो ॥ भजन० ॥ २ ॥ देह सीस जब कापन लागी; दसन चला वल थायो। लागी आगि भुजावन कारन, चाहत आप

खुजायो ॥ भजन ॥ ३ ॥ काल अनादि भ्रमायो भ्रमतां, कबहुं न थिर चित ल्यायो। हरी विषयसुख भरम भुलानो, मृग तिसना-वश धायो ॥भजन॥४॥

२२ राग--पूरवी।

तारो क्यौं न ; तारो जी म्हें तो थांके शरना आया ॥ टेक ॥ विधना मोकौं चहुँगति फेरत बड़े भाग तुम दरशन पाया ॥ तारो० ॥ १ ॥ मिथ्यामत जल मोह मकरजुत, भरम भौंरमें गोता खाया। तुम मुख वचन अलंवन पाया, अब बुधजन उरमें हरषाया ॥ तारो० ॥ २ ॥

२३

भवदधि-तारक नवका, जगमाहीं जिनवान ॥ भव० ॥ टेक ॥ नय प्रमान पतवारी जाके, खेवट आतम ध्यान ॥ भव ॥१॥ मन वच तन सुध जन भवि धारत, ते पहुंचत शिवथान। परत अथाह मिथ्यात भँवर ते, जे नहिं गहत अजान ॥ भव ॥२॥ बिन अक्षर जिनमुखतैं निकसी परी वरनजुत कान। हितदायक बुधजनकों गनधर, गूंथे ग्रन्थ महान ॥ भव० ॥ ३ ॥

२४ राग--धनासरी धीमो तितालो।

प्रभु, थांसूं अरज हमारी हो ॥ प्रभु ॥ टेक मेरे हितू न कोऊ जगतमैं, तुम ही हो हितकारी हो ॥ प्रभु० ॥१॥ संग लग्यौ मोहि नेक न छांड़ै, देत महा दुख भारी। भववनमाहिं नचावत मोकौं तुम जानत हौ सारी ॥ प्रभु० ॥२॥ थांकी महिमा अगम अगोचर, कहि न सकै बुधि म्हारी। हाथ जोरकै पाय परत हूं, आवागमन निवारी हो ॥ प्रभु० ॥ ३ ॥

२५

याद प्यारी हो, म्हांनैं थांकी याद प्यारी ॥ हो म्हांनै ॥ टेक ॥ मात तात अपने स्वारथके, तुम हितु परउपगारी ॥ हो म्हानैं ॥ १ ॥ नगन छबी सुन्दरता जापै, कोटि काम दुति वारी। जन्म जन्म अवलोकौं निशिदिन, वुधजन जा वलिहारी॥ हो म्हांनैं ॥ २ ॥

२६ राग—गौड़ी ताल।

अरे हाँ रे तैं तो सुधरी बहुत बिगारी ॥ अरे ॥ टेक॥ ये गति मुक्ति महलकी पौरी, पाय रहत क्यौं पिछारी ॥ अरे ॥ १ ॥ परकौं जानि मानि

अपनो पद, तजि ममता दुखकारी । श्रावक कुल भवदधि तट आयो, बूड़त क्यौंरे अनारी ॥ अरे ॥ २ ॥ अबहूं चेत गयो कछु नाहीं, राखि आपनी चारी । शक्तिसमान त्याग तप करिये, तब बुधजन सिरदारी ॥ अरे ॥ ३ ॥

२७ राग—काफी कनड़ी ।

मैं देखा आतमरामा ॥ मैं ॥ टेक ॥ रूप फरस रस गन्धतैं न्यारा, दरस-ज्ञान-गुनधामा । नित्य निरंजन जाकै नाहीं, क्रोध लोभ मद कामा । मैं ॥ १ ॥ भूख प्यास सुख दुख नहिं जाकैं, नाहीं वन पुर गामा । नहिं साहिब नहिं चाकर भाई, नहीं तात नहिं मामा ॥ मैं ॥२॥ भूलि अनादिथकी जग भटकत, लै पुद्गलका जामा । बुधजन संगति जिनगुरुकीतैं, मैं पाया मुझ ठामा ॥ मैं ॥३॥

२८ राग—काफी कनड़ी—ताल पसतो ।

अब अघ करत लजाय रे भाई ॥ अब ॥ टेक श्रावक घर उत्तम कुल आयो, भेंटे श्रीजिनराय ॥ अब ॥१॥ धन वनिता आभूषन परिगह, त्याग करौ दुखदाय । जो अपना तू तजि न सकै पर, सैयां नरक न जाय ॥ अब ॥ २ ॥ विषयकाज क्यौं ज-

नम गुमावै, नरभव कब मिलि जाय। हस्ती चढ़ि जो ईंधन ढोवे, बुधजन कौन बसाय ॥ अब ॥३॥

२९ राग—काफी कनड़ी।

तोकौं सुख नहिं होगा लोभीड़ा ! क्यौं भूल्या रे परभावनमैं ॥ तोकौं० ॥ टेक ॥ किसी भाँति कहुंका धन आवै, डोलत है इन दावनमैं॥ तोकौं ॥ १ ॥ ब्याह करूँ सुत जस जग गावै, लग्यौ रहै या भावनमैं ॥ तोकौं ॥२॥ दरब परिनमत अपनी गौंतैं, तू क्यो रहित उपायनमैं ॥ तोकौं ॥३॥ सुख तो है सन्तोष करनमैं, नाहीं चाह बढ़ावनमैं ॥ तोकौं ॥४॥ कै सुख है बुधजनकी संगति, कै सुख शिवपद पावनमैं ॥ तोकौं ॥ ५ ॥

३० राग—कनड़ी।

निरखे नाभिकुमारजी, मेरे नैन सफल भये। निर ॥ टेक ॥ नये नये वर मंगल आये, पाई निज रिधि सार ॥ निरखे ॥ १ ॥ रूप निहारन कारन हरिने, कीनी आंख हजार। वैरागी मुनिवर हू लखिकै, ल्यावत हरष अपार ॥ निरखे ॥ २ ॥ भरम गयो तत्वारथ पायो, आवत ही दरबार। बुधजन

रचन शरन गहि जांचत, नहिं जाऊं परद्वार ॥ निरखे ॥३॥

३१ राग—बिलावल धीमो तेतालो ।

नरभव पाय फेरि दुख भरना, ऐसा काज न करना हो ॥ नरभव ॥ टेक ॥ नाहक ममत ठानि पुद्गलसौं, करमजाल क्यौं परना हो ॥ नरभव ॥१॥ यह तो जड़ तू ज्ञान अरूपी, तिल तुष ज्यौं गुरु वरना हो । राग दोष तजि भजि समताकौ, कर्म साथके हरना हो ॥ नरभव ॥२॥ यो भव पाय विषय-सुख सेना, गज चढ़ि ईंधन ढोना हो । बुधजन समुझि सेय जिनवर पद, ज्यौं भवसागर तरना हो ॥ नरभव ॥३॥

३२ राग—बिलावल इकतालो ।

सारद ! तुम परसादतैं, आनन्द उर आया ॥ सारद० ॥ टेक ॥ ज्यौं तिरसातुर जीवकौं, अम्रत जल पाया ॥ सारद ॥१॥ नय परमान निखेपतै तत्वार्थ वताया । भाजी भूलि मिथ्यातकी, निज निधि दरसाया ॥ सारद ॥२॥ विधिना मोहि अनादितैं, चहुंगति भरमाया । ता हरिवैकी विधि सबै मुझमाहिं बताया ॥ सारद ॥३॥ गुन अनन्त मति

अलपतैं, मोपै जात न गाया। प्रचुर कृपा लखि रावरी, बुधजन हरषाया॥ सारद॥ ४॥

३३

गुरु दयाल तेरा दुख लखिकैं, सुन लै जो फुरमावै है॥ गुरु०॥ तोमैं तेरा जतन बतावै, लोभ कछू नहिं चावै है॥ गुरु॥१॥ पर सुभावको मोखा चाहै, अपना उसा बनावै है। सो तो कबहूं हुवा न होसी, नाहक रोग लगावै है॥ गुरु॥ खोटी खरी जस करी कमाई, तैसी तेरै आवै है। चिन्ता आगि उठाय हियामैं, नाहक जान जलावै है॥ गुरु॥३॥ पर अपनावै सो दुख पावै, बुधजन ऐसे गावै है। परको त्यागि आप थिर तिष्ठै, सो अविचल सुख पावै है॥ गु० ४॥

३४ राग—असावरी।

अरज ह्मारी मानो जी, याही ह्मारी मानो, भवदधि हो तारना ह्मारा जी॥अरज०॥टेक॥ पतितउधारक पतित पुकारै, अपनो विरद पिछानो॥ अरज॥१॥ मोह मगर मछ दुख दावानल, जनम मरन जल जानो। गति गति भ्रमन भँवरमैं डूबत, हाथ पकरि ऊंचो आनो॥अरज॥२॥ जगमैं आन

देव बहु हेरे, मेरा दुख नहिं भानो। बुधजनकी करुना ल्यो साहिब, दीजै अविचल थानो ॥अरज॥

(३५) राग—असावरी जोगिया ताल धीमो तेतालो।

तू कांई चालै लाग्यो रे लोभीड़ा, आयो छै बुढ़ापो ॥तू॥टेक॥ धंधामाही अंधा ह्वै कै, क्यों खोवै छै आपो रे ॥तू॥१॥ हिमतघटी थारी सुमति मिटी छै, भाजि गयो तरुणापो। जम ले जासो सब रह जासी, संग जासी पुन पापो रे ॥तू॥२॥ जग स्वारथकौ कोइ न तेरो, यह निह्चै उर थापो। बुधजन ममत मिटावौ मनतैं, करि मुख श्रीजिनजापो रे॥

(३६) राग—असावरी जोगिया ताल धीमो तेतालो।

थे ही मोने तारो जी, प्रभुजी कोई न हमारो ॥थेही॥टेक॥ हूं एकाकि अनादि कालतैं, दुख पावत हू भारो जी ॥ थे ही ॥१॥ बिन मतलबके तुम ही स्वामी, मतलबकौ संसारो। जग जन मिलि मोहि जगमैं राखैं, तू ही काढ़नहारो ॥थे ही॥२॥ बुधजन के अपराध मिटावो, शरन गह्यो छै थारो। भवदधिमाहीं डूबत मोकौं, कर गहि आप निकारो ॥३॥

(३७) राग—असावरी मांझ, ताल धीमो एकतालो।

प्रभू जी अरज ह्मारी उर धरो ॥प्रभू जी टेक॥

प्रभू जी नरक निगोद्यांमैं रुल्यो, पायौ दुःख अ-पार ॥प्रभूजी॥१॥ प्रभू जी, हूं पशुगतिमैं ऊपज्यौ, पीठ सह्यौ अतिभार ॥प्रभू जी॥२॥ प्रभू जी, विषय मगनमैं सुर भयो, जात न जान्यौ काल ॥प्रभूजी ॥ ३ ॥ प्रभूजी नरभव कुल श्रावक लह्यौ, आयो तुम दरवार ॥ प्रभू जी ४ ॥ प्रभू जी, भव भरमन बुधजनोंजी, मेटौ करि उपगार ॥ प्रभू जी ॥ ५ ॥

३८ राग-आसावरी ।

जगतमें होनहार सो होवै, सुर नृप नहिं मिटावै ॥ जगत० ॥ टेक ॥ आदिनाथसेकौं भोजनमैं अन्तराय उपजावै। पारसप्रभुकौं ध्यान लीन लखि कमठ मेघ वरसावै ॥ जगत० ॥१॥ लखमणसे संग भ्राता जाकै, सीता राम गमावै ॥ जगत० ॥२॥ जैसो कमावै तैसो ही पावै, यो बुधजन समझावै। आप आपकौं आप कमावौ, क्यौं परद्रव्य कमावै॥ जगत ॥३॥

भागचन्द पद संग्रह।



३९

उग्रसेन गृह ब्याहन आये, समदविजयके लाला ये ॥ उग्रसेन० ॥ टेक ॥ अशरन पशु आक्रन्दन लखिके, करुना भाव उपाये। जगत विभूति भूति सम तजिके, अधिक विराग बढ़ाये ॥ उग्रसेन०॥१॥ मुद्रा नगन धरी तन्द्रा विन, आतम ब्रह्मरुचि लाये। उर्जयन्तिगिरि शिखरोपरि शुचि थानकमें थाये ॥ उग्रसेन ॥२॥ पंचमुष्ठि चढ़ि, कच लुंच मुश्च रज, सिद्धनको शिर नाये। धवल ध्यान पावद पावक ज्वालातैं, करम कलंक जलाये ॥ उग्र ॥३॥ वस्तु समस्त हस्तरेखावत, जुगपत ही दरसाये। निरवशेष विध्वस्त कर्मकर, शिवपुरकाज सिधाये ॥ उग्रसेन ॥४॥ अव्याबाध अगाध बोधमयतत्रानन्द सुहाये। जगभूषन दूषनवित स्वामी, भागचन्द गुन गाये ॥ उग्रसेन ॥५॥

४०

सांची तो गंगा यह वीतरागवानी, अविच्छन्न

धारा निज धर्मकी कहानी ॥ सांची० ॥ टेक ॥जामें अति ही विमल अगाध ज्ञान पानी, जहां नहीं संभयादि पंककी निशानो ॥ सांची ॥१॥ सप्तभंग जहँ तरंग उछलत सुखदानी, संतचित्त मरावृन्द रमैं नित्य ज्ञानी ॥ सांचो ॥२॥ जाके अवगाहनतैं शुद्ध होय प्रानी, भागचन्द्र निहचौ घटमाहिं या प्रमानी। सांची० ॥३॥

४१ राग—प्रभाती।

प्रभु तुम सूरत दृगसों निरखै हरखै मोरो जीयरा ॥ प्रभु तुम० ॥ टेक ॥ भुजत कषायानल पुनि उपजै, ज्ञानसुधारस सीयरा ॥ प्रभु तुम ॥१॥ वीतरागता प्रगट होत है, शिवथल दीसै नीयरा ॥ प्रभु तुम ॥२॥ भागचन्द तुम चरन कमलमें, वसत सन्तजन हीयरा ॥ प्रभु ॥३॥

४२ राग—प्रभाती।

अरे हो जियरा धर्ममें चित्त लगाय रे ॥ अरे हो० ॥टेक॥ विषय विषसम जान भौंदू वृथा क्यों तू लुभाय रे। अरे हो॥१॥ संग भार विषाद तोकों, करत क्या नहिं भाय रे। रोग-उरग-निवास वामी कहा नहिं यह काय रे ॥ अरे हो ॥२॥ काल हरिकी

गर्जना क्या, तोहि सुनि न पराय रे, आपदा भर नित्य तोकौं, कहा नहीं दुःख दायरे ॥ अरे हो ॥३॥ यदि तोहि कहा नहीं दुख, नरकके असहाय रे। नदी वेतरनी जहां जिय परे अति बिललाय रे॥ अरे हौ ॥४॥ धनादिक घनपटल सम, छिनकमांहिं बिलाय रे। भागचन्द सुजान इमि जदु कुल-तिलक गुन गाय रे ॥५॥

४३ राग—विलावल।

सुमर सदा मन आतमराम, सुमर सदा मन आतमराम ॥ टेक ॥ स्वजन कुटुम्बी जन तू पोखै, तिनको होय सदैव गुलाम। सो तो हैं स्वारथके साथी, अन्तकाल नहिं आवत काम ॥ सुमर सदा ॥१॥ जिमि मरीचिकामें मृग भटके, परत सो जब ग्रीषम अति घाम। तैसे तू भवमाहीं भटके धरत न इक छिनहू विसराम ॥ सुमर ॥ २ ॥ करत न ग्लानी अब भोगनमें, धरत न वीतराग परिनाम। फिर किमि नरकमाहिं दुख सहसी, जहां सुख लेशमें आठौं जाम ॥३॥ तातैं आकुलता अब तजिके, थिर ह्वै वैठो अपने धाम। भागचन्द वसि ज्ञान नगरमें, तजि रागादिक ठग सब ग्राम ॥सु०।

४४ राग—सारङ्ग।

श्रीमुनि राजत समता संग। कायोत्सर्ग समायत अंग ॥ टेक ॥ करतैं नहिं कछु कारज तातैं आलम्बित भुज कीन अभंग। गमन काज कछु हूं नहिं तातैं, गति तजि छाके निज रसरंग ॥ श्रीमुनि० ॥१॥ लोचनतैं लखिवौ कछु नाहीं, तातैं नासा दृग अचलंग। सुनिवे जोग रह्यो कछु नाहीं, तातैं प्रास इकंत सुचंग ॥ श्रीमुनि० ॥२॥ तहँ मध्यान्हमाहिं निज ऊपर, आयो उग्र प्रताप पतंग। कैधौं ज्ञान पवनबल प्रज्वलित, ध्यानानलसौं उछलि फुलिंग ॥ श्रीमुनि० ॥३॥ चित्त निराकुल अतुल उठत जहं, परमानन्द पियूषतरंग। भागचन्द ऐसे श्रीगुरुपद, बंदत मिलत स्वपद उत्तङ्ग ॥श्री०॥

४५ राग—गौरी।

आतम अनुभव आवै जब निज, आतम अनुभव आवै। और कछु न सुहावै, जब निज० ॥ टेक ॥ रस नीरस हो जात ततच्छिन, अच्छ विषय नहीं भावै ॥ आतम० ॥१॥ गोष्ठी कथा कुतूहल बिघटै, पुद्गलप्रीति नसावै ॥ आतम० ॥२॥ राग दोष जुग चपल पक्षजुत मन पक्षी मर जावै

आतम० ॥३॥ ज्ञानानन्द सुधारस उमगै, घट अंतर न समावै ॥ आतम ॥ भागचन्द ऐसे अनुभवके हाथ जोरि सिर नावै ॥ आतम० ॥४॥

४६ राग—ईमन ।

महिमा है अगम जिनागमकी ॥ टेक ॥ जाहि सुनत जड़ भिन्न पिछानी, हम चिन्मूरति आतम-की ॥ महिमा० ॥ १ ॥ रागादिक दुखकारन जानैं, त्याग बुद्धि दीनी भ्रमकी । ज्ञान ज्योति जागी घट अन्तर, रुचि वाढ़ी पुनि शमदमकी ॥ महिमा ॥२॥ कर्म बन्धकी भई निरजरा, कारण परंपराक्र-मकी । भागचन्द शिवलालच लागो, पहुंच नहीं है जहां जमकी ॥ महिमा० ॥३॥

४७

ऐसे जैनी मुनिमहाराज, सदा उर मो बसौ ॥ टेक ॥ तिन समस्त परद्रव्यनिमाहीं, अहंबुद्धि तजि दीनी ॥ गुन अनन्त ज्ञानादिक मम पुनि, स्वानुभूति लखि लीनी ॥ ऐसे० ॥१॥ जे निजबु-द्धिपूर्व रागादिक, सकल विभाव निवारैं । पुनि अ-बुद्धिपूर्वकनाशनको, अपने शक्ति सम्हारैं ॥ ऐसे० ॥ २ ॥ कर्म शुभाशुभ बन्ध उदयमें हर्ष बिषाद न

राखैं। सम्यगदर्शनज्ञान चरनतप, भावसुधारस चाखैं ॥ ऐसे ॥३॥ परकी इच्छा तजि निजबल सजि, पूरब कर्म खिरावैं। सकल कर्मतैं भिन्न अवस्था सुखमग लखि चित चावैं ॥ ऐसे ॥४॥ उदासीन शुद्धोपयोगरत सबके दृष्टा ज्ञाता। बाहिजरूप नगन समताकर, भागचन्द सुखदाता ॥ऐसे॥

४८ राग—जंगला।

तुम गुनमनिनिधि हो अरहंत ॥ टेक ॥ पार न पावत तुमरो गनपति, चार ज्ञान धरि संत ॥ तुम गुन० ॥१॥ ज्ञानकोष सब दोष रहित तुम, अलख अमूर्ति अचिंत ॥ ॥ तुम गुन ॥ २ ॥ हरिगन अरचत तुम पदवारिज, परमेष्ठी भगवन्त ॥ तुम गुन ॥ ३ ॥ भागचन्दके घटमन्दिरमें, बसहु सदा जयवंत ॥ तुम गुन ॥४॥

४९ राग—जंगला।

शान्ति बरन मुनिराई वर लखि। उत्तर गुनगन सहित (मूल गुन सुभग) बरात सुहाई ॥टेक॥ तप रथपै आरूढ़ अनूपम, धरम सुमंगलदाई ॥ शांति बरन ॥१॥ शिवरमनीको पानि ग्रहण करि, ज्ञानानन्द उपाई ॥ शांति बरन ॥ भागचन्द ऐसे

वनराको, हाथ जोर सिरनाई ॥ ३ ॥

५० राग—जंगला ।

म्हाकैं जिनमूरति हृदय बसो बसी ॥ टेक ॥ यद्यपि करुना रसमय तद्यपि, मोह शत्रु हनि असी असी । म्हा० ॥१॥ भामण्डल ताको अति निर्मल, निःकलंक जिमि ससी ससी ॥ म्हा ॥ २ ॥ लखत होत अति शीतल मति जिमि, सुधा जलधिमें धसी धसी ॥ म्हा ॥३॥ भागचन्द जिस ध्यानमंत्रसों ममता नागिन नसी नसी ॥ म्हा० ॥४॥

५१ राग—खमाच ।

ज्ञानी मुनि छै ऐसे स्वामी गुनरास ॥टेक॥ जिनके शैलनगर मन्दिर पुनि, गिरिकन्दर सुखवास॥ ज्ञानी० ॥ १ ॥ निःकलंक परजंक शिला पुनि, दीप मृगांक उजास ॥ ज्ञान ॥२॥ मृग किंकर करुना वनिता पुनि, शील सलिल तप ग्रास ॥ ज्ञानी ॥३॥ भागचन्द ते हैं गुरु हमरे तिनहीके हम दास ।ज्ञा०

५२ राग खमाच ।

श्रीगुरु है उपगारी ऐसे वीतराग गुनधारी वे ॥ टेक ॥ स्वानुभूति रमनी संग क्रीड़ैं, ज्ञानसंपदा भारी वे ॥ श्रीगुरु ॥१॥ ध्यान पिंजरामें जिन रोको

चित खग चंचलचारी वे ॥श्री० ॥२॥ तिनके चरन-सरोरुह ध्यावै, भागचन्द अघटारी वे ॥ ३ ॥

५३ राग खमाच।

सारौ दिन निरफल खोयवौ करै छै। नर भव लहिकर प्रानी विनज्ञान, सारौ दिन नि० ॥ टेक ॥ परसंपति लखि निज चितमाहीं, विरथा मूरख रोयवौ करै छै ॥ सारौ ॥१॥ कामानलतैं जरत सदा ही, सुन्दर कोयबौ करै छै ॥ सारौ ॥२॥ जिनमत तीर्थस्नान न ठानै, जलसौं पुद्गल धोयबा करै छै ॥ सारौ ॥३॥ भागचन्द इमि धर्म विना शठ मोह-नींदमें सोयबौ करै छै ॥ सारौ ॥४॥

५४ राग सोरठ।

स्वामी मोहि आपनो जानि तारौ, या विनती अब चित धारौ ॥टेक॥ जगत उजागर करुणा सागर, नागर नाम तिहारौ ॥ स्वामी मोहि० ॥१॥ भव अटवीमें भटकत भटकत, अब मैं अति ही हारौ ॥ स्वामी मोहि ॥२॥ भागचन्द स्वच्छन्द ज्ञानमय सुख अनंत विस्तारौ ॥ स्वामी मोहि० ॥३॥

५५ राग—सोरठ।

आवै न भोगनमें तोहि गिलान ॥ टेक ॥ ती-

रथनाथ भोग तजि दीनें, तिनतैं मन भय आन। तू तिनतैं कहुं डरपत नाहीं, दीसत अति बलवान॥ आवै न० ॥१॥ इन्द्रियतृप्ति काज तू भोगै, विषय महा अघखान। सो जैसे घृतधारा डारै पावकज्वाल बुझान॥ आवै न० ॥२॥ जे सुख तौ तीछन दुखदाई, ज्यों मधुलिप्त-कृपान। तातैं भागचंद इनको तजि, आत्मस्वरूप पिछान॥ आवै न० ॥३॥

५६ राग—मल्हार।

मान न कीजिये हो परवीन॥ टेक॥ जाय पलाय चंचला कमला, तिष्ठै दो दिन तीन। धनजोवन छनभंगुर सब ही, होत सुछिन छिन छीन॥ मान न० ॥१॥ भरत नरेन्द्र खण्ड-षट नायक, तेहु भये मद हीन। तेरी बात कहा है भाई, तू तो सहज ही दीन॥ मान न० ॥२॥ भागचन्द मार्दव रसनागर, माहिं होहु लवलीन। तातैं जगत जालमें फिर कहुं, जनम न होय-नवीन॥ मान न० ॥३॥

५७ राग मल्हार।

अरे हो अज्ञानी तूने कठिन मनुषभव पायो टेक॥ लोचनरहित मनुषके करमें, ज्यों बटेर खग आयो॥ अरे हो० ॥१॥ सो तू खोवत विषयन-

माहीं, धरम नहीं चित लायो ॥ अरे हो० ॥२॥ भागचन्द उपदेश मान अब, जो श्रीगुरु फरमायो ॥

५८ राग मलहार।

वरसत ज्ञान सुनीर हो श्रीजिनमुखघनसों ॥ टेक ॥ शीतल होत सुबुद्धिमेदिनी मिटत भवा तपपीर ॥ वरसत० ॥१॥ स्याद्वाद नय दामिनि दमकै, होत निनाद गंभीर ॥ वरसत ॥२॥ करुनानदी वहै चहुं दिशितैं, भरी सो दोई तीर ॥ वरस० ॥३॥ भागचन्द अनुभव मन्दिरको, तजत न संत सुधीर ॥ वरसत ॥४॥

५९ राग मलहार।

मेघघटासम श्रीजिनवानी ॥ टेक ॥ स्यात्पद चपला चमकत जामें, वरसत ज्ञान सुपानी मेघ० ॥१॥ धरमसस्य जातैं वहु वाढ़ै, शिव आनन्दफलदानी ॥ मेघघटा ॥२॥ मोहन धूल दवी सब यातै, क्रोधानल सुबुझानी ॥ मेघघटा ॥३॥ भागचन्द बुधजन केकीकुल, लखि हरखै चितज्ञानी ॥ मेघ० ॥

६० राग धनाश्री।

प्रभू थांको लखि मम चित हरषायो ॥ टेक सुन्दर चिंतारतन अमोलक, रंकपुरुष जिमि पायो

प्रभू० ॥१॥ निर्मलरूप भयो अब मेरो, भक्तिनदी-
जल न्हायो। प्रभू ॥२॥ भागचन्द अब मम करत-
लमें अविचल शिवथल आयो ॥ प्रभू ॥३॥

६१ राग मलहार।

प्रभू म्हांकी सुधि, करुना करि लीजे ॥ टेक
मेरे इक अबलम्बन तुम ही, अब न बिलम्ब करीजे
प्रभू० ॥१॥ अन्य कुदेव तजे सब मैंने तिनतैं निज-
गुन छीजे ॥ प्रभू०॥२॥ भागचन्द तुम शरन लियो
है, अब निश्चलपद दीजे ॥ प्रभू० ॥ ३ ॥

६२ राग कलिगड़ा।

ऐसे साधू सुगुरु कब मिलिहैं ॥टेक॥ आप तरें
अरु परको तारैं, निष्प्रेही निर्मल हैं ॥ ऐसे० ॥१॥
तिलतुषमात्र संग नहिं जाकै, ज्ञान-ध्यान-गुण-बल
हैं ॥ ऐसे साधू ॥२॥ शान्तदिगम्बर मुद्रा जिनकी,
कन्दिरतुल्य अचल हैं ॥ ऐसे ॥३॥ भागचन्द तिन-
को नित चाहै, ज्यों कमलनिको अल है ॥ ऐसे०

६३ राग कहरवा कलिगड़ा।

केवल जोति सुजागी जी, जब श्रीजिनवरके
॥ टेक ॥ लोकालोक विलोकत जैसे, हस्तामल वड़-
भागी जी ॥ के० ॥१॥ हार-चूड़ामनिशिखा सहज

ही, नग्न भूमितें लागीजी ॥ केवल० ॥२॥ समव-सरन रचना सुर कीन्हीं, देखत भ्रम जन त्यागी जी ॥ केवल० ॥३॥ भक्तिसहित अरचा नव कीन्हीं-परम धरम अनुरागी जी ॥ केवल० ॥४॥ दिव्य-ध्वनि सुनि सभा दुवादश, आनँदरसमें पागी जी ॥ केवल ॥५॥ भागचन्द प्रभु भक्ति चहत है, और कछु नहिं मांगी जी ॥६॥

६४ राग ठुमरी।

जीवनिके परिनामनिकी यह, अति विचित्रता देखहु ज्ञानी ॥ टेक ॥ नित्य निगोदमाहितैं कढि कर, नर परजाय पाय सुखदानी। समकित लहि अन्तर्मुहूर्तमैं, केवल पाय वरै शिवरानी ॥१॥ मुनि एकादश गुणथानक चढ़ि, गिरत तहांतैं चित भ्रम ठानी। भ्रमत अर्धपुद्गल प्रावर्तन, किंचित् ऊन काल परमानी ॥२॥ निज परिनामनिकी सँभालमें, तातैं गाफिल मत ह्वै प्रानी। बंध मोक्ष परिनामनि ही सों, कहत सदा श्रीजिनवरवानी ॥३॥ सकल उपाधिनिमित भावनिसों, भिन्न सुनिज परनतिको छानी। ताहि जानि रुचि ठानि होहु थिर, भागचन्द यह सीख सयानी ॥४॥

६५

जीव ! तू भ्रमत सदीव अकेला । संग साथी कोई नहिं तेरा ॥ टेक ॥ अपना सुखदुख आपहि भुगतै, होत कुटुम्ब न भेला। स्वार्थ भयैं सब बिछरि जात हैं, विघट जात ज्यों मेला ॥१॥ रक्षक कोइ न पूरन ह्वै जब, आयु अन्तकी बेला। फूटत पारि बँधत नहीं जैसें, दुद्धर-जलको ठेला ॥२॥ तन धन जीवन विनशि जात ज्यों, इन्द्रजालका खेला। भागचन्द इमि लखकरि भाई हो सतगुरुका चेला॥

६६ ख्याल।

बिन काम ध्यानमुद्राभिराम, तुम हो जगनायकजी ॥ टेक ॥ यद्यपि, वीतराग मय तद्यपि, हो शिवदायकजी ॥ विन काम० ॥१॥ रागी देव आप ही दुखिया, सो क्या लायकजी ॥ विन काम ॥२॥ दुर्जय मोह शत्रु हनवे को, तुम वच शायक जी ॥ विनकाम० ॥३॥ तुम भवमोचन ज्ञान सुलोचन, केवल क्षायक जी ॥ विन काम० ॥४॥ भागचन्द भागनतैं प्रापति, तुम सब ज्ञायकजी ॥ विन०॥५॥

६७

परनति सब जीवनकी, तीन भाँति वरनी एक

पुण्य एक पाप, एक रागहरनी ॥ पर०॥ टेक ॥ तामें शुभ अशुभ बन्ध, दोय करैं कर्मबन्ध, वीतराग परिनति ही, भवसमुद्रतरनी ॥१॥ जावत शुद्धोपयोग, पावत नाहीं मनोग, तावत ही सरन जोग, कही पुण्य करनी ॥२। त्याग शुभ क्रिया कलाप, करो मत कदाच पाप, शुभमें न मगन होय, शुद्धता विसरनी ॥३॥ ऊंच ऊंच दशा धारि, चित प्रमादको विडारि, ऊंचली दशातैं मति, गिरो अधो अधो धरनी । ४॥ भागचन्द या प्रकार, जीव लहै सुख अपार, याके निरधारि स्याद्वादकी उचरनी ॥

६८

आकुलरहित होय इमि निशदिन, कीजे तत्त्व विचारा हो । को मैं कहा रूप है मेरा, पर है कौन प्रकारा हो ॥ टेक ॥१॥ को भव-कारण बन्ध कहा को, आस्रवरोकनहारा हो । खिपत कर्म बन्धन काहेसों, थानक कौन हमारा हो ॥२॥ इमि अभ्यास किये पावत है, परमानन्द अपारा हो । भागचन्द यह सार जान करि, कीजे वारंवारा हो ॥ आकुलरहित होय० ॥ ३ ॥



६९ राग—सोरठ ।

अज्ञानी पाप धतूरा न बोय ॥टेक॥ फल चा-
खनकी वार भरै दृग, मर है मूरख रोय ॥ अज्ञा०
॥१॥ किंचित् विषयनिके सुख कारण दुर्लभ देह न
खोय । ऐसा अवसर फिर न मिलैगा, इस नींदड़ी
न सोय ॥ अज्ञानी ॥२॥ इस विरियांमैं धर्म-कल्प-
तरु, सींचत स्याने लोय । तू विष बोवन लागत
तो सम, और अभागा कोय ॥ अज्ञानी ॥३॥ जे
जगमें दुखदायक बेरस, इसहीके फल सोय । यों
मन भूधर जानिकै भाई, फिर क्यों भोंदू होय ॥अ०

७० राग सोरठ ।

सुन ज्ञानी प्राणी, श्रीगुरु सीख सयानी ॥टेक॥
नरभव पाय विषय मति सेवो, ये दुरगति अग-
वानी ॥ सुन ॥१॥ यह भव कुल यह तेरी महिमा
फिर समझो जिनवानी । इस अवसरमैं यह चप-
लाई, कौन समझ उर आनी ॥ सुन ॥२॥ चंदन
काठ-कनकके भाजन, भरि गंगाका पानी । तिल

खलि रांधत मन्दमती जो, तुझ क्या रीस बिरानी सुन ॥३॥ भूधर जो कथनी सो करनी, यह बुधि है सुखदानी। ज्यों मशालची आप न देखै, सो मति करै कहानी ॥ सुनि ॥४॥

७१ राग—सोरठ।

सुनि ठगनी माया, तैं सब जग ठग खाया ॥ टेक ॥ टुक विश्वास किया जिन तेरा, सो मूरख पिछताया ॥ सुनि ॥१॥ आपा तनक दिखाय बीज ज्यों, मूढमती ललचाया। करि मद अन्ध धर्म हर लीनौं, अन्त नरक पहुंचाया ॥ सुनि ॥२॥ केते कंथ किये तैं कुलटा, तो भी मन न अघाया। किसहीसौं नहिं प्रीति निबाही, वह तजि और लुभाया ॥ सुनि ॥३॥ भूधर छलत फिरै यह सबकों, भौंदू करि जग पाया। जो इस ठगनीकों ठग बैठे, मैं तिसको सिर नाया ॥ सुनि ॥४॥

७२ रा—ख्याल।

जगमें जीवन थोरा, रे अज्ञानी जागि ॥ टेक॥ जनम ताड़ तरुतैं पड़ै, फल संसारी जीव। मौत महीमैं आय हैं, और न ठौर सदीव ॥ जगमें० ॥१॥ गिर—सिर दिवला जोइया, चहुं दिशि बाजै

पौन । बलन अचंभा मानिया, बुझन अचंभा कौन जगमैं ॥२॥ जो छिन जाय सो आयमैं, निशि दिन ढूकै काक । बांधि सकै तो है भला, पानी पहिली पाल ॥ जगमें ॥३॥ मनुष देह दुर्लभ्य है, मति चूकै यह दाव । भूधर राजुलकंतकी, शरण सिताबी आव ॥ जगमें ।४॥

७३ राग—ख्याल ।

गरव नहिं कीजै रे, ए नर निपट गँवार ॥टेक॥ झूठी काया झूठो माया, छाया ज्यों लखि लीजै रे ॥ गरव० ॥१॥ कै छिन सांझ सुहागरु जोबन, कै दिन जगमें जीजै रे ॥ गरव ॥ २ ॥ वेगा चेत विलम्ब तजो नर, बन्ध बढ़ै थिति छीजै रे ॥ गरव ॥३॥ भूधर पलपल हो है भारो, ज्यों ज्यों कमरी भींजै रे ॥ गरव ॥४॥

७४ राग—ख्याल ।

देख्यो री ! कहीं नेमिकुमार ॥ टेक ॥ नैंननि प्यारो नाथ हमारो, प्रानजीवन प्राननआधार ॥ देख्यो० ॥१॥ पीव वियोग विथा बहु पीरी, पीरी भई हलदी उनहार । होउं हरी तबही जब भेटौं, स्यामवरन सुन्दर भरतार ॥ देख्यो ॥२॥ विरह न-

दी असराल बहै उर, बूढ़त हौं वामैं निरधार। भू-
धर प्रभु पिय खेवटिया विन, समरथ कौन उतार-
नहार ॥ देख्यौं० ॥३॥

७५ राग—पंचम।

जिनराज ना विसार, मति जन्म वादि हारो
॥टेक॥ नर भौ आसान नाहिं, देखो सोच समझ
वारो ॥ जिनराज० ॥१॥ सुत मात तात तरुनो,
इनसौं ममत निवारो। सबही सगे गरजके दुखसीर
नहिं निहारो ॥ जिनराज० ॥२॥ जे खायं लाभ स-
ब मिलि, दुर्गतमैं तुम सिधारो। नटका कुटुम्ब
जैसा, यह खेल यों विचारो॥ जिनराज ॥३॥ नाह-
क पराये काजैं, आपा नरकमैं पारो। भूधर न भू-
ल जगमैं, जाहिर दगा है यारो ॥ जिनराज ॥४॥

७६ राग—नट।

जिनराज चरन मन मति बिरै ॥ टेक ॥ को
जानैं किहिंवार कालकी, धार अचानक आनि परै।
जिनराज०॥१॥ देखत दुख भजि जाहिं दशौं दिश
पूजत पातकपुंज गिरै। इस संसार क्षारसागरसौं,
और न कोई पार करै॥ जिनराज० ॥२॥ इक चित
ध्यावत वांछित पावत, आवत मंगल विघन टरै।

मोहनि धूलि परी मांथे चिर, सिर नावत ततकाल झरै ॥ जिनराज ॥३॥ तवलौं भजन संवार सयानैं, जबलौं कफ नहिं कंठ अरै । अगनि प्रवेश भयो घर भूधर, खोदत कूप न काज सरै ॥ जिनराज ॥

७७ राग—सारङ्ग ।

भवि देखि छबी भगवानकी ॥ टेक ॥ सुन्दर सहज सोम आनन्दमय, दाता परम कल्यानकी ॥ भवि० ॥१॥ नासादृष्टि मुदित मुखवारिज, सीमा सब उपमानकी । अंग अडोल अचल आसन दिढ़, वही दशा निज ध्यानकी ॥२॥ इस जोगासन जोगरीनिसौं, सिद्ध भई शिवथानकी । ऐसें प्रकट दिखावै मारग, मुद्रा धात पखानकी ॥ भवि ॥३॥ जिस देखें देखन अभिलाषा, रहत न रंचक आनकी तृपत होत भूधर जो अब ये, अंजुलि अम्रतपानकी ॥ भवि ॥४॥

७८ राग मलार ।

अब मेरैं समकित सावन आयो ॥टेक॥ बीति कुरीति मिथ्यामति ग्रीषम, पावस सहज सुभायो ॥ अब मेरैं० ॥१॥ अनुभव दामिनि दमकन लागी, सुरति घटा घन छायो । बोलै विमल विवेक पपीहा, सुमति सुहागिनि भायो ॥ अब मेरैं० ॥२॥ गुरु-

धुनि गरज सुनत सुख उपजै, मोर सुमन विहसायो। साधक भाव अँकुर उठे बहु, जित तित हरष सवायो॥ अब मेरैं॥ ३॥ भूल धूल कहिं मूल न सूझत, समरस जल झर लायो। भूधर को निकसै अब बाहिर, निज निरचूधर पायो॥ अब मेरैं॥४॥

७९ राग—सोरठ।

भगवन्तभजन क्यों भूला रे॥ टेक॥ यह संसार रैनका सुपना, तन धन वारि-बबूला रे॥ भगवन्त०॥१॥ इस जीवनका कौन भरोसा, पावक में तृणपूला रे!। काल कुदार लियें सिर ठाड़ा, क्या समझै मन फूला रे!॥ भगवन्त॥२॥ स्वारथ साधैं पांच पांव तू, परमारथकों लूला रे!। कहु कैसें सुख पैहै प्राणी, काम करै दुखमूला रे॥ भगवन्त॥३॥ मोह पिशाच छल्यो मति मारै, निज कर कन्ध बसूला रे। भज श्रीराजमतीवर भूधर, दो दुरमति सिर धूला रे॥४॥

८० राग—विहागरो।

नेमि बिना न रहै मेरो जियरा॥ टेक॥ हेर री हेली तपत उर कैसो, लावत क्यों निज हाथ न नियरा॥ नेमि बिना०॥१॥ करि करि दूर कपूर क-

मल दल, लगत करूर कलाधर सियरा ॥ नेमि० ॥२॥ भूधरके प्रभु नेमि पिया विन, शीतल होय न राजुल हियरा ॥ नेमि विना० ॥३॥

८१ राग—ख्याल ।

मन मूरख पन्थी, उस मारग मति जाय रे ॥ ॥ टेक ॥ कामिनि तन कांतार जहां है, कुच परवत दुखदाय रे ॥ मन मूरख० ॥१॥ काम किरात बसै तिह थानक, सरवस लेन छिनाय रे । खाय खता कीचकसे बैठे, अरु रावनसे राय रे ॥ मन मूरख० ॥२॥ और अनेक लुटे इस पैंड़े, वरनैं कौन बढ़ाय रे । वरजत हीं वरज्यौ रह भाई, जानि दगा मति खाय रे ॥ मन मूरख ॥३॥ सुगुरु दयाल दया करि भूधर, सीख कहत समझाय रे । आगैं जो भावै करि सोई, दोनो बात जनाय रे ॥ मन मूरख ॥४॥

८२ राग—विलावल ।

रटि रसना मेरी ऋषभ जिनन्द, सुर नर जच्छ चकोरन चन्द ॥ टेक ॥ नामी नाभि नृपतिके बाल मरुदेवीके कुँवर कृपाल ॥ रटि० ॥१॥ पूज्य प्रजापति पुरुष पुरान, केवल किरन धरैं जगभान ॥रटि० ॥ २ ॥ नरकनिवारन विरद विख्यात, तारन तरन

जगतके तात ॥ रटि० ॥३॥ भूधर भजन किये निरबाह, श्रीपद-पद्म भँवर हो जाह ॥४॥ रटि०

८३ राग - गौरी ।

मेरी जीभ आठौं जाम, जपि जपि ऋषभजिनिंदजीका नाम ॥टेक॥ नगर अजुध्या उत्तम ठाम, जनमैं नाभि नृपतिके धाम ॥ मेरी० ॥१॥ सहस अठोत्तर अति अभिराम, लसत सुलच्छन लाजत काम ॥ मेरी० ॥२॥ करि थुति गान थके हरि राम, गनि न सके गणधर गुन ग्राम ॥ मेरी० ॥३॥ भूधर सार भजन परिनाम, अर सब खेल खेलके खांम(?) मेरी० ॥४॥

८४ राग--धमाल ।

देखे देखे जगतके देव, राग रिससौं भरे ॥ टेक ॥ काहूके संग कामिनि कोऊ, आयुधवान खरे देखे० ॥१॥ अपने औगुन आपही हो, प्रकट करै उघरे । तऊ अबूझ न बूझहिं देखो, जन मृग भोर परे ॥ देखे० ॥२॥ आप भिखारी ह्वै किनही हो, काके दलिद हरे । चढ़ि पाथरकी नावपै कोई, सुनिये नाहिं तरे ॥ देखे० ॥३॥ गुन अनन्त जा देवमें औ, ठारह दोष टरे । भूधर ता प्रति भावसौं दोऊ, कर निज सीस धरे ॥४॥

८५

देखो गरवगहेली री हेली ! जादोंपतिकी नारी ॥ टेक ॥ कहां नेमि नायक निज मुखसौं, टहल कहै बड़भागो । तहां गुमान कियो मतिहीनी, सुनि उर दौसो लागी ॥ देखो० ॥१॥ जाकी चरण धूलिको तरसे, इन्द्रादिक अनुरागी ता प्रभुको तन--वसन न पीड़ै, हा ! हा ! परम अभागो ॥ देखो० ॥२॥ कोटि जनम अघभंजन जाके, नामतनी वलि जइये । श्रीहरिवंशतिलक तिस सेवा, भाग्य विना क्यों पइये ॥ देखो० ॥३ । धनि वह देश धन्य वह धरनी, जगमें तीरथ सोई । भूधरके प्रभु नेमि नवल निज, चरन धरै जहां दोई ॥ देखो० ॥४॥

८६ राग सोरठ ।

चित ! चेतनकी यह विरियां रे ॥ टेक ॥ उत्तम जनम सुनत तरुनापौ, सुजत वेल फल फरियां रे । चित० ॥१॥ लहि सत संगतिसौं सव समझी, करनी खोटी खरियां रे । सुहित संभाशिथिलता तजिकै, जाहैं वेली झरियां रे ॥ चित० ॥२॥ दल वल चहल महल रूपेका, अर कंचनकी कलियां रे । ऐसी विभव वढ़ीकै वढ़ि है, तेरी गरज क्या सरियां

रे ॥ चित० ॥३॥ खोय न वीर विषय खल सांटैं, ये क्रोरनकी घरियां रे। तोरी न तनक तगाहित भूधर. मुकताफलकी लरियां रे ॥ चित० ॥४॥

८७ राग—वंगला।

जगमें श्रद्धानी जीव जीवनमुकत हैंगे ॥ टेक॥ देव गुरू सांचे मानैं सांचो धर्म हिये आनैं, ग्रन्थ ते ही सांचे जानैं, जे जिन उकत हैंगे ॥ जगमैं ॥१॥ जीवनकी दया पालैं, झूठ तजि चोरी टालै, परनारी भालै न जिनके लुकत हैंगे ॥ जगमैं ॥२॥ जीयमैं सन्तोष धारैं हियैं समता विचारैं, आगैंको न बंध पारैं, पाछैंसौं चुकत हैंगे ॥ जगमें ॥३॥ बाहिज क्रिया अराधैं, अन्तर सरूप साधैं, भूधर ते मुक्त लाधैं, कहूं न रुकत हैंगे ॥४॥

८८ राग—वंगला।

आया रे बुढ़ापो मानी सुधि बुधि बिसरानी ॥ टेक ॥ श्रवनकी शक्ति घटी, चाल चालै अटपटी, देह लटी भूख घटी, लोचन झरत पानी ॥ आया रे० ॥ १ ॥ दांतनकी पंक्ति टूटी, हाड़नकी सन्धि छूटी, कायाकी नगरि लूटी जात नहिं पहिचानी ॥ आया रे० ॥२॥ बालोंने वरन फेरा, रोगने शरीर

घेरा, पुत्रहूं न आवे नेरा, औरोंकी कहा कहानी ॥
आया रे० ॥३॥ भूधर समुझि अब, स्वहित करैगो
कब, यह गति ह्वै है जब, तब पिछतै है प्रानी ॥
आया रे० ॥४॥

८९ राग—सोरठ।

अन्तर उज्जल करना रे भाई ! ॥ टेक॥ कपट
कृपान तजै नहिं तबलौ, करनी काक न सरना है
॥ अन्तर० ॥१॥ जप तप तीरथ जज्ञ व्रतादिक आ-
गमअर्थ उचरना रे। विषय कषाय कीच नहिं धो-
यो, यों ही पचि पचि मरना रे ॥ अन्तर० ॥ २ ॥
बाहिर भेष क्रिया उर शुचिसों कीये पार उतरना
रे। नाही है सब लोक रंजना, ऐसे वेदन वरना रे
अन्तर० ॥३॥ कामादिक मनसौं मन मैला भजन
ये क्या तिरना रे। भूधर नीलबसनपर कैसैं,
सर रंग उछरना रे ॥ अन्तर० ॥४॥

९० राग—काफी।

मन हंस ! हमारी लै शिक्षा हितकारी ॥टेक॥
श्रीभगवानचरन पिंजरे वसि, तजि विषयनिकी
यारी ॥ मन० ॥१॥ कुमति कागलीसौं मति राचो,
ना वह जात तिहारी। कीजै प्रीत सुमति हंसीसौं,

बुध हंसनकी प्यारी ॥ मन० ॥२॥ काहेको सेवत भव झीलर, दुखजलपूरित खारी । निज बल पंख पसारि उड़ो किन, हो शिव सरवरचारी ॥ मन० ॥३॥ गुरुके वचन विमल मोती चुन, क्यों निज वान विसारी । ह्वै है सुखी सीख सुधि राखें, भूधर भूलैं ख्वारी ॥ मन० ॥

९१ राग--धनासरी।

सो मत सांचो है मन मेरे ॥ टेक ॥ जो अनादि सर्वज्ञप्ररूपित, रागादिक बिन जे रे ॥ सो मत० ॥१॥ पुरुष प्रमान प्रमान वचन तिस, कलपित जान अने रे । राग दोष दूषित तिन वायक, सांचे हैं हित तेरे ॥ सो मत० ॥२॥ देव अदोष धर्म हिंसा बिन लोभ बिना गुरु वे रे । आदि अन्त अविरोधी आगम, चार रतन जहँ ये रे ॥ सो मत ॥३॥ जगत भर्यो पाखंड परख बिन, खाइ खता बहुतेरे भूधर करि निज सुबुधि कसौटी धर्म कनक कसि ले रे ॥ सो मत० ॥४॥

९२

मेरे चारौं शरन सहाई ॥ टेक ॥ जैसें जलधि परत वायसकौं बोहिथ एक उपाई ॥ मेरे० ॥१॥ प-

थम शरन अरहन्त चरनकी, सुरनर पूजन पाई दु-
तिय शरन श्रीसिद्धनकेरी, लोक-तिलक-पुर राई
॥मेरे० ॥२॥ तीजे सरन सर्व साधुनिकी, नगन दि-
गम्बर-काई। चौथे धर्म अहिंसा रूपी, सुरग मु-
कति सुखदाई ॥ मेरे० ॥३॥ दुरगति परत सुजन
परिजनपै, जीव न राख्यो जाई। भूधर सत्य भरो-
सो इनको, ये ही लेहिं बचाई ॥४॥

६३ राग—ख्याल।

अब नित नेमि नाम भजौ ॥ टेक ॥ सच्चा
साहिब यह निज जानौ, और अदेव तजौ ॥अब०
॥१॥ चंचल चित्त चरन थिर राखो, विषयनतैं
वरजौ ॥ अब ॥२॥ आननतैं गुन गाय निरन्तर,
पानन पाँय जजौ ॥ अब ॥३॥ भूधर जो भवसा-
गर तिरना, भक्ति जहाज सजौ ॥४॥

६४ राग—ख्याल बरषा।

"देखनेको आई लाल मैं तो तेरे देखनेको आई" यह चाल।

म्हें तो थाकी आज महिमा जानी ॥ टेक अब
लों नहिं उर आनी ॥ म्हें तो० ॥१॥ काहेको भव
वनमें भ्रमते, क्यों होते दुखदानी ॥ म्हेंतो ॥२॥
नामप्रताप तिरे अंजनसे, कीचकसे अभिमानी ॥

म्हैं तो ॥३॥ ऐसी साख बहुत सुनियत है, जैनपु-
राण बखानी ॥ म्हैं तो ॥ ४ ॥ भूधरको सेवा वर
दीजे, मैं जांचक तुम दानी ॥

९५ राग—विहाग।

जगत जन जूवा हारि चले ॥ टेक ॥ काम
कुटिल संग बाजी माँड़ी, उन करि कपट छले।
जगत० ॥१॥ चार कषायमयी ज. चौपरि, पांसे
जोग रले। इत सरवस उत कामिनी कौंड़ो, इह
विधि झटक चले। जगत ॥२॥ कूर खिलार विचार
न कीन्हों, है है ख्वार भले। विना विवेक मनोरथ
काके, भूधर सफल फले ॥३॥

९६ राग—विहाग।

तहां लै चल री! जहां जादौपति प्यारो
॥ टेक ॥ नेमि निशाकर विन यह चन्दा, तन मन
दहत सकल री। तहां० ॥१॥ किरन किधौं ना-
विक-शर-तति कै, ज्यों पावककी झलरी। तारे हैं
कि अंगारे सजनी, रजनी राकसदल री। तहां ॥२॥
इह विधि राजुल राजकुमारी, विरह तपी वेकल
री। भूधर धन्न शियासुत बादर, वरसायो सम-
जल री। तहां० ॥३॥

९७

ऐसो श्रावक कुल तुम पाय, वृथा क्यों खोवत हो ॥ टेक ॥ कठिन कठिनकर नरभव पाई, तुम लेखी आसान । धर्म विसारि विषयमें राचौ, मानी न गुरुकी आन ॥ वृथा० ॥१॥ चक्री एक मतंगज पायो, तापर ईंधन ढोयो । बिना विवेक बिना मतिहीका, पाय सुधा पग धोयो ॥ वृथा० ॥२॥ काहू शठ चिन्तामणि पायो, मरम न जानो ताय । वायस देखि उदधिमें फैंक्यो, फिर पीछे पछताय ॥ वृथा ॥३॥ सात विसन आठों मद त्यागो, करुना चित्त विचारो । तीन रतन हिरदैमें धारो, आवागमन निवारो ॥ वृथा० ॥४॥ भूधरदास कहत भविजनसों, चेतन अब तो सम्हारो । प्रभुको नाम तरन तारन जपि, कर्मफन्द निरवारो ॥वृथा० ॥५॥

९८ राग—ख्याल ।

नैननिको वान परी, दरसनकी ॥ टेक ॥ जिनमुखचन्द चकोर चित्त मुझ, ऐसी प्रीति करी ॥ नैन० ॥१॥ और अदेवनके चितवनको अब चित चाह टरी । ज्यों सब धूलि दबै दिशि दिशिकी, लागत मेघझरी ॥ नैन० ॥२॥ छबी समाय रही

लोचनमें, बिसरत नाहिं घरी। भूधर कह यह टेव रहो थिर, जनम जनम हमरी ॥ नैन० ॥३॥

९९ राग—मलार।

वे मुनिवर कब मिलिहैं उपगारी ॥ टेक ॥ साधु दिगम्बर नगन निरम्बर, संवर भूषणधारी ॥ वे मुनि० ॥१॥ कंचन काच बराबर जिनकै, ज्यौं रिपु त्यौं हितकारी। महल मसान मरन अरु जीवन, सम गरिमा अरु गारी ॥ वे मुनि० ॥२॥ सम्यज्ञान प्रधान पवन बल, तप पावक परजारी। सेवत जीव सुवर्ण सदा जे, काय-कारिमा टारी ॥ वे मुनि०।३। जोरि जुगल कर भूधर बिनवै, तिन पद ढोक हमारी। भाग उदय दरसन जब पाऊं, ता दिनकी बलिहारी ॥ मुनि० ॥४॥

१०० राग—बिलावल।

सब विधि करन उतावला, सुमरनकौं सीरा ॥ टेक ॥ सुख चाहै संसारमैं, यों होय न नीरा ॥ सब विधि० ॥१॥ जैसे कर्म कमाव है, सो ही फल वीरा। आम न लागै आकके, नग होय न हीरा ॥ सब विधि ॥२॥ जैसा विषयनिकों चहै न रहै छिन धीरा। त्यों भूधर प्रभुकों जपै पहुंचै भव तीरा ॥सब०॥३॥

❦ समाप्त ❦

श्री रत्नकरण्ड श्रावकाचार।

यह ग्रन्थ पांच वार छप चुका है, इसके सम्बन्धमें कुछ भी लिखना सूर्यको दीपक दिखाना है। प० सदासुखजीने श्रावकोंके लिये यह पथ-प्रदर्शक ग्रन्थ लिखकर महान उपकार किया है। शास्त्राकार न्यो० ५॥) रुपया

पुरुषार्थ सिद्धयुपाय।

शास्त्राकार पुरानी और नवीन टीकाओं सहित (स्व० प० टोडरमलजी कृत) छपाया है। न्योछावर ४) रुपया मात्र।

तत्वार्थ राजवार्तिक

स्व० पं० पन्नालालजी दूनीवाल कृत पुरानी भाषामें एक खड ही छपा था उसका मूल्य सिर्फ ४) रक्खा है।

जैनक्रिया कोष।

स्व० प० दौलतरामजीने आचार सम्बन्धी इस ग्रन्थको लिखकर बहुत कुछ स्पष्ट कर दिया है। वही दुवारा छपाया था पर थोड़ी कापी बाकी हैं, अतएव जिन्हें दरकार हो शीघ्र ही मगा लें। न्योछावर २) रुपया।

चरचा समाधान।

स्व० पं० भूधरदासजी कृत शास्त्राकार यह छपाया गया है, इसमें तमाम प्रामाणिक ग्रन्थोंके आधारसे सैकड़ों शकाओंका समाधान किया है (गोमट्टसार, राजवार्तिक जैसे ग्रन्थोंके आधारसे) न्यो० २) रु० मात्र।

सुकुमाल चरित्र

इसका मिलना भी दुष्प्राप्य था, अतएव उसी शास्त्रीय भाषामें जो जयपुर निवासी श्रीमान प० नाथूलालजी दोशीने सकलकीर्ति कृत संस्कृतसे भाषामें लिखी थी प्रगट की है, वास्तवमें सुकमालकी जीवनी पढ़कर आपका हृदय पवित्र हो जायगा, कई उत्तमोत्तम रंगीन चित्र भी दिये हैं। न्यो० १)

सच्चा जिनवाणी संग्रह ।

प्रतिवर्ष इसको आवृत्ति बराबर ही होती रहती है, इतने महत्वपूर्ण ग्रन्थके विषयमें सिर्फ इतनाही लिखना काफी है कि इसकी बिक्री और प्रचार देखकर नौसे नक्काल लोग लोभ शमन नहीं कर सके और मिलता हुआ नाम रखकर जनताको धोखा दे रहे हैं। पाठकोंको चाहिये कि वे जिनवाणी प्रचारक कार्यालय, जिनवाणी प्रेसका नाम देखकर ही दर्जनों चित्रोंसे विभूषित सच्चा जिनवाणी संग्रह ही खरीदें । पृष्ठ संख्या ८२० के लगभग है, पक्की सुनहरी जिल्द है। न्योछावर ३) तीन रुपया मात्र ।

आराधना कथा कोष (प्रथम भाग)

यह भी बहुत समयसे मिलता नहीं था अतएव इसे भी नवीन भाषामें २०० पृष्ठका प्रथम भाग लिखवाकर तैयार कराया है, साथही ८ उत्तमोत्तम हाफटोन चित्र भी दिये गये हैं। न्योछावर १।) रुपया मात्र ।

सप्त व्यसन चरित्र

जैन साहित्यमें यह नवीन ढगसे ही छपाया गया है, अभीतक जितनी भी पुस्तकें निकली हैं उनमें सर्वोत्तम है। इस तरह तीन रंगे हाफटोन चित्र देकर शास्त्र साइजमें, सुन्दर टाइप बार्डर सहित छपाई सफाईके साथ ही पुष्ट कागज देखकर आपका मन प्रसन्न हो जायगा। कई हाफटोन चित्र भी दिये हैं जिससे पुस्तककी उपयोगता और भी बढ़ जाती है। सात व्यसनोंका चित्रोंके साथही फल देखकर प्रत्येक प्राणीका मन दहल जाता है। ऐसी उपयोगी पुस्तक प्रत्येक धर्मात्मा गृहस्थके घरमें रहनी चाहिये। न्योछावर १॥) मात्र ।

बड़ा पूजा विधान

इसमें प० रामचंद, प० वृन्दावन कृत चौवीसी पाठ कर्मदहन, पंच कल्याणक, शिखर महात्म, पंच परमेष्ठी विधान दिये गये हैं, पक्की सुनहरी जिल्दका दाम २॥) है।

द्यानत पद संग्रह।

[illegible]

[illegible]



[illegible]

द्यानत विलास

(१) राग विहागड़ो।

अब हम नेमिजीकी शरन ॥ टेक ॥ और ठौर न मन लगत है. छांड़ि प्रभुके चरन ॥अब०॥ ॥१॥ सकल भवि-अघ-दहन बारिद, विरद तारन तरन। इन्द चंद फनिंद ध्यावैं, पाय सुख दुखहरन ॥ अब० ॥२॥ भरम-तम-हर-तरनि दीपति, करम गन खयकरन। गनधरादि सुरादि जाके, गुन सकत नहिं वरन ॥ अब० ॥३॥ जा समान त्रिलोक में हम, सुन्यौ और न करन। दास द्यानत दयानिधि प्रभु, क्यों तजैंगे परन ॥४॥

(२) राग सोरठा।

गलतानमता कब आवैगा ॥टेक॥ राग दोष परणति मिट जै है, तब जियरा सुख पावैगा ॥ ॥ गलता० ॥१॥ मैं ही ज्ञाता ज्ञान ज्ञेय मैं, तीनों भेद मिटावैगा। करता किरिया करमभेद मिटि, एक दरब लौं लावैगा ॥ गलता० ॥२॥ निहचै अ-

मल मलिन व्योहारी, दोनों पक्ष नसावैगा। भेद गुण गुणोको नहिं ह्वै है, गुरु शिख कौन कहावैगा ॥ गलता० ॥३॥ द्यानत साधक साधि एक करि, दुविधा दूर बहावैगा। वचनभेद कहवत सब मिटकै, ज्योंका त्यों ठहरावैगा ॥४॥

(३) राग सारंग।

मोहि कब ऐसा दिन आय है ॥टेक॥ सकल बिभाव अभाव होंहिंगे, विकलपता मिट जाय है ॥ ॥ मोहि० ॥१॥ यह परमातम यह मम आतम, भेदबुद्धि न रहाय है। ओरनिकी का बात चलावै, भेदविज्ञान पलाय है ॥ मोहि० ॥२॥ जानैं आप आपमैं आपा, सो व्यवहार बिलाय है। नय परमान निखेपन माहीं, एक न औसर पाय है ॥मोहि ॥३॥ दरसन ज्ञान चरनके विकलप, कहो कहां ठहराय है। द्यानत चेतन चेतन ह्वै है, पुदगल पुदगल थाय है ॥

(४) राग विलावल।

जिन नाम सुमर मन! बावरे, कहा इत उत भटकै ॥ जिन० ॥टेक॥ विषय प्रगट विष वेल हैं, इनमें जिन अटकै ॥ जिन नाम० ॥१॥ दुर्लभ नर

भव पायकै, नगसों मत पटकै। फिर पीछैं पछ-तायगो, औसर जब सटकै ॥ जिननाम० ॥२॥ एक घरी है सफल जो, प्रभु गुन रस गटकै। कोटि वरष जीयो वृथा, जो थोथा फटकै ॥ जिन नाम० ॥ ३ ॥ द्यानत उत्तम भजन है, लीजै मन रटकै। भव भवके पातक सबै, जै हैं तो कटकै ॥ जिननाम० ॥४॥

(५) राग काफी।

तू जिनवर स्वामी मेरा, मैं सेवक प्रभु हों तेरा ॥टेक॥ तुम सुमरन बिन मैं बहु कीना, नाना जानि बसेरा। भाग उदय तुम दरसन पायो, पाप भज्यो तजि खेरा ॥ तू जिनवर० ॥१॥ तुम देवा-धिदेव परमेसुर, दीजै दान सबेरा। जो तुम मोख देत नहिं हमको, कहां जायँ किहि डेरा ॥-॥ मात तात तू ही बड़ भ्राता, तोसौं प्रेम घनेरा। द्या-नत तार निकार जगततैं, फेर न ह्वै भवफेरा ॥ ॥ तू जिनवर० ॥३॥

(६) राग काफी धमाल।

सो ज्ञाता मेरे मन माना, जिन निज निज, पर पर जाना ॥टेक॥ छहों दरवतैं भिन्न जानकै,

नव तत्वनितै आना। ताकौं देखै ताकौं जानै, ताहीके रसमें साना॥ सो ज्ञाता० ॥१॥ कर्म शुभाशुभ जो आवत हैं, सो तो पर पहिचाना। तीन भवनको राज न चाहै, यद्यपि गाँठ दरब बहु ना॥ सो ज्ञाता० ॥२॥ अखय अनंती सम्पति विलसै, भव तन भोग मगन ना। द्यानत ता ऊ-पर बलिहारी, सोई 'जीवन मुकत' भना॥

(७) राग केदारो।

सुन मन! नेमिजीके वैन॥ टेक॥ कुमति नासन ज्ञान भासन, सुखकरन दिन रैन॥ ॥सुन० ॥ १ ॥ वचन सुनि बहु होंहिं चक्री, बहु लहैं पद मैन। इन्द चंद फनिन्द पद लैं आतम शुद्धनऐन, ॥ सुन० ॥२॥ वैन सुन बहु मुकत पहुंचे, वचन विनु एकै न। हैं अनक्षर रूप अक्षर, सब सभा सुखदैन॥ सुन० ॥ ३ ॥ प्रगट लोक अलोक सब किय, हरिय मिथ्या सैन। वचन सरधा करौ द्या-नत, ज्यों लहौ पद चैन॥ सुन० ॥४॥

(८) राग मल्हार।

काहेको सोचत अति भारी, रे मन! ॥टेक॥ पूरव करमनकी थित बांधी, सोतो टरत न टारी

॥ काहे० ॥१॥ सब दरवनिकी तीन कालकी, विधि न्यारीकी न्यारी । केवलज्ञानविषैं प्रतिभासी, सो सो ह्वै है सारी ॥ काहे० ॥२॥ सोच किये बहु बंध बढ़त है, उपजत है दुख ख्वारी। चिंता चिता समान बखानी, बुद्धि करत है कारी ॥ काहे० ॥३॥ रोग सोग उपजत चिन्तातैं, कहौ कौन गुनवारी। द्यानत अनुभव करि शिव पहुंचे जिन चिन्ता सब जारी ॥ काहे० ॥४॥

(६) राग केदारो ।

रे जिय! जनम लाहो लेह ॥टेक॥ चरन ते जिन भवन पहुंचैं, दान दैं कर जेह ॥रे जिय०॥१॥ उर सोई जामैं दया है, अरु रुधिरको गेह । जीभ सो जिननाम गावै, सांच सौं करै नेह ॥ रे जिय० ॥२॥ आंख ते जिनराज देखैं, और आंखैं खेह । श्रवन ते जिनवचन सुनि शुभ, तप तपै सो देह ॥ रे जिय० ॥३॥ सफल तन इह भांति ह्वै है, और भाँति न केह । ह्वै सुखी मन राम ध्यावो, कहैं सदगुरु येह ॥ रे जिय० ॥४॥

(१०)

चल देखैं प्यारी, नेमि नवल व्रतधारी ॥टेक॥

रोग दोष विन शोभन मूरति, मुकतिनाथ अवि–कारी ॥ चल० ॥१॥ क्रोध विना किमि करम वि-नाशैं, यह अचरज मन भारी ॥ चल० ॥२॥ वचन अनक्षर सब जिय समझैं, भाषा न्यारी न्यारी ॥ ॥ चल० ॥३॥ चतुरानन सब खलक विलोकैं, पूरव मुख प्रभुकारी ॥ चल० ॥४॥ केवल ज्ञान आदि गुण प्रगटे, नेक न मान कियारी ॥ चल० ॥ ५ ॥ प्रभुकी महिमा प्रभु न कहि सकैं, हम तुम कौन विचारी ॥ चल० ॥६॥ द्यानत नेमिनाथ विन आलो कह मोकौंको तारी ॥ चल० ॥७॥

(११) राग सोरठ।

रुल्यो चिरकाल, जगजाल चहुंगति विषैं, आज जिनराज तुम शरन आयो ॥टेक॥ सह्यो दुख घोर, नहिं छोर आवे कहत, तुमसौं कछु छिप्यो नहिं तुम बतायो ॥ रुल्यो० ॥१॥ तू ही संसार तारक नहीं दूसरो, ऐसो मुह भेद न किन्ही सु-नायो ॥ रुल्यो० ॥२॥ सकल सुर असुर नरनाथ बंदत चरन. नाभिनन्दन निपुन मुनिन ध्याये ॥ ॥ रुल्यो० ॥३॥ तू ही अरहन्त भगवन्त गुणवन्त प्रभु, खुले मुझ भाग अब दरश पायो ॥ रुल्यो०

॥४॥ सिद्ध हौं शुद्ध हौं बुद्ध अविरुद्ध हौं, ईश जगदीश बहु गुणनि गायो ॥ रुल्यो० ॥५॥ सर्व चिन्ता गई बुद्धि निर्मल भई, जब हि चित जुगल चरननि लगायो ॥ रुल्यो० ॥६॥ भयो निहचिन्त द्यानत चरन शर्न गयि, तार अब नाथ तेरो कहायो ॥ रुल्यो० ॥ ७ ॥

(१२)

कर कर आतमहित रे प्रानी ॥टेक॥ जिन परिनामनि बंध होत है, सो परनति तज दुखदानी ॥ कर० ॥१॥ कौन पुरुष तुम कहां रहत हौ, किहिकी संगति रति मानी । जे परजाय प्रगट पुद्गलमय, तेतैं क्यों अपनी जानी ॥ कर० ॥२॥ चेतनजोति झलक तुझ माहीं, अनुपम सो तैं विसरानी । जाकी पटतर लगत आन नहि दीप रतन शशि सूरानी ॥ कर० ॥३॥ आपमें आप लखो अपनो पद, द्यानत करि तन मन वानी । परमेश्वरपद आप पाइये, यौं भाषें केवलज्ञानी ॥

(१३) राग विहागरो।

जानत क्यों नहिं रे, हे नर आतम ज्ञानी ॥ ॥टेक॥ रागदोष पुद्गलकी संगीत, निहचै शुद्धनि-

शानी ॥ जानत० ॥१॥ जाय नरक पशु नर सुर गतिमें, ये परजाय विरानी । सिद्धस्वरूप सदा अ-विनाशी, जानत बिरला प्रानी ॥ जानत० ॥२॥ कियो न काहू हरै न कोई, गुरु शिख कौन कहानी जनम मरन मलरहित अमल है, कीच बिना ज्यों पानी ॥ जानत० ॥३॥ सार पदारथ है तिहुं जग में, नहिं क्रोधी नहिं मानी । द्यानत सो घटमाहिं विराजै, लख हूजै शिवथानी ॥ जाकत० ॥४॥

(१४) राग काफी ।

आपा प्रभु जाना मैं "जाना ॥टेक॥ परमेसुर यह मैं इस सेवक, ऐसो भर्म पलाना ॥ आपा० ॥१॥ जो परमेसुर सो मम मूरति, जो मम सो भगवाना । मरमी होय सोइ तो जानै, जानै नाहीं आना ॥ आपा० ॥२॥ जाकौ ध्यान धरत हैं मुनि गन, पावत हैं निरवाना । अर्हन्त सिद्ध सूरि गुरु मुनिपद, आतमरूप वखाना ॥ आपा० ॥३॥ जो निगोदमें सो मुझमाहीं, सोई है शिवथाना । द्या-नत निहचौं रंच फेर नहिं जानै सो मतिवाना ॥४॥

(१५) राग मल्हार ।

रपमगुरु वरसत ज्ञान झरी ॥ टेक ॥ हरषि

हरषि बहु गरजि गरजिकै, मिथ्यातपन हरी ॥ परमगुरु० ॥१॥ सरथा भूमि सुहावनि लागै, संशय वेल हरी। भविजनमन सरवर भरि उमड़े, समुझि पवन सियरी ॥ परमगुरु० ॥२॥ स्याद्‌वाद् बिजली चमकै, पर मत शिखर परी। चातक मोर साधु श्रावकके, हृदय सुभक्ति भरी ॥ परमगुरु॥३॥ जप तप परमानन्द बढ्यो है, सुसमय नींव धरी। द्यानत पावन पावस आयो, थिरता शुद्ध करी ॥

(१६) राग काफी।

अब हम आतमको पहचानाजी ॥टेक॥ जैसा सिद्धक्षेत्रमें राजत, तैसा घटमें जाना जी ॥ अब हम० ॥१॥ देहादिक परद्रव्य न मेरे, मेरा चेतन बाना जी॥ अब हम० ॥२॥ द्यानत जो जानै सो स्याना, नहिं जानें सो दिवाना जी ॥३॥

(१७)

मेरी बेर कहा ढील करी जी ॥टेक॥ सूली सौं सिंहासन कीनो, सेठ सुदर्शन विपति हरी जी ॥ ॥ मेरी बेर० ॥१॥ सीता सती अगनि मैं पैठी, पावक नीर करी सगरी जी। वारिषेणपै खड़ग चलायो, फूल माल कीनी सुथरी जी ॥ मेरी बेर०

॥ २ ॥ धन्या वापी पयो निकाल्यो, ता घर रिद्ध अनेक भरी जी । सिरीपाल सागरतैं तास्यो, राज-भोगकै मुकत वरी जी ॥ मेरी वेर० ॥३॥ सांप हुयो फूलनकी माला, सोमापर तुम दया धरी जी । द्यानत मैं कछु जांचत नाहीं, कर वैराग्य दशा हमरी जो ॥ मेरी वेर० ॥

(१८)

जिनके हिरदै भगवान बसैं, तिन आनका ध्यान किया न किया ॥ टेक ॥ चक्री एक मिलाप भयेतैं, और नर न मिलिया मिलिया ॥ जि० ॥१॥ इक चिन्तामणि वांछितदायक, और नग न गहि-या गहिया । पारस एक कनी कर आवे, और धन न लहिया लहिया ॥ जिनके० ॥२॥ एक भान दश दिशि उजियारा, और ग्रह न उदिया उदिया । एक कलपतरु सब सुख दाता, और तरु न उगिया-उगिया ॥ जिनके० ॥३॥ एक अभय महादान देय कें और सुदान दिया न दिया । द्यानत ज्ञानसुधा रस चाख्यो, अम्रत और पिया न पिया ॥४॥

(१९) राग परज ।

माई ! आज आनंद कछु कहे न बनै ॥टेक॥

नाभिराय मरुदेवी नन्दन, ब्याह उछाह त्रिलोक भनै ॥ माई० ॥१॥ सीस मुकुट गल अनूपम, भूषन बरननको बरनै ॥ माई० ॥२॥ गृह सुखकार रतनमय कीनो, चौंरी मंडप सुरगननै ॥माई०॥३॥ द्यानत धन्य सुनन्दा कन्या, जाको आदीश्वर परनै ॥ माई० ॥४॥

(२०) राग परज।

माई ! आज आनन्द है या नगरी ॥ टेक ॥ गज गमनी शशि बदनी तरुनी, मंगल गावत हैं सिगरी ॥ माई० ॥१॥ नाभिराय घर पुत्र भयो हैं, किये हैं अजाचक जाचक री ॥ माई० ॥२॥ द्यानत धन्य कूंख मरुदेवी, सुर सेवत जाके पगरी ॥मा०

(२१)

जिनके हिरदै प्रभु नाम नहीं तिन, नर अवतार लिया न लिया॥टेक॥ दान विना घर-वास बासकै, लोभ मलीन धिया न धिया ॥ जिनके० ॥१॥ मदिरापान कियो घट अन्तर, जलमल सोधि पिया न पिया। आन प्रानके मांस भखेतैं करुना भाव हिया न हिया ॥ जिनके० ॥२॥ रूपवान गुनखान वानि शुभ, शील विहीन तिया न तिया।

कीरतवंत मृतक जीवत हैं, अपजसवंत जिया न जिया ॥ जिनके० ॥३। धाम मांहि कछु दाम न आये, बहु व्योपार किया न किया। द्यानत एक विवेक किये बिन, दान अनेक दिया न दिया ॥

(२२)

बिपतिमें धर धीर, रे नर ! बिपतिमें धर धीर ॥टेक॥ सम्पदा ज्यों आपदा रे ! विनश जै है वीर ॥ रे नर० ॥१॥ धूप छाया घटत बढ़ै ज्यों त्योंहि सुख दुख पीर ॥ रे नर० ॥२॥ दोष द्यानत देय किसको, तोरि करम-जंजीर ॥ रे नर० ॥३॥

(२३)

गुरु समान दाता नहिं कोई ॥टेक॥ भानु प्रकाश न नाशत जाको, सो अंधियारा डारै खोई ॥ गुरु० ॥१॥ मेघ समान सबनपै वरसै, कछु इच्छा जाके नहिं होई। नरक पशुगति आगमांहितैं. सुरग मुकत सुख थापै सोई ॥ गुरु० ॥२॥ तीनलोक मन्दिरमें जानौ, दीपकसम परकाशक लोई। दीपतलैं अंधियारा भर्यो है अन्तर बहिर विमल है जोई ॥ गुरु० ॥३॥ तारन तरन जिहाज सुगुरु हैं, सब कुटुम्ब डोवै जगतोई। द्यानत निशि दिन

निरमल मनमें, राखो गुरु-पद पंकज दोई॥

(२४)

आतम अनुभव करना रे भाई ॥टेक॥ जब लौं भेद-ज्ञान नहिं उपजै, जनम मरन दुख भरना रे॥ भाई० ॥१॥ आतम पढ़ नव तत्त्व बखानै, ब्रत तप संजम धरना रे। आतम-ज्ञान बिना नहिं कारज, जोनी संकट परना रे॥ भाई० ॥२॥ सकल ग्रन्थ दीपक हैं भाई, मिथ्या तमके हरना रे। कहा करैं ते अंध पुरुषको, जिन्हैं उपजना मरना रे॥ ॥ भाई० ॥३॥ द्यानत जे भवि सुख चाहत हैं, तिनको यह अनुसरना रे। 'सोहं' ये दो अक्षर जपकै, भव-जल पार उतरना रे॥४॥

(२५)

धनि ते साधु रहत बनमाहीं ॥टेक॥ शत्रु-मित्र सुख दुख सम जानैं, दरसन देखत पाप पलाहीं॥ धनि० ॥१॥ अट्ठाईस मूल गुण धारैं, मन वच काय चपलता नाहीं। ग्रीषम शैल शिखा हिम तटिनी, पावस बरखा अधिक सहाहीं॥ धनि ॥२॥ क्रोध मान छल लोभ न जानैं, राग दोष नाहीं उनपाहीं। अमल अखंडित चिद्गुण मंडित

ब्रह्मज्ञानमें लीन रहाहीं ॥ धनि० ॥३॥ तेई साधु लहैं केवल पद, आठ काठ दह शिवपुर जाहीं। द्यानत भवि तिनके गुण गावैं, पावैं शिव सुख दुःख नसाहीं ॥ धनि० ॥४॥

(२६)

अब हम आतमको पहिचान्यौ ॥टेक॥ जब ही सेती मोह सुभट बल, खिनक एकमें भान्यौ ॥ अब ॥१॥ राग विरोध विभाव भजे झर, ममता भाव पलान्यौ। दरशन ज्ञान चरनमें, चेतन भेद रहित परवान्यौ ॥ अब० ॥२॥ जिहि देखैं हम अवर न देख्यो, देख्यो सो सरधान्यौ। ताकौ कहो कहैं कैसैं करि, जा जानै जिम जान्यौ ॥स० ॥३॥ पूरब भाव सुपनवत देखे, अपनो अनुभव तान्यो। द्यानत ता अनुभव स्वादत ही जनम सफल करि मान्यौ ॥ अब० ॥४॥

(२७)

हमको प्रभु श्रीपास सहाय ॥टेक॥ जाके दरशन देखत जब ही, पातक जाय पलाय ॥हम० ॥१॥ जाको इंद फनिंद चक्रधर, वंदैं सीस नवाय सोई स्वामी अंतरजामी, भव्यनिको सुखदाय ॥

॥ हमको० ॥२॥ जाके चार घातिया बीते, दोष जु गये बिलाय । सहित अनन्त चतुष्टय साहब, महिमा कही न जाय ॥ हमको० ॥३॥ ताकी या बड़ो मिल्यो है हमको, गहि रहिये मन लाय । द्यानत औसर बीत जायगो, फेर न कछू उपाय ॥४॥

(२८)

ज्ञानी ज्ञानी ज्ञानी, नेमिजी ! तुम ही हो ज्ञानी ॥टेक॥ तुम्हीं देव गुरु तुम्हीं हमारे, सकल दरव जानी ॥ ज्ञानी० ॥१॥ तुम समान कोउ देव न देख्या, तीन भवन छानी । आप तरे भवजीवनि तारे, ममता नहिं आनी ॥ ज्ञानी० ॥२॥ और देव सब रागी द्वेषी, कामीक मानी । तुम हो वीतराग अकषायी, तजि राजुल रानी ॥ ज्ञानी० ॥३॥ द्यानतदास निकास जगततैं, हम गरीब प्रानी ॥ ज्ञानी० ॥४॥

(२९)

देख्या मैंने नेमिजी प्यारा ॥टेक॥ मूरति ऊपर करों निछावर, तन धन जीवन जोवन सारा ॥ देख्या० ॥१॥ जाके नखकी शोभा आगैं कोटि काम छवि डारौं वारा । कोटि संख्य रवि चन्द

छिपत है, वपुकी द्युति है अपरम्पारा ॥ देख्या० २॥ जिनके बचन सुनें जिन भविजन, तजि गृह मुनि-वरको ब्रत धारा। जाको जस इन्द्रादिक गावैं, पावैं सुख नासैं दुख भारा। देख्या० ३। जाके केवल ज्ञान विराजत, लोकालोक प्रकाशन हारा। चरन गहेकी लाज निबाहो, प्रभुजी द्यानत भगत तुम्हारा ॥ देख्या ४ ॥

(३०)

आतमरूप अनुपम है, घटमाहिं विराजै ॥टेक जाके सुमरन जाप सो, भव भव दुख भाजै हो ॥ आतम० ॥१॥ केवल दरशन ज्ञानमैं, थिरतापद छाजै हो। उपमाको तिहुं लोकमें, कोउ वस्तु न राजै हो॥ आतम० २ ॥ सहै परीषह भार जो, जु महाब्रत साजै हो। ज्ञान विना शिव ना लहै, बहुकर्म उपाजै हो ॥ आतम० ३ ॥ तिहुँ लोक तिहुँ कालमें, नहिँ और इलाजै हो। द्यानत ताकों जानिये, निज स्वारथ काजै हो ॥ आतम ४ ॥

(३१)

नहिं ऐसो जनम बारम्बार ॥ टेक ॥ कठिन-कठिन लह्यो मनुष भव, विषय भजि मतिहार ॥

नहिं० ॥१॥ पाय चिन्तामन रतन शठ, छिपत उदधि मंझार। अंध हाथ बटेर आई, तजत ताहि गंवार। नहिं० २। कबहुँ नरक तिरजंच कबहुँ, कबहुँ सुरगविहार। जगतमहिं चिरकाल भमियो दुर्लभ नर अवतार। नहिं० ३। पाय अम्रत पांय धोवै, कहत सुगुरु पुकार। तजो विषय कषाय द्यानत, ज्यों लहो भवपार ॥

(३२)

तू तो समझ समझ रे! भाई ॥टेक॥ निशिदिन विषय भोग लपटाना, धरम वचन न सुहाई ॥ तू तो० ॥१॥ कर मनका लै आसन मार्‌यो, वाहिज लोक रिझाई। कहा भयो बक ध्यान धरे तैं, जो मन थिर न रहाई ॥ तू तो० ॥२॥ मास मास उपवास कियेतैं, काया बहुत सुखाई। क्रोध मान छल लोभ न जीत्या, कारज कौन सराई ॥ ॥ तू तो० ॥३॥ मन वच काय जोग थिर करकै, त्यागो विषयकषाई। द्यानत सुरग मोख सुखदाई, सदगुरु सीख बताई ॥ तू तो ॥४०॥

(३३)

घटमें परमातम ध्याइये हो, परम धरम धन

हेत। ममता बुद्धि निवारिये हो टारिये भरम निकेत ॥ घटमें० ॥१॥ प्रथमहिं अशुचि निहारिये हो सात धातुमय देह। काल अनन्त सहे दुख जानैं, ताको तजो अब नेह ॥ घटमें० ॥२॥ ज्ञानावरनादिक जमरूपी, जिनतैं भिन्न निहार। रागादिक परनति लख न्यारी, न्यारो सुबुध बिचार ॥ घटमें ॥३॥ तहां शुद्ध आतम निर विकलप, ह्वै करि तिसको ध्यान। अलप कालमें घाति नसत हैं, उपजत केवल ज्ञान ॥ घटमें० ॥४॥ चार अघाति नाशि शिव पहुंचे, विलसत सुख जु अनन्त। सम्यक दरशनकी यह महिमा, द्यानत लह भव अंत ॥ घटमें० ॥५॥

(३४)

समझत क्यों नहिं वानी, अज्ञानी जन ॥टेक॥ स्यादवाद अङ्कित सुखदाय, भागी केवलज्ञानी ॥ ॥ समझत० ॥१॥ जास लखैं निरमल पद पावै, कुमति कुगतिकी हानी। उदय भया जिहमें परगासी, तिहि जानी सरधानी ॥ समझत० ॥२॥ जामें देव धरम गुरु वरनें, तीनौं मुकतिनिसानी। निश्चय देव धरम गुरु आतम, जानत विरला

प्रानी ॥ समझत० ॥३॥ या जग माहिं तुझे तारन को, कारन नाव बखानी । द्यानत सो गहिये निह-चैसों, हूजे ज्यों शिवथानी ॥ समझत० ॥४॥

(३५)

धिक ! धिक ! जीवन समकित बिना ॥टेक॥ दान शील तप व्रत श्रुतपूजा, आतम हेत न एक गिना ॥ धिक० ॥१॥ ज्यों बिनु कन्त कामिनी शोभा, अंबुज बिनु सरवर ज्यों सूना । जैसे बिना एकड़े बिन्दी, त्यों समकित विन सरव गुना ॥धिक जैसे भूप बिना सब सेना, नीव विना मन्दिर चुनना । जैसे चन्द बिहूनी रजनी, इन्हैं आदि जानो निपुना ॥ धिक० ॥३॥ देव जिनेन्द्र, साधु गुरु, करुना धर्मराग व्योहार भना । निहचै देव धरम गुरु आतम, द्यानत गहि मन वचन तना ॥ धिक०॥४॥

(३६) गुजरातीभाषा—गीत ।

जीवा ! शूं कहिये तनें भाई ॥टेक॥ पोता नूँ रूप अनूप तजीनैं, शामाटै विषयी थाई ॥ जीवा० ॥१॥ इन्द्रीना विषय विषथकी मोटा ज्ञान नू अम्रत गाई । अमृत छोड़ीनै विषय विष पीधा, साता तो नथी पाई ॥ जीवा० ॥२॥ नरक निगो-

दना दुख सह आव्यो, वली तिहनैं मग धाई एहवी बात रूड़ी न छै तमनैं तीन भवनना राई ॥ जीवा० ॥३॥ लाख बातनी बात ए छै, मूकीनै विषयकषाई द्यानत ते वारैं सुख लाधौ, एम गुरु समझाई ॥४॥

(३७) राग मल्हार ।

ज्ञान सरोवर सोई हो भविजन ॥टेक॥ भूमि छिमा करुना मरजादा, सम-रस जल जहं होई ॥ भविजन० ॥१॥ परहति लहर हरख जलचर बहु, नय पंकति परकारी । सम्यक कमल अष्ट दल गुण हैं, सुमन भँवर अधिकारी ॥ भविजन० ॥२॥ संजम शील आदि पल्लव हैं कमला सुमति निवासी । सुजस सुवास कमल परिचयतैं, परसत श्रम तप नासी ॥ भविजन० ॥३॥ भव मल जात न्हात भविजनका, होत परम सुख साता । द्यानत यह सर और न जानैं, जानैं बिरला ज्ञाता ॥भ०४॥

(३८)

जीव ! तैं मूढ़पना कित पायो ॥टेक॥ सब जग स्वारथको चाहत है, स्वारथ तोहि न भायो ॥ जीव० ॥१॥ अशुचि अचेत दुष्ट तनमांहीं, कहा ज्ञान विरमायो । परम अतिन्द्री निजसुख हरिकै,

विषय रोग लपटायो ॥ जीव० ॥२॥ चेतन नाम भयो जड़ काहे, अपनो नाम गमायो। तीन लोक को राज छांड़िकै, भीख मांग न लजायो ॥ जीव० ॥३॥ मूढ़पना मिथ्या जब छूटै, तब तू संत कहायो। द्यानत सुख अनन्त शिव विलसो, यों सद्‌गुरु बतलायो ॥ जीव० ॥४॥

(३९) राग सारंग।

हम लागे आतमरामसों ॥टेक॥ विनाशीक पुद्‌गलकी छाया, कौन रमै धनवानसों ॥ हम० ॥१॥ समता सुख घटमें परगास्यो, कौन काज है कामसों। दुविधा-भाव जलांजुलि दीनौं, मेल भयो निज स्वामसों ॥ हम० ॥२॥ भेदज्ञान करि निज परि देख्यौ, कौन विलोकै चामसौं। उरै परैकी बात न भावै, लौ लाई गुणग्रामसों ॥ हम० ॥३॥ विकलप भाव रंक सब भाजे, झरि चेतन अभिरामसों। द्यानत आतम अनुभव करिकै छूटे भव दुखधामसों ॥ हम० ॥४॥

(४०)

प्रभु अब हमको होहु सहाय ॥टेक॥ तुमबिन हम बहु जुग दुख पायो, अब तो परसे पांय ॥प्रभु

तीन लोकमें नाम तिहारो, है सबको सुखदाय। सोई नाम सदा हम गावैं, रीझ जाहु पतियाय ॥ प्रभु० ॥२॥ हम तो नाथ कहाये तेरे, जावैं कहां सु बताय। बांह गहेकी लाज निबाहौ जो हो त्रिभुवनराय ॥ प्रभु० ॥३॥ द्यानत सेवकने प्रभु इतनी, विनती करी बनाय। दीनदयाल दया धर मनमें, जमतैं लेहु बचाय ॥ प्रभु० ॥४॥

(४१)

बसि संसारमें मैं, पायो दुःख अपार ॥टेक॥ मिथ्याभाव हिये धर्यो नहिं, जानों सम्यकचार ॥ बसि० ॥१॥ काल अनादिहि हौं रुल्यौ हो, नरक निगोद मंझार। सुर नर पद बहुते धरे पद, पद प्रति आतम धार ॥ बसि० ॥२॥ जिनको फल दुखपुंज है हो, ते जानें सुखकार। भ्रम मद पीय विकल भयो नहिं, गह्यो सत्य व्योहार ॥ बसि० ॥३॥ जिनबानी जानी नहीं हो, कुगति विनाशन हार। द्यानत अब सरधा करी दुख, मेटि लह्यो सुखसार ॥ बसि० ॥४॥

(४२)

धनि धनि ते मुनि गिरिवनवासी ॥टेक॥ मार

मार जगजार जारते, द्वादस व्रत तप अभ्यासी ॥ धनि० ॥१॥ कौड़ी लाल पास नहि जाके जिन छेदी आसापासी। आतम-आतम, पर-पर जानैं, द्वादश तीन प्रकृति नासी ॥२॥ जा दुख देख दुखी सब जग ह्वै, सो दुख लख सुख ह्वै तासी जाकों सब जग सुख मानत है, सो सुख जान्यो दुखरासी ॥ धनि० ॥३॥ बाहज भेष कहत अंतर गुण, सत्य मधुर हितमित भासी। द्यानत ते शिवपंथपथिक हैं, पांव परत पातक जासी ॥४॥

(४३) राग कल्याण (सर्व लघु)

कहत सुगुरु करि सुहित भविकजन ! ॥टेक॥ पुद्गल अधरम धरम गगन जम, सब जड़ मम नहिं यह सुमरहु मन ॥ कहत० ॥१॥ नर पशु नरक अमर पर पद लखि, दरव करम तन करम पृथक भन। तुम पद अमल अचल बिकलप बिन अजर अमर शिव अभय अखय गन ॥ कहत० ॥२॥ त्रिभुवनपतिपद तुम पटतर नहिं, तुम पद अतुल न तुल रविशशिगन। वचन कहत मन गहन शकति नहिं, सुरत गमन निज निज गम परनन ॥ कहत० ॥३॥ इह विधि बंधत खुलत इह

विधि जिय, इन विकलपमहिं शिवपद सधत न। निरविकलप अनुभव मन सिधि करि, करम सघन वनदहन दहन-कन ॥ कहत० ॥४॥

(४४)

हो भैया मोरे ! कहु कैसे सुख होय ॥टेक॥ लीन कषाय अधीन विषयके, धरम करै नहिं को-य ॥ हो भैया० ॥१॥ पाप उदय लखि रोवत भोदूं, पाप तजै नहिं सोय । स्वान-बान ज्यों पाहन सूंघै, सिंह हनै रिपु जोय ॥ हो भैया० ॥२॥ धरम क-रत सुख दुख अघसेती, जानत हैं सब लोय। कर दीपक लै कूप परत है, दुख पैहै भव दोय ॥ हो भैया० ॥३॥ कुगुरु कुदेव कुधर्म भुलायो, देव धरम गुरु खोय। उलट चाल तजि अब सुलटै जो, द्यानत तिरै जग तोय ॥ हो भैया० ॥४॥

(४५)

प्रभु मैं किहि विधि थुति करौं तेरी ॥टेक॥ गणधर कहत पार नहिं पावै, कहा बुद्धि है मेरी ॥ प्रभु० ॥१॥ शक्र जनम भरि सहस जीभ धरि तुम जस होत न पूरा। एक जीभ कैसैं गुण गावै; उलू कहै किमि सूरा ॥ प्रभु० ॥२॥ चमर छत्र

सिंघासन बरनों, ये गुण तुमतैं न्यारे। तुम गुण कहन वचन वल नाहीं, नैन गिनैं किमि तारे ॥३॥

(४६)

भज श्रीआदिचरन मन मेरे, दूर होंय भव भव दुख तेरे ॥टेक॥ भगति बिना सुख रंच न होई, जो ढूंढ़ै तिहुं जगमें कोई ॥ भज० ॥ १ ॥ प्रान-पयान-समय दुख भारी, कंठविषैं कफकी अधिकारी। तात मात सुत लोग घनेरा, तादिन कौन सहाई तेरा ॥ भय० ॥२॥ तू बसि चरण चरण तुझमाहीं, एकमेक ह्वै दुविधा नाहीं। तातै जीवन सफल कहावै, जनम जरा मृत पास न आवैं॥ भज० ॥३॥ अब ही अवसर फिर जम घेरैं, छाँड़ि लरक बुध सद्गुरु टेरैं। द्यानत और जतन कोउ नाहीं, निरभय होय तिहूँ जगमाहीं ॥

(४७)

प्राणी लाल ! धरम अगाऊ धारौ ॥टेक॥ जब लौं धन जोवन हैं तेरे; दान शील न विसारौ ॥ प्राणी० ॥१॥ जबलौं करपद दिढ़ हैं तेरे, पूजा तीरथ सारौ। जीभ नैन जबलौं हैं नीके, प्रभु गुन गाय तिहारौ ॥ प्राणी० ॥२॥ आसन श्रवण सबल

हैं तोलौं, ध्यान शब्द सुनि धारौ। जरा न आवै गद न सतावै, संजम परउपकारौ ॥ प्राणी० ॥३॥ देह शिथिल मति विकल न तौलौं, तप गहि तत्त्व विचारौ। अन्तसमाधिपोत चढ़ि अपनो, द्यानत आतम तारौ ॥ प्राणी० ॥४॥

(४८) राग सोरठ।

नेमि नवल देखैं चल री। लहैं मनुष भवको कलरी ॥टेक॥ देखनि जात जात दुख तिनको भान जथा तम दल दल री। जिन उर नाम बसत है जिनको, तिनको भय नहिं जल थल री ॥ नेमि० ॥१॥ प्रभुके रूप अनूपम ऊपर, कोट काम कीजे बल री। समोसरनकी अद्भुत शोभा नाचत शक्र सची रल री ॥ नेमि० ॥२॥ भोर उठत पूजत पद प्रभुके, पातक भजत सकल टल री। द्यानत सरन गहौ मन! ताकी, जैहैं भवबंधन गल री ॥ने०।३।

(४९)

सखि! पूजौ मन वच श्रीजिनेन्द्र, चितचकोर सुखकरन इंद ॥टेक॥ कुमति कुमुदिनी हरनसूर, विघनसघन वनदहन भूर ॥ भवि० ॥१॥ पाप उरग प्रभु नाम मोर, मोह महा-तम दलन भोर ॥

॥ भवि० ॥२॥ दुख दालिद-हर अनघ-रैन, द्यानत प्रभु दैं परम चैन ॥ भवि० ॥३॥

(५०)

मगन रहु रे ! शुद्धातममें मगन रहु रे ॥टेक॥ राग दोष परको उतपात, निहचै शुद्ध चैतनाजात ॥ मगन० ॥१॥ विधि निषेधको खेद निवारि, आप आपमें आप निहारि ॥ मगन० ॥२॥ बंध मोक्ष विकलप करि दूर, आनन्द कन्द चिदातम सूर ॥ मगन० ॥३॥ दरसन ज्ञान चरन समुदाय, द्यानत ये ही मोक्ष उपाय ॥ मगन० ॥४॥

(५१)

आतम जानो रे भाई ! ॥टेक॥ जैसी उज्जल आरसी रे, तैसी आतम जोत। काया-कर-मनसौं जुदी रे, सबको करै उदोत ॥ आतम० ॥१॥ शयन दशा जागृत दशा रे, दोनों विकलप रूप। निर-विकलप शुद्धातमा रे, चिदानन्द चिद्रूप ॥ आतम० ॥२॥ तन वचसेती भिन्न कर रे, मनसों निज लौं लाय। आप आप जब अनुभवै रे, तहां न मन वच काय ॥ आतम० ॥३॥ छहौं दरब नव तत्त्व-तैंरे, न्यारो आतम राम। द्यानत जे अनुभव करैं

तू अपनो विगारै, जाय दुर्गति परै ॥ रे जिय० ॥२॥ होय संगति गुन सबनिकों, सरब जग उच्चरै तुम भले कर भले सबको, बुरे लखि मति जरै ॥ रे जिय० ॥३॥ वैद्य परविष हर सकत नहिं, आप भाखिको मरै। बहु कषाय निगोद-वासा, छिमा द्यानत तरै ॥ रे जिय० ॥४॥

(५७)

फूली बसन्त जहं आदीसुर शिवपुर गये ॥ टेक ॥ भारतभूप बहत्तर जिनगृह, कनकमयी सब निरमये ॥ फूली० ॥१॥ तीन चौवीस रतनमय प्रतिमा, अंग रंग जे जे भये। सिद्ध समान सीस सम सबके, अद्‌भुत शोभा परिनये ॥ फूली०॥२ बालि आदि आठ जोड़ मुनि, सबनि मुकति सुख अनुभये। तीन अठाई फागनि (?) खग मिल गावैं गीत नये नये ॥ फूली० ॥३॥ वसु जोजन वसु पैड़ी (?) गंगा फिरी बहुत सुरआलये। द्यानत सो कैलास नमौं हौं, गुन कापै जा बरनये ॥ फूली० ॥४॥

(५८)

तुम ज्ञानविभव फूली वसन्त, यह मन मधु

कर सुखसों रमन्त ॥टेक॥ दिन बड़े भये बैराग भाव, मिथ्यामत रजनीको घटाव ॥ तुम० ॥१॥ बहु फूली फैली सुरुचि वेलि, ज्ञाता जन समता संग केलि ॥ तुम० ॥२॥ द्यानत बानी पिक मधुर रूप, सुर नरपशु आनन्दघनसुरूप ॥ तुम० ॥३॥

(५६) राग मलहार ।

जगतमें सम्यक उत्तम भाई ॥टेक॥ सम्यक सहित प्रधान नरकमें, धिक शठ सुरगति पाई ॥ जगत० ॥१॥ श्रावकव्रत मुनिव्रत जे पालैं, ममता बुद्धि अधिकाई । तिनतैं अधिक 'असंजम चारी, जिन आतम लव लाई ॥ जगत० ॥२॥ पंच परा-वर्तन तैं कीनै, बहुत बार दुखदाई । लख चौरासि स्वाँग धरि नाच्यौ, ज्ञानकला नहिं आई ॥ जगत० ॥३॥ सम्यक विन तिहुं जग दुखदाई, जहँ भावै तहँ जाई । द्यानत सम्यक आतम अनुभव, सद्-गुरु सीख बताई ॥ जगत० ॥४॥

(६०) राग गौड़ी ।

भाई ! अब मैं ऐसा जाना ॥टेक॥ पुद्गल दरव अचेत भिन्न हैं, मेरा चेतन बाना ॥ भाई० ॥१॥ कलप अनन्त सहत दुख बीते, दुखकौं सुख

कर माना। सुख दुख दोऊ कर्म अवस्था, मैं कर्मनतैं आना॥ भाई० ॥२॥ जहां भोर था तहां भई निशि, निशिकी ठौर बिहाना। भूल मिटी जिनपद पहिचाना, परमानन्द निधाना॥ भाई०॥ ॥३॥ गूँगेका गुड़ खांय कहैं किमि, यद्यपि स्वाद पिछाना। द्यानत जिन देख्या ते जानै, मेंडक हंस पखाना॥ भाई० ॥४॥

(६१) राग ख्याल।

आतम जान रे जान रे जान ॥टेक॥ जीवन की इच्छा करै, कबहुं न मांगै काल। (प्राणी) सोई जान्यो जीव है, सुख चाहै दुख टाल॥ आ० ॥१॥ नैन बैनमें कौन है, कौन सुनत हैं बात। (प्राणी) देखत क्यों नहिं आपमें, जाकी चेतन जात॥ आतम० ॥२॥ बाहिर ढूंढैं दूर है, अंतर निपट नजीक। (प्राणी!) ढूंढनवाला कौन है, सोई जानो ठीक॥ आतम० ॥३॥ तीन भवनमें देखिया, आतम सम नहिं कोय। (प्राणी!) द्यानत जे अनुभव करैं, तिनकौं शिवसुख होय।४।

(६२) राग सोरठ।

मन! मेरे राग भाव निवार ॥टेक॥ राग चि-

क्षनतैं लागत है कर्मधूलि अपार॥ मन० ॥१॥ राग आस्रव मूल है, वैराग्य संवर धार। जिन न जान्यो भेद यह, वह गयो नरभव हार ॥ मन० ॥२॥ दान पूजा शील जप तप, भाव बिबिध प्रकार। राग विन शिव सुख करत हैं, रागतैं संसार ॥ ॥ मन० ॥३॥ बीतराग कहा कियो, यह बात प्रगट निहार। सोइ कर सुखहेत द्यानत, शुद्ध अनुभव सार ॥ मन० ॥४॥

(६३) राग रामकली।

हम न किसीके कोई न हमारा, झूठा है जगका व्योहारा ॥टेक॥ तन सम्बन्धो सब परवारा सो तन हमने जाना न्यारा ॥ हम० ॥१॥ पुन्य उदय सुखका बढ़वारा, पाप उदय दुख होत अपारा। पाप पुन्य दोऊ संसारा, मैं सब देखन हारा ॥ ॥ हम० ॥२॥ मैं तिहुं जग तिहुं काल अकेला, पर संजोग भया बहु मेला। थिति पूरी करि खिर खिर जाहीं, मेरे हर्ष शोक कछु नाहीं ॥ हम० ॥३॥ राग भावतैं सज्जन मानैं, दोष भावतैं दुर्जन जानैं। राग दोष दोऊ मम नाहीं, द्यानत मैं चेतनपद माहीं ॥ हम० ॥४॥

(६४) राग पंचम ।

भ्रम्यो जी भ्रम्यो, संसार महावन, सुख तो कबहुं न पायो जी ॥टे॥ पुद्गल जीव एक करि जान्यो, भेद-ज्ञान न सुहायो जी ॥ भ्रम्यो० ॥१॥ मनवचकाय जीव संहारो, झूठो वचन बनायोजी चोरी करके हरष बढ़ायो, विषयभोग गरवायोजी ॥ भ्रम्यो० ॥२॥ नरकमाहिं छेदन भेदन बहु, साधारण वसि आयो जी । गरभ जनम नरभव दुख देखे, देव मरत बिललायोजी ॥ भ्रम्यो० ॥३॥ द्यानत अब जिनवचन सुनै मैं, भवमल पाप वहायो जी । आदिनाथ अरहन्त आदि गुरु, चरनकमल चितलायो जी ॥ भ्रम्यो० ॥४॥

(६५) राग रामकली ।

जियको लोभ महा दुखदाई, जाकी शोभा (?) वरनी न जाई ॥टेक॥ लोभ करै मूरख संसारी छांड़ै पण्डित शिव अधिकारी ॥ जियको० ॥१॥ तजि घरवास फिरै वनमाहीं, कनक कामिनी छांड़ै नाहीं । लोक रिझावनको व्रत लीना, व्रत न होय ठगई साकीना ॥ जियको० ॥२॥ लोभवशात जीव हत डारै, झूठ बोल चोरी चित धारै । नारि गहै

परिग्रह विसतारै, पांच पापकर नरक सिधारै ॥जियको० ॥३॥ जोगी जती गृही बनवासी, वैरागी दरवेश सन्यासी । अजस खान जसकी नहिं रेखा, द्यानत जिनकै लाभ विशेखा ॥ जियको० ॥४॥

(६६)

रे मन ! भज भज दीनदयाल ॥ टेक ॥ जाके नाम लेत इक छिनमैं, कटैं कोट अघजाय ॥ रे मन ॥१॥ परमब्रह्म परमेश्वर स्वामी, देखैं होत निहाल सुमरन करत परम सुख पावत, सेवत भाजै काल ॥ रे मन० ॥२॥ इन्द्र फनिन्द चक्रधर गावैं, जाको नाम रसाल । जाको नाम ज्ञान परगासै, नाशै मिथ्याजाल ॥ रे मन० ॥३॥ जाके नाम समान नहीं कछु, ऊरध मध्य पताल। सोई नाम जपो नित द्यानत, छांड़ि विषय विकराल ॥ रे मन० ॥४॥

(६७)

तुम प्रभु कहियत दीनदयाल ॥ टेक ॥ आपन जाय मुकतमैं बैठे, हम जु रुलत जगजाल ॥ तुम० ॥१॥ तुमरो नाम जपैं हम नीके, मन वच तीनौं काल । तुमतो हमको कछू देत नहिं, हमरो कौन हवाल ॥ तुम० ॥२॥ बुरे भले हम भगत तिहारे,

जानत हो हम चाल। और कछू नहिं यह चाहत हैं, राग दोषकौं टाल ॥ तुम० ॥३॥ हमसौं चूक परी सो वकसो, तुम तो कृपाविशाल। द्यानत एक बार प्रभु जगतैं, हमको लेहु निकाल ॥४॥

(६८) राग ख्याल।

मैं नेमिजीका बंदा, मैं साहवजीका बंदा ॥ टेक॥ नैन चकोर दरसको तरसैं, स्वामी पूरनचंदा ॥ मैं नेमिजी० ॥१॥ छहौं दरवमें सार बतायौं, आतम आनन्दकन्दा। ताको अनुभव नित प्रति कीजे, नासै सब दुख दंदा ॥ मैं नेमिजी ॥२॥ देत धरम उपदेश भविक प्रति, इच्छा नाहिं करंदा। राग दोष मद मोह नहीं नहीं, क्रोध लोभ छल छंदा ॥ मैं नेमिजी० ॥३॥ जाको जस कहि सकैं न क्योंही, इन्द फनिंद नरिन्दा ॥ मैं नेमि० ॥४॥

(६९)

मैं निज आतम कब ध्याऊँगा ॥टेक॥ रागादिक परिनाम त्यागकै, समतासौं लौ लाऊँगा ॥ मैं निज० ॥१॥ मन वच काय जोग थिर करकै, ज्ञान समाधि लगाऊंगा। कब हौं क्षिपकश्रेणि चढ़ि ध्याऊँ चारिक मोह नशाऊँगा ॥ मैं निज०

॥२॥ चारों करम घातिया खन करि परमातम पद पाऊँगा। ज्ञान दरश सुख बल भंडारा, चार अघाति बहाऊंगा ॥ मैं निज० ॥३॥ परम निरंजन सिद्ध शुद्धपद, परमानन्द कहाऊँगा। द्यानत यह सम्पति जब पाऊँ, बहुरि न जगमें आऊंगा ॥४॥

(७०)

अरहन्त सुमर मन बावरे ॥ टेक ॥ ख्याति लाभ पूजा तजि भाई, अन्तर प्रभु लौ लावरे ॥ अरहन्त० ॥१॥ नरभव पाय अकारथ खोवै, विषय भोग जु बढ़ाव रे। प्राण गये पछितैहै मनवा, छिन छिन छीजै आव रे ॥ अरहन्त० ॥२॥ जुवती तन धन सुत मित परिजन, गज तुरंग रथ चाव रे। यह संसार सुपनकी माया, आंख मींच दिखराव रे॥ अरहन्त ॥३॥ ध्याव ध्याव रे अब है दावरे, नाहीं मंगल गाव रे। द्यानत बहुत कहां लौं कहिये, फेर न कछू उपाव रे ॥४॥

(७१)

बन्दौ नेमि उदासी, मद मारिनेकौं ॥ टेक ॥ रजमतीसी जिननारी छाँरी, जाय भये बनवासी ॥ बन्दौं० ॥१॥ हय गय रथ पायक सब छांड़े,

तोरी ममता फांसी। पंच महाव्रत दुद्धर धारे, राखी प्रजति पचासी॥ बन्दौं० ॥२॥ जाकै दरसन ज्ञान विराजत, लहि वीरज सुखरासी। जाकौं बन्दत त्रिभुवन नायक, लोकालोक प्रकासी। बन्दौं० ॥३॥ सिद्ध शुद्ध परमारथ राजैं, अविचल थान निवासी। द्यानत मन अलि प्रभु पद पंकज, रमत रमत अघ जासी॥ बन्दौं ॥४॥

(७२)

आतम अनुभव कीजै हो ॥टेक॥ जनम जरा अरु मरन नाशकैं, अनत काल लौं जीजै हो॥ आतम० ॥१॥ देव धरम गुरुकी सरधा करि, कुगुरु आदि तज दीजै हो। छहौं दरब नव तत्त्व परखकै, चेतन सार गहीजै हो॥ आतम० ॥२॥ दरव करम नोकरम भिन्न करि, सूक्षम दृष्टि धरीजै हो। भाव करमतैं भिन्न जानिकै, बुधि बिलास न मरीजैं हो॥ आतम० ॥३॥ आप आप जानै सो अनुभव, द्यानत शिवका दीजै हो। और उपाय बन्यो नहिं बनिहै, करै सो दक्ष कहीजै हो॥ आतम० ॥४॥

———

(७३)

कर रे ! कर रे ! कर रे ! तू आतम हित कर रे ॥ टेक ॥ काल अनन्त गयो जग भमतैं, भव भवके दुख हर रे ॥ कर रे० ॥१॥ लाख कोटि भव तपस्या करतैं, जितो कर्म तेरी जर रे। स्वास उस्वासमाहिं सो नासै, जब अनुभव चित धर रे ॥ कर रे० ॥२॥ काहे कष्ट सहै बनमाँहीं, राग दोष परिहर रे। काज होय समभाव विना नहिं, भावौ पचि पचि मर रे ॥ कर रे० ॥३॥ लाख सीखकी सीख एक यह, आतम निज, पर पर रे। कोट ग्रंथको सार यही है, द्यानत लख भव तर रे ॥ कर रे० ॥४॥

(७४)

भाई ज्ञानका राह सुहेला रे। भाई० ॥टेक॥ दरब न चहिये देह न दहिये, जोग भोग न नवेला रे ॥ भाई० ॥१॥ लड़ना नाहीं मरना नाहीं, करना बेला तेला रे। पढ़ना नाहीं गढ़ना नाहीं, नाचन गावन मेला रे ॥ भाई० ॥२॥ न्हानां नाहीं खाना नाहीं, नाहिं कमाना धेला रे। चलना नाहीं जलना नाहीं, गलना नाहीं देला रे ॥ भाई० ॥३॥

जो चित चाहै सो नित दाहै, चाह दूर करि खेला रे। द्यानत यामैं कौन कठिनता, वे परवाह अकेला रे॥ भाई०॥४॥

(७५)

प्रभु तेरी महिमा किहि मुख गावैं ॥टेक॥ गरभ छमास अगाउ कनक नग (?) सुरपति नगर बनावैं॥ प्रभु०॥१॥ क्षीर उदधि जल मेरु सिंहासन, मल मल इन्द्र न्हुलावै। दीक्षा समय पालकी बैठो, इन्द्र कहार कहावैं॥ प्रभु०॥२॥ समोसरन रिध ज्ञान महातम, किहिविधि सरव बतावैं। आपन जातकी बात कहा शिव, बात सुनैं भवि जावैं॥ प्रभु०॥३॥ पंच कल्याणक थानक स्वामी, जे तुम मन वच ध्यावैं। द्यानत तिनकी कौन कथा है, हम देखैं सुख पावैं॥ प्रभु०॥४॥

(७६)

प्रभु तेरी महिमा कहिय न जाय ॥टेक॥ थुति करि सुखी दुखी निन्दातैं, तेरैं समता भाय॥ प्रभु०॥१॥ जो तुम ध्यावै, थिर मन लावै, सो किंचित सुख पाय। जो नहिं ध्यावै ताहि करत हो, तीन भवनको राय॥ प्रभु०॥२॥ अंजन चोर

महा अपराधी, दियो स्वर्ग पहुंचाय। कथानाथ श्रेणिक समदृष्टी, कियो नरक दुखदाय ॥ प्रभु०॥३॥ सेव असेव कहा चलै जियकी, जो तुम करो सुन्याय। द्यानत सेवक गुन गहि लीजै, दोष सबै छिटकाय ॥ प्रभु० ॥४॥

(७७) राग विलावल।

प्रभु तुम सुमरनहीमें तारे ॥ टेक ॥ सूअर सिंह नौल वानरने, कहौ कौन व्रत धारे ॥ प्रभु० ॥१॥ सांप जाप करि सुरपद पायो, स्वान श्याल भय जारे। भेक वोक गज अमर कहाये, दुरगति भाव बिदारे ॥ प्रभु० ॥२॥ भील चोर मातंग जु गनिका, बहुतनिके दुख टारे। चक्री भरत कहा तप कीनौ, लोकालोक निहारे ॥ प्रभु० ॥३॥ उत्तम मध्यम भेद न कीन्हों, आये शरन उबारे। द्यानत राग दोष विन स्वामी, पाये भाग हमारे ॥

(७८) राग भैरों।

ऐसो सुमरन कर मेरे भाई, पवन थँभै मन कितहूँ न जाई ॥टेक॥ परमेसुरसों सांच रहीजै लोकरंजना भय तज दीजै ॥ ऐसो० ॥ १ ॥ जप अरु नेम दोउ विधि धारै, आसन प्राणायाम सं-

भारो। प्रत्याहार धारना कीजै; ध्यान समाधि महारस पीजै ॥ ऐसो० ॥२॥ सो तप तपो बहुरि नहिं तपना, सो जप जपो बहुरि नहिं जपना। सो व्रत धरो बहुरि नहिं धरना, ऐसे मरों बहुरि नहिं मरना ॥ ऐसो० ॥३॥ पंच परावर्तन लखि लीजै, पांचों इन्द्रकी न पतीजै। द्यानत पांचों लच्छि लहीजै, पंच परम गुरु शरन गहीजै ॥४॥

(७६) राग विलावल।

कहिवेकों मन सूरमा, करवेकों काचा ॥टेक॥ विषय छुड़ावै और पै, आपन अति माचा ॥ कहिवे० ॥ १ ॥ मिश्री मिश्रीके कहैं, मुँह होय न मीठा। नीम कहैं मुख कटु हुआ, कहुं सुना न दीठा ॥ कहिवे० ॥२॥ कहनेवाले बहुत हैं, करने कों कोई। कथनी लोक रिझावनी, करनी हित होई ॥ कहिवे० ॥३॥ कोड़ि जनम कथनी कथै, करनी विनु दुखिया। कथनी विनु करनी करै, द्यानत सो सुखिया ॥ कहिवे० ॥४॥

(८०) राग विलावल।

श्री जिननाम अधार, सार भजि ॥टेक॥ अगम अतट संसार उदधितैं, कौन उतारै पार ॥

श्रीजिन० ॥१॥ कोटि जनम पातक कटैं, प्रभुनाम लेत इक बार। ऋद्धि सिद्धि चरननसों लागै, आनन्द होत अपार ॥ श्रीजिन० ॥२॥ पशु ते धन्य धन्य ते पंखी, सफल करैं अवतार। नाम बिना धिक मानवको भव, जल बल ह्वै है छार ॥ श्रीजिन० ॥ ३ ॥ नाम समान आन नहिं जग सब, कहत पुकार पुकार। द्यानत नाम तिहूं पन जपि लै, सुरगमुकति दातार ॥४॥

(८१)

देखे सुखी सम्यकवान ॥टेक॥ सुख दुखको दुखरूप विचारैं, धारैं अनुभव ज्ञान ॥ देखे० ॥१॥ नरक सातमेंके दुख भोगैं, इन्द्र लखैं तिनमान। भीख मांगकै उदर भरैं न करैं चक्रीको ध्यान ॥ ॥ देखे० ॥२॥ तीर्थंकर पदको नहिं चावें जपि उदय अप्रमान। कुष्ट आदि बहु व्याधि दहत न, चहत मकरध्वज थान ॥ देखे० ॥३॥ आधि व्याधि निरबाध अनाकुल, चेतन जोति पुमान। द्यानत मगन सदा तिहिमाहीं, नाहीं खेद निदान ॥४॥

(८२)

ज्ञानी जीव दया नित पालैं ॥टेक॥ आरम्भतैं

परघात होत है, क्रोध घात निज टालैं ॥ ज्ञानी० ॥१॥ हिंसा त्यागि दयाल कहावै, जलै कषाय वदनमें । बाहिर त्यागी अन्तर दागी, पहुंचै नरकसदनमें ॥ ज्ञानी० ॥२॥ करै दया कर आलस भावी, ताको कहिये पापी । शांत सुभाव प्रमाद न जाकै, सो परमारथ व्यापी ॥ ज्ञानी० ॥३॥ शिथिलाचार निरुद्यम रहना, सहना बहु दुख भ्राता । द्यानत बोलन डोलन जीमन, करै जतनसों ज्ञाता ॥ ज्ञानी० ॥४॥

(८३)

कारज एक ब्रह्महीसेती ॥टेक॥ अंग संग नहिं बहिरभूत सब, धन दारा सामग्री तेती ॥ कारज० ॥१॥ सोल सुरग नव ग्रैविकमें दुख, सुखित सातमें ततका वेति । जा शिवकारन मुनि गन ध्यावैं, सो तेरे घट आनन्दखेती ॥ कारज० ॥ ॥२॥ दान शील जप तप व्रत पूजा, अफल ज्ञान विन किरिया केती । पंच दरब तोतैं नित न्यारे, न्यारी राग दोष विधि जेती ॥ कारज० ॥३॥ तू अविनाशी जगपरकासी, द्यानत भासी सुकलावेती । तजौ लाल ! मनके विकलप सब, अनुभव

मगन सुविद्या एती ॥ कारज० ॥४॥

(८४)

चेतन खेलै होरी ॥ टेक ॥ सत्ता भूमि छिमा वसन्तमें, समता प्रान प्रिया संग गोरी ॥ चेतन० ॥१॥ मनको माट प्रेमको पानी, तामें करुना केसर घोरी। ज्ञान ध्यान पिचकारी भरि भरि, आपमें छोरै होरा होरी ॥ चेतन० ॥२॥ गुरुके वचन मृदंग बजत हैं, नय दोनों डफ ताल टकोरी। संजम अतर विमल व्रत चोवा, भाब गुलाल भरै भर भोरी ॥ चेतन० ॥३॥ धरम मिठाई तप बहु मेवा समरस आनन्द अमल कटोरी। द्यानत सुमति कहै सखियनसों, चिरजीवो यह जुग जुग जोरी ॥ चेतन० ॥४॥

(८५)

भोर भयो भज श्रीजिनराज, सफल होंहिं तेरे सब काज ॥टेक॥ धन सम्पत मनबांछित भोग, सब विधि आन बनैं संयोग ॥ भोर० ॥१॥ कल्प वृच्छ ताके घर रहै, कामधेनु नित सेवा वहै। पारस चिन्तामनि समुदाय, हितसों आय मिलैं सुखदाय ॥ भोर० ॥२॥ दुर्लभतैं सुलभ्य ह्वै जाय

रोग सोग दुख दूर पलाय। सेवा देव करैं मन लाय, विघन उलट मंगल ठहराय ॥ भोर० ॥३॥ डायन भूत पिशाच न छलै, राजचोरको जोर न चलै। जस आदर सौभाग्य प्रकास, द्यानत सुरग मुकतिपद्वास ॥ भोर० ॥४॥

(८६)

आयो सहज बसन्त खेलैं सब होरी होरा ॥ ॥टेक॥ उत बुधि दया छिमा बहु ठाढ़ीं, इत जिय रतन सजै गुन जोरा ॥ आयो० ॥१॥ ज्ञान ध्यान डफ ताल बजत हैं, अनहद शब्द होत घनघोरा। धरम सुराग गुलाल उड़त है, समता रंग दुहूँने घोरा ॥ आयो० ॥२॥ परसन उत्तर भरि पिचकारी छोरत दोनों करि करि जोरा। इततैं कहै नारि तुम काकी, उततैं कहैं कौनको छोरा ॥ आयो० ॥ ॥३॥ आठ काठ अनुभव पावकमें, जल बुझ शांत भई सब ओरा। द्यानत शिव आनन्दचन्द छवि, देखैं सज्जन नैन चकोरा ॥४॥

(८७)

अजितनाथसों मन लावो रे ॥ टेक ॥ करसों ताल वचन मुख भाषौ, अर्थमें चित्त लगावो रे

॥ अजित० ॥१॥ ज्ञान दरस सुख बल गुनधारी, अनन्त चतुष्टय ध्यावो रे। अवगाहना अवाध अमूरत, अगरु अलघु बतलावो रे ॥ अजित० ॥२॥ करुनासागर गुनरतनागर, जोति उजागर भावो रे। त्रिभुवननायक भवभयघायक आनन्द दायक गावो रे ॥ अजित० ॥३॥ परम निरंजन पातकभंजन, भविरंजन ठहरावो रे। द्यानत जैसा साहिब सेवो, तैसी पदवी पावोरे ॥

(८८) राग असवारी

अब हम अमर भये न मरेंगे ॥ टेक ॥ तन कारन मिथ्यात दियो तज, क्यों करि देह धरैंगे ॥ अब० ॥१॥ उपजै मरै कालतैं प्रानीं, तातैं काल हरैंगे। राग दोष जग वंध करत हैं, इनको नाश करेंगे ॥ अब० ॥२॥ देह विनाशी मैं अविनाशी भेदज्ञान पकरैंगे। नासी जासी हम थिरवासी, चोखे हों निखरेंगे ॥ अब० ॥३॥ मरे अनन्त बार बिन समझैं, अब सब दुख विसरैंगे। द्यानत निपट निकट दो अक्षर, विन सुमरैं सुमरैंगे ॥४॥

(८९) राग आसावरी।

भाई ! ज्ञानी सोई कहिये ॥ टेक ॥ करम

उदय सुख दुख भोगेतैं राग विरोध न लहिये ॥ ॥ भाई० ॥१॥ कोऊ ज्ञान क्रियातैं कोऊ, शिव-मारग बतलावै । नय निहचै विवहार साधिकै, दोऊ चित्त रिझावै ॥ भाई० ॥२॥ कोई कहै जीव छिन-भँगुर, कोई नित्य बखानै । परजाय दरबित नय परमानै, दोऊ समता आनै ॥ भाई० ॥३॥ कोई कहै उदय है सोई, कोई उद्यम बोलै । द्यानत स्या-द्वाद सुतुलामें, दोनों वस्तैं तोलै ॥ भाई० ॥४॥

(६०) राग आसावरी

भाई ! कौन धरम हम पालैं ॥ टेक ॥ एक कहैं जिहि कुलमें आये, ठाकुरको कुल गालैं ॥ भाई० ॥१॥ शिवमत बौध सु वेद नयायक, मी-मांसक अरु जैना । आप सराहैं आगम गाहैं, का-की सरधा ऐना ॥ भाई० ॥२॥ परमेसुरपै हो आया हो, ताकी बात सुनी जै । पूछैं बहुत न बोलैं कोई बड़ी फिकर क्या कीजै ॥ भाई० ॥३॥ जिन सब मतके मत संचय करि, मारग एक बताया । द्या-नत सो गुरु पूरा पाया भाग हमारा आया ॥४॥



सूची-पत्र

पद्मपुराण ।

स्वर्गीय कविवर रविषेणाचार्य कृत संस्कृतका अनुवाद पंडित दौलतरामजाने इतनी सरल और मिष्ट भाषामें लिखा है कि उसको आजकलकी भाषामें बदलनेकी इच्छा नहीं होती कारण वे सीधे साधे और भावपूर्ण शब्द पुरुष ही नहीं हमारा स्त्री समाज तथा बालक बालिकायें भी सरलतासे समझ लेता है।

जबकि देशमें रामायणका प्रचार जोरोंसे है, तब उसी कथाको समझानेके लिये पद्मपुराणका स्वाध्याय अत्यंत उपयोगी है। शास्त्राकार खुले पत्रोंके ग्रन्थकी न्याछावर १०) रुपया।

हरिवंशपुराण ।

श्री कृष्णकी जैन धर्ममें कितनी मान्यता है तथा कौरव, पांडव आदिका इतिहास, इस महान ग्रन्थमें सपूर्ण भरा हुआ है। भगवान नेमिनाथ की जीवनीसे तमाम जैन समाजको काफी शिक्षा मिलती है। नीतिपूर्ण एतिहासिक घटनायें पढ़कर मन गद्‌गद हो जाता है। इस ग्रन्थके लेखक वही स्वर्गीय प० दौलतरामजी हैं जिन्होंने सरल भाषा लिखनेमें काफी ख्याति प्राप्त की है, यह ग्रन्थ भी शास्त्राकार सरल भाषामे छपा है। न्यो० ८) रु०

श्री रत्नकरण्ड श्रावकाचार ।

यह ग्रन्थ पांच वार छप चुका है, इसके सम्बन्धमें कुछ भी लिखना सूर्यको दीपक दिखाना है। प० सदासुखजीने श्रावकोंके लिये यह पथ-प्रदर्शक ग्रन्थ लिखकर महान उपकार किया है। शास्त्राकार न्यो० ५॥) रुपया

पुरुषार्थ सिद्ध्युपाय ।

शास्त्राकार पुरानी और नवीन टीकाओं सहित (स्व० प० टोडरमलजी कृत) छपाया है। न्योछावर ४) रुपया मात्र।

तत्वार्थ राजवार्तिक

स्व० प० पन्नालालजी दूनीवाल कृत पुरानी भाषामें एक खड ही छपा था उसका मूल्य सिर्फ ४) रक्खा है।

जैनक्रिया कोष ।

स्व० प० दौलतरामजीने आचार सम्बन्धी इस ग्रन्थको लिखकर बहुत कुछ स्पष्ट कर दिया है। वही दुवारा छपाया था पर थोड़ी कापी बाकी हैं, अतएव जिन्हें दरकार हो शीघ्र ही मगा लें। न्योछावर ३) रुपया।

चरचा समाधान ।

स्व० पं० भूधरदासजी कृत शास्त्राकार यह छपाया गया है, इसमें तमाम प्रामाणिक ग्रन्थोंके आधारसे सैकड़ों शकाओंका समाधान किया है (गोमट्टसार, राजवार्तिक जैसे ग्रन्थोंके आधारसे) न्यो० २) रु० मात्र।

सुकुमाल चरित्र

इसका मिलना भी दुष्प्राप्य था, अतएव उसी शास्त्रीय भाषामें जो जयपुर निवासी श्रीमान प० नाथूलालजी दोशीने सकलकीर्ती कृत सस्कृतसे भाषामें लिखी थी प्रगट की है, वास्तवमें सुकमालकी जीवनी पढ़कर आपका हृदय पवित्र हो जायगा, कई उत्तमोत्तम रगीन चित्र भी दिये हैं। न्यो० १)

बृहद् विमल पुराण ।

यह ग्रन्थ अप्राप्य था इसको संस्कृतमें प्राप्त कर उसकी सरल भाषा-टीका श्रीमान माननीय प० गजाधरलालजी, न्यायतीर्थसे लिखाकर छपाया गया है। द्वितीय वृत्तिका मूल्य ६) मात्र।

शांतिनाथ पुराण ।

यह ग्रन्थ भी संस्कृतमें था, इससे हिन्दी भाषा वाले स्वाध्यायसे वंचित ही रह जाते थे, अतएव इसका सरल भाषामें प० लालारामजी शास्त्री द्वारा अनुवाद कराया गया है। शास्त्राकार छपाया है। मूल्य ६) रुपया।

आदिपुराण ।

इस बड़े भारी ग्रन्थको सार रूपमें सरल भाषा बचनिकामें पं० बुद्धि-लाल श्रावकसे लिखवाया गया है। सिर्फ श्रृङ्गार भाग छोड़कर बाकी प्रत्येक विषयको ग्रन्थमें लानेका प्रयत्न किया है, यही कारण है कि थोड़े ही समयमें ग्रन्थकी द्वितियावृत्ति करानी पड़ी। शास्त्राकार, मूल्य ६) रुपया।

मल्लिनाथ पुराण ।

प० गजाधरलालजी शास्त्रीने संस्कृतसे हिन्दीमें इसकी भाषाटीका की है। ग्रन्थको हिन्दी जाननेवालोंके लिये ही छपाया है। जैन समाजने इसको थोड़े ही समयमें मगाकर खतम कर दिया है। यह द्वितीय वृत्ति है न्योछावर ४) रुपया मात्र।

पुन्याश्रव कथा कोष ।

इस ग्रन्थका मिलना १५ वर्षसे बन्द हो गया था उसीको सचित्र ४८ चित्र देकर छपाया है, इसकी कथायें कितनी सुन्दर और शिक्षाप्रद हैं यह हमारे धर्मात्मा पाठक स्वाध्याय करके ही अनुभव प्राप्त कर सक्ते हैं भाषा वर्तमान ढंगकी सरल और मुहावरेदार है। फिर भी इस ४०० पृष्ठके ग्रन्थकी न्योछावर २॥) मात्र है।

नित्य पूजा संग्रह

३२ पृष्ठकी पुस्तकमें दैनिक काममें आनेवाली तमाम पूजाओंका सगृह किया गया है। मू० ≈)

सचित्र कथा ग्रन्थ

शील कथा—सचित्र कई चित्रोंसे विभूषित, कई एडीशन हो चुके हैं। मूल्य ।≈)

दर्शन कथा—कई चित्रोंसे विभूपित मूल्य ॥) मात्र।

श्रावकाचारकी कहानियां—इसमें मोक्षमार्गकी सच्ची कहानियां हैं। ६ उत्तमोत्तम हाफटोन चित्र भी दिये गये हैं, तिस पर भी मू० ।≈) मात्र।

दान कथा—सचित्र कई वार छप चुकी है। मू० ।)

निशिभोजन कथा—रात्रि भोजनका ज्वलत दृष्यत कव्हर पर है मू०।)

मौनव्रत कथा—सचित्र द्वितीवृत्ति मू० ।)

जैनव्रत कथा—छोटी कथाओंकी पुस्तक है। मू० ≈)॥

सप्त व्यसन कथा—(सचित्र) कई चित्रोंसे विभूषित नवीन ढगसे छपी है। मू० १॥।)

चरुदत्त चरित्र—संगीतके ढंगसे वर्तमान हाथरसी गानोंको लक्ष्यमें रखकर सुंदर ढगसे लिखा गया है, सचित्र है, मू० ॥।)

प्रद्युम्न चरित्र—प० गुणभद्रजी कविरत्नकी लेखनीसे लिखा हुआ काव्य-गून्थ है तीनरगा कव्हर मू० ॥)

सुकुमाल चरित्र—इसकी पुण्यमय जीवनी पढ़कर आपका मन गदगद हो जायगा। तीनरगा चित्र भी दर्शनीय है। मू० १)

आराधना कथा कोष (प्रथम भाग)—८ चित्रोंसे विभूषित होकर नवीन ही छपकर तैयार हुआ है, इसमें २५ धार्मिक कथायें हैं। पृष्ठ २०० मू० १।)

नाटक

दरशव्रत नाटक—दरशन कथाके आधार पर लिखा हुवा खेलने योग्य अच्छा सचित्र है। मू० ।)

रामचंद्र चौबीसी पाठ

मारवाड़ प्रांतमें प० रामचदजी कृत चौवीसी पाठका अधिक प्रचार है। अतएव दुबारा हमने फिर इसको छपा दिया है। प्रथमावृत्तिकी अपेक्षा अवकी वार बड़ा बड़ा टाइप तथा पुष्ट कागज और सुन्दर जिल्द भी बधवा दी है। न्यो० १) रुपया मात्र।

नित्य पाठ गुटका

सस्कृत भाषाके १८ पाठोंका पाकेटमें रखने योग्य गुटका है। न्यो० ॥) मात्र।

सामायक पाठ मेरी भावना

यह भी गुटका साइजमें सार्थ छपकर चार वार विक चुकी है। न्यो० -)

राम बनवास उर्फ जैन रामायण।

पद्मपुराणके आधारसे सुन्दर जोशीली रामायणकी तरह भावपूर्ण कविता में कविरत्न प० गुणभद्रजीने इसको लिखकर साहित्यका बड़ा उपकार किया है। पृष्ठ सख्या १७० कई हाफटोन सुन्दर चित्र हैं। मूल्य केवल १) मात्र।

षोड़ससंस्कार

आदि पुराणके आधारसे इस पुस्तकका सपादन कराया गया है, जन्मसे लेकर मरण पर्यंत सोलह सस्कार होते हैं उनको पूर्ण विधीसे सरल भाषामें समझाया गया है, प्रत्येक गृहस्थके यहां इसकी १ प्रति अवश्य ही रहनी चाहिये। कव्हर पर एक सुंदर रगीन चित्र दिया गया है। इसको प्रथमावृत्तिका मूल्य १) था पर द्वितिया वृत्तिका मूल्य ॥) मात्र कर दिया है।

भाद्रपद पूजा संग्रह

इस पुस्तकमें तमाम आवश्यकीय पूजाओंका सग्रह कर दिया गया है। भादों महीनेमें इस पुस्तकको मगा लेनेसे फिर और कोई पुस्तकको आवश्यकता नहीं रहेगी। मू० ॥=)

जैन शतक—इसमें १०० उपयोगी शिक्षाप्रद सवैये स्व० कविवर भूधरदासजीके दिये गये हैं। न्यो० ≡) मात्र।

सूत्र भक्तामर महावीराष्टक—तीनों पाठ एक साथ बड़े अक्षरोंमें दिये हैं। न्यो० =)

समायक पाठ सार्थ—पं० कस्तूरचंद कृत मू० -)

पंच मंगल—मूल पांचों मंगल और अभिषेक पाठ भी है। मू० -)

समाधि मरण—बम्बईया टाइपमें नया ही छपा है। बड़ा समाधिमरण यही है। न्यो० -)

दर्शन पाठ—पृष्ठ १६ प्रतिदिन काममें आने वाले पूजा पाठ स्तुति, आरती आदि हैं। न्यो० -)

मेरी भावना—पं० जुगलकिशोर कृत पृष्ठ १६ उत्तम वार्डर वाली मू०)॥

कुमारी अनंतमती—को पं० गुणभद्रजी कविरत्नने कवितामें लिखा है। न्यो० =)

विद्युत चोर—नाटक नवीन छपा है। मू० ।)

अरहंतपासा केवली—इस छोटीसी पुस्तकमें कविवर वृन्दावनदासजीने शुभ अशुभ जाननेके लिये बड़ा सुन्दर उपाय बताया है। न्यो० -)॥ मात्र।

निर्वाणकांड आलोचना, सामायक पाठ मू० -)

विनती संग्रह—सचित्र नवीन छपकर तैयार है। -)॥

छहढाला—मूल दौलतरामजी कृत मू० -)

बारहमासा संग्रह - सीताजी, राजुल,मुनिराज, वज्रदन्त चक्रवर्ती आदिके बारहमासा सम्मलित हैं। मू॰ -)॥

श्रावकबनिता रागनी—स्त्रियोंके लिये मंगलीक अवसरोंपर गाने योग्य उत्तमोत्तम धार्मिक राग-रागनी हैं। न्यो॰ ≡)

सुगंध दशमी कथा—की तीसरी आवृत्ति तैयार है -)॥

रविव्रत कथा—की सातवीं आवृत्ति छप गई है -)॥

रक्षाबन्धन कथा—सचित्र तैयार है मूल्य =)

भक्तामर संकटहरण विनती—भी दूसरी बार छपा दी है मूल्य -)

भाग्य और उद्योग

यह उन आलसी व्यक्तियोके लिये है जो भाग्यके भरोसे बैठे रह कर जीवन बिताना चाहते हैं इसमें उद्योगी की तारीफ की गई है—तीनरङ्गा चित्र कव्हर पर दिया है। मूल्य ।।) मात्र।

का गदर

यह हिन्दो की सुप्रसिद्ध ऐतिहासिक घटना पर लिखी गई पुस्तक है पृष्ट संख्या ४०० के लगभग होते हुए भी न्यो॰ १॥) रू॰

पोपोंकी ५ कहानियां

वर्तमानमें जो लोक मूढ़ताके कारण धार्मिकता की ओटमें अन्याय अत्याचार किये जाते हैं उनकी इसमें खूब ही मजेदार भाषामें धज्जियां उड़ाई हैं, हँस २ आप लोट पोट हो, जांयगे सचित्र पुस्तकका मूल्य ।।।) मात्र।

भैयाकी कहानी ।=) मिठाईका दोना ।=) मधुवन १) प्रेम ।।)

चौवीस दंडक - भाषा कवितामे मू० -)

संसार दुःख दर्शन—अच्छी भावपूर्ण कवितामें लिखा है। मू० -

कर्मदहन विधान - कवि चंद्रजी कृत सरल हिन्दी कवितामे यह विधान लिखा गया है। मू० =)

पंच परमेष्ठी विधान—यह भी सरल हिन्दीमें पद्य रूपमे लिखा गया है। न्यो० =)

पंच कल्याणक विधान—कविवर ताराचंदजी कृत यह ७८ पृष्ठका विधान है। मू० =)

सम्मेद शिखर विधान—कई वार छप चुका है।मू०-)

जैनपद भजन

दौलत जैनपद संग्रह—मे अध्यात्मिक कविने ऐसे उत्तमोत्तम भजनोंको लिखा है कि उसकी तारीफ करना सूर्यको दीपक दिखाना है। मू० ॥)

जिनेश्वरपद संग्रह—इसके कई एडीशन हमारे यहां हो चुके हैं। न्यो० ।-)

द्यानतपद संग्रह—इसमे द्यानतरायजीके उपयोगी पद हैं

महाचंद पद संग्रह—यह मारवाड़के अच्छे कवि हुए हैं, उनके भजनोंका संग्रह है। मू० ।)

इष्ट छत्तीसी—(सार्थ) कई बार छप चुकी है। न्यो० -) आना।

प्रेम तरंग (प्रथम भाग)—कविवर सूरजभानजी "प्रेम" नवीन तर्जको कविता करनेमें कमाल करते हैं आपने वाइस-कोपकी नवीन २ तर्जोंमें इस प्रेम तरंगको लिखा है। न्यो० एक आना।

प्रेम तरंग (द्वितीय भाग)—उक्त कविने ही यह दूसरा भाग लिखा है। न्यो० ‐)

त्रिमुनि पूजा—ब्र० प्रेमसागरजीने भक्तिसे प्रेरित होकर आ० सूर्यसागरजीकी पूजन लिखी है। न्यो० =)

पिंड शुद्धि अधिकार—अर्थात् मुनिराजकी आहार विधी वर्तमानमें जो मुनियोंका भ्रमण हो रहा है, इसलिये यह पुस्तक बहुत उपयोगी है। सचित्र पुस्तकका मूल्य =)

सज्जन चित्त वल्लभ—आचार्य मल्लिषेण कृत मुनियोंको शिथिलावादी न होनेके लिये यह मास्टरका काम करेगी. प्रत्येक श्रावकको चाहिये कि इसे अवश्य देखें। न्यो० ≡)

दश लक्षण धर्म संग्रह—अर्थात धर्म कुसमोद्यान नामक पुस्तक बिलकुल नवीन पं० पन्नालालजी, साहित्याचार्यसे लिखवा कर तैयार की है, प्रत्येक श्रावकको इसे अवश्य ही पढ़ना चाहिये। ऊपर संस्कृत नीचे हिन्दी टीका दी हुई है जिससे सबको समझनेमें सुविधा होगी। न्यो० ।‐)

छहढालाकी कुंजी—(सचित्र) छहढालाकी छहोंढालोंके शब्दार्थ इस तरह सरल भाषामें लिख दिये हैं कि मास्टरकी जरूरत नहीं है। इस कुंजीको मंगा लेनेसे बालक स्वयं पढ़ सकते हैं। मू० =) मात्र।

आदर्श नाटक—इसमें दिल्ली अनाथालयके बालकों द्वारा गाये जाने वाले ड्रामाओंका सगृह सचित्र है। मू =)

सोमासती या बिगड़ेका सुधार—रात्रि भोजनपर अच्छा शिक्षाप्रद ड्रामा लिखा गया है। मू० =)

स्कूली पुस्तकें

रत्नकरन्ड श्रावकाचार—सचित्र (सार्थ) मय चार्ट सहित इतना उत्तम अभीतक नहीं छपा था उसे बहुत परिश्रमसे एक सुप्रसिद्ध विद्वान द्वारा सम्पादन कराया है। मू० ।-)

द्रव्य संग्रह—(सचित्र) मुख पृष्टपर छह द्रव्योंका भावपूर्ण दोरंगा चित्र देखकर आप द्रव्योंका रूप आसानीसे समझ लेंगे। उपयोगी कई चार्ट भी दिये गये हैं। सार्थ अन्य तमाम द्रव्य-सगृहोंसे उत्तम। छपाई सफाई सर्वोत्तम मू० ।-)

छहढाला—(सार्थ) कव्हर पर "जिन सुथिर मुद्रा देख मृग गण उपल खाज खुजावते" का भावपूर्ण चित्र अन्यय अर्थ आदि कठिन-कठिन उलझनों को हमारे सुयोग्य सम्पादकने सुलझानेका प्रयास किया है। छपाई सफाई सर्वोत्तम होनेपर भी मू० ।-) मात्र।

शिशुबोध जैन धर्म—प्रथम बालबोध जैन धर्मकी तरह बड़े-बड़े बम्बईया टाइपोंमें छपा है। १४ पृष्टका यह प्रथम भाग है, बारह बार छप चुका है। मू० -)

द्वितीय भाग—१० बार छप चुका है। मू० -)॥

तृतीय भाग—सचित्र बहुत ही उत्तम ढगसे लिखा गया है। मू०=) आठ बार छप चुका है।

चौथा भाग—सचित्र बहुतही सुंदरताके साथ छपाया गया है। मू०।-)

भावना संग्रह—पृष्ठ संख्या ३२ इसमें धर्म पचीसी, बारह भावना, भूधर, बुधजन, भगोतीदास, जयचंद, मंगतरायकी भावना सम्मिलित हैं, सोलह कारण भावना, वैराग्य भावना, मेरी भावना, ज्ञान पचीसी आदि भी सम्मिलित हैं।

जैन स्कूलोंके लिये

(पठनक्रमकी पुस्तकें तैयार हैं)

सचित्र जैन पुराणोंकी तरह पठनक्रमकी पुस्तकें नवीन ढंगसे सरल भाषामें अनुवाद कराके, सुन्दर नवीन टाइपोंमें छपवाकर, भाव पूर्ण रंगीन चित्रोंको देकर जैन-साहित्यका घर घरमें प्रचार सुलभता से हो यही ध्यान कार्यालयके संचालकोंका सदैव रहा है।

पाठको आप नीचे माफिक नवीन पुस्तकोंको मंगाकर देखे अगर पसन्द न हो तो दाम वापिस भेज दिये जायेंगे।

द्रव्यसंग्रह सार्थ (सचित्र) पृष्ठ ६६ मूल्य	|-)
छहढाला सार्थ (सचित्र) पृष्ठ ९० मूल्य	|-)
छहढालाकी कुञ्जी (सचित्र)	=)
रत्नकरन्ड श्रावकाचार (सार्थ) सचित्र	|-)
श्रावकाचारकी सच्ची कथायें (सचित्र)	|=)
जैन-भारती (कविरत्न पं० गुणभद्रजी कृत)	१|)
रामवनवास अथवा जैन रामायण (काव्य-सचित्र)	१)
कुमारी अनन्तमती (सचित्र)	=)
जैन शतक (भूधरदासजी कृत)	≡)
छहढाला (मूल)	-)
शिशुबोध जैनधर्म प्रथम भाग	-)
,, ,, द्वितीय भाग	-)||
,, ,, तृतीय भाग	≡)
,, ,, चतुर्थ भाग	|-)
जैनधर्म शिक्षावली (सचित्र) (पं० मूलचन्दजी	



भारतवर्ष में एक मात्र

दिगम्बर चित्रो को तीन रंगमें छापकर प्रकाशित करने वाला

सच्चा जिनवाणी संग्रह ३)

द्रव्यसंग्रह (सचित्र) |-)

छहढाला (सचित्र) |-)

छहढाला की कुञ्जी =)

रत्नकरन्डश्रावकाचार सार्थ |-)

श्रावकाचारकी कहानियां |=)

कुमारी अनन्तमती (काव्य) =)

अरहंतपासा केवली -)||

बारहमासा संग्रह -)||

सम्मेदशिखर विधान -)

दशव्रत नाटक |)

विजातिय विवाह मीमांसा ||=)

प्रद्युम्न चरित्र (सचित्र)

छप रहा है न्यो० ३)

पुन्यास्त्रव कथा कोष ४)

सम्मेद शिखर जी ||)

पावापुरी |=)

गिरनार जी ||)

चंद्रगुप्तके १६ स्वप्न ||)

सीताकी अग्नि परिक्षा ||)

नेमप्रभूका विवाह ||)

समोशरण की रचना ||)

वड़वानी ||)

राजगृही ||)

मधुविन्दु |=)

पटलेश्या |=)

माताके स्वप्न ||)

भरतचक्रवर्तीके स्वप्न ||)

कमठका उपसर्ग ||)

द्रौपदी चीरहरण ||)

तीर्थङ्कर चित्रावली ३)

धन्यकुमार चरित्र

इस ग्रंथको नवीन टाइपमें पुस्तकाकार अभी छपाया गया है। कविता बहुत ही भावपूर्ण तथा चरित्र आदर्श है। इसको पढ़कर प्रत्येक प्राणी शिक्षा ग्रहणकर सकता है। न्यो० ।॥)

आराधना कथा-कोष

तीनों भाग छपकर तैयार हो गये हैं। पृष्ठ संख्या ६०० के लगभग, सजिल्द ग्रन्थका दाम ३॥) रखा गया है। कथायें इस ग्रन्थमें लिखी गई हैं। प्रत्येक कथा को इतनी सरल भाषामें लिखाया गया है कि १० वर्ष के बालकसे लेकर स्त्रियें तथा पुरुष उपन्यासकी तरह आद्योपान्त पढ़े बगैर पुस्तकको छोड़ नहीं सकते।

कई एक कहानियां इतनी भावपूर्ण हैं कि, पढ़ते-पढ़ते आप कभी रो पड़ेंगे कभी हँसने लगेंगे और कभी तो जैन-धर्मकी उदारता देखकर आप उछल पड़ेंगे। वास्तवमें इस ग्रन्थका आजकलके युगमें खूबही प्रचार करना चाहिये। कई वर्षोंसे इस ग्रन्थकी एक भी प्रति नहीं मिलती थी। इतना बड़ा ग्रन्थ करीब ४ महिनेके कठिन परिश्रमसे तैयार हुआ है।

बड़ी बहू बड़े भाग

यह १ वर्ष पहिले खतम हो चुकी थी पर गत वर्ष इसकी खूब मांग हुई इससे हमने दुबारा छपा दी है। गल्प क्या है एक जीता जागता समाजका नग्न चित्र है। जिसे पढ़कर बाल्यविवाहके समर्थकोंका सिर नीचा हो जाता है। न्यो० एक आना मात्र सै० ३)

वैराग्य-शतक

इसमें आ० गुणविजयजीने चुने हुए उपदेशोंको एकसाथ संग्रह करके मनुष्य मात्रका उपकार किया है। इसको पढ़कर तथा बराबर पढ़ते रहनेसे यह जीव संसारी झंझटोंसे छुट्टी पा सकता है, संसारकी अनित्यताका खासा दिग्दर्शन कराया गया है। न्यो० ⁄) सै० ३)

पार्श्वनाथ पुराण

शास्त्राकार पुष्ट कागज बड़ाटाइप और सुन्दर छपाईके साथही जिल्द भी बंधा दी है। स्व० भूधर-दासजीने इस महत्वपूर्ण ग्रंथको रचकर जैन सिद्धान्तके रहस्यको खूब ही स्पष्ट कर दिया है। प्रत्येक धर्म प्रेमी सज्जनको इसकी १ प्रति अवश्य ही मंगाकर देखनी चाहिये। न्यो० खुले पत्र १॥) सजिल्द २)

चौबीसी पुराण

अभीतक अलग २ तीर्थंकरोंके अलग २ नामोंसे पुराण निकाले गये थे. मुझे कई ग्राहकोंने उक्त पुराणकी आवश्यकता दर्शाई तब मैंने पं० पन्नालालजी साहित्याचार्यसे उक्त ग्रँथका सम्पादन कराके ग्रंथ प्रकाशन किया है। ग्रंथ शास्त्राकार साइजमें चारों तरफ बार्डर देकर बहुतही सुन्दर छपाया गया है। मुख पृष्टपर जन्म कल्याणकका तिरंगा चित्र भी दिया गया है। जो दर्शनीय है।

एकबार प्रत्येक भाई व बहिनोंको इसका स्वाध्याय अवश्य ही करना चाहिये। न्यो० ३) सजिल्दका ४)।

नवीन तीर्थ यात्रा

यात्राका समय आ गया, सारे भारतवर्षके क्षेत्रोंका समझमें आने लायक यही संग्रह है जो एक अनुभवी विद्वान द्वारा सम्पादन कराके ८ उत्तम दर्शनीय चित्रोंसे विभूषित किया है जहां २ रेल, मोटर कच्चा रास्ता है इसका पूरा विवरण है पुराने बड़े २ पोथोंसे जो लाभ नहीं निकल सकता वह हमारी इस ६०पृष्ठकी पुस्तकसे आसानीसे निकल जायगा, परदेशमें एक मित्र की तरह आपको पथप्रदर्शक होगी। न्यो० ।||) मात्र।

बुधजन विलास

प्रकाशक :—दुलीचंद परवार
जिनवाणी प्रचारक कार्यालय,
१६१।१, हरीसन रोड, कलकत्ता।

छः आना

बुधजन विलास

१ प्रभाती

प्रात भयो सब भविजन मिलिकै, जिनवर पूजन आवो ॥ प्रात० ॥ टेक ॥ अशुभ मिटावो पुन्य बढ़ावो, नैननि नींद गमावो ॥ प्रा० ॥ १ ॥ तनको धोय धारि उजरे पट, सुभग जलादिक ल्यावो । वीतरागछबि हरखि निरखिकै, आगमोक्त गुण गावो ॥ प्रा० ॥ २ ॥ शास्तर सुनो भनो जिनवानी, तप संजम उपजावो । धरि सरधान देव गुरु आगम, सात तत्त्व रुचि लावो ॥ प्रा० ॥ ३ ॥ दुःखित जनकी दया ल्याय उर, दान चारिविधि द्यावो । राग दोष तजि भजि निज पदको, बुधजन शिवपद पावो ॥ प्रा० ॥ ४ ॥

२ प्रभाती ।

किंकर अरज करत जिन साहिब, मेरी ओर

निहारो ॥ किंकर ॥ टेक ॥ पतितउधारक दीन दयानिधि, सुन्यै तोहि उपगारो। मेरे औगुनपै मति जावो, अपनो सुजस विचारो ॥ किं०॥१॥ अबज्ञानी दीसत हैं तिनमैं, पक्षपात उरझारो। नाहीं मिलत महाव्रतधारी, कैसैं ह्वै निरवारो ॥ किं० ॥ २ ॥ छबी रावरी नैननि निरखी, आगम सुन्यौ तिहारो। जात नहीं भ्रम क्यों अब मेरो, या दूषनको टारो॥ किं० ॥३॥ कोटि बातकी बात कहत हूं, यो ही मतलब म्हारो। जौलौं भव तौलौं बुधजनको, दीज्ये सरन सहारो ॥ किं० ॥ ४ ॥

३ तिताला

पतितउधारक पतित रटत है, सुनिये अरज हमारी हो ॥ पतित० ॥ टेक ॥ तुमसो देव न आन जगतमें, जासौं करिये पुकारी हो ॥प०॥१॥ साथ अविद्या लागअनादिकी, रागदोष विस्तारी हो। याहीतै सन्तति करमनिकी, जनममरनदुखकारी हो ॥ प० ॥ मिलै जगत जन जो

भरमावै, कहै हेत संसारी हो। तुम बिनकारन शिवमगदायक, निजसुभावदातारी हो ॥० ॥३॥ तुम जाने बिन काल अनन्ता, गति गतिके भव धारी हो। अब सनमुख बुधजन जांचत है, भवदधि पार उतारी हो ॥ पतितन ॥ ४ ॥

४ तिताला

और ठौर क्यों हेरत प्यारा, तेरे हि घटमें जाननहारा ॥ और० ।टेक। चलन हलन थल वास एकता, जात्यान्तरतैं न्यारा न्यारा। और ॥१॥ मोहउदय रागी द्वेषी है, क्रोधादिकका सरजनहारा। भ्रमत फिरत चारौं गति भीतर जनम मरन भोगतदुख भारा ॥ और० ॥ २ ॥ गुरु उपदेश लखै पद आपा, तबहिं विभाव करै परिहारा। ह्वै एकाकी बुधजन निश्चल, पावै शिवपद सुखद अपारा ॥ और० ॥ ३ ॥

५ तिताला

काल अचानक ही ले जायगा, गाफिल होकर रहना क्या रे ॥ काल० ॥ टेक ॥ छिन हूं

तोकूं नाहिं बचावैं, तौ सुभटनका रखना क्या रे ॥ काल० ॥ १ ॥ रंच सवाद करिनके काजै, नरकनमैं दुख भरना क्या रे। कुलजन पथिकनिके हितकाजैं, जगत जालमें परना क्या रे। काल० ॥ २ ॥ इंद्रादिक कोउ नाहिं बचैया, और लोकका शरना क्या रे। निश्चय हुआ जगतमें मरना, कष्ट परे तब डरना क्या रे काल० । ३ । अपना ध्यान करत खिर जावै, तौ करमानेका हरना क्या रे। अब हित करि आरत तजि बुधजन, जन्म जन्ममे जरना क्या रे ॥ काल० ।४।

६ भजन

म्हे तो थापर वारी, वारी वीतरागीजी शांत छबी थांकी आनदकारी जी ॥ म्हे० ॥ टेक । इंद्र नरिंद्र फनिंद्र मिलि सेवत, मुनि सेवत रिधिधारी जी ॥ म्हे ॥ १ ॥ लख अविकारी परउपकारी, लोकालोकनिहारी जी ॥ म्हे०।२। सब त्यागी जा कृपातिहारी बुधजन ले बलिहारी जी ॥ म्हे० ॥ ३ ॥

७ भजन।

या नित चितवो उठिकै भोर, मै हूं कौन कहांतैं आयो, कौन हमारी ठौर ॥ या नित०टेक॥ दीसत कौन कौन यह चितवत,कौन करत है शोर। ईश्वर कौन कौन है सेवक, कौन करे झकझोर ॥ या नित० ॥१॥ उपजत कौन मरैको भाई, कौन डरे लखि घोर। गया नहीं आवत कछु नाहीं, परिपूरन सब ओर ॥ या नित० ॥२॥ और और में और रूप है, परनतिकरि लइ और। स्वांग धरैं डोलौ याहीतैं तेरी बुधजन भोर ॥ या नित० ॥३॥

८ भजन।

श्रीजिनपूजनको हम आये, पूजत ही दुखदुंद मिटाये ॥ श्रीजिन० ॥ टेक ॥ विकलप गयो प्रगट भयो धीरज अद्भुत सुख समता बरसाये। आधि व्याधि अब दीखत नाहीं, धरम कलपतरु आंगन थाये ॥ श्रीजिन० ॥ १ ॥ इतमैं इन्द्र चक्रवति इतमैं,इतमैं फनिंद खड़े सिर नाये।

मुनिजनवृंद करैं थुति हरषत, धनि हम जनमैं पद परसाये॥ श्रीजिन० ॥२॥ परमौदारिकमैं परमातम, ज्ञानमई हमको दरसाये। ऐसे ही हममें हम जानैं, बुधजन गुन मुख जात न गाये ॥ श्रीजिन० ॥३॥

९ राग—ललित एकताली।

बधाई राजै हो आज राजै, बधाई राजै, नाभिरायके द्वार। इन्द्र सची सुर सब मिलि आये, सजि ल्याये गजराजै ॥बधाई० ॥ १॥ जन्मसदनतैं सची ऋषभ ले, सौंपिदये सुरराजै गजपै धारि गये सुरगिरिपै, न्हौंन करनके काजै बधाई० ॥२॥ आठ सहस सिर कलस जु ढारे, पुनि सिंगार समाजै। ल्याय धरचौ मरुदेवी करमैं हरि नाच्यौ सुख साजै॥ बधाई ॥ ३॥ लच्छन व्यंजन सहित सुभग तन, कंचनदुति रवि लाजै। या छबि बुधजनके उर निशि दिन, तीनज्ञानजुत राजै ॥ बधाई० ॥४॥

१०—ललित तिताली।

हो जिनवानी जू, तुम मोकौं तारोगी॥

हो० ॥टेक॥ आदि अन्त अविरुद्ध वचनतैं, संशय भ्रम निरबारोगी ॥ हो० ॥१॥ ज्यौं प्रतिपालत गाय वत्सकौं, त्यों ही मुझकौं पारोगी। सनमुख काल बाघ जब आवै, तब तत्काल उबारोगी ॥ हो० ॥२॥ बुधजन दास बीनवै माता, या विनती उर धारोगी। उलझि रह्यो हूं मोहजालमें, ताकौं तुम सुरझारोगी॥ हो० ॥ ३॥

११—राग विलावल कनड़ी।

मनकैं हरष अपार—चितकैं हरष अपार, वानी सुनि ॥टेक॥ ज्यौं तिरषातुर अम्रत पीवत, चातक अंबुद धार ॥ वानी सुनि० ॥१॥ मिथ्या तिमिर गयो ततखिन हो, संशयभरम निवार। तत्त्वारथ अपने उर दरस्यौ, जानि लियो निज सार ॥ वानी सुनि० ॥२॥ इन्द नरिंद फनिंद पदीधर, दीसत रंक लगार। ऐसा आनंद बुधजनके उर, उपज्यौ अपरंपार ॥ वानी सुनि०।३।

११—राग अलहिया।

चन्दाजिनेसुर नाथ हमारा, महासेनसुत

लगत पियारा ॥ चन्द० ॥टेक॥ सुरपति नरपति फनिपति सेवत, मानि महा उत्तम उपगारा। मुनिजन ध्यान धरत उरमाहीं, चिदानंद पदवीका धारा ॥ चन्द० ॥१॥ चरन शरन बुधजन जे आये, तिन पाया अपना पद सारा। मंगलकारी भवदुखहारी स्वामी अद्भुतउपमावारा॥ चन्द० ॥ २ ॥

राग—अलहिया विलावल ताल धीमा तैताला।

करम देत दुख जोर हो साइंयां ॥ करम० ॥टेक॥ कैइ परावृत पूरन कीनै संग न छांड़त मोर हो साइँयां ॥ करम० ॥१॥ इनके वशतैं मोहि बचावो महिमा सुनि अति तोर हो साइँयां ॥ करम० ॥२॥ बुधजनकी बिनती तुम हीसौं तुमसा प्रभु नहिं और हो साइँयां ॥ करम० ॥३॥

१४ राग—सारंग।

तन देख्या अथिर घिनावना ॥ तन० । टेक ॥ बाहर चाम चमक दिखलावै, माहीं मैल अपावना

बालक ज्वान बुढ़ापा मरना, रोगशोक उपजावना ॥ तन० ॥ १ ॥ अलख अमूरति नित्य निरञ्जन, एकरूप निज जानना। वरन फरस रस गंध न जाकै, पुन्य पाप बिन मानना ॥तन०॥२ करि विवेक उर धारि परीक्षा, भेद-विज्ञान विचारना। बुधजन तनतैं ममत मेटना, चिदानंद पद धारना ॥ तन० ॥ ३

१५ राग—सारंग लूहरी

तेरो करि लै काज बखत फिरना ॥ तेरो० ॥ टेक ॥ नरभव तेरे वश चालत है, फिर परभव परवश परना ॥ तेरो० ॥ १ ॥ आन अचानक कंठ दबैंगे, तब तोकौं नाही शरना। यातैं विलम न ल्याय बावरे, अब ही कर जो है करना ॥ तेरो० ॥ २ ॥ सब जीवनकी दया धार उर दान सुपात्रानि कर धरना। जिनवर पूजि शास्त्र सुनि नित प्रति, बुधजन संवर आचरना ॥तेरो० ॥३॥

१६ राग—लूहरी मीणांकी चालमे

अहो! देखो केवलज्ञानी, ज्ञानी छवि

भली या विराजै हो-भली या विराजै। अहो०। टेक ॥ सुर नर मुनि याकी सेव करत हैं, करम हरनके काजै हो ॥ अहो० ॥ १ ॥ परिग्रह-रहित प्रातिहारजुत, जगनायकता छाजै हो। दोष बिना गुन सकल सुधारस; दिविधुनि मुखतैं गाजैं हो ॥ अहो देखो० ॥ २ ॥ चित मैं चितवत ही छिनमाहीं, जन्म जन्म अघ भाजै हो। बुधजन याकौं कबहु न बिसरो, अपने हितके काजै हो ॥ अहो० ॥ ३ ॥

१७ राग—सारंग लूहरि।

श्रीजी तारनहारा थें तो, मानैं प्यारा लागो राज॥ श्री टेक ॥ बार सभा बिच गंध-कुटीमें राज रहे महाराज ॥ श्री० ॥ १ ॥ अनंत कालका भरम मिटत है, सुनतहिं आप अवाज श्री० ॥ २ ॥ बुधजन दास रावरो बिनवै, थांसू सुधरै काज ॥ श्री० ॥ ३ ॥

१८ राग—पूरवी एकताला।

तनके मवासी हो, अयाना ॥ तनके० ॥

टेक चहुंगति फिरत अनंतकालतैं, अपने सदनकी सुधि भौराना ॥ तनके० ॥ १ ॥ तन जड़ फरस गंध रसरूपी, तू तो दरसनज्ञान निधाना, तनसौं ममत मिथ्यात मेटिकै, बुधजन अपने शिवपुर जाना ॥ तनके० ॥ २ ॥

१६ राग—पूरवी एकतालो ।

नैन शान्त छबि देखि छके दोऊ ॥ नैन० टेक ॥ अब अद्भुत दुति नहिं बिसराऊं, बुरा भला जग कोटि कहो कोऊ ॥ नैन० ॥१॥ बड़ भागन यह अवसर पाया, सुनियोजी, अब अरज मेरा कहूं । भवभवमें तुमरे चरननको, बुधजन दास सदा हि बन्यौ रहूं ॥ नैन० ॥ २ ॥

२० पूरवी जल्द तितालो ।

हरनाजी जिनराज, मोरी पीर ॥हरना०॥ टेक ॥ आन देव सेये जगवासी, सरचो नहीं मोर काज ॥ हरना० ॥१॥ जगमें बसत अनेक सहज ही, प्रनवत विविध समाज । तिनपै इष्ट अनिष्ट कल्पना, मैटोगे महाराज ॥ हरना० २

पुद्गल राचि अपनपौ भूल्यौ, विरथा करत इलाज । अबहिं जथाविधि वेगि बताओ बुध-जनके सिरताज ॥ हरना० ॥ ३ ॥

२२ राग—पूरबी।

भजन बिन यौं ही जनम गमायो ॥ भजन० ॥ टेक ॥ पानी पल्यां पाल न बांधी, फिर पाछैं पछतायो ॥ भज० ॥ रामा-मोह भये दिन खोवत, आशापाश बंधायो । जप तप संजम दान न दीनौं, मानुष जनम हरायो ॥ भजन० ॥ २ ॥ देह सीस जब कापन लागी, दसन चला चल थायो । लागी आगि भुजावन कारन, चाहत कूप खुदायो ॥ भजन० ॥ ३ ॥ काल अनादि गुमायो भ्रमतां, कबहु न थिर चित लायो । हरी विषयसुख भरम भुलानो, मृग तिसना-वश धायो ॥ भजन० ॥ ४ ॥

२२ राग—पूरबी

तारो क्यौं न, तारो जी म्हें तो थांके शरना आया ॥ टेक ॥ विधान मोका चहुंगति फेरत,

बड़े भाग तुम दरशन पाया ॥ तारो० ॥१॥ मिथ्यामत जल मोह मकरजुत, भरम भौंरमें गोता खाया। तुम मुख वचन अलंबन पाया, अब बुधजन उरमे हरषाया ॥ तारो० ॥२॥

२३

भवदधि-तारक नवका, जगमाहीं जिनवान ॥ भव० ॥ टेक ॥ नय प्रमान पतवारी जाके, खेवट आतम ध्यान ॥ भव० ॥ १ ॥ मन वच तन सुध जो भवि धारत, ते पहुंचत शिवथान। परत अथाह मिथ्यान भंवर ते, जे नहिं गहत अजान भव० ॥ २ ॥ विन अच्चर जिनमुखतैं निकमी परी वरनजुत कान। हितदायक बुधजनकों गनधर गूंथे ग्रंथ महान ॥भव० ॥ ३ ॥

२४ राग—धनासरी धीमो तितालो

प्रभु, थांसूं अरज हमारी हो ॥ प्रभु० ॥ टेक ॥ मेरे हितू न कोऊ जगतमैं, तुम ही हो हितकारी हो ॥ प्रभु० ॥ १ ॥ संग लाग्यो मोहि नेकन छाड़ै, देत मोह दुख भारी। भववनमाहिं

नचावत मोकौं, तुम जानत हौ सारी। प्रभु०। २॥ थांकी महिमा अगम अगोचर, कहि न सकै बुधि म्हारी। हाथ जोरकै पांव परत हूं, आवागमन निवारी हो॥ प्रभु० ॥ ३ ॥

२५

याद प्यारी हो, म्हांनै थांकी याद प्यारी॥ हो म्हानै०॥ टेक॥ मात तात अपने स्वारथके तुम हितु परउपगारी ॥ हो म्हानैं० ॥१॥ नगन छवी सुन्दरता जापै, कोटि काम दुति वारी। जन्म जन्म अवलोकौं निशिदिन, बुधजन जा बलिहारी ॥ हो म्हानैं० ॥ २ ॥

२६ राग--गौड़ी ताल।

अरे हां रे तैं तो सुधरी बहुत बिगारी ॥ अरे ॥ टेक ॥ ये गति मुक्ति महलकी पौरी, पाय रहत क्यौं पिछारी।' अरे० ॥ १ ॥ परकौं जानि मानि अपनो पद, तजि ममता दुखकारी। श्रावक कुल भवदधि तट आयो, बूड़त क्यौंरे अनारी॥ अरे० ॥२॥ अबहूं चेत गयो कछु नाहीं, राखि आपनी

बार। शक्तिसमान त्याग तप करिये तब बुध-जन सिरदारी ॥ अरे० ॥ ३ ॥

२७ राग—काफी कनड़ी

मैं देखा आतमरामा ॥ मैं० ॥ टेक ॥ रूप फरस रस गंधतैं न्यारा दरस-ज्ञान-गुनधामा। नित्य निरंजन जाकै नाहीं क्रोध लोभ मद कामा ॥ मैं० ॥१॥ भूख प्यास सुख दुख नहिं जाकै नाहीं वन पुर गामा। नहिं साहिब नहिं चाकर भाई नहीं तात नहिं मामा ॥ मैं० ॥ २ ॥ भूलि अनादिथकी जग भटकत लै पुद्गलका जामा। बुद्धजन संगति जिनगुरुकीतै मैं पाया मुझ ठामा ॥ मैं ॥ ३ ॥

२८ राग काफी कनड़ी पसतो

अब अघ करत लजाय रे भाई ॥ अब० ॥ टेक ॥ श्रावक घर उत्तम कुल आयो भैंटे श्री-जिनराय ॥ अब० ॥ १ धन वनिता आभूषण परिगह त्याग करौ दुखदाय। जो अपना तू तजि न सकै पर सेयां नरक न जाय ॥ अब०

॥२॥ विषयकाज क्यौं जनम गुमावै, नरभव कब मिलि जाय। हस्ती चढ़ि जो ईंधन ढोवै, बुधजन कौन बसाय ॥ अब० ॥३॥

२६ राग—काफी कनड़ी।

तोकौं सुख नहिं होगा लोभीड़ा! क्यौं भूल्या रे परभावनमैं॥ तोकौं० ॥ टेक॥ किसी भाँति कहुंका धन आवै, डोलत है इन दावनमैं॥ तोकौं० ॥१॥ व्याह करूँ सुन जस जग गावै, लग्यौ रहै या भावनमैं॥ तोकौं० ॥ २ ॥ द्रव्य परिनमत अपनी गौंतैं, तू क्यों रहित उपायनमैं तोकौं० ॥३॥ सुख तो है सन्तोष करनमैं, नाहीं चाह बढावनमैं॥ तोकौं ॥४॥ कै सुख है बुध-जनकी संगति, कै सुख शिवपद पावनमैं॥ तोकौं ॥ ५ ॥

३० राग—कनड़ी।

निरख नाभिकुमारजी, मेरे नैन सफल भये निर० ॥ टेक॥ नये नये वर मंगल आये, पाई निज रिधि सार॥ निरख० ॥१॥ रूप निहारन

कानन हरिनै, कीनी आंख हजार। वैरागी मुनिवर हू लखिकै, ल्यावत हरष अपार ॥ निरखें० ॥२॥ भरम गयो तत्वारथ पायो, आवन ही दरबार। बुधजन चरन शरन गहि जांचत, नहिं जाऊं परद्वार ॥ निरखें० ॥ ३ ॥

३१ राग—विलावल धीमो तेताला।

नरभव पाय फेरि दुख भरना, ऐसा काज न करना हो ॥ नरभव० ॥ टेक ॥ नाहक ममत ठानि पुद्गलसौं, करमजाल क्यौं परना हो ॥ नरभव० ॥ १ ॥ यह तो जड़ तू ज्ञान अरूपी, तिल तुष ज्यौं गुरु वरना हो। राग दोष तजि भजि समताकौं, कर्म साथ के हरना हो ॥ नरभव० ॥ २ ॥ यो भव पाय विषय-सुख सेना, गज चढ़ ईंधन ढोना हो। बुधजन समुझि सेय जिनवर पद, ज्यौं भवसागर तरना हो ॥ नरभव० ॥ ३ ॥

३२—राग विलावल इकतालो।

सारद ! तुम परसादतैं, आनंद उर आया ॥

सारद० ॥ टेक ॥ ज्यौं तिरसातुर जीवको, अम्रित जल पाया ॥ सारद० ॥ १ ॥ नय परमान निखेपतैं तत्वार्थ बताया। भाजी भूलि मिथ्यातकी, निज निधि दरसाया ॥ सारद० ॥ २ ॥ बिधिना मोहि अनादितैं, चहुंगति भरमाया। ता हरिवेकी विधि सबै, मुझमाहिं बताया ॥ सारद० ॥ ३ ॥ गुन अनंत मति अलपतैं, मोपै जात न गाया। प्रचुर कृपा लखि रावरी, बुधजन हरषाया ॥ सारद० ॥ ४ ॥

(२३)

गुरु दयाल तेरा दुख लखिकैं, सुन लै जो फुरमावै है ॥ गुरु० ॥ तोमैं तेरा जतन बतावै, लोभ कछू नहिं चावै है ॥ गुरु० ॥१॥ पर सुभावको मोरया चाहै, अपना उसे बनावै है। सो तो कबहूं हुवा न होसी, नाहक रोग लगावै है ॥ गुरु० ॥ २ ॥ खोटी खरी जस करी कमाई, तैसी तेरै आवै है। चिन्ता आगि उठाय हियामैं, नाहक जान जलावै है ॥ गुरु० ॥

॥ ३ ॥ पर अपनावै सो दुख पावै, बुधजन ऐमें गावै है। परको त्यागि आप थिर तिष्ठै, सो अविचल सुख पावै है ॥ गुरु० ॥ ४ ॥

३४ राग—असावरी।

अरज ह्मारी मानो जी, याही ह्मारी मानो, भवदधि हो तारना ह्मारा जी ॥ अरज० ॥ टेक ॥ पतितउधारक पतित पुकारै, अपनो विरद पिछानो ॥ अरज० ॥ १ ॥ मोह मगर मछ दुख दावानल, जनम मरन जल जानो। गति गति भ्रमन भवरमैं डूबत, हाथ पकरि ऊंचो आनो अरज० ॥ २ ॥ जगमैं आन देव बहु हेरे, मेरा दुख नहिं भानो। बुधजनकी करुणा ल्यो साहिब, दीजे अविचल थानो ॥ अरज० ॥३॥

३५ राग—असावरी जोगियो ताल धीमो तेतालो।

तू काई चालै लाग्यो रे लोभीड़ा, आयो छै बुढ़ापो ॥ तू० ॥ टेक ॥ धंधामाहीं अंधा ह्वै कै, क्यों खोवे छै आपो रे ॥ तू० ॥१॥ हिमत घटी थारी सुमत मिटी छै, भाजि गयो तरुणापो।

जम लै जासी सब रह जामी. संग जामी पुन पापा रे ॥ तू० २ ॥ जग स्वारथको कोइ न तेरा, यह निहचै उर धारो। बुधजन ममत मिटावो मनतैं, करि मुख श्रीजिनजापा रे ॥ तू० ॥३॥

२६ राग—असावरी जोगिया ताल धीमो तेतालो।

थे ही मोनैं तारो जी, प्रभुजी कोई न हमारो ॥ थे ही० ॥ टेक ॥ हूं एकाकि अनादि कालतैं, दुख पावत हूं भारो जी ॥ थे ही० ॥१॥ बिन मतलबको तुम ही स्वामी, मतलबको संसारो। जग जन मिलि मोहि जगमैं राखैं तू ही काढ़नहारो ॥ थे ही० ॥ २ ॥ बुधजनके अपराध मिटावो, शरन गह्यो छै थारो भवदधिमाहीं डूबत मोनैं, कर गहि आप निवारो थे ही० ॥ ३ ॥

२७ राग—असावरी भांझ, ताल धीमो एकतालो।

प्रभू जी अरज हमारी उर धारो ॥ प्रभू जी० टेक ॥ प्रभू जी नरक निगोदयांमैं रुलया, पायो दुःख अपार ॥ प्रभू जी० ॥ १ ॥ प्रभू जी, हूं

पशुगतिमैं ऊपज्यौ, पीठ स्ह्यौ अतिभार ॥ प्रभू जी० ॥ २ ॥ प्रभू जी विषय मगनमैं सुर भयो, जात न जान्यौ काल ॥ प्रभू जी, ॥३॥ प्रभू जी नरभव कुल श्रावक लह्यौ, आया तुम दरवार॥ प्रभू जी० ॥४॥ प्रभू जी, भव भरमन बुधजन-तनों, मेटौ करि उपगार ॥ प्रभू जी० ॥ ५ ॥

३८ राग—आसावरी

जगतमैं होनहार सो होवै, सुर नृप नाहिं मिटावै ॥ जगत० ॥ टेक ॥ आदिनाथसेकौं भोजनमैं, अन्तराय उपजावै। पारसप्रभुकौं ध्यान लीन लखि, कमठ मेघ बरसावै ॥ जगत० ॥१॥ लखमणसे संग भ्राता जाके, सीता राम गमावै प्रतिनारायण रावणसेकी, हनुमत लंक जरावै। जगत० ॥ २ ॥ जैसा कमावै तैसा ही पावै यों बुधजन समझावै । आप आपकौं आप कमावौं, क्यौं पद्रव्य कमावै ॥ जगत० ॥ ३ ॥

३९ राग—आसावरी जलद तेतालो।

आगैं कहा करसी भैया, आजासी जब

काल रे ॥ आगैं० ॥ टेक ॥ ह्यां तौ तैंने पोल मचाई, व्हां तौ होय समाल रे ॥ आग० ।१। झूठ कपट करि जीव सताये, हर्या पराया माल रे । सम्यतिसैनी धाप्या नाहीं, तकी विरानी वाल रे ॥ आगैं० ॥ २६ ॥ सदा भोगमें मगन रह्या तू . लख्या नहीं निज हाल रे । सुमरन दान किया नहिं भाई, हो जासी पैमाल रे ॥ आगैं० ॥ ३ ॥ जोवनमैं जुवती संग भूल्या, भूल्या जब था बाल रे । अब हूं धारा बुधजन समता, सदा रहहु खुश हाल रे ॥ आगैं० ।४।

४० राग—आसावरी जोगियो जलद तेताले ।

चेतन, खेल सुमतिसंग हारी ॥ चेतन० टेक तोरि आनकी प्रीति सयाने, भली बनी या जोरी चेतन० ॥१॥ डगर डगर डोलै है यौं हो, आत्र आपनी पौरी निज रस फगुआ क्यों नहिं बांटो नानर ख्वारी तोरी ॥ चेतन०॥२॥ार कषाय त्यागि या गहि लै, समकित केसर घोरी । मिथ्या पाथर डारि धारि लै, निज गुलालकी झोरी ॥

चेतन० ॥ ३ ॥ खोटे भेष धरैं डोलत है, दुख पावै बुधि भोरी । बुधजन अपना भेष सुधारो, ज्यौं विलसो शिवगोरी ॥ चेतन० ॥ ४ ॥

४१ राग—आसावरी जोगिया जल्द तेताला ।

हे आतमा ! देखी दुति तोरी रे ॥ हे आतमा० ॥ टेक ॥ निजको ज्ञात लोकको ज्ञाता, शक्ति नहीं थोरी रे ॥ हे आतमा० ॥१॥ जैसी जोति सिद्ध जिनवरमैं, तैसी ही मोरी रे ॥ हे आतमा० ॥२॥ जड़ नहिं हुवा फिर जड़केवसि, के जड़की जोरी रे ॥ हे आतमा० ॥ ३ ॥ जगके काजि करन जग टहलै, बुधजन मति भोरी रे ॥ हे आतमा० ॥ ४ ॥

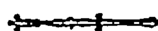
(४२)

बाबा ! मैं न काहूका, कोई नहीं मेरा रे ॥ बाबा० ॥ टेक ॥ सुर नर नारक तिरयक गतिमैं मोकों करमन घेरा रे ॥ बाबा० १॥ मात पिता सुत तिय कुल परिजन, मोह गहल उरझेरा रे । तन धन वसन भवन जड़ न्यारे, हूं चिन्मूरति

न्यारा रे ॥ बाबा० ॥२॥ मुझ विभाव जड़ कर्म रचत हैं, करमन हमको फेरा रे । विभाव चक्र तजि धारि सुभावा, अब आनन्दघन हेरा रे ॥ बाबा० ॥ ३ ॥ खरच खेद नहिं अनुभव करते, निरखि चिदानंद तेरा रे । जप तप व्रत श्रुतसार यही है, बुधजन कर न अबेरा रे ॥ बाबा० ।४।

(४३)

और सबै मिलि होरि रचावै, हूं काके संग खेलौंगी होरी ॥ और० ॥टेक॥ कुमति हरामिनि ज्ञानी पियापै, लोभ मोहकी डारी ठगौरी । भोरै झूठ मिठाई खवाई, खोंसि लये गुन करि बरजोरी ॥ और० ॥१॥ आप हि तीन लोकके साहब, कौन करै इनकै सम जोरी । अपनी सुधि कबहूं नहिं लेत, दास भये डोलैं पर पौरी ॥औ० ॥२॥ गुरु बुधजनतैं सुमति कहत हैं, सुनिये अरज दयाल सु मोरी । हा हा करत हूं पांय परत हूं, चेतन पिय कीजे मो ओरी ॥ और० ॥३॥



(४८)

धर्म विन कोई नहीं अपना, सब संपति धन थिर नहिं जगमें, जिसा रैन सपना ॥धर्म० ॥टेक आगैं किया सो पाया भाई, याही है निरना । अब जो करैगा सो पावैगा, तातैं धर्म करना ॥ धर्म ॥१॥ ऐसैं सब संसार कहत है, धर्म कियैं तिरना। परपीड़ा विसनादिक सेवैं, नरकविषै परना ॥ धर्म० ॥२॥ नृपके घर सारी सामग्री, ताकैं ज्वर तपना । अरु दारिद्रीकैं हू ज्वर है, पाप उदय थपना ॥ धर्म० ॥३॥ नाती तो स्वारथके साथी, तोहि विपत भरना । वन गिरि सरिता अगनि जुद्धमैं, धर्महिका सरना ॥ धर्म० ॥ ४ ॥ चित बुधजन संतोष धारना, पर चिन्ता हरना । विपति पड़ै तो समता रखना, परमातम जपना ॥धर्म०॥५॥

(४९) राग—टोडी ताल होलीकी ।

कंचन दुति व्यंजन लच्छन जुत, धनुष पांच सै ऊंची काया ॥ कंचन० ॥ टेक ॥ नाभिराय मरुदेवीके सुत, पदमासन जिन ध्यान लगाया ॥

०॥ १ ॥ ये तिन सुत व्योहार कथनमैं, निश्चय एक चिदानंद गाया । अपरस अवरन अरस अगंधित, बुधजन जानि सु सीस नवाया ॥ कंचन० ॥ २ ॥

(४६)

धनिसरधानीजगमैं ज्यौं जलकमलनिवास॥ धनि० ॥ टेक ॥ मिथ्या तिमिर फट्यो प्रगट्यो शशि, चिदानंद परकास ॥ धनि० ॥१॥ पूरव कर्म उदय सुख पावैं भोगत ताहि उदास । जो दुखमैं न विलाप करैं, निरवैर सहैं तन त्रास॥ धनि ० ॥२॥ उदय मोहचारित परवशि है व्रत नहिं करत प्रकास । जो किरिया करि हैं निर वांछक, करैं नहीं फल आस ॥ धनि० ॥३॥ दोषरहित प्रभु धर्म दयाजुत, परिग्रह बिन गुरु तास । तत्त्वारथरुचि है जाकेघट बुधजनतिनका दास ॥ धनि० ॥ ४ ॥

(४७) राग—सारंग ।

बधाई भई हो,तुम निरखत जिनराय, बधाई

भई हो ॥ टेक ॥ पातक गये भये सब मंगल, भेंटत चरनकमल जिनराई ॥ बधाई० ॥१॥ मिटे मिथ्यातभरमके बादर, प्रगटन आतम रवि अरुनाई। दुरबुध चोर भजे जिय जागे, करन लगे जिन धर्म कमाई ॥ बधाई० ॥२॥ दृग सरोज फूले तुम दरसनतें, करुना कीनी सुखदाई ॥ भाषि अनुव्रत महाव्रितको बुधजनको शिव-राह बताई ॥ बधाई ॥ ३ ॥

(४८) राग—सारंगकी मांझ ताल दीपचन्दी।

म्हांरी सुणिज्यो परम दयालु तुमसों अरज करूं ॥ म्हांरी० ॥ टेक ॥ आन उपाव नहीं या जगमें, जग तारक जिनराज तेरे पांय परूं ॥ म्हांरी ॥१॥ साथ अनादि लागि विधि मेरी, करत रहत बेहाल इनकौं कैसैं भरूं ॥ म्हांरी ॥ २ ॥ करि करुना करमनको काटो जनम मरन दुखदाय इनतैं बहुत डरूं ॥ म्हांरी ॥३॥ चरन सरन तुम पाय अनूपम बुधजन मांगत येह गति गति नाहिं फिरूं ॥ म्हांरी ॥ ४ ॥

तुम सब ज्ञायक मोहि उबारो, बुधजनको अपनो करिकै ॥ मोकौं० ॥३॥

(५३) राग सारंग।

हम शरन गयौ जिन चरनको ॥हम०॥टेक॥ अब औरनकी मान न मेरे, डर हु रह्यो नहिं मरनको ॥ हम० ॥१॥ भरम विनाशन तत्त्व-प्रकाशन, भवदधि तारन तरनको। सुरपति नरपति ध्यान धरत वर, करि निश्चय दुख हरनको ॥हम०॥२॥ या प्रसाद ज्ञायक निज मान्यौ, जान्यौ तन जड़ परनको । निश्चय सिधसो पै कषायनैं, पात्र भयो दुख भरनको ॥हम०॥३॥ प्रभु बिन और नहीं या जगमैं, मेरे हितके करनको। बुधजनकी अरदास यही है, हर संकट भव फिरनको ॥ हम० ॥४॥

(५४)

मैं तेरा चेरा, अरज सुनो प्रभु मेरा ॥ मैं०॥ टेक॥ अष्टकर्म मोहि घेरि रहे है, दुख दे है बहु-तेरा ॥ मैं ॥१॥ दीनदयाल दीन मो लखिकै,

मैंटा गति गति फेरा मैं० ॥ २ ॥ और जंजाल टाल सब मेरा, राखो चरनन चेरा ॥ मैं०॥३॥ बुधजन ओर निहारि कृपा करि, बिनवै वारूं वेरा ॥ मैं० ॥४॥

५५ राग—अहिंग।

तैं क्या किया नादान, तैंतो अमृत तजि विष लीना ॥ तैं० ॥ टेक ॥ लख चौरासी जोनि माहितैं, श्रावक कुलमैं आया । अब तजि तीन लोकके साहिब, नवग्रह पूजन धाया ॥ तैं० ॥१॥ वीतरागके दरसनहीतैं, उदासीनता आवै । तू तो जिनके सनमुख ठाड़ा, सुतको ख्याल खिलावै ॥ तैं० ॥२॥ सुरग सम्पदा सहजै पावै, निश्चय मुक्ति मिलावै। ऐसी जिनवर पूजनसेती, जगत कामना चावै ॥ तैं० ॥३॥ बुधजन मिलैं सलाह कहैं तब, तू वापै खिजि जावै । जथाजोगकैं अजथा मानै, जनम जनम दुख पावै ॥ तैं० ॥४॥

५६ राग—खमाव।

सुनियो हो प्रभु आदि-जिनंदा, दुख पावत

है बंदा ॥ सुनियो० ॥ टेक ॥ स्वामि ज्ञान धन कीनौं जिन्दा (?), डारि ठगोरी धंदा ॥ सुनियो० ॥१॥ कर्म दुष्ट मेरे पीछै लाग्यौ, तुम हो कर्मनिकंदा ॥सुनियो० ॥२॥ बुधजन अरज करत है साहिब, काटि कर्मके फन्दा सुनियो० ॥३॥

५७ राग— खंमाच।

छबि जिनराई राजै छै ॥ छबि० ॥टेक॥ तरु अशोकतर सिंहासनपै, बैठे धुनि घन गाजै छै ॥ छबि० ॥१॥ चमर छत्र भामंडलदुतिपै, कोटि भानदुति लाजै छै। पुष्पवृष्टि सुर नभतैं दुन्दुभि, मधुर मधुर सुर बाजै छै छबि० ॥२॥ सुर नर मुनि मिलि पूजन आवै, निरखत मनड़ा आजै छै। तीनकाल उपदेश होत है, भवि बुधजन हित काजै छ ॥ छबि० ॥३॥

५८ राग– खंमाच।

ऐसा ध्यानलगावो भव्य जासौं, सुरग मुकति फल पावो जी ॥ऐसा० ॥ टेक ॥ जामैं बंध परै नाहिं आगैं, पिछले बंध हटावो जी ॥ ऐसा०

॥१॥ इष्ट अनिष्ट कलपना छांड़ो, सुख दुख एक हि भावो जी। पर वस्तु नमों ममत निवारी निज आतम लौ ल्यावो जी॥ ऐसा० ॥ २ ॥ मात न देह की संगति छूटै, जामन मरन मिटावो जी। शुद्ध चिदानंद बुधजन ह्वै कै, शिवपुर-बसावो जी ॥ ऐसा० ॥ ३ ॥

(५६) राग—खंमाच।

मेरा सांई तौ मो मैं नाहीं न्यारा, जानैं सो जाननहारा ॥ मेरा० ॥ टेक ॥ पहले खेद सह्यो विन जानैं, अब सुख अपरंपारा ॥ मेरा० ॥१॥ अनंत-चतुष्टय-धारक ज्ञायक गुन परजै द्रव सारा। जैसा राजत गंधकुटी मैं, तैसा मुझ मैं म्हारा ॥ मेरा० ॥ २ ॥ हित अनहित मम पर विकलपतैं, करम बंध भये भारा। ताहि उदय गति गति सुख दुखमैं, भाव किये दुखकारा ॥ मेरा० ॥३॥ काललबधि जिनआगममेती, संशयभरमाविदारा। बुधजन जान करावन करता, हौं ही एक हमारा ॥ मेरा० ॥ ४ ॥

(६०) राग—गारो जल्द तेतालो।

म्हारी भी सुणि लीज्यो, हो मोवौं तारण, सुफल भये लखि मोरे नैन॥ म्हांरी० ॥ टेक ॥ तुम अनंत गुन ज्ञान भरे हो· वरनन करतैं देव थकत हैं, कहि न सकै मुफ वैन॥ म्हांरी० ॥१॥ हमतो अनत दिन अनत भरम रेह,तुमसा को-ऊ नाहिं देखिये,आनंदघन चित चैन ॥ म्हारी० ॥ २ ॥ बुधजन चरन शरन तुम लीनी,बांछा मेरी पूरन कीजे,मंग न रहै दुखदैन म्हां० ॥३॥

(६१) राग—गारो कान्हरो।

थांका गुण गास्यां जी आदिजिनंदा ॥ थांका० ॥टेक॥ थांका वचन सुणयां प्रभु मूनैं म्हारा निज गुण भास्यां जी ॥ आदि० ॥ १ ॥ म्हारा सुमन कमलमैं निशिदिन, थांका चरन वसान्यां जी ॥ आदि० ॥ २ ॥ यही मूनैं लगन लगी छै, दुःख द्यो दुःख नसास्यां जी ॥ आदि० ॥ ३ ॥ बुधजन हरष हिये अधिकाई, शिवपुर-वासा पास्यां जी ॥ आदि० ॥ ४ ॥

(६२) राग—कान्हरो।

हो मना जी,थारी वानि,बुरी छै दुखदाई हो० ॥ टेक ॥ निज कारिजमैं नेकु न लागत, परसौं प्रीति लगाई हो० ॥ १ ॥ या सुभावसौं अति दुख पायो,सो अब त्यागो भाई ॥ हो०२ बुधजन औसर भागन पायो, सेवो श्रीजिन-राई हो० ॥ ३ ॥

(६३) राग—गारो कान्हरो।

हो प्रभुजी,म्हारो छै नादानी मनड़ो ॥ हो० टेक ॥ हूं ल्यावत तुम पद सेवनकौं, यौं नहिं आवत है-बगड़ो जी ॥ हो ॥ १ ॥ याकौ सुभाव सुधारि दयानिधि,माचि रह्यो मोटो झगड़ो जी ॥ हो० ॥ २ ॥ बुधजनकी विनती सुन लीजे कहजे शिवपुरको डगड़ो जी ॥ हो० ॥ ३ ॥

(६४)

रे मन मेरा, तू मेरो कह्यो मान मान रे ॥ रे मन० ॥ टेक ॥ अनत चतुष्टय धारक तूही, दुख पावत बहुतेरा ॥ रे मन० ॥१॥ भोग विषयका आतुर ह्वै कै, क्यौं होता है चेरा ॥ रे मन०

॥२॥ तेरे कारन गति गतिमाहीं, जनम लिया हैंघ नेरा ॥ रे मन० ॥३॥ अब जिनचरन शरन गहि बुधजन, मिटि जावै भव फेरा ॥ रे मन० ॥

(६५) राग—कनड़ी।

भला होगा तेरा यों ही, जिनगुन पल न भुलाया हो ॥ भला० ॥ टेक ॥ दुख मेटन सुख-दैन सदा ही, नमिकै मन वच काय हो ॥ भला० ॥१॥ शक्री चक्री इन्द्र फनिन्द्र सु बरनन करत थकाय हो। केवलज्ञानी त्रिभुवनस्वामी, ताकौं निशिदिन ध्याय हो ॥ भला० ॥२॥ आवागमनसुराहित निरंजन, परमातम जिनराय हो। बुधजन विधितैं पूजि चरन जिन, भव भवमें सुखदाय हो ॥ भला० ॥ ३ ॥

(६६) राग—कनड़ी।

उत्तम नरभव पायकै, मति भूलै रे रामा ॥ मति भू० ॥ टेक ॥ कीट पशू का तन जब पाया तब तू रह्या निकामा। अब नरदेही पाय सयाने क्यों न भजै प्रभुनामा ॥ मति भू० ॥१॥ सुर-

पति याकी चाह करत उर, कब पाऊँ नरजामा।
ऐसा रतन पायकैं भाई, क्यौं खोवत विन कामा
मति भू० ॥२॥ धन जोबन तन सुन्दर पाया,
मगन भया लखि भामा। काल अचानक झटक
खायगा, परे रहैंगे ठामा ॥ मति० ॥३॥ अपने
स्वामीके पदपंकज, करो हियैं विसरामा। मैटि
कपट भ्रम अपना बुधजन, ज्यौं पावौ शिवधामा
मति भू० ॥ ४ ॥

(६७)

धनि चन्द्रप्रभदेव, ऐसी सुबुधि उपाई ॥
धनि० ॥टेक॥ जगमैं कठिन विराग दशा है,
सो दरपन लखि तुरत उपाई ॥ धनि० ॥ १ ॥
लौकान्तिक आय ततखिन ही, चढ़ि सिविका
बनओर चलाई। भये नगन सब परिग्रह तजि
कै, नग चम्पातर लौंच लगाई ॥ धनि० ।२।
महासेन धनि धनि लच्छमना, जिनकैं तुमसे
सुत भये साई। बुधजन बन्दत पाप निकन्दत,
ऐसी सुबुधि करो मुझमाई ॥ धनि० ॥ ३ ॥

(६८)

चुप रे मूढ़ अजान, हमसौं क्या बतलावै ॥ चुप० ॥ टेक॥ ऐसा कारज कीया तैंने, जासौं तेरी हान ॥ चु० ॥१॥ राम बिना है मानुष जेते आन तात सम मान। कर्कश वचन बकै मति भाई, फूटन मेरे कान। चुप० ॥ २ ॥ पूरव दुकृत कियाथा मैंने, उदय भया ते आन। नाथबिछोहा हूवा यातैं.पै मिलसी या थान॥ चुप० ॥ ३ ॥ मेरे उरमैं धीरज ऐसा, पति आवै या ठान। तब ही निग्रह ह्वै है तेरा, होनहार उर मान ॥ चुप० ॥४॥ कहां अजोध्या कहं या लंका कहां सीता कहंआन। बुधजन देखो विधि का कारज, आगममाहिं बखान॥ चुप० ॥५॥

(६९) राग—कनड़ी एकतालो।

त्रिभुवननाथ हमारो, हो जी ये तो जगत उजियारो ॥ त्रिभुवन० ॥ टेक ॥ परमौदारिक देहके माहीं.परमातम हितकारो ॥ त्रिभुवन०॥ १ ॥ सहजैं ही जगमाहिं रह्यो छै, दुष्ट मिथ्यात

अँधारौं। ताकौं हरन करन समकित रवि के-वलज्ञान निहारौ ॥ त्रिभुवन० ॥ २ ॥ त्रिविध शुद्ध भवि इनकौं पूजौ, नाना भक्ति उचारौ। कर्म काटि बुधजन शिव लै हो, तजि संसार दुखारौ त्रिभु० ॥ ३ ॥

(७०) राग—दीपचन्दी।

मेरी अरज कहानी, सुनि केवलज्ञानी ॥ मेरी० ॥ टेक ॥ चेतनके संग जड़ पुद्गल जिमि सारी बुधि बौरानी ॥ मेरी० ॥१॥ भव मनमाहीं फेरत माकौं, लख चौरासी थानी। कोलौं वरनौं तुम सब जानो, जनम मरन दुखखानी ॥ मेरी० ॥ २ ॥ भाग भलेतैं मिले बुधजनको, तुम जिनवर सुखदानो। मोह फांसिको काटि प्रभूजो, कीजे केवलज्ञानी ॥ ३ ॥

(७१)

तेरी बुद्धि कहानी, सुनि मूढ़ अज्ञानी। तेरी० ॥ टेक ॥ तनक विषय सुख लालच लाग्यो, नंत काल दुखखानी ॥ तेरी ॥ जड़ चेतन मि-

लि बंध भये इक, ज्यौं पयमाहीं पानी। जुदा जुदा सरूप नहिं मानै, मिथ्या एकता मानी॥॥तेरी०॥२॥ हूं तौ बुधजन दृष्टा ज्ञाता, तन जड़ सरधा आनी। ते ही अविचल सुखी रहैंगे होय मुक्ति वर प्रानी॥ तेरी॥ ३॥

(७२) राग—ईमन।

तू मेरा कह्या मान रे निपट अयाना॥ तू०॥ टेक॥ भव वन वाट मात सुत दारा, बंधु पथिकजन जान रे। इनतैं प्रीति न ला बिछुरैंगे, पावैगो दुख खान रे॥ तू०॥१॥ इकसे तन आतम मति आन, यो जड़ है तू ज्ञान रे। मोह उदय वश भरम परत है, गुरु सिखवत सरधान रे॥ तू०॥ वादल रंग सम्पदा जगकी, छिनमैं जान विलान रे। तमाशवीन वनि यातैं बुधजन, सबतैं ममता हान रे॥ तू०॥ ३॥

(७३) राग—ईमन तेतालो।

हो विधिनाकी मोपै कही तौ न जाय॥ हो०॥ टेक॥ सुलट उलट उलटा सुलटा दे, अदरस

पुनि दरमाय ॥ हो० ॥ १ ॥ उर्वशि नृत्य करत ही सनमुख, अमर परत है पाँय (?) । ताही छिनमैं फूल बनायौ, धूपपरै कुम्हलाय (?) । हो० ॥२॥ नागा पाँय फिरत घर घर जब, सो कर दीनौं राय । ताहीको नरकनमैं कूकर, तोरि तोरि तन खाय ॥ हो० ॥ ३ ॥ करम उदय भूलै मति आपा, पुरषारथको त्याय । बुधजन ध्यान धरै जब मुहुरत, तब सबही नसिजाय ॥ हो० ॥४॥

(७४)

जिनवानीके सुनसौं मिथ्यात मिटै । मिथ्यात मिटै समकित प्रगटै ॥ जिनवानी० ॥ टेक ॥ जैसैं प्रात होत रबि ऊगत, रैन तिमिर सब तुरत फटै ॥ जिनवानी० ।१। अनादि कालकी भूलि मिटावै अपनी निधि घट घटमैं उघटै । त्याग विभाव सुभाव सुधारै, अनुभव करतां करम कटै ॥ जिनवानी० ॥२॥ और काम तजि सेवो वाकौं, या बिन नाहिं अज्ञान घटै । बुधजन याभव परभव मांहीं, वाकी हुंडी तुरत पटै ॥ जिनवानी० ॥३॥

(७५) राग—सोरठ।

कर लै हो जीव, सुकृतका सौदा कर लै परमारथ कारज कर लै हो ॥ करि० ॥टेक॥ उत्तम कुलकौं पायकैं, जिनमत रतन लहाय। भोग भोगवे कारनैं, क्या शठ देत गमाय ॥ सौदा० १ व्यापारी बिन आइयौ, नरभव हाट बजार। फल दायक व्यापार करि नातर विपति तयार। सौ० ॥२॥ भव अनन्त धरतौ फिर्‌या चौरासी वनमाहिं। अब नरदेही पायकैं अघ खोवै क्यौं नाहिं ॥ सौदा० ॥ ३ ॥ जिन मुनि आगम परखकै, पूजौ करि सरधान। कुगुरु कुदेवके मानवैं फिर्‌यौ चतुर्गति थान ॥ सौदा० ॥ ४ ॥ मोह नींदमां सोवतां डूबा काल अटूट। बुधजन क्यौं जागौ नहीं, कर्म करत है लूट ॥ सौदा० ॥ ५ ॥

(७६) राग—सोरठ

बेगि सुधि लीज्यो म्हारी, श्रीजिनराज बेगि० ॥टेक॥ डरपावन नितआयु रहत है, संग लग्या जमराज ॥बेगि० ॥ १ ॥ जाके सुरनर नारक

तिरजग, सब भोजनके साज। ऐसौ काल हरचौ तुम साहब, यातैं मेरी लाज॥ बेगि० ।२। पर घर डोलत उदर भरनकौं, होत प्राततैं सांज। डूबत आश अथाह जलधिमैं, द्यो समभाव जिहाज ॥बेगि० ॥३॥ घना दिनाकौ दुखी दयानिधि, औसर पायौ आज। बुधजन सेवक ठाड़ौ विनवै, कीज्यौ मेरो काज॥ बेगि० ॥ ४ ॥

(७७) राग—सोरठ।

गुरुने पिलायाजी, ज्ञान पिलाया ॥ गुरु० ॥ टेक॥ भइ बेखबरी परभावांकी, निजरसमैं मतवाला ॥ गुरु० ॥ यौं तो छाक जात नहिं छिनहूं, मिटि गये आन जँजाला। अद्भुत आनँद मगन ध्यानमैं, बुधजन हाल सम्हाला गुरु०

(७८) राग—सोरठ।

मति भोगन राचौजी, भव भवमैं दुख देत घना ॥ मति० ॥ टेक। इनके कारन गति गति मांही, नाहक नाचौ जी। झूठे सुखके काज धरममैं पाड़ौ खांचौ जी मति० ॥ १ ॥ पूरवकर्म

उदय सुख आयां राजो मात्यौ जी। पाप उदय पीड़ा भोगनमैं, क्यौं मन कात्यौ जी॥ मति०॥ २। सुख अनन्तके धारक तुम ही, पर क्यौं जांच्यौं जी। बुधजन गुरुका वचन हियामैं, जानौ सांच्यौ जी॥ मति०॥३॥

(७९)

थांका गुन गास्यां जी जिनजी राज, थांका दरसनतैं अघ नास्या॥ थांका०॥ टेक॥ थां सारीखा तीन लोकमैं, और न दूजा भास्या जी॥ जिनजी०॥१॥ अनुभव रसतैं सींचि सींचिकै, भव आताप बुझास्यां जी। बुधजनकौ विकलप सब भाग्यौ, अनुक्रमतैं शिव पास्यां जी॥ जिनजी०॥२॥

(८०)

सम्यग्ज्ञान बिना, तेरो जनम अकारथ जाय॥ सम्यग्ज्ञान०॥टेक॥ अपने सुखमैं मगन रहत नहिं परकी लेत बलाय। सीख सुगुरुकी एक न मानै, भव भवमैं दुख पाय॥ सम्यग्ज्ञान०॥१॥

ज्यौं कपि आप काठ लीलाकरि, प्रान तजै बिललाय। ज्यौं निज मुखकरि जाल मकरिया, आप मरै उलझाय ॥ सम्यग्ज्ञान०॥२॥ कठिन कमायो सब धन ज्वारी, छिनमैं देत गमाय। जैसे रतन पायके भोंदू, बिलखे आप गमाय। सम्यग्ज्ञान० ॥३॥ देव शास्त्र गुरु को निहचै करि, मिथ्यामत मतिध्याय। सुरपति बांछा राखत याकी, ऐसो नर परजाय; ॥ सम्यग्ज्ञान० ॥४॥

(८१) राग—झंझोटी।

शिवथानी निशाशानी जिनवानि हो ॥शिव० ॥टेक॥ भववन भ्रमन निवारन-कारन, आपा-पर पहचानि हो ॥ शिव० ॥ १ ॥ कुमति पिशाच मिटावन लायक, स्याद मंत्र मुख आनि हो ॥ शिव०॥२॥ बुधजन मनवचतनकरि निशिदिन सेवो सुखकी खानि हो ॥ शिव०॥३॥

(८२)

देखो नया. आज उछाव भया ॥ देखो० ॥ टेक ॥ चंदपुरीमैं महासेन घर चंदकुमार जया।

॥ देखो० ॥ १ ॥ मातलखमना सुतको गजपै, लै हरि गिरिपै गया ॥ देखो० ॥ २॥ आठ सहस कलसा सिर ढारे, वाजे बजत नया ॥ देखो० ॥ ३॥ सौंपि दियो पुनि मात गोदमैं, तांडव नृत्य थया ॥ देखो० ॥ ४॥ सो बानिक लखि बुधजन हरषै जै जै पुरमें किया ॥ देखो० ॥ ५॥

(८३)

मैं देखा अनोखा ज्ञानी वे ॥ मैं॥ टेक ॥ लारैं लागि आनकी भाई, सुध विसरानी वे ॥ मैं० ॥ १॥ जा कारनतैं कुगति मिलत है, सोही निजकर आनी वे ॥ मैं० ॥ २ ॥ झूठ सुखके काज सयानें, क्यौं पीड़ै है प्रानी वे ॥ मैं० ॥ ३॥ दया दान पूजन व्रत तप कर, बुधजन सीख बखानी वे ॥ मैं० ॥ ४॥

(८३) राग—जंगलो ।

मेरो मनुवा अति हरषाय, तोरे दरसनसौं ॥ मेरौ० ॥ टेक ॥ शांत छवी लखि शांत भाव ह्वै, आकुलता मिट जाय, तोरे दरसनसौं मेरो० ॥ १॥

जब लौं चरन निकट नहिं आया, तब आकुलता थाय। अब आवत ही निज निधि पाया, निति नव मंगल पाय, तोरे दरसनसों ॥ मेरो० ॥ २ ॥ बुधजन अरज करै कर जोरै, सुनिये श्रीजिनराय जब लौं मोख होय नहिं तब लौं, भक्ति करूं गुन गाय, तोरे दरसनसौं ॥ मेरो० ॥ ३ ॥

(८५)

मोहि अपना कर जान, ऋषभजिन ! तेरा हो ॥ मोहि० ॥ टेक ॥ इस भवसागरमाहिं फिरत हूं, करम रह्या करि घेरा हो ॥ मोहि० ॥ १ ॥ तुमसा साहिब और न मिलिया, सह्या भौत भटभेरा हो ॥ मोहि० ॥२॥ बुधजन अरज करै निशि वासर, राखौ चरनन चेरा हो ॥ मोहि० ३

(८६)

ज्ञान विन थान न पावौगे, गति गति फिरौगे अजान ॥ ज्ञान० ॥ टेक ॥ गुरुउपदेश लह्यौ नहिं उरमैं, गह्यौ नहीं सरधान ॥ ज्ञान० ॥१॥ विषयभोगमैं राचि रहे कि आरति रौद्र कुध्यान

आन-आन लखि आन भये तुम, परनति करि लई आन ॥ज्ञा०॥ ।' निपट कठिन मानुष भव पायौ, और मिले गुनवान। अब बुधजन जिनमतको धारौ, करि आपा पहिचान ॥ज्ञा०

(८७) राग—केदारो एकतालो।

अहो मेरी तुमसौं बीनती, सब देवनिके देव अहो० ॥टेक॥ ये दूषनजुत तुम निरदूषन जगत हितू स्वयमेव। अहो० ॥१॥ गति अनेकमैं अति दुख पायौ, लीने जनम अछेव। हा संकट हर दे बुधजनकौं, भव भव तुम पद सेव॥ अहो० ॥ २ ॥

(८८) राग—केदारो।

याही मानौं निश्चय मानौं, तुम बिन और न मानौं ॥याही०॥ टेक। अबलौं गति गतिमैं दुख पायौ, नाहिं लायौ सरधानौं ॥याही० १॥ दुष्ट मतावत कर्म निरंतर करैं क्रूर इन्है भानौं भक्ति तिहारी भव भव पाऊं, जौलौं लहौं शिवथानौं ॥याही० ॥ २ ॥

(८९) राग—सोरठ ।

भोगांरा लोभीड़ा, नरभव खोयो रे अजान भोगांरा० ॥ टेक ॥ धर्मकाजकौ कारन थौ यौ, सो भूल्यौ तू बान । हिंसा अनृत परतिय चोरी, सेवत निजकरि जान ॥ भोगांरा० ॥१॥ इन्द्रीसुखमैं मगन हुवौ तू, परकौं आतम मान । बंध नवीन पड़ैं छै यातैं, होवत मोटी हान ॥ भोगांरा० ।२। गयौ न कछु जो चेतौ बुधजन, पावौ अविचल थान । तन है जड़ तू दृष्टा ज्ञाता कर लै यौं सरधान ॥ भोगांरा० ॥ ३ ॥

(९०)

म्हारी कौन सुनै, थे तौ सुनिल्यो श्रीजिनराज ॥ म्हारी० ॥ टेक ॥ और सरब मतलबके गाहक, म्हांरौ सरत न काज । मोसे दीन अनाथ रंककौ, तुमतैं बनत इलाज ॥ म्हांरी० ॥ १ ॥ निजपर नेकु दिखावत नाहीं, मिथ्या तिमिर समाज । चंदप्रभू परकाश करौ उर, पाऊं धाम निजाज ॥ म्हारी० ॥२॥ थकित भयौ हूं गति

गति फिरतां, दर्शनपायौ आज। बारंबार वीनवै बुधजन, सरन गहेकी लाज॥ म्हारी० ॥३॥

(६१) राग—सोरठ।

छिन न बिसारां चितसौं, अजी हो प्रभुजी थांनै ॥चिन० टेक॥ वीतरागछबि निरखत नयना, हरष भया सो उर ही जानै ॥ छिन० ॥१॥ तुम मत खारक दाख चाखिकै, आन निमोरी क्यौं मुख आवै। अब तौ सरन राखि रावरी, कर्म दुष्ट दुख दे छै म्हांनै ॥ छिन० ॥२॥ वस्यौ मिथ्यामत अम्रत चाख्यौ, तुम भाख्यौ, धारचौ मुझ कानै। निशिदिन थांकौ दर्शमिलौ मुझ, बुधजन ऐसी अरज बखानै ॥ छिन० ३

(६२)

बन्यौ म्हांरै या घरीमैं रंग ॥ बन्यौ० टेक ॥ तत्वारथकी चरचा पाई, साधरमीकौ संग ॥ बन्यौ० ॥१॥ श्रीजिनचरन बसे उरमाहीं, हरष भयौ सब अंग। ऐसी विधि भव भवमैं मिलिज्यौ, धर्मप्रसाद अभंग ॥ बन्यौ० ॥ २ ॥

(६३) राग—सोरठ।

कींपर करौ जी गुमान, थे तौ कै दिनका मिजमान ॥ कींपर० ॥ टेक ॥ आये कहांतैं कहां जावोगे, यै उर राखौ ज्ञान ॥कींपर० ।१। नारायण बलभद्र चक्रवर्ति, नाना रिद्धि निधान। अपनी बारी भुगतिर, पहूंचे परभव थान। कीं-पर० ॥ २ ॥ झूठ बोलि मायाचारीतैं, मति पीड़ा परप्रान। तन धन दे अपनै वश बुधजन, करि उपगार जहान ॥ कींपर० ॥ ३ ॥

(६४) राग—सोरठ, एकतालो।

चंदाप्रभु देव देख्या दुख भाग्यौ ॥ चंदा० टेक। धन्य दहाड़ो मन्दिर आयौ, भाग अपूरब जाग्यौ ॥ चंदा० ॥ १ ॥ रह्यौ भरम तब गति गति डोल्यो, जनम-मरन दौं दाग्यौ। तुमको देखि अपनपौ देख्या, सुख समतारस पाग्यौ ॥ चंदा० ॥२॥ अब निरभय पद बेगहि पास्यौं हरष हिये यौं लाग्यौ। चरनन सेवा करै निरंतर, बुधजन गुन अनुरागौ ॥ चंदा० ॥ ३ ॥

(६५) राग—सोरठ।

ज्ञानी थारी रीतिरौ अचंभा मोनैं आवै छै ज्ञानी० ॥ टेक ॥ भूलि सकति निज परवश ह्वै क्यौं, जनम जनम दुख पावै छै ॥ ज्ञानी० ॥१॥ क्रोध लोभ मद माया करि करि, आपो आप फँसावै छै। फल भोगनकी बेर होय तब, भोगत क्यौं पिछतावै छै ॥ ज्ञानी० ॥ २ ॥ पाप काज करि धनकौं चाहै, धर्म विषैमैं बतावै छै। बुधजन नीति अनीति बताई, सांचौ सौ बतरावै छै ॥ ज्ञानी० ॥ ३ ॥

(६६)

अब घर आये चेतनराय, सजनी खेलौंगी मैं होरी ॥ अब० ॥ टेक ॥ आरस सोच कानि कुल हरिकै, धरि धीरज बरजोरी ॥सजनी० १ बुरी कुमतिकी बातनबूझै, चितवत है मोओरी वा गुरुजनकी बलि बलि जाऊं, दूरि करी मति भोरी ॥सजनी० ॥२॥ निज सुभाव जल हौज भराऊं, घोरूं निजरंग रोरी। निज ल्यौं ल्याय

शुद्ध पिचकारी, छिरकत निज मति दोरी। सजनी० ॥ गाय रिझाय आप वश करिकै, जावन द्यौं नहि पोरी। बुधजन रचि मचि रहूं निरंतर, शक्ति अपूरब मोरी ॥ सजनी० ।४।

(६७) राग—सोरठ।

हमको कछू भय ना रे, जान लियौ संसार। हमकौं० ॥ टेक ॥ जो निगोदमैं सो ही मुझमैं, सो ही मोखमँझार। निश्चय भेद कछू भी नाहीं भेद गिनै संसार ॥ हमकौं० ।१। परवश ह्वै आपा विसारिकै, राग दोषकौं धार। जीवत मरत अनादि कालतै, यौं ही है उरझार ॥ हमकौं० ॥ २ ॥ जाकरि जैसें जाहि समयमैं, जो होतब जा द्वार। सो बनिहै टरिहै कछु नाहीं, करि लीनौं निरधार ॥ हमकौं० ॥३॥ अगनि जरावै पानी बोवै, बिछुरत मिलत अपार। सो पुद्गल रूपी मैं बुधजन सबकौं जाननहार ॥ हमकौं० ॥ ४ ॥

(६८) राग—सोरठ।

आज तौ बधाई हो नाभिद्वार ॥ आज० ॥

टेक ॥ मरुदेव माताके उरमैं, जनमैं ऋषभकुमार ॥ आज० ॥ १ ॥ सची इन्द्र सुर सब मिलि आये, नाचत हैं सुखकार । हरषि हरषि पुरके नर नारी, गावत मंगलचार ॥ आज० ॥२॥ ऐसौ बालक हूवो ताकै, गुनकौ नाहीं पार । तन मन वचतैं बंदत बुधजन, है भव-तारनहार ॥ आज०

(६६)

सुणिल्यो जीव सुजान, सीख सुगुरु हितकी कही ॥ सुणि० ॥ टेक ॥ रुल्यो अनन्ती बार, गति गति साता ना लही ॥ सुणि० ॥१॥ कोईक पुन्य संजोग, श्रावक कुल नरगति लही । मिले देव निरदोष, वाणी भी जिनकी कही ॥ सुणि० ॥२॥ चरचाको परसग, अरु सरध्यामैं बैठिबो । ऐसा अवसर फेरि, कोटिजनम नहिं भैंटिवो ॥सु०॥३॥ झूठी आशा छोड़ि तत्त्वारथ रुचि धारिल्यो । या में कछू न बिगार आपो आप सुधारिल्यो ॥ सुणि० ॥४॥ तनको आतम मानि, भोग विषय कारज करौ । यौं ही करत अकाज, भव भव क्यौं

कूवे परो ॥ सुणि० ॥ ५ ॥ कोटि ग्रंथकौ सार, जो भाई बुधजन करौ। राग दोष परिहार, याही भवसौं उद्धरौ ॥ सुणि० ॥ ६ ॥

(१००) राग—सोरठा।

अब थे क्यौं दुख पावौ रे जियरा, जिनमत समकित धारौ ॥अब०॥ टेक॥ निलज नारि सुत व्यसनी मूरख, किंकर करत बिगारौ। सासूम अदेखक भैया, कैसें करत गुजारौ ॥ अब० ॥ १ ॥ वाय पित्त कफ खांसी तन दृग, दीसत नाहिं उजारौ। करजदार अरु बे रुजगारी, कोऊ नाहिं सहारौ ॥ अब० ॥ २ ॥ इत्यादिक दुख सहज जानियौ, सुनियौ अब विस्तारौ। लख चौरासी अनत भवनलौं, जनम मरन दुख भारौ ॥ अब० ॥३॥ दोषरहित जिनवरपद पूजौं, गुरु निरग्रंथ विचारौ। बुधजन धर्म दया उर धारौ, व्है है जै जैकारौ ॥ अब० ॥ ४ ॥

(१०१) राग—सोरठा।

म्हारौ मन लीनौ छै थे मोहिं, आनन्दघन

जी ॥ म्हारो० ॥ टेक ॥ ठौर ठौर सारे जग भटक्यो, ऐसो मिल्यौ नहिं कोय । चंचल चित मुझि अचल भयौ है, निरखत चरनन तोय ॥ म्हांरौ० ॥ १ ॥ हरष भयौ सो उर ही जानैं, वरनौं जात न सोय । अनंतकालके कर्म नसैंगे सरधा आई जोय ॥ म्हांरौ० ॥२॥ निरखत ही मिथ्यात मिट्यौ सब, ज्यौं रवितें दिन होय । बुधजन उरमैं राजौ नित प्रति, चरनकमल तुम दोय ॥ म्हांरौ० ॥ ३ ॥

(१०२) राग— विहाग ।

सीख तोहि भाषत हूं या, दुख मैंटन सुख होय ॥ सीख० ॥ टेक ॥ त्यागि अन्याय कषाय विषयकौं, भोगि न्याय ही सोय ॥ ॥ सीख० ॥१ मडैं धरमराज नहिं दंडै, सुजस कहै सब लोय । यह भौ सुख परभौ सुख हो है, जन्म जन्म मल धोय ॥ सीख० ॥२॥ कुगुरु कुदेव कुधर्म न पूजौ, प्राण हरौ किन कोय । जिनमत जिनगुरु जिनवर सेवौ, तत्त्वारथ रुचि जोय ॥ सीख० ३

हिंसा अनृत परतिय चोरी, क्रोधलोभ मद खोय दया दान पूजा संयम कर, बुधजन शिव है तोय ॥ सीख० ॥ ४ ॥

(१०३)

तेरौ गुण गावत हूं मैं, निजहित मोहि जताय दे ॥ तेरौ० ॥ टेक ॥ शिवपुरकी मोकौं सुधि नाहीं, भूलि अनादि मिटाय दे ॥ तेरौ० ॥ १ ॥ भ्रमत फिरत हूं भव वनमाहीं, शिवपुर वाट बताय दे। मोह नींदवश घूमत हूं नित, ज्ञान बधाय जगाय दे ॥ तेरौ० ॥ २ ॥ कर्म शत्रु भव भव दुख दे हैं, इनतैं मोहि छुटाय दे। बुधजन तुम चरना सिर नावै, एती बात बनाय दे। तेरौ०

(१०४) राग—विहार।

मनुवा बावला हो गया ॥ मनुवा० ॥ टेक ॥ परवश वसतु जगतकी सारी, निज वश चाहै लाया ॥ मनुवा० ॥१॥ जीरन चीर मिल्या है उदय वश, यौं मांगत क्यों नया ॥ मनुवा० ॥२ जो कण बोया प्रथम भूमिमैं, सो कब औरै भ-

या ॥ मनुवा० ॥३॥ करत अकाज आनकौ निज गिन, सुधपद त्याग दया ॥ मनुवा० ॥ ४ ॥ आप आप बोरत विषयी ह्वै, बुधजन ढीठ भया मनुवा० ॥ ५ ॥

(१०५)

भज जिन चतुर्विंशति नाम ॥ भजि० ॥ टेक ॥ जे भजे ते उतरि भवदधि, लयौ शिव सुखधाम ॥ भज० ॥ १ ॥ ऋषभ अजित संभव स्वामी, अभिनंदन अभिराम । सुमति पदम सुपास चंदा, पुष्पदन्त प्रनाम ॥ भज० ॥२॥ शीत श्रेयान बासुपूजा, विमल नन्त सुठाम । धर्मशांति जु कुंथु अरहा मल्लि राखें माम ॥ भज० ॥ ३ मुनिसुव्रत नमि नेमिनाथा, पार्श्व सन्मति स्वाम राखि निश्चयजपौ बुधजन,पुरै सबकी काम । भज० ॥ ४ ॥

(१०६) राग— मालकोष ।

अब तू जान रे चेतन जान, तेरी होवत है नित हान ॥ अब० टेक ॥ रथ वाजि करी अ-

सवारी, नाना विधि भोग तयारी। सुंदर तिय सेज सँवारी, तन रोग भयौ या ख्वारी ॥ अब० ॥ १ ॥ ऊंचे गढ़ महल बनाये, बहु तोप सुभट रखवायें। जहां रुपया मुहर धराये, सब छांड़ि चले जम आये ॥ अब० ॥ २ ॥ भूखा ह्वै खाने लागै धाया पट भूषण पागै। सत भये सहस लाखि मांगै, या तिसना नाहीं भागै ॥ अब० ॥ ३ ॥ ये अथिर सौंज परिवारौ, थिर चेतन क्यौं न सम्हारौ। बुधजन ममता सब टारौ, सब आपा आप सुधारौ ॥ अब० ॥ ४ ॥

(१०७) राग—कालिंगड़ो परज धीमो तेतालो।

म्हे तौ थांका चरणां लागां आन भावकी परणति त्यागां ॥ म्हे० ॥ टेक ॥ और देव सेया दुख पाया, थे पाया छौ अब बड़भागां ॥ म्हे० ॥ २ एक अरज म्हांकी सुण जगपति, मोह नींदसौं अबकै जागां। निज सुभाव थिरता बुधि दीजे और कछू म्हे नाहीं मांगा ॥ म्हे० ॥ २ ॥

(१०८) राग—कालिंगड़ो।

आज मनरी बनी छै जिनराज ॥ आज० ॥ टेक ॥ थांको ही सुमरन थांको ही पूजन, थांको तत्वविचार। आज०॥१॥ थांके बिछूरैं आति दुख पायौ, मोपै कह्यौ न जाय। अब सनमुख तुम नयनौं निरखे, धन्य मनुष परजाय आज०॥ २॥ आजहि पातक नास्यौ मेरौ, ऊतरस्यौं भव पार। यह प्रतीत बुधजन उर आई, लेस्यौं शिवसुख सार॥ आज०॥३॥

(१०९)

हा जी म्हे निशिदिन ध्यावां, ले ले बलहारियां॥ होजी० ॥ टेक॥ लोकालोक निहारक स्वामी, दीठे नैन हमारियां हो जी०॥ १॥ षट चालीसौं गुनके धारक, दोष अठारह टालियां। बुधजन शरनैं आयौ थांके, थे शरणागत पालियां॥ हो जी० ॥२॥

(११०) राग—पराज

म्हे तौ ऊभा राज थांनै अरज करां छां मानौं महाराज म्हे० ॥ टेक॥ केवलज्ञानी त्रिभुवन-

नामी, अँतरजामी सिरताज म्हे० ॥ १ ॥ मोह शत्रु खोटो संग लाग्यौ, बहुत करै छै अकाज। यातैं बेगि बचावौ म्हानैं, थांनै म्हाकी लाज ॥ म्हे० ॥२॥ चोर चँडाल अनेक उबारे, गीधश्याल मृगराज। तौ बुधजन किंकरके हितमैं, ढील कहा जिनराज म्हे० ॥३॥

(१११) राग—कालिंगड़ो

कुमतीको कारज कूड़ौ, हो जी ॥ कुमती० ॥ टेक॥ थांकी नारि सयानो सुमती, मतो कहै छै रूड़ौ जी ॥ कुमती० ॥१॥ अनन्तानुबँधीकी जाई, क्रोध लोभ मद भाई। माया बहिन पिता मिथ्यामत, या कुल कुमती पाई जी ॥ कुमती० ॥२॥ घरको ज्ञान धन वादि लुटावै, राग दोष उपजावै। तब निर्बल लखि पकरि करम रिपु, गति गति नाच नचावै ॥कुमती०॥३॥ या परिकरसौं ममत निवारो, बुधजन सीख सम्हारो। धरमसुता सुमती सँग राचौ, मुक्ति महलमैं पधारो ॥ कुमती० ॥४॥

(११२) राग—कालिंगड़ो ।

हूं कब देखूं वे मुनिराई हो ॥ हूं० ॥ टेक ॥ तिल तुष मान न परिग्रह जिनकैं, परमातम ल्यौं लाई हो ॥ हूं ॥१॥ निज स्वारथके सब ही बांधव, वे परमारथभाई हो । सब विधिलायक शिव मग दायक तारन तरन सहाई हो ॥ हूं० ॥२॥

(११३)

अजी हो जीवा जी थांनै श्रीगुरु कहै छै, सीख मानौं जी अजी० ॥ टेक ॥ बिन मतलबकी थे मति मानौं, मतलबकी उर आनौं जी ॥ अजी० ॥१॥ राग दोषकी परिनति त्यागौ, निज सुभाव थिर ठानौं जी । अलख अभेद रु नित्य निरंजन, थे बुधजन पहिचानौं जी ॥ अजी० ॥२॥

(११४)

आयौ जी प्रभु थांपै, करमांरो पीड्यौ आयौ॥ आयो० ।टेक। जे देखे तेई करमनि वश, तुम ही करम नसायौ ॥ आयौ० ॥ १ ॥ सहज स्वभाव नीर शीतलको, अगनि कषाय तपायौ । सहे कुलाहल अनंतकालमैं, नरक निगोद डुलायो

॥ आयौ० ॥२॥ तुम मुखचंद निहारत ही अब, सब आताप मिटायो। बुधजन हरष भयौ उर ऐसै, रतन चिन्तामनि पायौ ॥ आयौ० ॥३॥

(११५) राग—परज

महाराज, थांनै सारी लाज हमारी, छत्रत्रय-धारी ॥ महाराज० ॥टेक॥ मैं तौ थारी अद्भुत रीती, नीहारी हितकारी ॥ महाराज० ॥ १ ॥ निंदक तौ दुख पावै सहजैं, बंदक ले सुख भारी। असी अपूरव वीतरागता, तुम छबिमाहिं विचारी। महाराज०॥२॥ राज त्यागिके दीक्षा लीनी, परजनप्रीति निवारी। भये तीर्थंकर महिमाजुत अब, संग लिये रिधि सारी ॥ ३ ॥ मोह लोभ क्रोधादिक मारे, प्रगट दयाके धारी। बुधजन बिनवे चरन कमलकौं, दीजे भक्ति तिहारी ॥ महाराज० ॥४॥

(११६)

मुनि बन आये बना ॥मुनि०॥ टेक ॥ शिव वनरी व्याहनकौं उमगे, मोहित भविक जना ॥

मुनि० ॥१॥ रतनत्रय सिर सेहरा बांधैं, सजि संवर बसना। संग बराती द्वादश भावन, अरु दशधर्मपना ॥ मुनि० ॥२॥ सुमति नारि मिलि मंगल गावत, अजपा (?) गीत घना। राग दोष की आतिशबाजी, छूटत अगनि-कना॥ मुनि० ॥३॥ दुविधि कर्मका दान बटत है, तोषित लोकमना। शुक्ल ध्यानकी अगनि जलाकरि, होमैं कर्मघना॥ मुनि० ॥४॥ शुभ बेल्यां शिव बनरि वरी मुनि, अद्भुत हरष बना। निज मंदिरमैं निश्चल राजत बुधजन त्याग घना ॥मुनि०।५।

(११७)

लखैंजी आज चंद जिनंद प्रभूकौं, मिथ्यातम मम भागौ ॥ लखैं० ॥टेक॥ अनादिकालकी तपति मिटी सब सूतौ जियरौ जागौ ॥ लखैं० ॥१॥ निज संपति निजही मैं पाई तब निज अनुभव लागौ। बुधजन हरषत आनंद वरषत अमृत झरमैं पागौ॥ लखैं० ॥२॥

उपयोगी ग्रन्थोंकी सूची

पद्मपुराण १०)
हरिवंश पुराण ८)
पांडव पुराण (सचित्र) ५)
„ सजिल्द ६) रेशमी ६॥)
शांतिनाथ पुराण ६)
आदिनाथ पुराण ६)
वृहद् विमलनाथ पुराण ६)
रत्न करण्ड श्रावकाचार ५॥)
चौवीसी पुराण ३) सजिल्द ४)
प्रद्युम्न चरित्र ३) रेशमी ४)
पुरुषार्थ सिद्धुपाय ४)
आराधना कथा कोष ३॥) ४)
महावीरपुराण ३॥) सजिल्द ४)
मल्लिनाथ पुराण ४)
मोक्षमार्ग प्रकाशक३) सजिल्द ३॥)
पुन्याश्रवकथाकोष २॥) रेशमी ३)
जैन क्रिया कोष २॥) रेशमा ३)
सच्चा जिनवाणी संग्रह ३)
श्रीपालपुराण शास्त्राकार ३)
जैनव्रत कथा कोष २॥)
बडापूजा विधान २॥)
कर्म पथ (उपन्यास) २॥)

महाराज श्रेणिक २) रेशमी २॥)
चरचा समाधान २)
सप्तव्यसन चरित्र १।) स० १॥)
पार्श्वनाथ पुराण २) सादा १॥)
भक्तामरकथा मंत्रतंत्र १।) स०१।॥)
वीरपूजा नाटक १॥)
जैन महिलाभूषण १) सजिल्द १॥)
जैन भारती १।)
जापान ब्रिटेनकी छातीपर १।)
यूरुपमें जंगकी तैयारी १।)
धन्यवाद (उपन्यास) १।)
सुकमाल चरित्र १)
वृन्दावन चौवीसी पाठ १)
रामचद्र चौवीसी १)
राम वनवास १)
नवीनतीर्थयात्रा ।॥) नकशायुक्त१)
सुदर्शन चरित्र सचित्र १)
चारुदत्त-चरित्र ॥।)
संमग ॥।)
धनकुमार चरित्र ॥।)
शील महिमा नाटक ॥।)
गौतम चरित्र सजिल्द ॥।)
पोपोंकी ५ कहानियां ॥।)

पत्र व्यवहार करनेका पता—

जिनवाणीप्रचारक कार्यालय, १६१।१ हरीसन रोड, कलकत्ता

जैन पद संग्रह



जिनवाणी प्रचारक कार्यालय
कलकत्ता



श्रीमहाचंद्र-जैन-भजनावली



संग्रहकर्त्ता व प्रकाशकः—

बाबू छोगालालजी सेठी, बावडी दरवाजा।

सीकर (राजपूताना)

वीर निर्वाण सं० २४५३

प्रकाशक—

छोगालाल सेठी,

सीकर (राजपूताना)



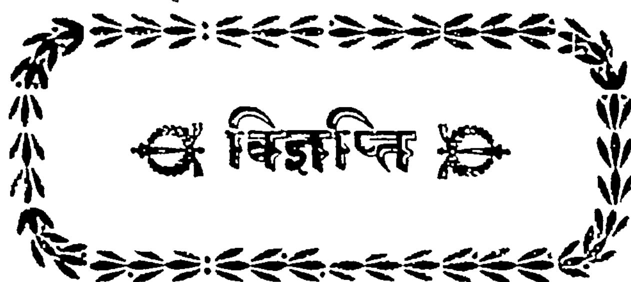
मुद्रक—

बाबू नरसिंहदास अग्रवाल,

श्रीलक्ष्मी प्रिंटिङ्ग वर्क्स,

३७०, अपर चितपुर रोड,

कलकत्ता।



आज मैं पाठकोंके समक्ष उन पण्डितजी महाराजके कथित भाषा पदोंका कुछ संग्रह लेकर उपस्थित हुआ हूं जो सीकर (शेखावाटी)-में संस्कृत व प्राकृत भाषाके अच्छे विद्वान एवं क्षुल्लक त्यागी हो चुके हैं और जिनके बनाये हुये संस्कृत व प्राकृत भाषाके जैनेन्द्र सारादि पांच सात महान ग्रन्थ सीकर शास्त्र भंडारमें विद्यमान हैं इनके अलावा संस्कृत भाषामें षटपदी नामक एक गायन ग्रन्थ बड़ा ही ललित रचा हुआ है वह भी उपरोक्त भंडारमें विद्यमान है परन्तु आज तक सिवाय एक सामायकपाठके कोई भी ग्रन्थ प्रकाशित नहीं हुआ कि जिससे समाजको इनका परिचय मिलता, हमने अपने इष्ट मित्रोंके अनुरोधसे उपरोक्त पण्डितजीके भाषा पदोंका (जो कुछ वृद्ध सज्जनोंसे सुने थे, उनका) संग्रह करके यह महाचन्द्र जैन भजनावली नामक पुस्तक प्रकाशित की है आशा है समाज इसको अपनावेगा तो मैं अपना परिश्रम सफल समझूंगा। अलम्

जैनसमाजका दासः—

छोगालाल सेठी।

नई चीज ! न देखी होगी !! और न सुनी होगी

श्रीहरिवंशपुराण चित्रावली।



श्री हरिवंशपुराणके चित्रोंका काम अब दो वर्षोंमें पूरा हुवा है हजारों रुपया व्यय करके २५ रंग विरंगे चिकने आर्ट पेपर पर छपे हुए भाव पूर्ण चित्रोंका दर्शन-जिस समय आप करेंगे उस समय घंटोतक आप प्रत्येक चित्रको एक टक नजरसे अवलोकन करते हुए मनमें चतुर्थकाल के दृश्यका अनुभव करने लगेंगे। एक एक चित्रके वनानेमें ५०) से १५०) रु० तक खर्च हुवा है १५ चित्र तो तीन तीन रंगके छपे हुए इतने सुन्दर हैं कि हम लेखनी द्वारा कुछ भी नहीं वता सकते। चित्रोंकी सूची एक पत्र लिख कर मंगाइये। न्योछावर ३) रुपया मात्र रेशमी सुनहरी जिल्द वंधे चित्रोंका ४)।

जिनवाणी-प्रचारक कार्यालय,

पोष्टबक्स ६७४८, कलकत्ता



जैनबालबोधक पाठ संग्रह जो कि जैन पाठशालाओंमें पढ़ाने लायक उपयोगी पुस्तक है जिसमें मंगलपाठ, अभिषेक पाठ, बधाई, आरती, दर्शनविधि, भक्तामर स्तोत्र, लघु काल चर्चा इत्यादि ११ विषयोंका समवेष है और संगठन इस क्रमसे रखा गया है कि बाहर गांवोंमें भी बालक बगैर अध्यापकके अपने आप सीखकर लाभ उठा सक्ते हैं मूल्य सिर्फ लागत मात्र न्यों ≡) हैं पांच प्रति एक साथ खरीदने पर एक प्रति मुफ्त दी जाती हैं

वृहत् जैनपदसंग्रह में क्या है ?

जिस संग्रह के लिये जैन समाज के कोने कोने से आर्डर आ रहे थे और हम उन्हें बराबर आस्वासन देते रहे थे-वही आज ६३५ पदों का संग्रह ४०० पृष्ठोंमें छप कर तैयार हो गया इसमें बुधजनजी, द्यानतजी, भूधरजी, भागचन्दजी, जिनेश्वरजी, दौलतरामजी और महाचन्दजी, जैसे महान विद्वानोंकी चुनी हुई उत्तम २ राग रागनियों का संग्रह है। एक ही पुस्तक मंगा लेने से तमाम कवियों की कविताओं का स्वाद आनन्द से मिल सक्ता है। न्योछावर इतने बड़े ग्रन्थ की सिर्फ २) रेशमी जिल्द का २॥) रुपया रक्खा गया है। संग्रह बड़े २ अक्षरों में पुष्ट कागज पर शुद्धता पूर्वक छपाया गया है। मुख पृष्ट पर भाव पूर्ण सुन्दर चित्र भी दिया है। इतना सब होने पर भी सदैव की तरह कार्यालय के ग्राहकोंको पौना कीमत में भेजा जायगा।

पत्र व्यवहार का पताः—

नृपेन्द्रकुमार जैन मैनेजर,

जिनवाणी प्रचारक कार्यालय, ६७४८, कलकत्ता।

ग्राहक होनेके नियम ॥

१—१) रुपया प्रवेशफी देनेसे हर कोई भाई ग्राहक हो सक्ते हैं परंतु प्रकाशित ग्रंथोंमें कमसे कम ५) रु०के ग्रंथ लेने होंगे।

२—ग्राहकोंको १ वर्षमें कमसे कम १०) रुपयाके नवीन ग्रंथ जो प्रकाशित होंगे वह लेने ही होंगे।

३—जिन ग्राहकोंकी वी० पी० वापिस आयगी उनको सूचना दे कर उनका नाम ग्राहक श्रेणोसे पृथक् कर दिया जायगा।

४—२०) रु०से ज्यादा ग्रन्थ मंगाते समय ५) रुपया पेशगी भेजना चाहिये, अन्यथा वी०पी० नहीं भेजी जायगी।

५—रास्तेमें अगर पार्सल खो जाय या खराब हो जाय तौ उसके लिये कार्यालय दायी न होगा।

६—ग्रंथ तैयार होते ही ग्राहकोंको सूचना दी जायगी अगर १० दिन तक उनकी इन्कारीका पत्र न आयगा तौ वी० पी० भेज दी जायगी—अगर हिसाबमें कुछ भूल हो तौ पार्सल छुड़ा कर यहां पत्र लिखें ठीक कर दी जायगी। पर पार्सल लौटानेसे उभयपक्षकी हानि ही है।

नृपेन्द्रकुमार जैन—मैनेजर,

जिनवाणी प्रचारक कार्यालय,

८३ लोअर चितपुर रोड कलकत्ता।

॥ ॐ नमः सिद्धेभ्यः ॥

महाचन्द्र जैन भजनमाला।

(१) बधाई।

बधाई आली नाभिराय घर आज ॥ टेर ॥ मरुदेवी सुत ऊपजो है आदि जिनेंद्र कुमार। इन्द्रपुरी तैं हू भली है आज अयोध्या द्वार ॥ बधाई० ॥ १ ॥ जन्मत सुरपति आइये हैं ले ले सब परिवार। मेरु शिखरपै न्हवन कियो है क्षीरोदधिजल धार ॥ बधाई० ॥२॥ रूप जिनंद निहारके हे तृप्त न हुवो सुरराय। सहस्र नयन तबही रचे हैं देखनको जिनराय ॥ बधाई० ॥ ३ ॥ नाम दियो तब इन्द्रने है ऋषभदेव महराज। सौंपि नृपति कौं नाचिके हैं निज निज स्थान विराज ॥ बधाई ॥ ४ ॥ बीन बांसुरी नोवत्यां है वाजत सुन झनकार। नर नारी सबही चले हैं देखनको जिन

द्वार ॥ बधाई० ॥ ५ ॥ आधि व्याधि सबही तजे हैं तज दिये घरके काज। बालक छोड़े रोवते हैं देखनको महाराज ॥ बधाई० ॥६॥ जाचक जन बहु पोषिये हैं दान देय राजेन्द्र। दी अशीस यों जिनबधो ज्यों दोयजको महाचंद्र ॥ बधाई० ॥७॥

(२) बधाई।

सिद्धारथ राजा दरबारैं बटत बधाई रंग भरी हो ॥ टेक ॥ त्रिसला देवीनैं सुतजायो वर्द्धमान जिनराज बरी हो। कुंडलपुरमें घर घर द्वारे होय रही आनंद घरी हो ॥ सिद्धा० ॥ १ ॥ रत्नकी वर्षाको होते पन्द्रह मास भये सगरी हो। आज गगन दिश निरमल दीखत पुष्प बृष्टि गंधोद झरी हो ॥ सिद्धा० ॥ २ ॥ जन्मत जिनके जग सुख पाया दूरि गये सब दुक्ख टरी हो। अन्तर मुहूर्त नारकी सुखिया ऐसो अतिशय जन्म धरी हो ॥ सिद्धा० ॥ ३ ॥ दान देय नृपने बहुतेरो जाचिक जन मन हर्ष करी हो। ऐसे बीर जिनेश्वर चरणौं बुध महाचंद्र जु सीस धरी हो ॥४॥

(३) बधाई।

धन्य घड़ी याही धन्य घड़ीरी। आज दिवस याही धन्य घड़ी री ॥ टैर ॥ पुत्र सुलक्षण महासैन घर जायो चंद्रप्रभ चन्द्रपुरी री ॥ धन्य० ॥१॥ गजके बदन शत बदन रदन बसु रदनपै तरवर एक करीरी। सरवर सत पच्चीस कमलिनो कमलिनी कमल पचीस खरीरी ॥ धन्य० ॥ २ ॥ कमल पत्र शत आठ पत्र प्रति नाचत अपसरा रंग भरीरी। कोडि सताइस गज सजि ऐसो आवत सुरपति प्रीत धरीरी ॥ धन्य ॥३॥ ऐसो जन्म महोत्सव देखत दूरि होत सब पाप टरीरी। बुध महाचन्द्र जिके भव मांही देखे उत्सव सफल परीरी ॥ धन्य० ॥ ४ ॥

(४) बिहाग।

चिदानन्द भूलि रह्यो सुधि सारी। तू तो करत फिरै म्हारी म्हारी ॥ चिदा० ॥ टैर ॥ मोह उदय तैं सबही तिहारो जनक मात सत नारी। मोह दूरि कर नेत्र उघारो इनमें कोइ न तिहारी

॥ चिदा० ॥ १ ॥ झाग समान जीवना जोविन परबत नाला कारी। धन पद रंज समान सबन को जात न लागे वारी ॥ चिदा० ॥ २ ॥ जूवा मांस मद्य अरु वेश्या हिंसा चौरी जारी। सप्त व्यसनमें रक्त होयके निज कुल कीनी कारी ॥ चिदा० ॥ ३ ॥ पुन्य पाप दोनों लार चलत हैं यह निश्चय उर धारी। धर्म द्रव्य तोय स्वर्ग पठावै पाप नर्कमें डारी ॥४॥ आतम रूप निहार भजो जिन धर्म मुक्ति सुखकारी। बुध महाचन्द्र जानि यह निश्चय जिनवर नाम सम्हारी ॥५॥

(५) सोरठ।

जीव निज रस राचन खोयो, योतो दोष नहीं करमनको ॥ जीव०॥ टेर॥ पुद्गल भिन्न स्वरूप आपणूं सिद्ध समान न जोयो ॥ जीव ॥१॥ विषयनके संग रक्त होयके कुमती सेजां सोयो। मात तात नारी सुत कारण घर घर डोलत रोयो ॥ जीव ॥ २ ॥ रूप रंग नव जोविन परकी नारी देख रमोयो। परकी निन्दा आप वड़ाई करता

जन्म विगोयो ॥ जीव० ॥३॥ धर्म कल्पतरु शिव फल दायक ताको जरतैं न टोयो। तिसकी ठोड महाफल चाखन पाप बमूल ज्यों बोयो ॥ ४ ॥ कुगुरु कुदेव कुधर्म सेयके पाप भार बहु ढोयो। बुध महाचन्द्र कहे सुन प्रानी अंतर मन नहीं धोयो ॥ जीव० ॥ ५ ॥

(६)

निज घर नाय पिछान्यारे, मोह उदय होने तैं मिथ्या भर्म भुलानारे ॥ निज० ॥ टैर ॥ तूं तो नित्य अनादि अरूपी सिद्ध समानारे। पुद्गल जड़में राचि भयो तूं मूर्ख प्रधाना रे ॥निज०॥१॥ तन धन जोबिन पुत्र बधू आदिक निज मानारे। यह सबजाय रहनके नांई समझ सियानारे ॥ निज० ॥२॥ बालपने लड़कन संग जोबिन त्रिया जवानारे। वृद्धभयो सब सुधिगई अब धर्म भुलानारे ॥ निज ॥ ३ ॥ गई गई अबराख रही तू समझ सियानारे। बुद्ध महाचंद्र बिचारिर जिन पद नित्य रमानारे ॥ निजघर ॥ ४ ॥

(७)

पूजा रचाऊं जो पूजन फल पाऊं तुमपद चाहूंजी ॥ पूजा० ॥ टेर ॥ निरमल नीर धार त्रय देकर चंदन पद चर्चाऊंजी। उज्वल तन्दुल पुंज बनाकर पुष्प चढ़ाऊंजी ॥ पूजा० ॥ १ ॥ नानारस नैवेद्य मंगाऊं दीपक जोति जगाऊं जी। धूप अनंग मद संग खेयफल अर्घ धराऊंजी ॥ पूजा० ॥२॥ अष्टद्रव्यको अर्घ बनाऊं नाचि नाचि गुण गाऊंजी। बुधमहाचंद्र कहै करजोड्या तुम पद चाहूंजी ॥ पूजारचाऊजो ॥३॥

(८)

और निहारोजी श्रीजिनवर स्वामी अंतरयामीजी ॥ और नि० ॥टेर ॥ दुष्टकर्म मोय भव भव मांही देत रहैं दुखभारी जी। जरा मरण संभव आदि कछु पार न पायोजी ॥ और नि० १ ॥ मैं तो एक आठ संग मिलकर सोध सोध दुख सारोजी। देते हैं वरज्यो नहीं मानैं दुष्ट हमारोजी ॥ और ॥ २ ॥ और कोऊ मोय दीस-

त नांही सरणागत प्रतपालोजी। बुधमहाचन्द्र चरणढिग ठाड़ो शरणू थांकोजी ॥ और ॥ ३ ॥

(९) धमाल।

धरमीके धर्म सदा मनमें। धरमीके ॥ टेर॥ रामचन्द्र अरु सीताराणी जाय बसे दंडकबनमें ॥ धरमी० ॥ १ ॥ द्वारापेक्षण ताहूं कीनू मुनिवर एक मिले क्षणमें ॥ धरमी० ॥ २ ॥ मास एक उपवासी मुनि लखि हरषे दोउ मन बच तनमें धरमी० ॥ ३ ॥ दोष रहित मुनिदान निरखके पक्षी जटायु अनुमोदनमें ॥ धरमी० ॥ ४ ॥ बुधमहाचन्द्र कहांहूजावो धरमीके धरम सदा मनमें ॥ धरमी ॥ ५ ॥

(१०)

मैं कैसे शिवजाऊं रे डिगर भूलावनी ॥ मैं कैसे० ॥ टेर ॥ बालपने लरकन संग खोयो, त्रिया संग जवानी ॥ मैं कैसे० ॥ १ ॥ वृद्धभयो सब सुधिगई भजि जिनवर नाम न जानी ॥ मैं कैसे० ॥ २ ॥ भवबनमें डिगरी बहु परती दुख-

कंटक भरितानी ॥ मैं कैसे० ॥ ३ ॥ कामचोर ढिग मोह चढै दोउ मारगमांही निसानी ॥ मैं कैसे० ॥ ४ ॥ ऐसे मारग बुधमहाचन्द्र तूं जिनवरवचन पिछानी ॥ मैं कैसे० ॥ ५ ॥

(११)

सुफल घड़ी याही देखे जिनदेव ॥ टेर ॥ मनतो सुफल तुम चिंतवन करतैं पदजुग तुमपे आइ नयन सुफल तुम पद दरशेव ॥ सुफल० ॥ १ ॥ सीस सुफल तुम चरणन मनतैं जीभसुफल गुणगाइ हस्तसुफल तुम पदफरशेव ॥ सुफल० ॥ २ ॥ श्रवण सुफल तुम गुण सुणनेमें जन्म सुफल भजि साँइ बुधमहाचन्द्रजु चर्णनसेव ॥ सुफल० ॥ ३ ॥

(१२)

येही अज्ञान पना जिवड़ा तूने निजपर भेद न जानारे ॥ येही ॥ टेर ॥ तूतो अनादि अमर अरूपी निर्जर सिद्ध समानारे ॥ येही० ॥ १ ॥ पुद्गलजड़में राचिके चेतन होयरहा मूर्ख प्रधाना

रे ॥ येही० ॥ २ ॥ कहत सबैं जगवस्तु हमारी जैसे बकत अयानारे ॥ येही० ॥ ३ ॥ आतमरूप सम्हारि भजो जिन बुधमहाचन्द्र बखानारे ॥ येही अज्ञान० ॥ ४ ॥

(१३)

जिनबानी सदासुखदानी, जानि तुम सेवो भविक जिनबानी ॥टेर॥ इतरनित्य निगोदमांहि जे जीव अनंत समानी। एक सांस अष्टादश जामण मरण कहे दुखदानी ॥ जानि० ॥ १ ॥ पृथ्वी जल अरु अग्नि पवनमें और बनस्पति आनी। इनमें जीव जिताय जितायर, जीवदयाकी कहानी ॥ जानि० ॥ २ ॥ नित्य अकारण आदिनिधनकरि तीन लोक त्रयमानी। करता हरता कोउनाय याको,ऐसो भेद जतानी ॥जानी० ३ ॥ बात बलत्रय बेड़ि घनोदधि धन तनु तीन रहानी। इन आधार लोक त्रय राजत, और कछू न बखानी ॥ जानितुम० ॥४॥ ऐसी जानि जिनेश्वरबानी, मिथ्यातमकी मिटानी। बुधमहा-

च्न्द्र जानि जिनसेवे, धारि धारि मन मानी ॥ जनि तुमसेवो ॥ ५ ॥

(१४)

उदयज्यांको पापको बानैं कुण समझावेरे ॥ उदय । टैर ॥ मंत्री मिल जरासंधसे कही कृष्ण बली जगमाय । गोबरधन चिंट अंगुली धस्यो कंसको मास्यो आय ॥ उदय० ॥ १ ॥ लघु तुम भाई है बली अपराजित नाम कहाय । ताँको मास्यो खड्गतैं जांकी नखन भई तुम थाय ॥ उदय० ॥ २ ॥ समझायो समझै नहीं प्रानी कर्म उदय जब आय । कर्म किया सोहीभोगल्यो बुधमहाचन्द्र यूं गाय ॥ उदय जाको० ॥३॥

(१५)

भूल्योरे जीव तूं पदतेरो । भूल्योरे ॥ टेर॥ पुद्गल जड़में राचि राचिकर, कीनों भववनफेरो । जामण मरण जरा दोउ दाझ्यो भस्मभयो फल नरभव केरो ॥ भूल्योरे० ॥ १ ॥ पुत्र नारि बान्धव धन कारण पापकियो अधिकेरो । मेरो

मेरो यूं करिमान्यु इनमें नहीं कोई तेरो न मेरो भूल्योरे० ॥ २ ॥ तीन खंडको नाथ कहावत मंदोदरी भरतेरो । कामकलाकी फोज फिरी तब, राज खोय किया नर्क बसेरो ॥ भूल्योरे० ॥ ३ ॥ भूलि भूलिकर समझ जीव तूं अबहू औसर हेरो । बुधमहाचन्द्र जाणि हित अपणू पीवो जिनबानी जलकेरो ॥ भूल्योरे० ॥ ४ ॥

(१६)

कुमतिको छाडो भाई हो ॥ कुमति ॥ टेर ॥ कुमति रची इक चारुदत्तने, बेश्या संग रमाई । सब धन खोय होय अति फीके गुंथ ग्रह लटकाई ॥ कुमति ॥१॥ कुमति रची इक रावण नृपनैं सीताको हर ल्याई । तीन खंडको राज खोयके दुरगति बास कराई ॥२॥ कुमति रची कीचकने ऐसी द्रोपदि रूप रिझाई । भीम हस्ततैं थंभ तले गड़ि दुक्ख सहे अधिकाई ॥ कुम० ॥ ३ ॥ कुमति रची इक धवल सेठने मदन मजूसा ताई । श्रीपालकी महिमा देखिर डील फाटि मरजाई ॥

कुमति० ॥ ४ ॥ कुमति रची इक ग्राम कूटने रक्त कुरंगी माई। सुन्दर सुन्दर भोजन तजके गोबर भक्ष कराई ॥ कुमति० ॥५॥ राय अनेक लुटे इस मारग बरणत कोन बड़ाई। बुध महाचन्द्र जानिये दुखकों कुमती द्यो छिटकाइ ॥६॥

(१७) माड़।

ऋषभ जिन आवता ये माय, अमा मोरी नग्न दिगम्बर काय ॥ ऋषभ० ॥ टेर ॥ सब नर नारि मिल देखिया ए माय, अमा मोरी नजर भेट बहू लेय ॥ ऋषभ० ॥ १ ॥ कइ गज कइ अश्व देवैं ये माय, अमा मोरी कइ यक कन्या देत ॥ऋष० ॥२॥ कइ रतन नजर कर्‌या हे माय अमा मोरी केई वस्त्र अपार ॥ ऋषभ० ॥ ३ ॥ इत्यादिक वस्तु देवैं हे माय, अमा मोरी वे कछू लेते नांय ॥ ऋषभ० ॥४॥ क्या जानैं क्या चाहि है ए माय, अमा मोरी धन वे कछू यन लेय ॥ ऋषभ० ॥५॥ ऐसे जिन मोकूं मिलो ऐ माय, अमा मोरी बुध महाचन्द्रके भाव ॥ऋषभ०॥६॥

(१८)

शीख सुगुरू नित्य उर धरो सुन ज्ञानी जी। एक भजो तज दोय ज्ञानीजो ॥ शीख ॥ टेर ॥ तीन सदा उरमें धरो सुन ज्ञानीजो, तजो चारको हेत ज्ञानीजो ॥शीख॥१॥ पंचमको नित संग करो सुन ज्ञानीजी,षट तज नीका जानि ज्ञानीजो ॥२ सातनको चितवन करो सुन ज्ञानीजी,आठ तजो दुख कार ज्ञानोजी ॥ शीख ॥३॥ नौ हृदय नित धारिये सुन ज्ञानीजी,दश फुनि ग्यारा धारि ज्ञानी जी ॥ शीख ॥ ४ ॥ बारह फुनि तेरह भजो सुन ज्ञानीजी, बुधमहाचन्द्र निहार ज्ञानीजो ॥ शी०५

(१९)

देखो पुद्गलका परिवारा जामें चेतन है इक न्यारा ॥ देखो ॥ टैर ॥ स्पर्श रसना घ्राण नेत्र फुनि श्रवणपंच यह सारा । स्पर्श रस फुनि गंध वर्ण स्वर यह इनका विषयारा ॥ देखो० ॥ १ ॥ क्षुधातृषा अरु राग द्वेष रुज सप्तधातु दुखकारा बादर सूक्ष्मस्कंध अणु आदिक मूर्तिमई निरधा-

रा ॥ देखो० ॥ २॥ काय बचन मन स्वासोछ्वासजू थावर त्रसकरि डारा । बुधमहाचन्द्र चेतकरि निशदिन तजि पुद्गलपतियारा ॥ यह० ॥३॥

(२०)

अमृत झर झुरिझुरि आवे जिनबानी ॥ अमृत टेर ॥ द्वादशांग बादल व्है उमड़े ज्ञान अमृत रसखानी ॥ अमृत० ॥ १ ॥ स्याद्वाद बिजुरी अति चमके शुभ पदार्थ प्रगटानी । दिव्यध्वनी गंभीर गरज है श्रवण सुनत सुखदानी ॥अमृत॥ २ ॥ भव्यजीव मन भूमि मनोहर पाप कूड़कर हानी । धर्म बीज तहां ऊगत नीको मुक्ति महाफल ठानी ॥ अमृत० ॥ ३ ॥ ऐसो अमृत झर अति शीतल मिथ्या तपत भुजानी । बुधमहाचन्द्र इसी झर भीतर मग्न सफल सोही जानी ॥ अमृतझर० ॥ ४ ॥

(२१)

सीतासती कहत है रावण सुनरे अभिमानी तुम कुलकाष्ट भस्मके कारण हमें आगि आनी ॥

टेर ॥ कहा दिखावत हमको तेरी लंकाराजधानी तेरा राज्य बिभो हम दीसे जूं जीर्णतृण समानी ॥ सीता० ॥ १ ॥ शीलवंत पुरषनके दारिद सोहू सुखदानी । शील हीन तुमसे पापिनके सम्पति दुखदानी ॥ सीता० ॥ २ ॥ हमरे भरता रामचन्द्र देवर लक्ष्मण जानी । महा बलवंत जगतमें नामी तोसे नहीं छानी ॥ सीता० ॥ ३ ॥ चन्द्रनखा तेरी बहिन तासको पुत्ररहित ठानी ॥ खरदूषण हति रंडाकीनी सोतैं नहींमानी ॥ सीता० ॥४॥ जोतूं कहै हम हैं विद्याधर चलत-गगन पानी । काग कहा नहीं गगन चलत है सौ औगुन खानी ॥ सीता० ॥ ५ ॥ प्रतिनारायण नकभूमिमें कहती जिनबानी । बुधमहाचन्द्र कहत है भावी मिटै न मेटानी ॥ सीता० ॥ ६ ॥

(२२)

रावण कहत लंकापति राजा सुन सीतारा-णी । काम अग्नि भस्मित हमको तूं दे सरीर पानी ॥ टेर ॥ देख हमारी तीनखंडको लंका

राजधानी । भूमिगोचरी अरु विद्याधर रहत छं-दिखानी ॥ रावण० ॥ १ ॥ राज हमारो तीन खंड मंदोदरीसी रानी । इन्द्रजीतसे पुत्र विभो-षणसे भाई ज्ञानी ॥ रावण० ॥ २ ॥ इन्द्र आदि विद्याधर हमने जीते सब जानी । छत्र फिरत इक हमरे ऊपर और नही ठानी ॥ रावण० ॥३॥ रंक कहां तेरो भर्ता हमसे रामचन्द्र मानी । महा दुर्बल बनबासी दीसे हमसे रहे छानी ॥ रावण० ॥ ४ ॥ इत्यादिक मानी नही सीता शीलरत्न खा-नी । बुधमहाचन्द्र कहत रावणकी सुधि बुधि बिसरानो ॥ ५ ॥

(२३)

विषय रस खारे, इन्है छाड़त क्यों नहिं जीव । बिषयरस खारे ॥ टेर ॥ मात तात नारी सुत बांधव मिल तोकूं भरमाई ॥ विषय भोगर-सजाय नर्क तूं तिल तिल खंड लहाई ॥ बिष-य० ॥ १ ॥ मदोनमत्त गज बस करनेकूं कपट-की हथनी बनाई । स्पर्शन इन्द्रिय बसि होके

आय पड़त गजखाई ॥ बिषय० ॥ २ ॥ रसनाके बसिहोकर मांछल जाल मध्य उलझाई। भ्रमर-कमलबिच मृत्यु लहत है बिषय नासिका पाई ॥ बिषय० ॥३॥ दीपक लोय जरत नैनू बसि मृत्यु पतंग लहाई। कानके बसि सर्प हायके पींजर मांहि रहाई ॥ बिषय० ॥ ४ ॥ विषखायेतैं इक भव माही दुख पावै जीवाई। बिषय जहर खा-येतैं भव भव दुख पावै अधिकाई ॥बिषय० ॥५॥ एक एक इन्द्रीतैं यह दुख सबकी कौन कहाई। यह उपदेश करत है पंडित महाचन्द्र सुखदाई ॥

(२४)

भवि तुम छाड़ि परत्रियाभाई निश्चय बि-चारकरो मनमेरे ॥ टेर ॥ जप तप संजम नेम आकड़ी ध्यान धरत मुसानन मेरे। परत्रिय सं-गतसे सब निष्फल ज्यों गज जल डारे तनमेरे ॥ भवि० ॥ १ ॥ पुज्यपना अरु मानपना फुनि ध-न्यपनार बड़ापन मेंरे। परत्रिय संगतसे सबनासे गगनमें धनुष पवन थकि तेरे ॥ भवि० ॥ २ ॥

सिंह बघेरी और सर्पणी इनहीकी संगत दुख गिन तेरे । इनहूकी संगत दुख हैं थोड़े परत्रिय संग लगे घनमेरे ॥ ३ ॥ भवि० ॥ परत्रिय संगत रावण कीनी सीता हरलायो बन मेंरे । तीन खंडको राज गमायो अपजस लेगयो नर्कन मेंरे ॥ भवि० ॥ ४ ॥ ज्यों ज्यों परत्रिया संगति करि हैं त्यों त्यों काम बढ़ा अंगमेंरे । बुधमहाचन्द्र जानिये दूषण परत्रिय संग तजो छिनमेंरे ॥भ०५

(२५) रेखता ।

देखि जिनरूप द्वे नयना हर्ष मनमें न माया हो ॥ टेर ॥ इन्द्रहु सहस्र नेत्रन रच तुम्हें जिन देखन ध्यायाहो ॥ देखि० ॥ १ ॥ धन्यहो आजका यह दिन तुम्हारा दर्श पाया हो । रंक घर ज्यों सुऋद्धि होतै त्यों हमें हर्ष आया हो ॥ देखि० ॥ २ ॥ सफल पद थान यह आतैं सफल नयनों दर्श पातैं । सफल रसना जु पदगातैं सफल कर पद पर्शवातैं ॥ देखि० ॥ ३ ॥ और कछु नांहि मोवांछया सेवा तुम चरण पावांहो ।

मिलो भव भव हमें येही सीस महाचन्द्र नाया-
हो ॥ देखि जिन० ॥ ४ ॥

(२६)

जिनबाणी गंगा जन्म मरण हरणी । जन्म
टेर ॥ जिन उर पद्म कुंडमेंतैं निकसी मुखहीमें
गिर गिरणी ॥ जन्म० ॥ १ ॥ गौतम मुख हेम
कुल परबत तल दरह बिचमें ढरणी ॥ जन्म० ॥
२ ॥ स्यादवाद दोऊ तट अति दृढ़ तत्व नीर
झरणी ॥ जन्म० ॥ ३ ॥ सप्तभंग मय चलत
तरंगिनी तिनतैं फैल चलणी ॥ जन्म० ॥ ४ ॥
बुधमहाचन्द्र श्रवण अंजुली तैं पीवो मोक्षकर-
णी ॥ जन्म मरण ॥ ५ ॥

(२७)

भाई चेतन चेत सकै तो चेत अब नातर
होगी खुवारीरै । भाई चेतन ॥ टेर ॥ लख चौरा-
सीमें भ्रमता भ्रमता दुरलभ नरभव धारीरे ।
आयुलई तहां तुच्छ दोषतैं पंचम काल मझारी
रे ॥ भाई० ॥ १ ॥ अधिक लई तब सौ बरसन-

की आयु लई अधिकारीरे । आधी तो सोनेमें खोई तेरा धर्म ध्यान बिसरारीरे ॥ भाई० ॥ २ ॥ बाकी रही पचास वर्षमें तीन दशा दुखकारीरे । बाल अज्ञान जवान त्रियारस वृद्धपने बलहारीरे ॥ भाई० ॥ ३ ॥ रोग अरु शोक संयोग दुःख बसि बीतत हैं दिनसारी रे । बाकीरही तेरी आयु किती अब, सोतैं नाहिं बिचारीरे ॥ भाई० ॥ ४॥ इतनेहीमें किया जो चाहै सो तू कर सुखकारीरे ॥ नहीं फंसेगा फंद बिच पंडित महाचन्द्र यह धारीरे ॥ भाई० ॥ ५ ॥

(२८)

जीव तू भ्रमत भ्रमत भव खोयो जब चेत भयो तब रोयो ॥ जीव तू ॥ टेर ॥ सम्यकदर्शन ज्ञान चरण तप यह धन धूरि बिगोयो । विषय भोग गत रसको रसियो छिन छिनमें अति सोयो ॥ जीव० ॥ १ ॥ क्रोध मान छल लोभ भयो तब इनहीमें उर भ्रोयो । मोहरायके किंकर यह सब इनके बसिव्हे लुटोयो ॥ जीव० ॥ २ ॥ मोह

निवार संवारसु आयो आतम हित स्वर जोयो। बुधमहाचन्द्र चन्द्रसमहोकर उज्वल चित रखो-यो ॥ जीव तू भ्रमत० ॥ ३ ॥

(२९)

मन बैरागीजी नेमीश्वरस्वामी शिवपुर गामीजी। मनबै० ॥टेर॥ अपनूं राज राखनके कारण कृष्ण कपट करलीनूंजी ॥ उग्रसैन पुत्री राजुलसे व्याह रचीनूं जी ॥ मन० ॥ १ ॥ छपन कोड़ि जादवमिल भेला खूब बरात बणाईजी। तौरण आय देख पशुदु खिया बंद छुड़ाईजी ॥ मन० ॥ २ ॥ तौरणसे रथ फेर जिनेश्वर उर्जयंतगिरि ठाड़ेजी। कांकण डोरा तोड़ मोड़कर दिक्षा मांड़ीजी ॥ मन० ॥ ३ ॥ घातिया घाति अघाति बहुविधि मोक्ष महल गिर ठाड़ेजी। बुधमहाचन्द्र जान जिनसेवे नोनिध लागीजी ॥ मनबैरा० ॥ ४ ॥

(३०)

जगमें जगती जिनबानीरे जगमें जगती

जिनबानी, भवतारण शिव सुखकारण ॥ जगमें टेर ॥ स्याद्वादकी कथनी वाली सप्तभंगजानी सप्त तत्व निर्णयमें तत्पर नव पदार्थ दानी ॥ भवतार० ॥ १ ॥ मोह तिमर अंधनको जो है ज्ञान शलाकानी । मिथ्या तप तप तनको जो है मलियागर खानी ॥ भवता ॥ २ ॥ इस पंचम कलिकाल मांहि जे हैं केवली समानी । धर्म कु-धर्म कुदेव देवगुरु कुगुरु बतानी ॥ भवता० ॥३॥ इन्द्र धर्णेन्द्र खगेन्द्रादिक पदकी निसानी । बि-षयादिक विष बिध्वंस करसेव सुख सुधापानी ॥ भवता० ॥ ४ ॥ कुमग गमन करता भविजनकूं सुद्ध मग जितानी । जड़ पुद्गल रत बुध महाच-न्द्रकूं निजपर समझानी ॥ भव० ॥ ५ ॥

(३१)

जिया तूने लाख तरह समझायो, लोभीड़ा नाही मानैरे ॥ टेर ॥ जियातैं ॥ जिन करमन संग बहु दुख भोगे तिनहीसे रुचि ठानै, निज स्वरुप न जानैरे ॥ १ ॥ बिषय भोग विष सहित

अन्नसम बहु दुख कारण खाने, जन्म जन्मान्त-
रानैंरे ॥ २ ॥ शिव पथ छाड़ि नर्कपथ लाग्यो
मिथ्या भर्म भुलानैं, मोहकी घेल आनैंरे ॥ ३ ॥
ऐसी कुमति बहुत दिन बीतै अवतो समझ स-
याने, कहैं बुधमहाचन्द्र छानैंरे ॥ ४ ॥

(३२)

ओर निहारो मोरे दीनदयाला ॥ ओर ॥
टेर ॥ हम कर्मनतैं भव भव दुखिया, तुम जगके
प्रतिपाला ॥ ओर० ॥ १ ॥ कर्मन तुल्य नहीं
दुखदाता, तुमसम नहिं रखवाला ॥ ओर० ॥२॥
तुमतो दीन अनेक उधारे, कौन कहैतैं सारा ॥
ओर० ॥ ३ ॥ कर्म अरीकौं बेगि हटाऊं, ऐसी
कर प्रभु म्हारा ॥ ओर० ॥ ४ ॥ बुधमहाचन्द्र
चरण युग चर्चैं, जाचतहै शिवमाला ॥ ओर०

(३३)

ओर तोर निरधारा जिनजी सच्चादेव हमारा
है। ओरतोर ॥ टेर ॥ दोष अठारा रहित बिरा-
ज छियालीस गुण सारा है ॥ ओर० ॥ १ ॥

क्षुधा तृषा भय द्वेष मोह मद स्वेद खेद निरवारा है । जन्म जरा अर मरण अरतिकरि रहित भये भव पारा है ॥ और० ॥ २ ॥ रोग शोक विस्मय निद्रा फुनि चिन्ता राग विदारा है । यह अष्टादश दोष तिनूं करि रहित निरंजन कारा है ॥ और० ॥ ३ ॥ स्वेद रहित मलमूत्र रहित तनु रुधिर दूध आकारा है । वज्र वृषभनाराच संहनन सम चतुर तनु धारा है ॥ और० ॥ ४ ॥ रूप अनंत सुगंध सुलक्षण मंड अतुल बल भारा है । सबकौं प्रिय हित मधुर वचन यह दश अतिशय जन्मारा है ॥ और०॥५॥ वृक्ष अशोक चमर भामंडल छत्र सिंघासण न्यारा है । पुष्पवृष्टि दुन्दुभि दिव्यध्वनी प्रातिहार्य अठकारा हैं ॥ और० ॥ ६ ॥ जोजन शत दुर्भिक्ष गगन चल प्राणी बधकौं टारा है । निरुपसर्ग निहार चतुर्मुख सब विद्या आधारा हैं ॥ और० ॥ ७॥ छाया रहित शरीर फटिक सम नयन पलक नहिं डारा है । बढ़ै नही नख केश ये केवल उपजे

दशहो प्रकारा हैं ॥ अरो० ॥ ८ ॥ मागधि भाषा सब जीव मैत्री सब ऋतु फूल फलारा हैं। दर्पणभू अनु पवन हर्ष सवैं जोजन मरुत सवारा है ॥ ओर० ॥ ९ ॥ मेघागंधो पदतले कमल नभ श्रुभजय देवारा है। धर्मचक्र आगे मंगल वसु यह चौदाजु सुरारा हैं ॥ १०॥ ज्ञान अनंत बीर्य सु अनंता दर्श अनंत सुखारा है। ऐसा देव निरंजन लखि बुधिमहाचन्द्र सिरधारा है ॥ ११ ॥

(३४)

मुनिजन जगजीव दयाधारी। मुनि ॥ टेर॥ पत्नी जटाउ ज्ञान बसत बन ताको जैन धर्मकारी ॥ मुनि० ॥ १ ॥ सम्यक् दर्शन प्रथम बतायो पांच अणुब्रत बिस्तारी ॥ मुनि० ॥ २ ॥ धर्मध्यान रतकरके ताको हिंसक भाव सब निवारी ॥ मुनि० ॥ ३ ॥ ऐसे मुनिवर पुन्य उदयतैं भवि जीवनको मिलतारी ॥ मुनि० ॥ ४ ॥ बुधमहाचन्द्र मुनीश्वर ऐसे हम मिलनेकी बांछा भारी ॥ मुनिजन० ॥ ५ ॥

(३५) लावनी मरहठी ।

तजो भविव्यसन सात सारी ॥ लगे निज कुलकै अतिकारी ॥ टेर ॥ जुवातैं सरव द्रव्यनाशे ॥ करै नर मिल तांको हाँसै ॥ सबनसैं नहीं प्रतीत तांसै ॥ जुवारी घलै राज फांसैं ॥ दोहा ॥ पांडवसे हो गये बली जूवातैं अतिख्वार । बारा बरसतक राज हारके असे महा वनचार ॥ तजो जूवा बहु दुखकारी । तजो० ॥१॥ माँसतैं जीव घाततै हैं ॥ जीभके लम्पट सेवै हैं ॥ नर्कमें दुक्ख लहेव हैं ॥ पिंड अघको सुखलेवैं हैं ॥ दोहा बक राजा बहु पुरुषहते मांस भक्षणके काज । पांडव भीमबलीसे पाये मरण नर्क दुख पाज ॥ मांसतैं दुखपावै भारी ॥ तजो० ॥ २ ॥ होत मदिरासे मति हानी ॥ मात अरु युवती समजानी वस्त्र की भी न शुद्धिठानी ॥ कहो वृषकी सुधि क्यों मानी ॥ दोहा ॥ जादव कुल मद्य पीयके द्वीपायणके योग । भस्म भये हैं सहित द्वारिका फेर नही संयोग ॥ मद्य सबसुधि नाशकारी ॥

तजो ॥ ३ ॥ नीच कुक्कर खप्पर ज्यों हैं ॥ रजक की शिलाहोत त्यों हैं ॥ नीच अर उच्च सेय यों हैं ॥ तजो वैश्या बहु दुखकों है ॥ दोहा ॥ चारु दत्तसे सेठहुये बेश्यातैं दुखरूप। सब धन खोय होय अति फीका पड़े गुंथग्रह कूप ॥ तजो तातैं गनिका यारी ॥ तजो० ॥ ४ ॥ रोज मृग आदि जीवघातैं ॥ शिकारी कहैं लोग तातैं ॥ हो तबहु पाप खानि यातैं ॥ पापकरि जाय नर्क सातैं ॥ दोहा ॥ ब्रह्मदत्त नृप खेटतैं दंड लहे विधि पंच। परभवमें अति दुक्ख भोगिकै लह्यो खेट फल-संच ॥ खेटतैं होत बहुतख्वारो ॥ तजो० ॥ ५ ॥ लोभके लम्पट जीव जेहैं ॥ कपटकी खानि सदा तैं हैं ॥ करैं चौरीपर गृहतैं हैं ॥ खाय परिवार सहित वे हैं ॥ दोहा ॥ सत्य घोष मंत्री लहे चोरिरत शुभपंच। मल्ल मुष्टि गोमय हराधन दंड तीन लहे खैंच ॥ होय यही दुक्ख भयकारी ॥ तजो ॥ ६ ॥ परत्रिया सेवन दुखकारी ॥ विचारी ना कछु अबिचारी ॥ पति निज संग विचारया

हारी ॥ कहो कैसे होय तिहारी ॥ दोहा ॥ रावणासे बलवंत महा तीनखंडके ईश। परत्रिया वाँछे दुखभोगे नर्कमांहि बहुरीस ॥ पराई नारि तजो प्यारी ॥ तजो० ॥ ७ ॥ जुवातैं पांडव वक पलतैं ॥ मद्यसे जादव बहु गिलतैं ॥ वैश्यां चारूदत्त मलतैं ॥ ब्रह्मदत्त नृप खेट वलतैं ॥ दोहा ॥ चोरीतैं शिवभूति दुखी रावण परत्रिय संग। एक एकसे हो अति दुखिया सातनको कहा रंग कहत बुध महाचन्द्र हारी ॥ तजोभवि० ॥ ८ ॥

(३६) धमाल।

नेमि रमते बालब्रह्मचारी ॥नेमि० टेर॥ हांस्य विनोद करै हरि रामा देवर लखि निज संसारी ॥ नेमि० ॥ १ ॥ कोऊ कहत देवर तुम परणूं देखो षोड़स सहस्र कृष्णाधारी ॥ नेमि० ॥ २ ॥ कोई कहें देवर तुम नहीं सूर ये कहु तिय तुम नहिकारी ॥ ३॥ काम खेल करती कर करसे नेमिनाथ न भये विकारी ॥ ४ ॥ बुध महाचन्द्र शीलकी महिमा तियमधि रहते अविकारी ॥५॥

(३७)

मिटत नही मेटेसै याता होणहार सोइ होय ॥ मिटत न० ॥ टेर ॥ माघनंद मुनिराजवैंजी गये पारणौ हेत । व्याह रच्यो कुमहार की धीसूं बासण घड़ि घड़ि देत ॥ मिटत० ॥ १ ॥ सीता सती बड़ी सतवंती जानत है सब कोय । जो उदियागत टलै नहीं टालो कर्म लिखा सो ही होय ॥ मिटत० ॥ २ ॥ रामचन्द्रसे भर्ता जाके मंत्री बड़े बिशेष । सीता सुख भुगतन नहीं पायो भावनि बड़ी बलिष्ट ॥ मिटत० ॥ ३ ॥ कहां कृष्ण कहां जरद कुंवरजी कहां लोहाकी तीर । मृगके धोके बनमें मार्यो बलभद्र भरण गये नीर मिटत० ॥ ४ ॥ महाचन्द्रतैं नरभव पायो तू नर बड़ो अज्ञान । जे सुख भुगते भाव प्रानी भजलो श्रीभगवान ॥ मिटत० ॥ ४ ॥

(३८)

तुम्हैं देखि जिन हर्ष हुवो हम आज ॥ टेर जन्मत सहस्र नयन हरि रचिये तुम छबि देखन

काज ॥ तुम्हैं० ॥ १ ॥ तुम तनतेज शीतल तल लखिके रवि शशि छवि कृत लाज ॥ तुम्हैं०॥२॥ रंक रत्न ऋद्धि धरि घरनतैं होतैं आनंद समाज तुम्हैं० ॥ ३ ॥ चातक चितमें हर्ष होत है ज्यों सुनि सुनि घन गाज ॥ तुम्हैं ॥ ४ ॥ तुम जग तारण तिरण भवोदधि कीनी धर्म जिहाज ॥ तुम्हैं० ॥ ५ ॥ तुम भवि भाव भक्ति वसि वंदत तिनैं पाई भव पाज ॥ तुम्हैं० ॥ ६ ॥ बुध महाचन्द्र चरण अर्चन करि जाचै अजाचिक राज ॥ तुम्हैंजि० ॥ ७ ॥

(३६) वधाई ।

देखो आज वधाई रंगभीनी हो ॥ देखो ॥ टेर ॥ समद विजै शिवादेवीने सुत नेमीश्वर प्रभू कीनी हो ॥ देखो० ॥ १ ॥ इन्द्र ही नाचत इन्द्र वजावत वीन वंसी सुर झीनी हो ॥ देखो० २ ॥ कई सचि नाचत कई सचि गावत कई करताल वजीनी हो ॥ देखो० ॥३॥ जादवकुल आकास चन्द्रसम उपजे हर्ष नवीनी हो ॥ देखो० ॥

४ ॥ ऐसे हर्ष देखनेमें बुध महाचन्द्र मति दीनी हो ॥ देखो० ॥ ५ ॥

(४०)

अरज मोरी एक मानूंजी, होजिन जी चमत्कारि महाराज ॥ टेर ॥ तुम तोशिव पुर बास कीनूंजी, होजिनजी हम डूवैं भवमांहि, तार मोहि दीन जानूंजी ॥ होजिनजी ॥१॥ तुम निजरूपी व्हे रहेहो राज होजिनजी, हम पर परिणति लीन करो निजरूप बानूंजी ॥ होजिनजी ॥ २ ॥ तुमतो कर्म बिनाशियेजी राज हो प्रभूजी हमको करम दुख देत, जन्म जन्मांतरानोंजी ॥ होजिनजी ॥ ३ ॥ भव भवमें तुम चरणकी हो-राज होजिनजी सेबाबुध महाचन्द्रक मांगत सो मिलानूंजी ॥ होजिनजी ॥ ४ ॥

(४१)

देखो काल बली भव बनमें। नही कछु जीव दया जांके मनमें ॥ टेर ॥ राव रंकसब गिणत एकसे अधिक हीन न गिणनमें ॥ देखो० ॥१

॥ इन्द्र धणेन्द्र नरेन्द्र खगेन्द्र जूते जीते सवरण- में । बाल जवान वृद्ध नहीं पूछै निरधन सधन गिलनमें ॥ देखो० ॥ २ ॥ साह चोर सूरे कायर सब तिष्ठै जाके बदनमें । रोगी सोगी भोगी दीन सब चरबण किये जिही छिनमें ॥ देखो० ॥ ३ ॥ उर्द्ध अधः सागर गिर गहरे कहांहु नाहि सरनमें । जहां जहां जाय जीव सरनाके तहां तहां खाक जगनमें ॥ देखो० ॥४॥ ऐसो काल बलीको जीते तिष्टे शिव महलनमें । तिनको देखि हर्ष है पंडित महाचन्द्रके तनमें ॥देखो० ॥ ५ ॥

(४२)

मिथ्याती जीवड़ा मुनि बचन न मानैरे ॥ मिथ्या० ॥ टेर ॥ अंति मुक्ति मुनियूंकहीजी जो देवकी सुतहोय । सोही हणै जीवंजिसा तेरा नाथ तात यह दोय ॥ मिथ्या० ॥ १ ॥ कंस जा- य बसुदेव सेकही जाचतहैं हम तोय । देवकी कै सुत मोघरा होवै यह वर दीजो मोय ॥ मिथ्या० ॥ २ ॥ मल्ल युद्ध के मायनैजी हरिवृन्दा बनतैं

आय। पंकडि चरण पृथ्वी पटकि मार्यो महाचंद्र कंसराय ॥ ३ ॥ मिथ्याती० ॥

(४३)

बिबेकी जीव गुरु उपगारी मानू हो ॥ टेर ॥
देव स्वर्ग तैं आयके जी बंदे श्रीजिनराय। चारुदत्तको बंदके फिर बंदे श्रीमुनिराय ॥बिबे०॥१ मुनिसुत पूछी देवसूं तुम हो अबिबेक लखाय। प्रथमहि गृहस्थि बंदिकेजी बंदे श्रीमुनिराय ॥ बिबे० ॥२॥ देव कही हमरे गुरू यंह प्रथम चारुदत्त राय। कान मंत्र नवकार दियो उपगार कियो मुझ थाय ॥ बिबे० ॥ ३ ॥ एकहि अक्षर देय सो गुरु जिनबाणीमें गाय। शिक्षा दे सो धर्मकी जानैं, भूले पापी थाय ॥ बिबे० ॥ ४ ॥ देव बचन ऐसे कहोजो समझे खग दोऊ भाय। बुध महाचंद्र न भूलिये उपगार कियो मुझथाय ॥ बिबेकी जीव० ॥ ५ ॥

(४४)

सदा दुख पावेरे प्रानी तूतो चौरासी लख

योनिमें ॥ टेर ॥ द्व निगोद वसि एक स्वास, अ-ष्टादस मरण लहानी। सात सात लख योनि भोगिकैं पडियो थावर आनी ॥ सदा० ॥ १ ॥ पृथ्वी जल अरु अग्नि पवनमैं, सात सात लख जानी। बनस्पती की काय मैं रे दश लख योनि करानी ॥ सदा० ॥ २ ॥ बेइन्द्री संखादि जीवकी द्व लख योनि बखानी। तेइंद्री चोइन्द्री जूक, अलो च्यारि लाख परवानी ॥ ३ ॥ तिरजंच माहि च्यारि लख धारी योनि महादुख दानी, भूख तृषा अरु शीत उष्णता अधिके भार लदानी ॥ सदा० ॥ ४ ॥ पाप उदै जब नर्क योनिमें च्यारि लाख ठहरानी। छेदन भेदन ताड़न तापन दुक्ख सहे अधिकानी ॥ सदा० ॥ ५ ॥ किंचितपुन्य वसाय देव पद योनि च्यारि लख मानी परकी ऋद्धि देखि अतिझूर्यो फूलमाल कुम्हलानी ॥ सदा ॥६॥ मनुष योनि लख चौदह सोतैं बहुबेर पाय अज्ञानी। जैन धर्मको मर्म न जान्यौं मिथ्या भर्म भुलानी ॥ सदा० ॥ ७ ॥ पुन्य

उदय श्रावक कुल पायो जैन धर्म चितलानी। चौरासीके दुक्ख हरन बुध महाचन्द्र कहै बानी॥ सदादुख पावेरे॥ ८॥

(४५) प्रभाती।

बिपुलाचल शिखर आजि और रूप राजै॥ टेर॥ आये जिन वर्द्धमान समवसरण युत महान सुरनर तिर्यंच आनि निजस्थान बिराजे॥ बिपुला॥ १॥ षट ऋतु फल फूल सबैं फलिये इक काल अबैं दाडिम अरु दाख फबैं आम्र पुंग ताजे॥ बिपुला०॥ २॥ सिंह गौवत्स हेत मूषक मार्जार पेत न्योला अरु नाग केत बैर रहित छाजै॥ विपुला०॥ ३॥ सुणियो अतिशय प्रवीन श्रेणिक नृप धर्म लीन करमे बसु द्रव्य कीन, पूजन के काजै॥ बिपुला०॥ ४॥ कीनूं बहु पुन्य जिनै तप करिकैं रैन दिनैं पंडित महाचन्द्र तिनैं देखे महाराजै॥ बिपुला०॥ ५॥

(४६)

राग द्वेष जाके नहिं मनमैं हम ऐसेके चाकरहैं॥ टेर॥ जो हम ऐसेके चाकरतो कर्म

रिपू हम कहा करि हैं ॥ राग ॥ १ ॥ नहिं अष्टा दश दोष जिनूमें छियालीस गुण आकर हैं ॥ सप्त तत्व उपदेशक जगमें सोही हमारे ठाकुरहैं ॥ राग ॥ २ ॥ चाकरिमें कछु फल नहिं दीसत तोनर जगमें थाकि रहैं ॥ हमरे चाकरिमें है यह फल और जगतके ठाकर हैं ॥ राग ॥ ३ ॥ जांकी चाकरि बिन नहि कछु सुख तातैं हम सेवा करिहैं ॥ जाकै करणे तैं हमरे नहिं खोटे कर्म विपाक रहैं ॥ राग ॥ ४ ॥ नरकादिक गति नाशि मुक्ति पद लहैं जु ताहि कृपाधरहैं ॥ चंद्र समान जगतमें पंडित महाचन्द्र जिनस्तुति करिहैं ॥ राग०

(४७)

याही अरज हो मोरी श्रीजिन सांई ॥ टेर अबलौं हम तुम भेदन जान्यों मिथ्या भर्म भुलाई ॥ याही ॥ १ ॥ अन्य देवकी सेवा करिके लख चौरासी भरमाई ॥ याही० ॥ २ ॥ जाके सेवनतैं भव भव दुख सोही हमने सुहाई ॥ याही० ॥ ३ ॥ धन्य घड़ी पल आज दिवसकी तु-

म पद मस्तक नाई ॥ याही० ॥ ४ ॥ जन्म मरण दुख वेगि मिटावो करि त्रिभुवनमें राई ॥ याही० ॥ ५ ॥ बुध महाचन्द्र चरण पै ठाडी जाचत है शिव सुख दाई ॥ याही० ॥ ६ ॥

(४८)

कैसे कटै दिन रैन दरस बिन, कैसे ॥ टेर जोपल घटिका तुम बिन बीतत सोही लगै दुख देन ॥ दरश० ॥ १ ॥ दरशन कारण सुरपति रचिये सहस नयन की लैन ॥ दरव० ॥ २ ॥ ज्यों रवि दर्शन चक्र वाक युग चाहत नित प्रनि सैन। दर्श० ॥ ३ ॥ तुम दर्शन तै भव भव सुखिया होत सदा भवि मैन ॥ दर्श० ॥ ४ ॥ तुमरो सेवक लखि हैं जिन बुध महाचन्द्र को चैन ॥ दरशबिन० ॥ ५ ॥

(४९)

जिनराज अरज हमरी याही ॥ टेर ॥ आप तो नाथ मुकतिपुर बैठे हम भव रूप परे खाई जिन० ॥ १ ॥ तारण तरण बिरद तुम सुणियो

तातैं आयो सरणाई ॥ जिन० ॥ २ ॥ पशुवादिक कोभी तुम तारे हमरी वेर सून कांई ॥ जिन० ३ ॥ मोह अरी को हनि कैं हम को वेगहि सुखिया करि सांई ॥ जिन० ॥ ४ ॥ तुम पै ठाड़ो जाचत शिव सुख बुध महाचन्द्र जु सिरनाई ॥ जिन०

(५०) वसंत ।

खेलैं नेम महा मुनि मन बसंत · तजि राजुल शिव सुंदरि तैं संत ॥ खेलैं ॥ टेर ॥ अनित्य असत्यहि जग लखंत, असरण रण जिम जोधा लरंत । संसार असार लखे महंत, खेलैं नेम ॥१॥ जीव एक अनादि भ्रमैं अनंत, पुद्गल खलु भिन्न अभिन्न अनंत । अपवित्र वपु मल मूत्र भ्रंत, खेलैं नेम ॥ २ ॥ कर्म द्वार सतावनतैं डरंत, संवर अंबर तैं नित रुकंत । तप प्रबल बली निर्जर करंत, खेलैं नेम ॥ ३ ॥ लोक कर्त्ता हर्त्ता हीन मंत, है दुर्लभधर्म प्रवोध मंत । बुध महाचन्द्र प्रभूको नमंत, खेलैं नेम० ॥ ४ ॥

॥ इति ॥

बाल-शिक्षा।

कररहे बालक हाहाकार, अबतो चेत मूर्ख मतवाले ॥ टेर ॥ बालापनमें लाड़ लड़ाया, जेवर तनपै खूब सजाया, फूटा अक्षर नाहिं पढ़ाया झूठा मोह बढाने वाले ॥ १ ॥ फिर सादीकी धूम मचाई, नृत्यको वैश्या भी बुलवाई। खासी फुलवाड़ी लुटवाई, धनकी धूर उड़ाने वाले ॥२॥ यूंही बाली उमर बिताई, विद्या कुछ भी नाहिं पढ़ाई फिरतो जोर जवानी छाई, अबतो बार बार पछिताले ॥ ३ ॥ रहगये पूरे मूर्ख गंवार, न जाना जैन धर्मका सार। कर लिया विषयन को अखत्यार, पड़गये दुरमति के अब पाले ॥ ४ ॥ होवे इनका जब अपमान, रोवैं मात पिताकी जान। आया लाड़ प्यार क्या काम, दर दर भीख मंगानेवाले ॥ ५ ॥ छोडो लडुवोंका गटकाना, बिगड़े सम्पति फिर पछताना। खोटी रूढो रोक अयाना, दुखमें दुख भुगतानेवाले ॥ ६ ॥ आवो व्यथ व्ययसे बाज, तुमको तनिकन आवे लाज। अब तो गहरा हुवा अकाज, मोटी तूंद हिलाने वाले ॥ ७

करदो विद्या दान महान,यह सब दाननमें परधान तभीहो जैन धर्मका ज्ञान, संतति सुखके चाहने वाले ॥ ८ ॥ तुम सब धनमें माला माल, देरी हानहि होत कंगाल । कहता येही छोगालाल, लोभी सूंजी पैसे वाले ॥ ६ ॥ कर रहे बालक हा हाकार, अबतो चेत मूर्ख मतवाले ॥

आत्म-शिक्षा ।

मना तूने यह क्या काम किया । तूतोरे बिषिय-नमें राच गयारे ॥ टेर ॥ कपट क्रोध मद लोभ वसी हो झूठ ही बंध कियारे । हिंसा चोरी झूठ परिग्रह व्यभिचार का यत्नकियारे । मना० ॥१॥ कुगुरु कुदेव कुधर्म सेयकरि मिथ्यातको धार लियारे मना० ॥२॥ रात दिवस धंधामें डोलत नाम प्रभू न लियारे । हीन भया तब विलखन लाग्या कोइयन साथ हुवारे ॥ मना० ॥ ३ ॥ गुप्तित्रय आचार पंच नहिं सम्यक ग्रहण कियारे । दश लक्षण वृष धारि नांहि प्रभू साहू शरण लियारे ॥ मना० ॥ ४ ॥ 30/073



अहिंसा परमो धर्म्मः ।  यतो धर्मस्ततो जयः ॥

श्री जैन भजन संग्रह

रचित—

यति नयनसुखदास, कांधला, जिला मुज़फ्फ़रनगर ।

दर असल यह शील ही मुक्ति का सच्चा द्वार है ।
शीलधारी को सदा वरती सुमुक्ति नार है ।

प्रकाशकः—
पं० अतरसैन जैन मैत्तिल,
मालिक श्री दि० जैन पुस्तकालय,
महोल्ला अबुपुरा, मुज़फ्फ़रनगर ।

भजन पढ़ो मङ्गल करो, सन्मुख श्री जिनराज ।
विघन हरो सब सुख करो, दीजो सुख जिनराज ॥

दीपमालिका, सं० १९९२

बाबूराम शर्म्मा मैनेजर के प्रबन्ध मे
स्वतन्त्र मुद्रणालय, मुज़फ्फ़रनगर में मुद्रित ।

द्वितीय बार १०००] १९३५ [मूल्य ।≈)

ओंनमः सिद्धेभ्यः ॥

नयनसुखदास रचित—

॥ जैन भजन संग्रह ॥

मंगलाचरण ।

दोहा—ज्ञानानंद अनंत शिव, अर्हन् मंगल मूल ।
कलिल कुलाचल तोड़कर, हरोनाथ भवसूल ॥
तुम शिव मगनेतार हो, भेत्ता कर्म पहार ।
विश्व तत्व ज्ञाता परम, लो सुधि बेग हमार ॥
तुम त्रिभुवन के भानु हो, मैं खद्योत समान ।
कैसे तुम गुण वर्णऊ, अल्प मतिन की वान ॥
हृदय भक्ति प्रेरक भई, बलकर पकरे कान ।
ला पटक्यो पदकमल बिच, सकल जगत गुरुजान ॥
तुम अनंत गुण आगरे, पटतर अवरन कोय ।
तुम वाणी तैं जानिये, जो कछु जग में होय ॥
भूत भविष्यत कालकी, षट द्रव्यन पर जाय ।
वर्तमान सम तुम लखो, हस्तामलक सुभाय ॥
सकल चराचरजगतथित, ज्ञान मुकररहो सूझ ।
ताते तुम अर्हंत हो, सकल जगत करि पूज ॥

तुमतैं गणधरनै सुन्यो चहुँ गति मय सार ।
तातैं तुम हो परम गुरु, पतित उधारन हार ॥
वीतराग सर्वज्ञ तुम, तारण तरण महान ।
ताते तुमरे वचन प्रभु, हैं षट् मत परवान ॥

धरम अहिंसा तुम कह्यो, जहँ हिंसा तहँ पाप ।
दयावंत भवजल तिरै, पापी जग संताप ॥
जीव दया गुण वेलड़ी, बोई ऋषभ जिनेश ।
षटदर्शन मंडप चढ़ी, सींची भरत नृपेश ॥

मिथ्या वचन अनादरे, तुमने हे जग सेत ।
तातै झूठन की झरत, जहां तहां सिर रेत ॥
सत्य धर्म तैं होत है, त्रिभुवन में परतीत ।
सततैं गोला लोहका, होय तुषार प्रतीत ॥

चोरी तुम वर्जनकरी परम पाप लख घोर ।
त्यागी पद पद पूजिये, चोर सहैं वहुपीर ॥

अनाचार वर्जन कियो ग्रहणकरणकह्योशील ।
जिन धारी सो जग तरे, जिन छाड़ो कर्दाकोल ॥

शील शिरोमणिजगतमें, यासम धर्म न और ।
अग्निहोय जल परणवै, विष हो अमृत कोर ॥
खड्गमालहै परण वै, सूल सेज मखतूल ।
आधिव्याधि आवै नहीं, शीलवत ढिगमूल ॥

भव तृष्णा दुख दायनी भाषी तुम भगवान ।
त्यागी त्रिभवनपतिभये, रागी नर्क निदान ॥
देवधर्म गुरु हो तुम्ही, ज्ञान ज्ञेय ज्ञातार ।
ध्यान ध्येय ध्याता तुम्ही, हेया हेय विचार ॥

कारण हो शिव पंथ के, उद्धारण जग कूप ।
कारज सारन जीव के, हो तुमही शिव भूप ॥
उत्तम जन बहु जगतसैं, तारे तुम भगवान ।
अधम न तारो एक मैं, तारो है जग जान ॥

आयो तुम पद पूजने, भजन करन के चाव ।
राखो भव २ भजन मैं, जब लग जग भरमाव ॥
भजन करत संसारसुख, भजन करतनिर्वान ।
भजन बिना नर जगतमें, है तिर्जंच समान ॥

भजन करत जग उद्धरे, सिंह नवल कपि सूर ।
गण धरहो वृष भेश के, मुक्ति भये अघचूर ॥
निर अंजन अंजन भये, गज किरातभये सिद्ध ।
स्वान जटी पन्नगतिरे, तिनकी कथा प्रसिद्ध ॥

कहां पशूपर जायनर, कहां मुक्ति को धाम ।
तू भी मूरख भजनकर, मुख में भली न चाम ॥
या जग विषम विदेशमें बंधु भजन भगवान ।
सार्थ वाह निर्वृत्तिको, लखि निश्चयउरआन ॥

भजनवाद जिनभक्ति विन, भक्तिवाद विनभाव ।
भाव बाद अवगाढ़ विन गाढ़ बाद विन चाव ॥
धन्य महूरत धन घड़ी धन्य दिवस गिनआज ।
तरन तरन कारण जुड़ो श्रीजिनभजनसमाज ॥

रहो सदा सैनी सुखी. रहो सदा मन संग ।
जातैं श्रीजिन भजन मैं. प्रति दिन होय उमंग ॥
धन्य पुन्य सज्जन मिले, भये सहायक धर्म ।
भजन करें भगवंत का, नाश करम्याति कर्म ॥

तू कैवल्य उद्योत की, परम ज्योति तमहार।
नयनानंद गरीब की, यह विनती उरधार॥

मोह महातम दूर कर, शुद्ध ज्ञान परकाश।
ज्यों अब सांचे देव का, गाऊं भजन विलास॥
यह विधि मंगल मानकैं, कहूँ भजन दो चार।
भाषूं नयना नंद के, कृत विलास अनुसार॥

धुरपद।

१—चाल धुरपद (२४ तीर्थंकर के नाम)

ऋषभोजित संभवेंद अभिनंदन सुमतिकंद पद्मप्रभपादवंद, भगवत गुणगावरे॥ टेक॥ सेवो शुभपास संत, चंद्रप्रभ ... शीतल श्रेयांस कंत, सीधेमन ध्यावरे॥१॥ वासवनुत वासपूज भजिकर निर्मूल अरूज भागै अब अनन्त धूज, सद्धर्म ... ॥२॥ धरले मनशांति कुंथु, परले अरमल्लिपंथ वरले सुवृत नमि नेमीश पावरे॥३॥ करले पारससैं भेट सन्मति गहि . मेट वोत्यो चिरकाल क्यों न, उरझा सुरझावरे॥४॥

२—चालधुरपद (तीर्थंकरों के पिता के नाम)

वंदूं जगनाथ तात, नाभिरु जितशत्रुनाथ। धार कै जुग ... मोथ, धन धन बलधारी॥ टेक॥ जयतार सुवीरमेघ, सुप्रतिष्ठ नेघ। महसेन सुकंठ वेग दृढरथ सुखकारी॥१॥ ... वासुदेव, जयबृष लिधसेन एव। भावन विसुसेन सेव, दुखहारी॥२॥ सुन्दर दर्शन नरेश, कुंभरु श्रीसमंतेश। विज

जय जलनिधेश, पुन्यातम भारी ॥३॥ भजरेमन अश्वसेन, सिद्धा-रथ सिद्धदेन । ये जिन चौबीस तात, एका भवतारी ॥४॥

३—चालधुरपद (तीर्थंकरों की माता के नाम)

सुनरेमन मेरी वात, जाएजिन जगत तात । ऐसी जिन मात ताहि, वंदन नित करनी ॥ टेक ॥ मरुदे बिजया मतीय, श्रीयुत-षेणा सतीय । सिद्धअर्था मंगलीय सीमा सुखभरणी ॥१॥ पृथवी शुभलक्षणीय, रामारु सुनंदनीय। बिमला जयदेवि रमा, सूर्या दुखहरणी ॥२॥ सुभव्रतधरणी सतीय, एला अरुश्रीमतीय। मित्रा सारस्वतीय, श्यामा भवतरणी ॥३॥ विशिषा शिव देवि माय, वामा त्रिशलादि ध्याय। वंदूं वह कोष जगत, चूडामणि धरणी ॥४॥

४—चालधुरपद (तीर्थंकरों के सोलह जन्म नगर)

कौशल सावत्थि धाम, काशी कोशं विठाम । तीर्थंकर जन्म ग्राम, तीरथ कर प्यारे ॥ टेक ॥ चंपापुर चंद्रपुर भद्दलपुर, सिंहपुर । मिथुलापुर रत्नपुर गजपुर नितजारे ॥१॥ काकंदी कंपिलादि, सूरजपुर राखयाद । जाकरकुषअग्रपूर मुनिसव्रतध्यारे ॥२॥ कुंडलपुर वीरदेव, षोडश हैं नगर एव । जन्मे भगवंत जहां आप सुरसारे ॥३॥ घर घर भई रत्न वृष्टि, धर्मातम भई सृष्टि सोभा बरनी न जाय, नरभव फलपारे ॥४॥

५—चालधुरपद (तीर्थंकरों के चरण चिह्न)

भाखू जिन चरण चिह्न, प्रभु के तनतैं अभिन्न । सुनकै चित हो प्रसन्न, संशय सब टारिये ॥ टेक ॥ वृष गज घोटक कपीश,

क्रौंचरु अंभोजदीश । स्वस्तिक निशईश मच्छ, श्रीवत्स विचारिये ॥१॥ षंगपग महिषा वराह, वाजरु वज्रायुधाह । मृग बोक धनुर्गिनाह, कलशा उरधारिये ॥२॥ कच्छप अरुकमलशंप, सर्परु केहरिनिशंक । लखिके जिन अंक नाम, निश्चय चित पाड़िये ॥३॥ धरिये उर ध्यान देव, करिये प्रभु चरण सेव । जातें भव सिंधु खेव, शिवमें ले तारिये ॥४॥

६—चालधुरपद (गुरु नमस्कार)

बंदू निर्ग्रंथसाधु, त्यागी जिनगज उपाधि । आतम अनुभव अराधि, परपरणतिछारी ॥ टेक ॥ तजि तजि पद्चक्रवर्ति, मन वचन न हो निवर्त । पायन पृथिवी विचर्त, जिन दिक्षा धारी ॥१॥ सम दम संवरसंभार, निर्जर कर कर्मटार । षट तन प्राणी उबार, करुणा विस्तारी ॥ जीते त्रय शल्यदल्ल, सुर गि रसम भये अचल्ल । रत्नत्रय धरणमल्ल, कष्ट सहैं भारी ॥३॥ जय जय महमा निधान, जंगम तीरथ समान । मेरे उर वसो आन, वंदू जगतारी ॥४॥

७—चालधुरपद [जिन वाणी नमस्कार]

निकसी गिरवर्द्धमान, सेती गंगा समान । गोतम मुखपरी आन, सारद जगमाता ॥ टेक ॥ तारेत भ्रमगज सुदंत, जड़ता तपक्ररि प्रशांत । रत्नाकर ज्ञान अंत, पहुँचो भवत्राता ॥१॥ जामैं सप्तांगभंग, उट्ठैं निर्मल तरंग । अमृत को कोर मोख, मारग की दाता ॥२॥ आदिरु मध्यावसान, निर्मल किरपा निधान । धारा पर वाह वान, त्रिभवन विख्याता ॥३॥ वंदै दग सुक्खदास, मेरे उर कर निवास । गाऊं जिनगुण बिलास, कीजै सुख साता ॥४॥

८—चाल धुरपद [रत्नत्रय धर्म को नमस्कार]

लागरे तू मोक्ष मग्ग, रत्नत्रय मांहि पग्ग। मोरै मतनाहि डग्ग, पहुँचै शिव धामरे ॥ टेक ॥ सम्यक् मई दृष्टिठान, हित अरु अनहित पिछान। संशय भ्रमभान ज्ञान, चिंतामणि थामरे ॥१॥ पूंजी परभवकी जान, सम्यक् चारित्र आन। टूटैं अघजाल मुक्ति, पावै विन दामरे ॥ २ ॥ तन धन आशा विहाय, कृषकर काया कषाय। कोई न करि हैं सहाय, जवह्वै अघत्तामरे ॥३॥ नैनानंद कहत मीत, भाषी सतगुरुनै नीत। वोवै ववूल तो न, लागैंगे आमरे ॥४॥

९—चालधुरपद [१६ कारण भावना]

भारे दर्शन विशुद्ध, तजकर परणति विरुद्ध। प्रवचन वत्स लसुबुद्ध, आदिक वल फुरकै ॥ टेक ॥ तीर्थंकर प्रकृतसार ताकी यह देनहार। आराधन गुन संभार, अपनी उर दुरकै ॥१॥ जिन पद अरविंदसेय सतगुरकी सरण लेय॥ आगम में चित्त देय, टूटै अघचुरिकै ॥२॥ आगे कुछ सिद्ध नांहिं दोनो भव विगड जाय भरमैं गो फेर २ रो गे झुर झुर कै ॥३॥ भरमों चहुँगति मंझार, नैनानंद सुनले यार। कुविसन की देवटार, भागै मति दुरिकै ॥४॥

१०—चाल धुरपद (पंचपरमेष्टि नमस्कार)

चेतरे अचेत मीत लीनों त्रिग्काल वीन तजकै परमाद रीति अवतो तू जागरे ॥ टेक ॥ भजले पर ब्रह्मरूप अर्हन सर्वज्ञभूप सिद्धन के गुण अनूप चितवन मे लागरे ॥ १ ॥ आचारज अरु-

उवज्झाय, साधुन पदशीसनाय, पैंडोक्षुड़वाय, दुष्ट विषयन सूं भागरे ॥ २ ॥ हिंसा अरु झूठ नाख मत कर चोरी भिलाख मैथुन सिर डार खाक तृष्णा जग त्यागरे ॥ ३ ॥ पांचों पद ध्याय पंच पापतैं पलाय अब पूरी कर नींद नाहीं खावैंगे कागरे ॥ ४ ॥

११–चाल धुरपद (संसार व्यवस्था)

देखरे अज्ञान भौन तेरो जगमांहि कौन कीने सब स्वांग तौन तो मन अपकायो ॥ टेक ॥ लेयकै निगोदकाय पृथिवी अप तेजवाय तरवर चरथिर भ्रमाय चहुँगति भरिआओ ॥ १ ॥ सुरनर पशुनर्कथान कवहुक विचरयो विमान कवहुक नरपति प्रधान लरक्रम कहलायो ॥ २ ॥ कवहुक बन्धखम्भलाल तन की उचराय खाल कवहुक चण्डाल अभक्ष भक्षण को धायो ॥ ३ ॥ अवतोनर चेत चेत विषयन सिर डार रेत पौरुष परकाश तू है सिंहनि को जायो ॥ ४ ॥

१२–चाल धुरपद (सम्यक्त महिमा)

वंदूं समकित निधान जिन पति के नन्दजान नन्दनवनकी समान सबकूं सुखकारी ॥ टेक ॥ जिनके घट माहिराज उमड्यो घनज्ञान गाज समरस भई वृष्टि सृष्टि तृष्णा सब टारी ॥ १ ॥ अनभव अंकूर फूट शंसय गुठली प्रटूट चारितरुचि ब्रह्मभाव शाखा विस्तारी ॥ २ ॥ सुव्रत पुष्पोन्मात करकै जिन वच प्रतीत शिवफल में धारनीत परपरणति छारी ॥ ३ ॥ करुणा छाया पसार भोगी जोगी अपार ठाडे भव वन मझार निर्भय अविकारी ॥ ४ ॥

१३—चाल धुरपद ।

बंकोन मझोल गोल, कर्मन केहैं झकोल । मेरी महिमा अडोल चेतन अविनाशी ॥ टेक ॥ लघुगुरु मम रूप नांहिं मृदु कठिन सरूप नांहिं हिम उष्णप्ररूप नाहिं रूखन चिकनासी ॥ १ ॥ षट्रस अनमिष्ट खार चर्चरन कषाय सार कटुकन दुर्गन्ध गन्ध श्याम न पीतासी ॥ २ ॥ हरि तन आरक्त श्वेत धूपन तम ज्योति देत शब्दन सुरनर परेत नर्क न बन बासी ॥ ३ ॥ जल थल बिलनभ चरीन त्रिय पुन्स न पुन्स कीन धनवन्त न रङ्क हीन सम्यक् करिभासी ॥ ४ ॥

१४—चाल धुरपद ।

धर्मी न अधर्म पाल अनमें आकाश काल पुग्दल सें भिन्न एक चेतन चितसारी ॥ १ ॥ परजयगति थिति धरंत त्रिभुवन नभ में भ्रमंत त्रिपणी मोहि सब कहंत त्रयधा तपधारी ॥ २ ॥ भूजल अनतेजवाय दोबिधि तर वर न काय विकलत्रय रूप नाहिं इंद्रिय सब न्यारी ॥ ३ ॥ सब से अनमेल खेल जैसे तिल मांहिं तेल पावक पाषाण जेम हमरी विधिसारी । ऐसे विज्ञान भानु दृगसुख महिमा निधान तिनकूं जुग जोरि पान वंदन बिस्तारी ॥ ५ ॥

१५—शूलताल ।

आत्म दरवको भेद न पायो परपरणतिकर, यह नर जन्म गंवायो ॥ टेक ॥ भरम भगल बस, पंच दरव फंसि नटवत नवरस, कर्म नचायो ॥ १ ॥ सपरस रस अरु गंध वरण स्वर,

इनते पर निज, क्यों न लखायो ॥ २ ॥ वन्हि अगिनि ज्यों, दधि में घृत त्यों, किम तिल तेल, जतन विन पायो ॥ ३ ॥ तजि परपञ्चन, माटी कञ्चन, ढूंढि निरंजन, सतगुरु गायो ॥ ४ ॥ दृगसुखसिंधन, दाहनिकंदन, शूलताल करि ज्ञान सुनायो ॥ ५ ॥

१६—रागधनाश्री ताल तैलंगी ।

अरे नर तनको मोह न कर रे, तू चेतन यह जर रे ॥ टेक ॥
सपरस पोषि विषय कूं चाहै सो मोरी रही सर रे ॥ १ ॥
रसना क्या न भखो या जग में सब पुग्दल लियेचर रे ॥ २ ॥
नांक फांक मत फूल घुसे रे रही सिनक सूं भर रे ॥ ३ ॥
जिन आंखन पर गोरीनिरखै सो ढीढों रही झर रे ॥ ४ ॥
धर्म कथा सुन मोक्ष न चाहे तो यह कान कतर रे ॥ ५ ॥
तू निरअञ्जन है भयभञ्जन तन कठिन को घर रे ॥ ६ ॥
दधिवत् मथि षट मास निरालो भाषत हैं सत गुरु रे ॥ ७ ॥
दृगसुख होय निजातम दर्शन भवसागर सूं तर रे ॥ ८ ॥

१७—राग दादरा ।

करै जीव का कल्याण, सदा जैन बानी रे, जैनवानी जैनवानी जैन वानी रे, करै जीव का कल्याण ॥ टेक ॥ संशयादि दोषहरै, मोहकूं निर्मूल करै, तोषदाय नन्दन, वन समानी रे ॥ १ ॥ कर्म-जाल भेदनी, है भर्म की उछेदनी, वस्तु के स्वरूप की है लाभ दानी रे ॥ २ ॥ वस्तु कूं विचार जीव, पार होत हैं सदीव, केव-लादि ज्ञान की, कलानिधानी रे ॥ ३ ॥ नैन सुक्ख अन्तकाल, में करै सबै निहाल, नाग वाघ स्वान किये स्वर्ग थानी रे ॥ ४ ॥

चौबीस तीर्थंकरों के भजन

१८—राग कालङ्गड़ा (श्री ऋषभजनाथ)

अबतो सखी दिन नीके आये, आदीश्वर लीनो अवतार ॥टेक॥
सरवारथ सिद्धितें चय आये, मरुदेवी माता उरधार ।
नाभि नृपति घर बटत बधाई, आज अयोध्यानगर मझार ॥ १ ॥
सुखम दुखम में तीन वरष, अरु शेष रहे वसुमास अवार ।
अबतो जाग जाग मोरी आली, हिल मिल गावें मंगलचार ॥ २ ॥
पुण्य उदयते नर भवपायो, अरु पायो उत्तम कुलसार ।
धर्म तीर्थ करता गुरु पायो, अब कटि हैं सब कर्म विकार ॥ ३ ॥
स्वयंबुद्ध पूरण परमेश्वर, मोक्ष पंथ दर्सावन हार ।
नयनसुख्य मन वचन कायकरि, नमूं नमूंवसु अङ्ग पसार ॥ ४ ॥

१९—रागनी भैरवीं (श्रीअजितनाथ)

अजित कथा सुनि हर्ष भयोरी ॥ टेक ॥
विजयविमान त्याग के प्रभुजी, जेठ अमावस आनिचयोरी ।
माघ सुदी दशमी नवमी कूं जनम तथा जग त्याग कियोरी ॥१॥
जित रिपु तात मात विजयादे, नगर अयोध्या दरस दियोरी ।
जाके चरण चिह्न गजपति को, ढौंच शतक तन तुङ्ग थयोरी ॥२॥
लाख बहत्तर पूरवआयू, इन्द्र ने पांच उछाव कियोरी ।
पोष शुक्ल ऐकादशि अवसर, सकल चराचर 'बोध भयोरी ॥ ३ ॥
मधुसित पांचें कूं शिवपाई, भवि अनन्त उद्धार कियोरी ।
दृगसुख तीन काल तिहुँजग में, सो जिनवर जैवन्त जयोरी ॥ ४ ॥

२०—राग विलावल (श्रीसंभवनाथ)

संभवनाथ हरो मम आरत, आ पकड़े प्रभु चरण तुम्हारे ॥ टेक ॥
तुम विन कौन हरै मम पातक, तुम विन कौन सहाय हमारे ।
धनुषच्च्यार शत मूरति तुमरी, निरखत उपजत हरष अपारे ॥
सुनियत जन्मपुरी सावस्ती, सुनयत घोटक चिह्न तुम्हारे ।
पिता जितारथ सेना माता, साठलाख पूरव थिति धारे ॥ २ ॥
ऊरध ग्रीवकतैं चय आये, तुम जग जाल विदारन हारे ।
दृगसुख देखि दिगम्बर तुमको, और लगैं सब देव ठगारे ॥ ३ ॥

२१—रागनी टोड़ी (श्रीअभिनन्दननाथ)

जै जै जै संवर नृपनन्दन अभिनन्दन नृप जगत अधार ॥ टेक ॥
विजै विमान त्यागि तुम आये, सिधअर्था के गर्भ मझार ।
जन्मे माघ सुदी द्वादशि को, नगर अयोध्या सुखदातार ॥ १ ॥
जिस दिन जन्म उसी दिन दिक्षा, ज्ञान पौषवदि चौथ अपार ।
भये सिद्ध वैशाख सुदी छठ, पूरव लाख पचास उमार ॥ २ ॥
धनुष तीनसै साढे काया, स्वर्ण वर्ण कपि चिह्न तुम्हारे ।
तुम इक्ष्वाकुवंशके भूषण, सुरनर गावत सुजस अपार ॥ ३ ॥
नैनानन्द भयो अब मेरे, देख दिगम्बर मुद्रासार ।
सुन सुन वचन विगतमल तुमरे दीने कुगुरु कुदेव विसार ॥ ४ ॥

२२—रागनी जोगिया असावरी [श्रीसुमतिनाथ]

म कुमति विनाशन हारे, सुमति जिन कुमति विनाशन हारे॥टेक॥
तात सुमेघ मंगला माता, खग पग क्रौंच तुम्हारे ।
लीनो जन्म अयोध्या नगरी, वन्श इक्ष्वाकु मझारे ॥ १ ॥

धनुप तीनसै तुङ्ग प्रभु तुम, सब भव भोग विसारे।
कर्मघातिया तोड़ छिनक में, लोकालोक निहारे॥ २॥
विश्वतत्त्व ज्ञायक जगनायक, जीव अनन्त उबारे।
बिन कारण भ्राता जगत्राता, दृगसुख शरण तिहारे॥ ३॥

२३—राग भैरूंनर [श्रीपद्मप्रभु]

वन्दन कूं प्रभु वन्दन कूं हम आये हैं, पदम प्रभु वन्दन कूं॥टेक॥
जन्म लियो कोशाम्बी नगरी, भविजन पाप निकन्दन कूं॥ १॥
मात सुसीमा गोद खिलाये, पूजूं धारण नन्दन कूं॥ २॥
वन्श इक्ष्वाकु कृतारथ कीनो, दूर किये दुखद्वन्दन कूं॥ ३॥
नयनानन्द कहैं सुनि स्वामी, काटि मेरे भव फन्दन कूं॥ ४॥

२४—रागसारङ्ग (श्रीसुपार्श्वनार्थ)

देव सुपारस ध्याइये, अरे मन देव सुपारस ध्याइये॥ टेक॥
भव आताप निवारण कारण, घसि घनसार चढाइये॥ १
अक्षत ले प्रभु चरण चढावो, तुरत अखय पद पाइये॥ २॥
भरि पुष्पांजली पूजन कीजै, मद कन्दर्प नसाइये॥ ३॥
अपनी क्षुधा हरण के कारण, उत्तम चरु अरचाइये॥ ४॥
नाशे मोह महा तम भारी, दीपक ज्योति जगाइये॥ ५॥
करमवन्श विध्वन्स करन को, धूप दशांग जराइये॥ ६॥
फलते फल शिव पद को पावै, नयनानन्द गुणगाइये॥ ७॥

२५—राग पीलू-पंजाबी ठुमरी [श्रीचंद्रप्रभु]

दिल लागा मेरावे, भलादिल लागा मेरावे, श्रीचंदाप्रभुदेनाले॥ टेक॥
भव अनन्त उद्धार कियो तुम, ऐसे दीन दयाले॥ १॥

जाके वचन सुनत भय भागे, टूट पडे अघजाले ॥ २ ॥
दरस देखि मेरे नैन सुफल भये, चरण परसि कै माले ॥ ३ ॥
गुण सुमरत भयो जनम सफल अरु, पुण्य कलपतरुडाले ॥ ४ ॥
कहत नैनसुख भवसागर सें हे प्रभु वेग निकाले ॥ ५ ॥

२६—राग झंझोटी [श्री शीतलनाथ]

हे परसिकै मूरति शीतल की मेरा शीतल भयो शरीर ॥ टेक ॥
परमानन्द घटा उर छाई, बरसे आनन्द नीर ॥ १ ॥
भागी जनम जनम की मेरी भव तृष्णा की पीर ॥ २ ॥
मुद्राशांति निरखि भयभागे, ज्यों घन लगत समीर ॥ ३ ॥
दास नैनसुख यह वर मांगे, हरो नाथ भव पीर ॥ ४ ॥

२७—रागवरवा [श्री पुष्पदंत]

गावोरी अनंद वधाई मोरी आली, पुष्पदंत जिन जन्मलियो है। टे.
काकन्दीपुर वामादेउर वैजदंत से आन चयो है॥ १ ॥
वन्श इक्ष्वाकु सफल कियो जाने, कुल सुग्रीव कृतार्थ भयो है ॥२॥
सकल सुरासुर पूजन आये सुरगिरि पै अभिषेक कियो है ॥ ३ ॥
नैनानन्द धन धन वे प्राणी, जिन प्रभु भक्ति सुधार वुपियो है ॥४॥

२८—रागनी झंझोटी [श्रीश्रेयांसनाथ]

श्रीश्रेयाँसजिनेश्वर ने सखि सकल कर्मदल हरे हरे ॥ टेक ॥
सजिसंयम सन्नाह महाभट, धीर धरा पग धरे धरे ॥
क्षमा ढाल समभाव खड्ग ले, अष्टकर्म संग अरे अरे ॥ १ ॥

ईश अनन्त धर्ता जगनायक, चारों घातक हरे हरे ॥
चार अघातिक शक्ति बिना जिन, मारे आपही मरे मरे ॥ २ ॥
निज अनुभूति धरी पर साधन, ताकारन नहि तरे तरे ॥
जब आप अपने करमें तब, सकल मनोरथ सरे सरे ॥ ३ ॥
ॐ जै कार भया त्रिभुवन में, इन्द्रादिक पग परे परे ॥
जैनानन्द मन वचन कायसूं, हित कर बन्दन करे करे ॥ ४ ॥

२९—राग जङ्गला-ठुमरी [श्रीवासुपूज्य]

पूजत क्यों नहिं रे मतिमंद, वासपूज्य जिनपद अरविंद ॥ टेक ॥

बाल ब्रह्मचारी भवतारी, परम दिगम्बर मुद्रा धारी ।
दुविधि परिग्रह संगतजोजिन, गुण अनन्त सुख संपतसिंधु ॥१॥
ध्याता ध्येयं ध्यान विभाशी, ज्ञाता ज्ञेयं ज्ञान प्रकाशी ।
पापातिक विमुक्तमलोघं, तारण तरण सहज निरद्वन्द ॥ २ ॥
महिमा वर्णत गणधर हारे, वचन अगोचर हैं गुणसारे ।
परमत सात जनम लगदरसे, भामंडल अतिशय अचलंत ॥ ३ ॥
प्रातिहार्य वसुमङ्गल द्रव्यं, सेवत सुर नर मुनि गण सर्वं ।
पांचवार आहि पूजन आये, चंपापुर सुर इन्द्र फनेंद्र ॥ ४ ॥
वासुदेव कुल चन्द्र उजागर, जयो जयावति सुत गुण नागर ।
दगसुख वीतराग लखि तुमकूं, आये शरण काटि भवफंद ॥५॥

३०—रागनी धनाश्री (विमलनाथ)

अब मोहि विमल करो, हे विमल जिन अबमोहि विमलकरो । टेक

धर्म सुधारस प्यास- जगत गुरु, विषय कलंक हरो ।
वीतरागता भाव प्रकाशो, शिव मग माहिं धरो ॥ १ ॥

तुम सेवा का यह फल चाहूं क्रोध कषाय टरो।
माया मान लोभ की परणति, ये जग जाल जरो ॥ २ ॥
जब लग जगत भ्रमण नहीं छूटे, ऐसी टेव परो।
सच्चे देव धरम गुरु सेऊं, नयनानन्द भरो ॥ ३ ॥

३१—रागनी धानीगौरी के ज़िले में ग़ज़ल के तौर पर [श्री अनंतनाथ]

स्वामी अनंत नाथ चरनों के तेरे चेरे हैं ॥ टेक ॥
सेवा करी न तेरी तकसीर है यह मेरी जी।
तुमको नहीं हैं चाह पापों ने हमको घेरे हैं ॥ १ ॥
विभ्रम मुझे जो आया, संशय ने फिर भ्रमायाजी।
पकड़ी करम ने बांह ले झारवें से गेरे हैं ॥ २ ॥
करता हूँ तेरी आसा, मेटो जगतका वासाजी।
तुमहो त्रिलोकसाह, संजम के भाव मेरे हैं ॥ ३ ॥
चरणों में राख लीजे, आनंद नैन दीजे जी।
अब तो बता दे राह, जैसे हैं तैसे तेरे हैं ॥ ४ ॥

३२—राग श्यामकल्याण [श्रीधर्मनाथ]

तारधनी अबमोहि जगत से तारधनी, अब मोहि जगतसे ॥टेक॥
भटकत भटकत भवसागर में, भोगी त्रिविधि विपत्ति घनी ॥ १ ॥
लख चौरासी जो दुख देखे, सो बिपदा नहीं जाय गिनी ॥ २ ॥
धरमनाथ प्रभु नाम तिहारो, धरम करो मोपै आन बनी ॥ ३ ॥
करि उद्धार निकारि जगत् से, दृगसुख भक्ति विधान भनी ॥ ४ ॥

३३—रागनी खम्माच की ठुमरी [श्रीशान्तिनाथ]

हमारी प्रभु शांति से लगन लागी रे, हो विघन गये भजिकें प्रभू के पद जजि के, हमारी प्रभु शांति से लगन लागी रे ॥ टेक जीव अजीव सकल दरबनि की, जी वखानी गुण परजै, अनघ धुनि गरजै ॥१॥ सब भाषा मय वचन प्रभु के, जी सभी के मन भावैं। भरम विन सावैं ॥२॥ विन कारण जग जंतु उभारे जी, नयनसुखदाता, सभी के जग त्राताजी ॥

३४—खम्माच की ठुमरी (श्रीकुंथुनाथ)

आज आली श्रीमती जननि सुत जायोरी। आज आली। टेक।

सोम वंश हथनापुर नगरी, सूरज नृप सुख पायोरी ॥ १ ॥
लख योजन गज सजिकें सुरपति, उत्सवकूं उमगायोरी ॥ २ ॥
पांडुक वन सिंहासन ऊपर, क्षीरो दधि जल न्हायोरी ॥ ३ ॥
कुंथु कुंथु कहि संस्तुति कीनी, तांडवनृत्य करायोरी ॥ ४ ॥
सखियनमिलिजिन मंगल गाये, मोतियनचौक पुरायोरी ॥ ५ ॥
सौंपि पिता जननी गयो सुरपति, नैनानंद गुण गायोरी ॥ ६ ॥

३५—रागदेश (श्रीअरहनाथ)

तुम सुनोरी सुहागन चतुरनार, अरहनाथ प्रभुभये वैरागी। टेक।
सखि लख चौरासी गयंद तजे, जो कंचन मोतियन माल सजे।
तजिघोटक ठाराकोड़ि सखी, अरु छयानवै सहस्र त्रिया त्यागी ॥१॥
सखि चौदह रतन विसार दिये, अरु पंच महाव्रत धारि लिये।
तजि वस्त्र अभूषण जोग लिये, भये परम धरम से अनुरागी ॥२॥

सखि निरखि निरखि पग गमनकियो, समताधरिकर्मविपाकमह्यो
चलो परम पुरुष के वंदन कूं, अब केवल ज्ञान कला जागी ॥३॥
हथनापुर तीरथ प्रगट करो, जहां गर्भ जन्म तप ज्ञान वगे।
नयनानंद पायन आनि परो, वाही के चरणसूं लौ लागी ॥४॥

३६—रागनी सोरठ (श्रीमल्लिनाथ)

थे देखो आली री मल्लिनाथ कुमार ॥ टेक ॥ माता जाकी प्रभावती देवी है जी, तात कुंभ भूपाल, त्यागो सब परिवार ॥१॥ तजि मिथुलापुर जोग लियो है, री वंश इक्ष्वाकु विसार कीनो सुवन विहार ॥२॥ भोगो राज न व्याह न कीनो री, बाल ब्रह्म तपधार, कीनो धैर्य अपार ॥३॥ कहत नैनसुख जोग जुगति से, री पहुँचे मुक्ति मझार, गावो मंगलचार ॥४॥

३७—राग विहाग (श्रीमुनिसुव्रतनाथ)

अब सुधि लेहु हमारी मुनि सुव्रत स्वामी ॥ टेक ॥
तुमसो देव न जग में दूजो, मैं दुखिया संसारी ॥ १ ॥
तुमहीं वैद्य धनन्तरि कहियो, तुमही मूल पंसारी ॥ २ ॥
घट घट की सब तुमही जानो, कहा दिखाऊं नारी ॥ ३ ॥
करम भरम ममरोग लगावो, इन मोहि दुख दिये भारी ॥४॥
तुम जग जीव अनंत उबारे, अबके वार हमारी ॥ ५ ॥
हग सुख तारण तरण निरखि के, आयो शरण तिहारी ॥६॥

३८—रागनी जय जयवंती [श्रीनमिनाथ]

कर बड़ भागन आलस त्यागन, नमि जिन पति तेरे पुत्र भयो है ॥ टेक ॥ तू सुख नींद मगन भइ सोवत, हम प्रभु

नाभि सुभाग्य लियो है ॥ १ ॥ आगम तात विजय रथ राजा, तुम कुल चन्द्र उद्योत कियो है ॥ २ ॥ चन्दन रतन सुधारस मर मर, मिथुलानगर हर्षित भयो है ॥ ३ ॥ विप्रा मात उठी सुनि संस्तुति, शचि प्रभु गोद पसार लियो है ॥ ४ ॥ नील कमल पद नाथ विराजत, चरण इक्ष्वाक कृतार्थ कियो है ॥ ५ ॥ इम सुरदास आन पूरण सब, सुख दुख द्वन्द विनाश दियो है ॥६॥

३९—राग जङ्गला और गाड़ की ठुमरी (श्रीनेमिनाथ)

नेमि पियाके ढिग मोहि जानदे, मैं वारी नेमि पियाके ढिग मोहि जानदे ॥ टेक ॥ झूठी काया झूठी माया, झूठा सब संसार । झूठा जग की कामना मोहि, करमो के लेख मिटानदे ॥ १ ॥ भजन करुंगी जोग धरूंगी, भजन जगत में सार । भजन बिना मैं बहु दुख पाये मेरी भवबाधा मिट जानदे ॥ २ ॥ सब जग स्वारथ का सगारो अपना सगा न कोय । अपना साथी धरम है, मोहि भव सागर तिरजान दे ॥ ३ ॥ भोग बिना निरधन दुखारा, तृष्णावन्त धनवान । नेमि बिना सब जग दुखियारी, नेमी से नेम ग्रहान दे ॥ ४ ॥ नेम किये बहुते जन सुरझे, मेरे नेमि अधार । इम सुख राजुलि कहत सखी सुन अब मोहे नेमि लहाण दे । ५ ।

४०—रागपरज [श्री पार्श्वनाथ]

भजि भजि रे मन परम सुधारस, तजि आरस पारस भगवान । टे०
होय कुधात लगत जिस काञ्चन, वचन सुनत मिटि जाय अज्ञान ।
पूजत पद वसु कर्म विनाशैं, होय त्रिविध संकट अवसान ॥ १ ॥
मंगल होय उदंगल विघटै, प्रगटैं ऋद्धि समृद्धि अमान ॥
नागभये धरणेन्द्र छिनक में, बहुते जीव गये निर्वान ॥ २ ॥

अश्वसेन वामा कुल नन्दन, जग बन्दन नन्धन विख्यान ॥
प्राणत स्वर्ग थकीचय आये, नगर बनारस जन्मे आन ॥ ३ ॥
नव कर उच्च सजल घन तन पग, पन्नग वन्श इक्ष्वाकु प्रमान ॥
अवधिशताब्द् धरण दुखदारुण, हरण कमठ शठ विघन वितान । ४
विषम रूप भव कूप विषे हम, पावत हैं प्रभु दुःख महान ॥
नयनानंद विरद सुनि तुमरो, गावत भजन करो कल्यान ॥ ५ ॥

४१—रागपरज [श्रीवर्द्धमान]

जय श्री वीर जयति महावीरं, अतिवीरं सन्मति दातार ॥ टेक ॥
वर्द्धमान तुमरो जस जग में, तुम अन्तिम तीर्थंकर सार ।
पंचम काल विषें तुम शासन, करत जगज्जीवन उद्धार ॥ १ ॥
षोड़स स्वर्ग थकी चय आये, साढ शुकल छठ गर्भ मझार ।
चैत्र शुकल त्रोदशी के अवसर, कुंडलपुर तुमरो अवतार ॥ २ ॥
सिद्धारथ नृप बाप तुम्हारे, त्रिशला देवी मात तिहार ।
सात हाथ तन तुंग तुम्हारो, नाथ वन्श के तुम सिरदार ॥ ३ ॥
सिंह चिह्न तुमरे पद सोहै, माघ असित द्वादशि जग छार ।
दशमी असित वैसाख भये तुम, सकल दरब दरसी इकबार ॥ ४ ॥
पावांपुर सरवरपै प्रभु तुम, ध्यान धरो संयोग विसार ।
कार्तिक कृष्णा चौदसि की निशि, मावस प्रात वरी शिवनार ॥५॥
दुखम सुखम के तीन वरस अरु, शेष रहे वसुमास जवार ।
तादिन तुम्हें रतन दीपकतैं, पूजैं सुर नर करि त्योहार ॥ ६ ॥
छस्से पांच वरस जब बीते, तब विक्रम सम्मत विस्तार ।
जब लग रहै धरा नभ मंडल, नयनानंद जपो नवकार ॥ ७ ॥

४२—राग बरवा।

कब धो मिलैं गुरुदेव हमारे, भर जोवन वनवास सिधारे ॥टेक॥
आतम लीन अनाकुल देवा, जाके सुमति उदै स्वयमेवा ॥ १ ॥
परहित हेत वचन विस्तारैं, सो गुरु भौ भौ सरण हमारे ॥ २ ॥
प्रगट करैं शिव मारग नीका, वरस रहो मनु मेघ अमीका ॥ ३ ॥
वैरी मीत बराबर जाकैं, कांचन कांच उपल सम ताकैं ॥ ४ ॥
महल मसान उद्यान सरीखे, जीवन मरन बराबर दीखे ॥ ५ ॥
करुणा अङ्ग रतन त्रय धारी, नैनानंद ताहि धोक हमारी ॥ ६ ॥

४३—राग भैरूंनर।

चरणन से आज मोरी लागी लगन ॥ टेक ॥
हाथ कमंडल कर में पीछी, मिले गुरु निस्तारन तरन।
वन में बसैं कसैं इन्द्रीनिकूं, धारैं करुणा रुप नगन ॥
हित मित वचन धर्म उपदेशैं, मानो वर्षत मेघ झरन।
नैनानन्द नमत है तिनकूं, जो नित आतम ध्यान मगन ॥

४४—रागनी झंझोटी खम्माचका जिला- ठुमरी पूर्वी।

हे बहनिया मेरा अङ्गना पावन भयोरी, हे दयाल गुरु आये, ॥ कृपाल गुरु आये, री बहनियां मेरा अङ्गना पावन भयोरी ॥टेक॥ मुक्ति पंथ दरसावन हारे री, हे रतन त्रय साथें, मयूरपिच्छ हाथैंरी युगत कर मंडल भयोरी ॥ १ ॥ गमन ईर्याकर तपधारेरी, हैं विसारे मान माया, उबारैं षट कायारी, असन म्हारे आगम भवन भयोरी ॥ २ ॥ पांच प्रकार रतन की धारारी, विबुध वृन्द गेरै, हे जै जै धुनि टेरैं री, सघन हग आनन्द छावन भयोरी ॥३॥

४५ – राग जंगला – ठुमरी ।

इक जोगी असन बनावै, तसु भखत असन अघन लत होत ॥टेक
ज्ञान सुधारस जल भरलावे, चूल्हा शील बनावै ।
करम काष्टकूं चुग चुग बालै, ध्यान अगिनि प्रजलावे जी ॥ १ ॥
अनुभव भाजन निजगुण तंदुल, समता क्षीर मिलावे ।
सोहं मिष्ट, निशंकित व्यंजन,समकित छौंक लगावै जी ॥ २ ॥
स्यादवाद, सतभङ्ग मसाले, गिणती पार न पावै ।
निश्चय नयका, चमचा फेरे, विरध भावना भावैजी ॥ ३ ॥
आप पकावै, आपहि खावै, खावत नाहिं अघावै ॥
तदपि मुक्ति, पद पंकज सेवै, नयनानन्द सिरनावैजी ॥ ४ ॥

४६—रागधना श्री अथवा सोरठ ।

सतगुरु परम दयाल जगत में सतगुरु परम दयाल ॥ टेक ॥
सब जीवनि को संशय मेटैं, देत सकल भय टाल ।
दुख सागर में डूबत जनकों, छिन में देत निकाल ॥ १ ॥
सुरग मुकति को पंथ बतावें, मेटि करम भ्रम जाल ।
धरम सुधारस प्याय हरैं अघ, छिन में करत निहाल ॥ २ ॥
स्वान सिंह सतगुरु ने तारे तारे गज विकराल ।
सुगुरु प्रताप भये तीर्थंकर, अरु तारे श्रीपाल ॥ ३ ॥
पांच शतक मुनि कोल्हू पीड़े दंडक नृप चांडाल ।
होय जटायु सुगुरु पद सेये, पायो सुरग विशाल ॥ ४ ॥
बलि से दुष्ट सुपंथ लगाये, सतगुरु विष्णु दयाल ।
नयनानन्द सुगुरु सम जग में कौन करै प्रतिपाल ॥ ५ ॥

[४७]

अब मुझे सुधि आई. जैन वाणी सुनि पाई ॥ टेक ॥
काल अनादि निगोद वेदना, सुगती कहिय न जाई ।
पड़ा नरक चिरकाल बिलायो, कोइ न शरण सहाई ॥ १ ॥
कबहुँक कंठ कुठारनि चीरा, दियो बांधि लटकाई ।
कबहुँक चार डारि कोल्हू में, तिलवत देह पिलाई ॥ २ ॥
ताते तेल भाड़ में भुन्नो, कबहुँक शूल दिखाई ।
आंखन नून कान में डारे, नासा चीर बगाई ॥ ३ ॥
वैतरनी में गेर घंसीटो, गाल कुधात पिलाई ।
तांबा प्याय लोह की पुतली, ताती कर लिपटाई ॥ ४ ॥
मात पिता युवती सुत बांधव, संपति काम न आई ।
कबहुँक पशु पर जाय धरी तहां, वध बंधन अधिकाई ॥ ५ ॥
खनन तपन दाहन अरु धौंकन, बहुविधि मरन कराई ।
न्मन अमन दोउ भांति भरे दुख, छेदन वेदन पाई ॥ ६ ॥
कबहुँक मानुष देह विडंबो, विषयनि में लवलाई ।
अन्ध पंगु अरु रावरंक भयो, रोग सोग दुखदाई ॥ ७ ॥
कुष्ट जलोदर और कठोदर इष्ट वियोग बुराई ।
देव भयो पर संपति निरखत, झुरझुर देह जराई ॥ ८ ॥
वाहन जाति तथा भव पूरण, निरखि रहो पछिताई ।
यह विधि काल अनन्त भजो हम, मिथ्या भाव कषाई ॥ ९ ॥
अव्रत जोग फिरा भटकत हों, सम्यक दृष्टि न आई ।
अब जिन धर्म परम रस बरसे, भव तृष्णा न रहाई ॥ १० ॥
इम सुखदास आस भई पूरण, धन्न जिन वैन सहाई ॥

४८—राग धनाश्री।

जिन मत पर निधान, जगत में जिनमत परम निधान ॥टेक
जिन मारग तैं उरझी सुरझे, छूटै पाप महान।
अरु जियाकूं अनुभव सुधि आवै, भागै भरम वितान ॥ १ ॥
वस्तु स्वरूप यथावत दरसै, सरसै भेद विज्ञान।
सब जीवनि पर करुणा उपजै, जानै आप समान ॥ २ ॥
शूकर सिंह नवल मर्कट को, वर्णन आदि पुरान।
भील भुजङ्ग मतंगज सुरझे, कर याको सर धान ॥ ३ ॥
अञ्जन आदि अधम बहु उतरे, पायो सुरग विमान।
नर भव पाय मुकति पुनि पाई, नयनानन्द निधान ॥ ४ ॥

४९—रागनी हंडोल—मल्हार।

सुनोजी सुनोजी समभावसूं श्रीजिन वचन रसाल ॥ टेक ॥
द्रव्य करम ने तुम ठगे, भाव करम लये लार।
नोकर मनिसूं बाधिये, दीनो चहुँ गति डार ॥ १ ॥
कबहुँक नर्क दिखाईयो, कबहुँक पशु पर जाय।
नव ग्रीवक लों ले चढ़े, पटको भाव डिगाय ॥ २ ॥
जिसने जिनवच नहिं सुने, विकथा सुनी अपार।
नर भव चिंतामणि रतन, दियो सिंधु में डार ॥ ३ ॥
पंच महाव्रत ना लिये, श्रावक व्रत दिये छार।
तिनकूं नरक निकेत में, मारो चाम उपार ॥ ४ ॥
मति थोड़ी विपता घणी, कहै कहालों कौन।
थोड़ी में बहुती लखो, होय सुघर नर जौन ॥ ५ ॥
पायो धरम जहाज अब, पायो नरभव सार।
नैन सुक्ख भवसिंधु से, उतर उतर हो पार ॥६॥

५०—राग काफ़ी चाल होली की ।

जिन वाणी को सार न जानी ॥ टेक ॥ नरक उधारण, शिव सुख कारण, जनम जरा मृतहानी । उदर जलोदर, हरण सुधारस, काटन करम निहानी, बहुर तेरे हाथ न आनी ॥ १ ॥ कल्पवृक्ष चिंतामणि अमृत, एक जनम सुखदानी । दूजे जनम फिर होय भिखारी, यह भवभ्रमण मिटानी । तजो दुर्व्यसन कहानी ॥ २ ॥ व्याह सुता सुत बांटिलूं भाजी, हरिलूंनागी विरानी । ऐसे सोचत जात चले दिन, होत सरासर हानी । समझ मन मूरख प्रानी ॥ ३ ॥ भव वारिध दुस्तर के तरणकं, कारण नाव बखानी । खोल नयन आनन्द रूप से, धर सम्यक्त अज्ञानी । मोक्षपद मूल निशानी ॥ ४ ॥

५१—राग यमन कल्याण ।

जडला जिनराज बिना कौन हरै मेरी ॥ टेक ॥

सुनत ही जिनेंद्रबैन, भयो मोहि अतुलचैन, सम्यक्के अभाव मैंने कीनी भव फेरी ॥ १ ॥ अतुल सुक्ख अतुल ज्ञान, अतुल वीर्य को निधान, काया मे विराजमान, मुक्ती मेरी चेरी ॥ २ ॥ द्रव्य कर्म विनिर्मुक्त, भावकर्म असंयुक्त, निश्चयनय लोक मात्र, परजय वपुघेरी ॥ ३ ॥ जैसे दधिमांहि घीव तैसे जड़मांहिजीव देखी हम अपने नैन, आनन्द की ढेरी ॥ ४ ॥

५२—राग भेरूनर ।

संशय मिटै मेरी संशय मिटै, जिनवानी के सुने से मेरी संशय मिटै ॥ टेक ॥ पाप पुण्य का मारग सूझै भवभवकी मेरी

व्याधि करै ॥ १ ॥ और ठौर मोहि विकलप उपजै ह्यां आनँद उठै ॥ २ ॥ निज पर भेद विज्ञान प्रकाशै विषयन की मेरी चाह घटै ॥ ३ ॥ बानी सुन नैनानँद उपजै मोह तिमर का दोष हटै ॥ ४ ॥

५३—रागनी खम्माच की ठुमरी मल्हार ।

जिया तूने तजो धरम हितकारी । ऐसा जग जन तारक, कलमलहारक, अधम उधारक रतनसार, तैंने तजा धरम हितकारी ॥ टेक ॥ तेरे कर्म बंध तोर डारे, तीनों दुक्खतैं उवारै भवतैं निकारै अघहारी ॥ १ ॥ नरक निकार लेय, तीर्थराज पद देय, धरमसो न कोऊ उपगारी ॥ २ ॥ नैनसुख धर्मसेवो, आतमस्वरूप वेवो लागे पार खेवो तत्कारी ॥ ३ ॥

५४—धनसारी ।

जिनवानी रस पी हे जियरा जिनवानी रसपी ॥ टेक ॥
तुम हो अजर अमर जगनायक ज्ञानसुधा सरसी ।
तेरो हरनहार नहीं कोई, क्यों मानत डरसी ॥ १ ॥
करम लिपत करमनतैं न्यारो केवल मैं दरसी ।
ज्यों तिल तेल मैल सुवरण में, क्यों पुद्गल परसी ॥ २ ॥
जबलग परकूं निजकर मानत, तबलग दुखभरसी ।
छूटै नाहिं काल के करसैं, मर मर फिर मरसी ॥ ३ ॥
पूजा दान शील तप धारो, सब पातिग हरसी ।
नयनानद सुगुरुपद सेवो, भवसागर तरसी ॥ ४ ॥

५५- रागनी जंगला झंझौटी ।

सुगुरुकी वानीजी सुगुरुकी वानी-तेरे दिलमें क्यों न समानी सुगुरु की वानी-अरे अभिमानी सुगुरु की वानी ॥ टेक ॥ वीतराग हिम गिरते निकसी, यह गंगा सुखदानी, सप्तविभंगा, अमल तरंगा, भव आताप मिटानी ॥ १ ॥ जग जननी परमारथ करनी-भाषी केवल ज्ञानी सत्य सरूप यथास्थ निर्णय, सो तैंने विसरानी ॥ २ ॥ जामें बंध मोक्षकी कथनी, सुन सुरझै बहु प्राणी-पशु पक्षी से पाय मनुष पद, होय रहे शिवथानी ॥ ३ ॥ तैं मिथ्या मत देव धरम भज पियो मूढ़ मद पानी कीनी भूत ऊत की सेवा—मिली न कौड़ी कानी ॥ ४ ॥ भर्म अविद्या वस या जग में, खाक बहुत ही छानी । अव जिन बैन गंगतट सेवो, दग सुख शिव सुखदानी ॥ ५ ॥

५६—दूंदत्रोटक वृत सरस्वती अष्टक ।

मुनि भाव तरंग विशुद्ध तरे-रज पाय प्रताप विभाव हरे मद मोह मरुस्थल भेज जवे, जय वीर हिमाचल वाग भवे ॥ १ ॥ षट नंद तपासर की नगरी, लख तोही मिटे भव के भयरी, जड़ जीव चितावन रूप नवे ॥ २ ॥ भव कानन आंगन भीर भर्यो, बहुवार कुजन्म कुयोनि पर्यो जग शूल निमूल निवज्र दवे ॥३॥ मम केश करांकुर जोरि धरै—लख कोट सुमेरु सिवाय परै, दग पात पिता जननी सुचवे ॥ ४ ॥ लख सिंधु समाय न अश्रु मर्म—मम सर्व हितू अन एक मर्म, अति खेद भरे कर्मोद्भवे ॥ ५ ॥ अब आन पर्यौ तुमरे दरपै—अपवर्ग धरो हमरे करपै, जग जाल विमोचन भाल नवे ॥ ६ ॥ तुम नाम हरै भव पेद घना—

जिम तीव्र तपोहत पांथ जनान, पद्मासर आसर वात भवे ॥ ७ ॥ सव देवयजे अनतोष भयो—लखरूप कृतारथ जन्म थयो—चख अमृत वारिध कौन पिवे ॥ ८ ॥

गीता छंद ।

कुज्ञान छौनी मोक्ष दैनी आतमा दरसावनी ।
घट पट प्रकाशन जैन सासन संत जन मनभावनी ॥
रविनंद जुग जुग अब्द विक्रम साठ सित तेरस ससी ।
अरदास दृग सुख दासकी सुन नाश भव बंधन फंसी ॥

५७—अर्हंतस्तुति वरवेकीठुमरी ।

लगे नैना समोसृत वारेसैं, हे वारेसैं जग प्यारेसैं ॥ टेक ॥
विश्व तत्त्व ज्ञाता जगत्राता, करम भरम हर तारेसे ॥१॥
तारण तरण सुभाव धरो जिन, पार लंघावन हारेसैं ॥२॥
विन स्वारथ परमारथ कारण, डूबत काढ़न हारेसैं ॥३॥
दृगसुख परम धरम हम पायो, स्याद्वादमत वारे सैं ॥४॥

५८—रागमांड देश की ठुमरी ।

प्रभु तार तार भवसिंधुपार–संकटमंझार–तुमहीअधार—टुक दे सहार, वेगी काढो मोरी नय्या ॥टेक॥ परमाद चोर कियो हम पै जोर, अगपोततोर, दिये मझमें चोर तुम सम न और तारन तरय्या ॥ १ ॥ मोहि दंड दंड दियो दुख प्रचंड, कर खंड खंड चहुँगति में भंड तुम हो तरंड—तारो तारो मोरे संय्यां ॥२॥ दृग सुखदास तोगे है हिरास–मेरी काढ़ फांस, हर भवको वास, हम करत आस—तू है जग उधरय्या ॥ ३ ॥

५९—खमाचकी ठुमरी।

सेवैं सव सुरनर मुनि तेरोद्वार—तू है धरम अरथ काम मोक्ष को दिवय्या, तोहि तजि अव जाऊं प्रभु किसके वार ॥ टेक ॥ अतुल दरसपुन, अतुल ज्ञान घन, अतुल सुख्य, बलको न पार ॥१॥ सकल छतरपति, करत भगति अति, चरण परन मस्तक-पसार ॥ २ ॥ तुमकूं नमाय माथ, कौन पै पसारु' हाथ, तुषको-दवय्या, देत लाखन गार ॥ ३ ॥ तुम बिन रागदोष, देत हो सवन मोक्ष, लिये हैं पजोष, सवही प्रकार ॥ ४ ॥ तुम सनमुख रहे, तिन्हें नैन सुख भये, तुम से विमुख, रुले जग मझार ॥ ५ ॥

६०—रागभैरवी

भाग जगोजी, आजतो म्हारो भाग जगोजी ॥ टेक ॥
आज भयो मेरा जन्म कृतारथ, आज भवोदधि पार लगोजी ॥ १ ॥
मैं तुम ढिग कवहूँ नहिं आयो, कर्मन के वस्त आप ठगो जी ॥२॥
वैनतेय सम दरस तिहारो, निरखत काल भुजङ्ग भगोजी ॥३॥
आज भई मेरी मनसा पूरण, आजही नयनानन्द पगोजी ॥ ४ ॥

६१—रागनी गारा और जिला।

दरशन के देखत भूख टरी ॥ टेक ॥
समोशरन महावीर विराजैं, तीन छत्र शिर ऊपर छाजैं।
भामण्डलसें रवि शशि लाजैं, चँवर ढुरत जैसे मेघ झरी ॥ १ ॥
सुरनर मुनि जन बैठे सारे, द्वादश सभा सुगणधर ग्यारे।
सुनत धरम भये हरष अपारे, वानी प्रभु जी थारी प्रीतिभरी ॥२॥

मुनिवर धरम और गृहवासी दोनूं रीति जिनेश प्रकाशी ।
सुनत कटी ममता की फांसी तृष्णा डायन आप मरी ॥ ३ ॥
तुम दाता तुम ब्रह्म महेशा तुम्हीं धनन्तर वैद्य जिनेशा ।
काटो नयनानन्द कलेशा, तुम ईश्वर तुम राम हरी ॥ ४ ॥

६२—रागनी जंगला-ठुमरी ।

मिटादो प्रभु व्यथा हमारी जी एजी हम आये हैं दर्शन काज ॥ टेक ॥ सेठ सुदर्शन को प्रण राखो शूली सेज समान । अगनिसे सीता उबारी जी ॥ १ ॥ नाग नागनी जरत उबारे, दियो मन्त्र नवकार । मगन गति उनकी सुधारी जी ॥ २ ॥ त्रिभुवननाथ सुनो जस तेरी जब आयो तुम पास । करो ना प्रभु मेरी गुजारीजी ॥ ३ ॥ भटकत भटकत दर्शन पायो जनम सफल भयो आज । लखी जो मैंने मुद्रा तुम्हारी जी ॥ ४ ॥ मैं चाहत तुम चरण शरण गत मांगत हूँ नहिं राज । सुनोजी नैनानन्द की पुकारी जी ॥ ५ ॥

६३—रागनी भैरवंनर-जंगला झंझोटीका जिला

जबसे तेरा मत जाना, तभी से आपा पिछाना ॥ टेक ॥
निज पर भेद विज्ञान प्रकाशो, तत्व प्रकाशे नाना ।
दर्शन ज्ञानचरित्र आराधो, धरो जैन मनबाना ॥ १ ॥
काल अनादि भजो मिथ्यामत धर्म मर्म अब जाना ।
अब टूटी ममता की फांसी, समता ओर लुभाना ॥ २ ॥
अब ही मैं यह बात पिछानी, यह भव बन्दीखाना ।
करम बन्ध जग में दुख पाऊं, मैं त्रिभुवन को राना ॥ ३ ॥

कहत नैनसुख तार तार प्रभु, तुम हो सतगुरु दाता।
नातर बिरद लजावे तेरो, देत सकल जग ताना ॥ ४ ॥

६४ रागदेश

ठाढ़े जी गुसइय्यां तेरे दरबारे में, स्वामी महाराजे ॥ टेक ॥
करम हमारे बँध गये भारे जी, हो इनकूं दीजे निकार ॥ १ ॥
विघनहरन तुम सबही के दाताजी, हो अतिशय अगमअपार ॥२॥
निरखत रूप पुरन्दर हारे जी, हो जस गावत गणधार ॥ ३ ॥
मनमयूर नैनानन्द मानत जी, सुन सुन बचन तिहार ॥ ४ ॥

६५—रागनीजंगला।

भगवान दर्शन दीजे, जी महाराज दर्शन दीजे,
अजि मैं तो दर्शनकारण आया, जी महाराज दर्शन दीजे ॥टेक॥
कोई तो मांगे प्रभु स्वर्ग सम्पदा, मैं थानैं पूजन आया ॥ १ ॥
इन्द्र न्हुलावे तुमैं क्षीरोदधि से, मैं प्राशुक जल लाया ॥ २ ॥
इन्द्र चढ़ावै प्रभु रतन अमोलक, मैं तंदुल चुग लाया ॥ ३ ॥
इन्द्र करै प्रभु ताडव नाटक, मैं जस गावन आया ॥ ४ ॥
कहै नैनसुख दर्शन करके, अब नर भौ फलाया ॥ ५ ॥

६६—राग कालंगड़ा।

जो तुम प्रभु हो दीनदयाल, तो तुम निरखो मेरा हाल ॥ टेक ॥
नरक निगोद भरे दुःख भारी, हांसे निकस भ्रमोजगजाल।
जल थल पावक पवन तरोवर, धर धर जन्म मरो वेहाल ॥१॥
कृम पिपीलिका भ्रमर भये हम, विकलत्रय की सीखी चाल।
फिर हम भये असैनी सैनी, चढ़ि नव ग्रीव गिरे ततकाल ॥२॥

कहैं नैनसुख भवसागर से, बांह पकरि मोहि वेगि निकाल।
समरथ होयहुँ मैंन उबारो, तो न कहूं फिर दीनदयाल ॥ ३ ॥

६७-कुदेवत्याग विषय-राग-ठुमरी जंगला झंझौटी।

मैं दरश बिना गया तरस, दरश की महिमा न जानी जी ॥टेक
मैं पूजे रागी देव गुरु, सेये अभिमानी जी।
हिंसा में माना धरम सुनी मिथ्या मत बानी जी ॥ १ ॥
मैं फिरा पूजता भूत ऊत अरु सढ मसानी जी।
मैं जंत्र मंत्र बहु करे मनाये नाग भवानी जी ॥ २ ॥
मैं भैंसे बकरे भेड हते बहुतेरे प्राणी जी।
नहि हुआ मनोरथ सिद्धि भये दुर्गति के दानी जी ॥ ३ ॥
मैं पढ़ लिये वेद पुराण जोग अरु भोग कहानी जी।
नहीं आसा तृष्णा मरी सुगुरु की शीख न मानी जी ॥ ४ ॥
मैं फिरा रसायन हेत मिली नहीं कोड़ी कानी जी।
नहि छुटा जन्म अरु मरन खाक बहुतेरी छानी जी ॥ ५ ॥
लई भुगत चौरासी लाख सुनी नहीं तेरी बानी जी।
हुवा जन्म जन्म में ख्वार धरम को सार न जानी जी ॥ ६ ॥
तेरी वीतराग छवि देखि मेरे घट मांहि समानी जी।
हो तुम ही तारण तरण तुमही हो मुक्ति निसैनी जी ॥ ७ ॥
है दयामई उपदेश तेरा तुम हो गुरु ज्ञानी जी।
हो षटमत में परधान नैनसुखदास बखानी जी ॥ ८ ॥

६८—राग खम्माच।

लागा हमारा तोसे ध्यान, दाता भवसे निकारो मोकों जी ॥टेक॥
तुम सर्वज्ञ सकल जग नायक, केवल ज्ञान निधान ॥ १ ॥
जीव दयामई धर्म तिहारो जी, षट मत मांहि प्रधान ॥ २ ॥

तुम बिन कौन हरे भव बाधाजी, सब जग देखा छान ॥ ३ ॥
दासनैनसुख कछु नहिं मांगत, जीदीजिये शिवपुरथान ॥ ४ ॥

६९—रागनी जङ्गला झंझोटी मारवा दादरा

किस विधि कीने करम चकचूर, थारी परम छिमापै जी अचंभा मोहि आवै प्रभु, किस विधि० ॥ टेक ॥ एक तो प्रभु तुम परम दिगम्बर, वस्त्र शस्त्र नहिं पास हजूर। दूजे जीव दया के सागर, तीजे संतोषी भरपूर ॥ १ ॥ चौथे प्रभु तुम हित उपदेशी, तारण तरण जगत मशहूर । कोमल सरल वचन सतवक्ता निर्लोभी संजम तपसूर ॥ २ ॥ त्यागी वैरागी तुम साहिब, आकिंचन व्रत धारी भूर। कैसे सहस्र अठारह दूषण, तजिकैं जीतो काम करूर ॥ ३ ॥ कैसे ज्ञानावर न निवारो, कैसे गेरो अदर्शन चूर। कैसे मोहमल्ल तुम जीतो, अन्तराय कैसे कियो निमूर्'र ॥ ४ ॥ कैसे केवल ज्ञान उपायो, कैसे किये चारूं घाती दूर। सुरनर मुनि सेवें चरण तुम्हारे, फिर भी नहिं प्रभु तुमकूं ग़रूर ॥ ५ ॥ करत आस अरदास नयनसुख, दीजे यह मोहि दान ज़रूर। जनम जनम पद पङ्कज सेऊं, और न कछु चित चाह हजूर ॥ ६ ॥

(७०)

जिस विध कीने करम चकचूर—सोई विधि बतलाऊं-तेरा भरम मिटाऊं वीरा जिस विधि कीने करम चकचूर—टेक—सुनो संत अरहंत पंथजन—स्वपर दया जिसघट भरपूर—त्याग प्रपंचनिरीह करैं तप—ते नर जीतैं कर्म्म करूर ॥ १ ॥ तोड़े क्रोध

निठुरता अघलग—कपट क्रूर सिर डारी धूर—असत अंगकर भंग बतावैं—तेनर जीतैं करम करूर ॥२॥ लोभ कन्दरा के मुखमें भर काट असंजम लाय ज़रूर—विषय कुशील कुलाचल फूंकैं—ते नर जीतैं करमकरूर ॥ ३ ॥ परम क्षिमा मृदुभाव प्रकाशैं—शरल वृत्ति निर्वांछ कपूर—धरसंजम तप त्याग जगत सब—ध्यावैं सत्चित केवलनूर ॥ ४ ॥ यह शिवपंथ सनातन संतो—सादि अनादि अटल मशहूर— या मारग नयनानन्द पायो-- इस विधि जीते करम करूर ॥ ५ ॥

७१—रागदेश ।

राजरी सूरत प्यारी लागै छै, म्हानैं राजरी मूरत० ॥ टेक ॥
नाम मन्त्र परताप राजरे, पाप भुजङ्गम भागै छै ॥ १ ॥
वचन सुनत तन मन सब हुलसै, ज्ञान कला उर जागै छै ॥ २ ॥
ज्यों शशि निरखि कमोदिनि विकसै, चित चकोर पद पागै छै ॥३॥
दृग सुख ज्यों घन निरखि मगन है, मन मयूर अनुरागै छै ॥ ४॥

७२—रागनीटचौड़ी—पंचपरमेष्ठी स्तुति ।

जै जै जै जिन सिद्ध अचारज उज्झाय साधव शिवकंत ॥ टेक ॥
जै कल्याण धाम जग तीरथ, पोपक सकल चराचर जंत ।
पूजत नित पङ्कज तुमरे नर, नारायण अरु ब्रह्मा संत ॥ १ ॥
शूकरसिंह नवल मर्कट के, सुनो सकल हमने विरतन्त ।
ऐसे अधम उधारे तुमनैं, अरुकीने तिनकूं अरहन्त ॥ २ ॥
नाग वाघ दण्डक स्वानादिक, भील भेकस जीव अनन्त ।
कर उद्धार पार किये जग से, जिन पूजे तुमकूं भगवन्त ॥ ३ ॥
राव रङ्क सेवक अरु शत्रु, निगुण गुणी निर्धन धनवन्त ।

सबको अभयदान तुम बांटो, जो भव के भय से भयवन्त ॥ ४ ॥
है व्याकरण विषय तुम साखा, अर्हं इति पूजाया सन्त ।
शब्द अखण्डित पूजा मडित, पंडित जन मानो सब भन्त ॥ ५ ॥
वीतराग सर्वज्ञ भये तुम, तारण तरण स्वभाव धरन्त ।
तीरथ परम परम पुरुषोत्तम, परम गुरू सब सृष्टि कहन्त ॥ ६ ॥
ताते जल चन्दन हम अरचैं, अक्षत पुष्परु चरु दीपन्त ।
धूप महाफल सैं तुम पूजा, है त्रिकाल त्रिभुवन जैवन्त ॥ ७ ॥
सब पर दया सभी के साहिब, दास नैनसुख एम भणन्त ।
कर उत्कृष्ट भृष्ट मत राखो, वेग करो भव बाधा अन्त ॥ ८ ॥

७३—रागनी दयौढ़ी

राज की सोच न काज की सोच न, सोच नहीं प्रभु नर्कगये की ॥ टेक ॥ स्वर्ग छुटेको सोच नहीं है, सोच नहीं तिरजंच भये की । जन्म मरण को सोच नहीं है, साच नहीं कुलनीच गये की ॥ १ ॥ ताड़न तापनकी सोच नहीं है, सोच नहीं तन अगिनि दहे की । सील छिदे की सोच नहीं है सोच नहीं व्रतभंग किये की ॥ २ ॥ ज्ञानलुटे की सोच नहीं है सोच नहीं दुर्ध्यान भये की । नयनानंद इक सोच भई अब, जिन पद भक्ति बिसार दिये की ॥ ३ ॥

७४—राग भैरवी तथा खम्माच की ठुमरी ।

डूबी पड़ी भवसागर में, मोरी नय्याकूं पार उतारो महाराज ॥ टेक ॥ वीतो है अनंत काल, डूबो जन्म के ज़वाल । देके अवलम्ब, निस्तारो महाराज ॥ १ ॥ लोभ चक्र मांहि पार,

क्रोध मान माया भरी। राग द्वेष मच्छ से उबारो महाराज ॥ २ ॥ तारे धरमी अनेक, पापी हू उतारो एक। वीतराग नाम है तिहारो महाराज ॥ ३ ॥ कहैं दास नैनसुक्ख, मेटो मेरा भव दुक्ख, खैंचिके कुघाट से निकारो महाराज ॥ ४ ॥

७५—राग सारंग।

कर्मनिकी गति टारो स्वामी, कर्मनिकी गति टार ॥ टेक ॥
कर्मनि तैं मैं संकट पाये, गयो नर्क बहु बार ॥ १ ॥
कबहुँक पशु पर जाय धर्या तहां, दुख पाये लद भार ॥ २ ॥
देव मनुष गति इष्ट वियोगी, दुख को वार न पार ॥ ३ ॥
आयो वीतराग लखि तुमकूं, राखो चरण मझार ॥ ४ ॥
नैनसुक्ख की अरज यही है, भवसागर से तार ॥ ५ ॥

७६—राग खम्माच-जंगला ग़ज़ल।

सुनरी सखी इक मेरी बात, आज नगर बरसैं रतन ॥ टेक ॥
लीनो है आज ऋषभ अवतार, नाभिराय घर हरष अपार।
रतन जु बरसैं पंच प्रकार, शीतल पवन सुधाकी भरन ॥ १ ॥
पुष्प वृष्टि दुँदुभि जयकार, बटत बधाई घर घर बार।
आज अजुध्या नगर मझार, पूजत इंद्र प्रभू के चरन ॥ २ ॥
सबज़ हुआ जंगल गुलज़ार, बन उपवन फूले इकबार।
कामिनि गावैं मंगलचार, बोलत पिक दिलचस्प बचन ॥ ३ ॥
चंदन से चरचे घर बार, लटकाये सखि वंदनवार।
है श्री दृग सुख को दातार, लीजे प्रभु का चरने शरन ॥ ४ ॥

७७—राग ख्यौडी।

आदि पुरुष तेरी शरणगही अब, टूटी सी नाव समुद्रविचबेड़ा ॥टेक॥
नाभि पिता मरु देवी के नंदन, इस अवसर कोई नहीं मेरा।
अगम उदधिसैं पार लगावो, आन पहूँचा यहां काल लुटेरा ॥१॥
आतम गुणकी खेप लुटी सब, लूट लियो अनुभव धन मेरा।
दीनबन्धु इस करम भंवर की, कठिन बिपति में पड़ा थारा चेरा ॥२॥
क्यातो नय्या उलटी ही फेरो, क्या अब पार करो यह बेड़ा।
नैनानंद की अरज़ यही है, नातर विरद लजावै तेरा ॥ ३ ॥

७८-राग जंगलेकी लावनी वा ठुमरी (बधाई)।

नाभि घरले चलरी आली, जहां जन्मे आदिजिनंद किया वैमान् विजय खाली ॥ टेक ॥ ऐरावत गज साज सुरग में, सुर सेना चाली। फूलन के गजरा गुंदलाये, वागन के माली ॥ १ ॥ नंद बृद्ध जय जयधुनि टेरैं, मोर मुकट वाली। झनन झनन दग दगन करत सुर दे देकर ताली ॥ २ ॥ गंधोदक की वृष्टि रतनकी धारा सुरढाली। शीतल मंद सुगंध पवन अब चारों दिश चाली ॥ ३ ॥ जल चंदन अक्षत सुरलाये, फूलन की डाली। चरु दीपक शुभ धूप फलादिक, भर भर कर थाली ॥ ४ ॥ सुफल भयो अब जन्म हमारो, चहुँ गति दुख टाली। नैनानंद भयो भविजनकूं, लखि यह खुशहाली ॥ ५ ॥

७९—ठुमरी जंगला झंझोटीका जिला।

नाभि कुवँरका देख दरश सब दूर भयो दिलका खटका ॥ टेक ॥
इंद्र बधू जिन मंगल गावैं, भेष किये नागर नट का।
मेरु शिखर पर प्रथम इंद्रका, जिन उत्सवकं मन भटका ॥ १ ॥

पांडुक बन सिंहासन ऊपर, रतन माल मंडप लटका।
सुरगण ढालत क्षीरोदधि के, सहस अठोत्तर भर मटका ॥ २ ॥
तांडव नृत्य कियो सुरराई, सकल अंग मटका मटका।
सुर किन्नर जहां बीन वजावैं, कर कंकण झटका झटका ॥ ३ ॥
कुगुरु कुदेव कुलिंगी दुर्जन, देखनकूं भी नहिं फटका।
धर्मचोर पापी दुखदाई, देश त्याग हां सैं सटका ॥ ४ ॥
पुन्य भंडार भरे भविजीवन, सरन लह्यो प्रभु पद पटका।
सरधावंत भये मिथ्याती, पाप भार सिर से पटका ॥ ५ ॥
आज दिवस कूं दास नैन सुख, फिरताथा भटका भटका।
दीनबंधु अब वही दिवस है, देहु पुन्य हमरे वटका ॥ ६ ॥

८०— ठुमरी जंगला।

लिया आज प्रभुजी ने जनम सखी चलो अवधपुरी गुण गावन कूं ॥ टेक ॥ तुम सुनोरी सुहागन भाग भरी, चलो मोतियन चौक पुरावन को ॥ १ ॥ सुवरण कलश धरो शिर ऊपर जल लावें प्रभु न्हावन को ॥२॥ भर भर थाल दरव के लेकर, चालो री अर्घ चढ़ावन को ॥ ३ ॥ नयनानंद कहैं सुनि सजनी, फेर न अवसर आवन को ॥ ४ ॥

८१— रागभैरवी।

तुम हमैं उतारो पार अजित जिन भवदधि वांह पकर के जी ॥ टेक ॥ हमकूं अष्ट कर्म वैरी ने लीने बांध जकर कैं जी। हम न चलेंगे उनके संग, रहैं तेरे द्वार पसर कैं जी ॥ १ ॥ अष्ट दरव ले पूजन आये, लेंगे दान झगर कैं जी। भावैं दया निमित शिव

दीजो, भावैं दीजो अक्रर कैं जी ॥ २ ॥ जिन जिन तुमको पूजे ध्याये, भजि गये कर्म सुकरि कैं जी। इग सुख के भव वंधन तोड़ो, सरि है नाहि मुकरि कैं जी ॥ ३ ॥

८२–रागधनाश्री।

हमकूं पदम प्रभु शरण तिहारी जी ॥ टेक ॥ पदमा जिनेश्वर पदमा दायक, घायक हो भव के दुख भारी जी ॥ १ ॥ तुम सों देव न जग में दूजो, अरु हमसे दुखिया संसारी जी ॥ २ ॥ अपने भाव वकस मोहि दीजे, यह तुमसे अरदास हमारी जी ॥ ३ ॥ नैनसुक्ख प्रभु तुमरी सेवा, भवदधि पार उतारनहारी जी ॥ ४ ॥

८३–रागनी टयोड़ी।

हमकूं आप करो अपनी सम, पारस लखि अरदास करी है ॥ टेक ॥ नाम प्रभाव कुधात कनकहो. महिमा अगम अनंत भरी है। सकल सृष्टि उत्कृष्ट संपदा. तुम पद पंकज आय परी है ॥ १ ॥ जे तुम पद पद्माकर सेवैं, तिनते भव आताप डरी है। जनम मरण दुख शोक विनाशन, ऐसी तुम पै परम जरी है ॥ २ ॥ कहत नैनसुख हमरी नय्या, इस भव भँवर मँझार पड़ी है।

८४–होली अध्यातम राजमती की–रागनीकाफ़ी।

होरी खेलत राजमतीरी। हे सतीरी–होरी खेलत राजमतीरी ॥ टेक ॥ संजमरूप वसंत धरो सिर, तजि भव भोग सतीरी। श्रीगिरनारि विजय वन कुंजन कर्मन संग लरी री–कंत जाके

भये हैं जती री ॥ १ ॥ भरि संतोष कुंड रंग सोहं, टेर पंच समिती री। रत्नत्रय व्रतधारि कोतूहल, आतमसूं करती री, स्वांग जगसूं डरती री ॥ २ ॥ रोके है आश्रव जन मतवारे, संवर डफ धरती री। तीन गुप्ति की ताल बजावन-भवसागर तरती री ॥ मानको मद हरती री ॥ ३ ॥ कर्म निर्जरा बजत मजीरा, शिव पथ गति भरती री। द्दग सुख धरि सन्यास छिनक में पाई है देव गती री। स्वर्ग अच्युत में सती री ॥ ४ ॥

८५—राग काफी।

चल खेलिये होरी नेमि वैरागी भयोरी ॥ टेक ॥ केवल ज्ञान क्षीर सागर से, भाजन मन भरलो री। तामें पंच समिति की केशर घस घन रंग करो री-ध्यान के ख्याल लगो री ॥ १ ॥ समकित की पिचकारी ले ले, गुप्त सखी संग लो री। भव्य भाव शुभ हेरि हेरि कें, निज निज वसन रंगोरी—धरम सबही को सगोरी ॥ २ ॥ सप्त तत्व के लिये कुमकुमे, नव पदार्थ भर झोरी। भिन्न भिन्न भविजन पर फेंको, तृष्णामान हनोरी-वेग वनवास वसो री ॥ ३ ॥ मोह दंड होरी का फूंको, जातें दुख न भरो री। पंचमगति की राह यही है, आरत चित बिसरो री-नैनसुख जोग धरो री ॥ ४ ॥

८६—राग कान्हड़ा तथा काफी।

अरी परी मैं तो आज वसंत मनायो, पिया ज्ञान कान्हरर आयो सखी री मैं तो आज वसंत मनायो ॥ टेक ॥ कुबजा कुमति दसोटा दीनो, सुमति सुहाग चढ़ायो। शील चुनरिया प्रमुख

अभूषण, सहस अठारह लायो ॥ १ ॥ छिमा महावर हित मित महँदी, सरल सुगंध रचायो। चुरला सत्य शौच भुज भूषण, संजम शीस गुंदायो ॥ २ ॥ तप दुलड़ी नथ त्याग अकिंचन, व्रत लटकन लटकायो। गुणगण गोप गुलाल करमरज, घट बृज माँहि उड़ायो ॥ ३ ॥ भर पिचकारी भाव दयारस, पिया संग फाग मचायो। राधे सुमति निरखि पिव नैनन, आनंद उर न समायो ॥ ४ ॥

८७—पद उपदेशी—राग धमाल होली की चाल में।

अरे करले सफल जनम अपना, अब करले, अब करले सफल० ॥ टेक ॥ करले देव धरम गुरु पूजा, जीवन है निशिका सुपना ॥ १ ॥ विषयन में मति जन्म गमावै, यह है शठ भुसका तपना ॥ २ ॥ दान शील तप भावन भाले, तन जोबन सब है खपना ॥ ३ ॥ दृग सुख पर उपगार विना सब झूंठी है जग की थपना ॥ ४ ॥

८८—रागकाफ़ी।

ऐसो नर भव पाय गँवायो। हे गँवायो—ऐसो नर भव ॥ टेक ॥ धन कूं पाय दान नहिं दीनो चारित चित नहिं लायो श्री जिनदेव की सेव न कीनो, मानुष जन्म लजायो—जगत में आयो न आयो ॥ १ ॥ विषय कषाय वढ़ो प्रति दिन दिन, आतम वल सु घटायो। तजि सतसंग भयो तु कुसंगी, मोक्ष कपाट लगायो नरक को राज कमायो ॥ २ ॥ रजक श्वान सम फिरत निरंकुश, मानत नाहिं मनायो। त्रिभुवन पति होय भयो है

भिखारी, यह अचिरज मोहि आयो—कहातैं कनक फल खायो ॥ ३ ॥ कंद मूल मद मांस भखन कूं नित प्रति चित्त लुभायो। श्रीजिन वचन सुधा सम तजि कैं, नयनानंद पछतायो-श्री जिन गुण नहीं गायो ॥ ४ ॥

८९—राग धनाश्री तथा देश भैरवी।

अब तू निज घर आव विकल मन अब तू निज घर आव ॥ टेक ॥
विकलप त्याग सुनूं जिन शासन, मत बीरने घबरावे।
पावैगा निधि तुमरी तुमकूं, श्रीजिन धर्म पसाव ॥ १ ॥
गति इंद्री अरु काय जोग पुनि, जानो वेद कषाय।
ज्ञान भेद अरु संजम दर्शन, लेश्या भव्य सुभाव ॥ २ ॥
समकित सैनी और अहारक, चौदह मारग नाव।
नाम थापना दरव भाव करि, तत्व दरव दरसाव ॥ ३ ॥
यों जगरूप विचारि शुभाशुभ करिकरि थिरता भाव।
हरैं करम प्रगटै नयनानंद, भाषो सुगुरु उपाव ॥ ४ ॥

९०—राग धनाश्री तथा देश भैरवी।

क्यों तुम कृपण भये, हो सुघर नर क्यों तुम कृपण भये ॥ टेक ॥
घट में ज्ञान निधान तुम्हारे, सो क्यों दाव रहे।
भटकत विषय तुषन कूं डालत नृप तो रंकथये ॥ १ ॥
विपत काल मैं धन सब खरचेत, लै ले करज नये।
तुम धनवंत होय दुख पावो, मूरख भीख ठये ॥ २ ॥
कबहुँक शूकर कूकर उपजत, कबहुँक बैल भये।
पिटत पिटत नर्कनि के माहीं बालन पकै रहे ॥ ३ ॥

दान शील तप भावन भाकर, संजम क्यों न लहे।
जाते नैन सुख्य तुम पाते, जाते करम दहे ॥ ४ ॥

६१—राग ठेठ बरवा ठुमरी उपदेशी।

जिया न लगावैरे, देख कै पराई माया ॥ टेक ॥ पुत्र कलत्र पराई संपति, इन संग मतना ठगावैना ठगावैरे ॥ १ ॥ पुद्गल भिन्न भिन्न तुम चेतन, अंत न संग निभावै न निभावैरे ॥ २ ॥ मतकर विषै भोग की आशा, मत विष बेलि बढ़ावैरे बढ़ावैरे ॥३॥ नयनानंद जे मूरख प्राणी, सोवत करम जगावैरे जगावैरे ॥ ४ ॥

६२—राग धनाश्री।

तजि पुद्गल को संग, अज्ञानी जिया, तजि पुद्गल को संग ॥ टेक ॥ तुम पोषत यह दोष करत है, पय पिय जेम भुजंग। बड़वानल सम भूरि भयानक, घायक आतम अंग ॥ १ ॥ यासंग पंचपाप में लिपटो, भुगती कुगति कुढंग-परिवर्तन के दुख बहुपाये, याही के परसंग ॥ २ ॥ शीकर स्वातिसंग सागर के होवत वारि विहंग। भूपनको भूषणकी संगति, ठानत आदर भंग ॥ ३ ॥ अजहू चेत भई सो भई है, रेमद मत्त मतंग। नयन सुख्य सतगुरु करुणानिधि, वकसत विभव अभंग ॥ ४ ॥

६३—रागनी बरवा ठुमरी।

सबकरनी दयाविन थोथीरे ॥ टेक ॥ जीवदयाविन करनी निरफल, निष्फल तेरी पोथीरे ॥ १ ॥ चंद विना जैसे निष्फल, रजनी, आब विना जैसे मोतीरे ॥ २ ॥ नीर विना जैसे सरवर

निरफल, ज्ञान बिना जिय ज्योतीरे ॥ ३ ॥ छाया हीन तरोवर को छवि, नैनानंद नहिं होतीरे ॥ ४ ॥

६४—राग देश।

मुक्तिकी आशा लगी, अरुब्रह्मकूं जाना नहीं ॥ टेक ॥
घर छोड़ के जोगी हुवा, अनुभावकूं ठाना नहीं।
जिन धर्मकूं अपना सगा अज्ञान ते माना नहीं ॥ १ ॥
जाहिर में तू त्यागी हुवा, बातिन तेरा छाना नहीं।
ऐ यार अपनी भूल में, विषबेल फल खाना नहीं ॥ २ ॥
संसार कूं त्यागे विना, निर्वाण पद पाना नहीं।
संतोष बिन अब नैनसुख, तुमकूं मज़ा आना नहीं ॥ ३ ॥

६५—राग सारङ्ग।

न कर करम की तू आसरे, अरेजिया न कर करमकी तू आसरे ॥टेक॥
अंतराय भई प्रथम जिनेश्वर, जाके सुरपति दासरे।
दरव क्षेत्र अरुकाल भाव लखि, तजि विधि को विसवासरे ॥ १ ॥
छहो खंडको नाथ भरथ नृप, मान गलत भयो तासरे।
सांता सती इंद्र करि पूजित, भयो विजन बन वासरे ॥ २
खगचर वंश तिलक नृप रावण, करमनतें भयो नाशरे।
तीर्थंकरकूं होत परिषह, करम बड़े दुख वासरे ॥ ३ ॥
आशा करत करम सरसावत, ज्यों पय पीवत खासरे।
नैन सुख्य चिरकाल भयो अब, काढ़ो गलकी फांसरे ॥ ४ ॥

९६—लावनी राग जंगला गारा ।

क्यों परमादी हुवा वे तुझकूं बीता काल अनंता ॥ टेक ॥
आयो निकल निगोद सेरे भटको थावर योनि ।
मिथ्या दर्शनते तन धारे, भूजल पावक पोन ॥ १ ॥
धारी काया काष्ठ कोरे दहन पचन के हेत ।
सूक्ष्म ओर थूल तन धारो, अजहू न करता चेत ॥ २ ॥
विकल त्रय में भरमतारे, भयो असैनी अंग ।
सैनी ह्वै हिंसा में राचो, पी लई मिथ्या भंग ॥ ३ ॥
सुर नर नारक जोंनि मेंरे, इष्ट अनिष्ट संयोग ।
दर्शन ज्ञान चरण धर भाई, नैनानंद मनोग ॥ ४ ॥

९७—राग वरवा-परस्त्री निषेध का पद ।

यह तो काली नागनी रे, जीया तजो पराई नार ॥ टेक ॥
नारी नहिं यह नागनी रे, यह है विष की बेल ।
नागिनी काटै क्रोधसों रे, यह मारे हँस खेल ॥ १ ॥
बातें करती और सोंरे, मन में राखै और ।
वा कूं मिले और कूं चाहै, वा कूं तजि कें और ॥ २ ॥
नैन मिलाये मनकूं बांधै अंग मिलाये कर्म ।
धोखा देकर दुःख में डारै, याहि न आवे शर्म ॥३॥
तीर्थंकर से याकूं त्यागैं, जो त्रिभुवन के राय ।
नैनानंद नरक की नगरी, सत गुरु दई बताय ॥ ४ ॥

९८—राग विहाग तथा खम्माच खास ।

अरे जिया जीव दया से तिरैगा, दया विन धर धर जन्म मरैगा ॥ टेक ॥ पर सिर काट शीस निज चाहत रे शठ तापत

ढूंढत संपति पग पग मैंरे ॥ ३। भजन समाधि न भाव शील के भग सें भागिच्चे भग मैंरे ॥ ४ ॥ किहि विधि सुख उपजै सुनि वीरण, कंटक क्रूर वोये मग मैंरे ॥ ५ ॥ दग सुख धरम लखन जिन विसरो, अंतर कौन मनुष्य खग मैंरे ॥ ६ ॥

१०४ राग जोगिया आसावरी।

पापनि से नित डरिये, अरे मन पापन से नित डरिये ॥ टेक ॥
हिंसा झूंठ वचन अरु चोरी, परनारी नहिं हरिये।
निज परकूं दुख दायनि डायन, तृष्णावेग विसरिये ॥ १ ॥
जासें परभव विगड़ै वीरण, ऐसो काज न करिये।
क्यों मधु विंदु विषय के कारण, अंध कूप में परिये ॥ २ ॥
गुरु उपदेश विमान वैठ के, यहां तें वेग निकरिये।
नयनानंद अचल पद पावैं, भव सागर सूं तरिये ॥ ३ ॥

१०५—रागनी जोगिया आसावरी में।

है वोही हितू हमारे. जो हमकूं डूबत जग से निकारै ॥ टेक ॥
सांचो पंथ हमैं वतलावे, सांचे वैन उचारै।
राग दोष ते मत नहिं पोषै, स्वपर सुहित चित धारै ॥ १ ॥
हम दुखिया दुख मेटन आये, जनम मरण के हारे।
जो कोई हमकूं कुमति सिखावै, सोई शत्रु हमारे ॥ २ ॥
कोटि ग्रंथ का सार यही है, पुण्य स्वपर उपगारे।
दग सुख जे पर अहित विचारैं, ते पापी हत्यारे ॥ ३ ॥

१०६—राग देशवा सोरठ।

म्हारी सरधा में भंग परो, सरधा में भंग परो। हे विभावों में भाव धरो। म्हारी सर्धा में भंग परो ॥ टेक ॥ चारों कषाय

गिनी हम अपनी, मद जोबन से भगे। हे कुदेवों को संग करो ॥ १ ॥ दरब करम की ममता नल में, आपही आप जरो-हे कुलिंगी को स्वांग भरो ॥ २ ॥ भाव करम नो कर्म जुदे हैं, मैं चैतन्य खरो-हे कुग्यानी के पंथ परो ॥ ३ ॥ ज्यों तिल तेल मैल सुवरण में, दधि में घीव भरो—हे अनादि को जोग जुरो ॥ ४ ॥ मुकति भये वड़भाग नैनसुख, तेलखि तेल परो—हे जड़ाजड़ भिन्न करो ॥ ५ ॥

१०७—दया की महिमा-मरहटी लंगड़ी रङ्गत जिसके ४ चौक हैं।

बंधे हैं अपनी भूल से भाई, बंधे बंधे मरजावैंगे, दया जीव की करैंगे तो हम भी सुख पावैंगे ॥ टेक ॥ दया से परजा कहैंगी राजा, दया से संत कहावैंगे। दया के कारण, सेठ अरु साहूकार बनावैंगे ॥ जे दुखिया की मदद करैंगे, इस जग में जस पावैंगे। विपत काल में, वही फिर मदद हमैं पहुँचावैंगे ॥ धन जोबन के मद में हम तुम, जिसका जीव दुखावैंगे। पुण्य गिरैगा, तो वे फिर छाती पर चढ़ जावैंगे ॥ छेदैं अरु भेदैंगे तनकूं, काढ़ कलेजा खावैंगे। दया जीव की, करैंगे तो हम भी सुख पावैंगे ॥ १ ॥ झूंठ वचन से मान घटैगा, अरु जिसके ढिंग जावैंगे। सत्य वचन भी, कहैंगे तो सब झूंठ बतावैंगे ॥ बसु राजा की तरह झूंठ से नरक कुण्ड में जावैंगे। सत्यघोष की, तरह फिर राजदण्ड भी पावैंगे ॥ चोरी के कारण से प्राणी, कुल कलङ्क लग जावैंगे। रावण की ज्यों, वंश अरु वेलिनाश होजावैंगे ॥ फिर नरकों में उनके मुख को फूंचा बाल जलावैंगे। दया जीव की, करैंगे तो

हम भी सुख पावेंगे ॥ २ ॥ मैथुन व्यसन बुरा है प्राणी, जो इन में फँस जावेंगे। उन जीवों के, वीर्ज अरु वंश नष्ट हो जावेगे ॥ फिर उनके संतान न होगी, होगी तो मर जावेंगे। जो न मरेगे तो उनके तन से रोग न जावेंगे ॥ नरकों मे उनकूं लोहे के, थंभों से लटकावेंगे ॥ लोह की पुतली, गरम कर छाती से चिपकावेंगे ॥ हाहाकार करैगा जब वह, मुख में बांस चलावेंगे। दया जीव की, करैंगे तो हम भी सुख पावेगे ॥ ३ ॥ जिनकैं नहीं परिग्रह संख्या, तृष्णावन्त कहावेंगे। लोभ के कारण, झूंठ और चोरी में मन लावेंगे ॥ गुरुकूं मार देवकूं बेंचे, सभा से धर्म उठावेंगे। बाल वृद्ध के, कण्ठ में फांसी दुष्ट लगावेंगे ॥ राजा पकड़ धरै शूली पर, फेर नरक में जावेंगे। वचन अगोचर, नर्क के बहुत काल दुख पावेंगे ॥ कहैं नैनसुख दास दया से, सब सङ्कट कट जावेंगे। दया जीव की, करैंगे तो हम भी सुख पावेंगे ॥ ४ ॥

१०८—राग विहाग की ठुमरी।

देखो भूल हमारी, हम सङ्कट पाये ॥ टेक ॥

सिद्ध समान स्वरूप हमारा, डोलूं जेम भिखारी ॥ १ ॥

पर परणति अपनी अपनाई, पोट परिग्रह धारी ॥ २ ॥

द्रव्य कर्म बस भाव कर्म कर, निजगल फांसी डारी ॥ ३ ॥

नो करमन ते मलिन कियो चित, बांधे बंधन भारी ॥ ४ ॥

बोये पेड़ बंबूल जिन्होंने, खावें क्यों सहकारी ॥ ५ ॥

करम कमाये आगे आवै, भोगैं सब संसारी ॥ ६ ॥

नैन सुक्ख अब समता धारो, सतगुरु सीख उचारी ॥ ७ ॥

१०९–राग जंगला।

कीना जी मैं कीना जग में, जैन वनज जसकारी जी ॥ टेक ॥
धर्म द्वीप दुर्गम्य दिशावर, सतगुरु संग व्योपारी जी।
केवल ज्ञान खान से लेकर, माल भरे हैं भारी जी ॥ १ ॥
कर्म काष्ट के शकटा कीनें, द्विविध धरम विष भारी जी।
भक्ति आर से हांक चलाये, आगम सड़क मंझारी जी ॥ २ ॥
सप्त तत्व अरु नव पदार्थ भरि, तीन गुप्त मणि भारी जी।
भवि जहुरी बिन कौन खरीदै, खेप अमोलक म्हारी जी ॥ ३ ॥
मिथ्या देश उलंघ जतन से, भव समुद्र से पारी जी।
नयनानन्द खेप गुरु जन संग, मुक्ति दीप में ढारी जी ॥ ४ ॥

११०—राग जंगले की ठुमरी।

हथना पुर तीरथ परसन कूं, मेरा मन उमगा जैसे सजल घटा ॥ टेक
पूजत शांत प्रशांत भई मेरी, विषय अगन आताप लटा ॥ १ ॥
सुख अंकूर बढ़े उर अन्तर, अब सब दुख दुर्भिक्ष हटा ॥ २ ॥
धन यह भूमि जहां तीर्थङ्कर, धरि आतापन जोग डटा ॥ ३ ॥
नयनानन्द अनन्द भये अब, परसि तपोबन गङ्ग तटा ॥ ४ ॥

१११—राग बरवे की ठुमरी।

यह तपोबन वह बन हैरी, जहां लिया श्रीजी ने जोग ॥ टेक ॥
चक्रवर्ति भये तीन जिनेश्वर, जानत हैं सब लोग री ॥ १ ॥
तृणवत तजि वनकूं गये प्रभु, त्याग सकल सुख भोग री ॥ २ ॥
गरभ जनम तप केवल ह्वांभयो, वार्ना खिरी थी अमोघ री ॥ ३ ॥
वहुत जीव तिरे इस वन से, कट गये कर्म कुरोग री ॥ ४ ॥

शांति कुन्थ अरु मल्लि परसि के, मिटगये मेरे सब रोग री ॥ ५॥
नयनानन्द भयो बड़भागन, हथनापुर संजोग री ॥ ६ ॥

११२—ख्याल चौबंध राग जंगला ।

तू तो कर ले श्री जी का न्हवन जानरा जल की ।
तेरे सिरसे पाप की पोट जो हो जाय हलकी ॥ टेक
अरे तैने मल मल धोई देह खिंडाये पानी ।
नहीं किया श्रीजी का न्हवन अरे अज्ञानी ॥ १ ॥
अरे तैने सपरश के वस भोगे भोग घनेरे ।
नहीं भये तदपि संपूर्ण मनोरथ तेरे ॥ २ ॥
अरे तैने ब्रह्मचर्य गजराज वेचि खर लीनो ।
ले जगत कलङ्क चले दुर्गति कहा कीनो ॥ ३ ॥
अरे अजहूं चेत अचेत खबर नहीं कल की ।
तेरे सिरसे पाप की पोट जो होजाय हलकी ॥ ४ ॥

११३—कलंगी छन्द ।

तैने रसना के वस पुद्गल सब चख लीने ।
तैने भून भुलस षटकायकूं सङ्कट दीने ॥ १ ॥
तैने भाषी चौरण विकथा असत कहानी ।
दुर्वचन से वीधे मरम सताने प्राणी ॥ २ ॥
तैने चाखे नागर पान, जीभकूं छोली ।
तेरी तदपि रही यह जीभ थूक से गीली ॥ ३ ॥
अब करले भजन मेरे वीर, आश तजि फल की ।
तेरे सिर से पाप की पोट ज्यूं होजाय हलकी ॥ ४ ॥

११४—कलंगी छंद ।

तूतो टांक मास की डली को नाक बतावै ।
अरु बांध लांकसूं खड्ग कुंवांक धरावै ॥ १ ॥
उसकी तो तीन हैं फाक समझले मन में ।
हो जैसा तीन का आंक देख दर्पण में ॥ २ ॥
तैंतो इससे सूंघ लिये पुद्गल जग के सारे ।
नहीं गई सिणक रही भिणक समझले प्यारे ॥ ३ ॥
अब प्रभु की सेवा करो तजो पुद्गल की ।
तेरे सिरसे पाप की पोट जो होजाय हलकी ॥ ४ ॥

११५—कलंगी छंद ।

तैने आंखों में अञ्जन बार अनन्ती डारे ।
लिये तीन लोक के आँज पदारथ सारे ॥ १ ॥
लिये निरख जन्म अरु मरण अनन्ती बारे ।
सब जानत हैं पर मानत क्यों नहीं प्यारे ॥ २ ॥
तू तो धोवत अपनी सो धर आंख अज्ञानी ।
बहुतेरे रिताए कूप खिडाये पानी ॥ ३ ॥
कर दर्श प्रभू जी का दृष्टि हटै तेरी छल की ।
तेरे सिरसे पाप की पोट जो होजाय हलकी ॥ ४ ॥

११६—कलंगी छंद ।

तैने कानों से सुनलई जगत की अजत कसानी ।
नहिं सका तदपि सुन छैल मैल का पानी ॥ १ ॥

तू तो सुन रहा निशदिन हरदम मौत विरानी ।
तेरे सिर पर खेल रहा काल क्या यह नहीं जानी ॥२॥
अब करले प्रभु जी का न्हवन सुनले जिन वानी ।
तेरी होजाय निर्मल देह यह फेर न आनी ॥ ३ ॥
कहै नैनसुक्ख अब तज दे वान छल बल की ।
तेरे सिर से पाप की पोट जो होजाय हलकी ॥ ४ ॥

११७—लावनी जंगले की ।

रावण से श्री रघुवीर कहैं निज मन की ।
तू जनक सुता दे लाय चाह नहिं धन की ॥ टेक ॥
अरे मेरा जो कोई करै विगाड़ कटुक नहीं भाखूं ।
मैं औगुण पर गुण करूं वैर नहीं राखूं ॥१॥
अरे मैं सतगुरु के मुख सुनी जैन की वानी ।
यह कलह जगत के वीच स्वपर दुख दानी ॥ २ ॥
अरे यह विन कारण बहु जीव मरेंगे रण में ।
तू जनकसुता दे ल्याय जाऊं मैं वन में ॥ ३ ॥
अरे मुझे जगत सम्पदा सिया विन फीकी ।
तू लादे सीता सती कहत हूँ नीकी ॥ ४ ॥
अरे वह मो जीवत दुख सहै पड़ी वस तेरे ।
अब तोकूं हतनो परो शोच मन मेरे ॥ ५ ॥
तब लङ्कपती यूं कहै सुनो रघुराई ।
जो लिखी हमारे कर्म मिटै न मिटाई ॥ ६ ॥
अब पछताये क्या होय जीव लूं तेरा ।
कहै नैनसुख्य रावण कूं काल ने घेरा ॥ ७ ॥

११८ - रागनी जोगिया असावरी की चाल में।

जिया तैने करी है कुमति संगयारी, मैं जानी बात तुम्हारी रे। टेक
हमसे तो तू टलना ही डोलै, उनसैं प्रीति करारी रे।
जो का झाड़ होयगी तेरा, जो तोहि लागत प्यारी रे ॥ १ ॥

क्या तुम भूलगये उस दिनकूं, पड़े थे निगोद मंझारी।
एक स्वांस में जनम अठारा, पाते वेदन भारी रे ॥ २ ॥

अजहूँ हम तुमकूं समझावत, सुनरे पीव अनारी।
तजि परसङ्ग कुमति सौतन की, नातर होगी ख्वारी रे ॥ ३ ॥

नयनानन्द चलो जब ह्यांसे, कीजो याद हमारी।
जो न करूं उपगार तुम्हारा, तो मोहि दीजो गारी रे ॥ ४ ॥

११९ रागनी खास देश की ठुमरी।

हम देखे जगत के साधु रे, कहीं साधु नज़र नहीं आते हैं। टेक
कोई अङ्ग भभूति रमाते हैं, कोई केश नखून वढ़ाते हैं।
कोई कन्द मूल फल खाते हैं, वे साधु का नाम लजाते हैं ॥ १
कोई नाहक कान फड़ाते हैं, फिर घर घर अलख जगाते हैं।
कलि झूंठ जगत भरमाते हैं, गहि हाथ नरक लेजाते हैं ॥ २
घर छोड़ि विपन चले जाते हैं, मठ छाप धुजा बनवाते हैं।
वे पूजा भेट धराते हैं, सो वमन करी फिर खाते हैं ॥ ३
निर्ग्रन्थ गुरू नहीं पाते हैं, जो मारग मोक्ष बताते हैं।
नयनानन्द सीस नमाते हैं, हम उनके दास कहाते हैं ॥ ४

१२०—ठुमरी देश और माड की।

प्रभु धन्य धन्य, जग मन्य मन्य, तुम हो प्रछन्न, हम लिये जन्य तुम सम न अन्य, जग जन हितकारी ॥टेक॥ सुनिये जिनेन्द्र, मैं हूं सुरसुरेन्द्र, ये हैं मम उपेन्द्र, ये हैं सुर गजेन्द्र, चलिये जिनेन्द्र, कीजै न्हवन त्यारी ॥१॥ हे जगत भान, किरपानिधान, मोहि लो पिछान, सौधर्म जान सुरपति ईशान, ये हैं संग हमारी ॥ २ ॥ सन्मति कुमार, माहेन्द्र सार, अरु सुर अपार, चारों प्रकार, मैं तो ले कैलार, तोरी सेवा उर धारी ॥ ३ ॥ हे दीनबंधु, हे दयासिंधु, मैं महरचंद, तोहि वंदिवंदि, लूंगा उछंग—कीजै गज असवारी ॥ ४ ॥ नहीं करी देर, गये गिरि सुमेर, पांडुक बनेर, पांडुक सिलेर, लाय जाय घेर—ताकी पूजा विस्तारी ॥ ५ ॥ भरि क्षीर वारि, कलशा हज़ार, प्रभु सीस ढार, जिन गुण उचार, करि जै जैकार—अरु कीनी विधिसारी ॥६॥ कहि मिष्टवैन, हरिमात सैन, करि सुजस जैन, लगे गोददैन, भई सुख्य नैन—मानो फूली फुलवारी ॥ ७ ॥

१२१- राग देश विहाग परज के जिले की ठुमरी।

भजन से रख ध्यान प्राणी, भजन से रख ध्यान ॥ टेक ॥
भजन सैं इंद्रादि पद हों, चालत बैठ विमान।
भजन सैं होत हरि प्रति हरी बलि बलवान ॥ १ ॥
भजन से खट खंड नव निधि, होत भरत समान।
तिरै भवसागर तुरत, ह्वै पाप को अवसान ॥ २ ॥
नवल शूकर सिंह मर्कट, करि भजन सद्ध्यान।
भये वृषभ सेनादिक जगत गुरु, भजन के परवान ॥ ३ ॥

भजन से भये पूज्य मुनिजन, गोतमादि महान ।
भजन ही से तिरे भील जटायु, मींडक स्वान ॥ ४ ॥
कहत नयनानंद जग में, भजन सम न निधान ।
भये भजन से अर्हंत सिद्ध, आचार्य गये निर्वान ॥ ५ ॥

ऋषभ जिन जन्म मंगल बधाई ।

१२२—रागनी भैरवी तथा खास धनाश्री ।

अवधिपुर आज कृतार्थ भयो, हे अवधिपुर आज० ॥ टेक ॥
तजि सरवारथ सिद्धि परमारथ, दायक देव चयो ।
नाभि नृपति मरु देवी के मंदिर, आ अवतार लयो ॥ १ ॥
रंक भये धनवंत जगत में, कृपण कलेश वह्यो ।
नर्कनि में नारक सुख पायो, मोपै न जाय कह्यो ॥ २ ॥
जो आनंद त्रिकाल चतुर्गति, भावी भूत भयो ।
सो आनंद नयन हम निरखो, आदि जिनेंद्र जयो ॥ ३ ॥

१२३—लावनी पीलू बरवा ।

चले सुरासुर सकल अवधिपुर, श्रीजिन जन्म न्हवन करनैं ॥टेक॥
हुकम सुधर्म सुरेंद्र चढ़ायो, अपने निकट कुबेर बुलायो । श्रीजिन जन्म वृतांत सुनायो, सकल संपदा सार, प्रभु पै वार लगी रौसी परनैं ॥ १ ॥ चले कलप वासी सब देवा, चले भुवन पति करने सेवा । ज्योतिष अरु व्यतंर वसुभेवा, चौबीस अरु चालीस दोय बत्तीस इंद्र चाले शरने ॥ २ ॥ सेना सप्त सप्त विधि लाये, गज घोटक रथ पत्ति सजाये । वृष गंधर्व

नृत्य को धाये, वन घन गगन मझार—हो जै जै कार सो महिमा को वरनैं ॥ ३ ॥ नागदत्त ऐरावत सुन्दर, सो सजि कैं ले प्रथम पुरंदर। गये अवधि नृप नाभि के मंदिर, माया निद्रा रचीहैरे प्रभु शची—लगी जब कर धरनैं ॥ ४ ॥ लोचन सहस सुरेंद्र बनाये, उमंगि नयन सुख धाये हृदय लिपटाय—लगी संस्तुति करनैं ॥ ५ ॥

१२४—ठुमरी पीलू नरवा।

भयो पावन आज जनम हमरो, हैं जनम हमरो, तनमन हमरो ॥टे०
अब सुरेंद्र पद को फल पायो, आन कियो दर्शन तुमरो ॥ १ ॥
विन तुम भक्ति वृथा था यह तन, जा मैं था अस्थि न चमरो ॥२॥
तुम सेवा ते सेवें सुरगण, नातर कोई न दे दमरो ॥ ३ ॥
अब मैं अमर यथार्थ कहायो, करसी क्या दुर्जन जमरो ॥ ४ ॥
लेय जिनेंद्र सुरेंद्र चढो गज, चलद्यो सुरगिरि पै अमरो ॥ ५ ॥
पढ़ियो दृग सुखजिनगुण मंगल, हरियो भव भव को भमरो ॥ ६ ॥

१२५—रागनी गौंड की पुर्वी ठुमरी।

जनमे जिनेंद्र, आये सुरेंद्र, लेगये गिरेंद्र, पांडुक वनेंद्र,
थापे शिलेंद्र पीठेंद्र विछायो। जन्मे जिनेंद्र० ॥ टेक ॥
तजि तजि विमान, सुर आनि आनि, दियो नभ समान
मंडप व्हां तान, छवि निरखि परख अमर न मन भायो ॥ १ ॥
जामें लगे लाल, मोतियन की माल, गावें देव बाल, जिन गुण विशाल, लखि असम काल सुरपति फरमायो ॥ २ ॥
भो भो सुरेंद्र, भो भो उपेंद्र, भो भो धनेंद्र, सेवा सह जिनेंद्र

जावो सूर्य चंद्र क्षीरो दधि जललावो ॥ ३ ॥ रचि असंख्यात, पैड़ा विख्यात, सब एक साथ, पुलकंत गात हाथों हाथ कलश लाये लीजे स्वामी न्हावो ॥ ४ ॥ करि भुज हज़ार, पढ़ि मंत्रसार, सब कलश ढार, दिये एक ही वार—पड़ी धारा धध धध भई अझालो लगावो ॥ ५ ॥ या ज़िन प्रसंग, भई जैन रांग, प्रगटी अभंग, उछटी तरंग लई सुर न अंग—सोई गङ्गा नित ध्यावो ॥६॥ यह अति विचित्र, गङ्गा है मित्र सुनिकैं चरित्र चित्त हो पवित्र, जित नित न भ्रमू दग सुख नहिं पायो ॥ ७ ॥

१२६ रागनी जंगला ।

ले गये अवधिपुर प्रभुजी को सुर जय जय उच्चारैं । लेगये अ० । अजि जै जै उच्चारैं अवजारैं भरि अंजुलि अरघ उतारैं । बजत तान तुम, तननननन सब इंद्र चँवर ढारैं । लेगये० ॥टेक॥ पजी धूधूकिट, धूधूकिट बजत मजीरा धुन झाझाड़ा, झाझाड़ा करै, सारंगा सितार पुन द्रुम द्रुम द्रुमक पखावज़, मृदंग बाजै, भेरी वीणा बांसरी, तबल ढोल गाजै, गावैं ले ले चककेरी नाचैं नभ में सुरी, छम छननन नत, इतनी ज़िनने तारे ॥ १ ॥ कोई कहै नंदोवृद्धो, जीवो एजिनेंद्रचंद्र, कोई कहै जीवो राजा, नाभि नगरी को इंद्र, कोई कहै भ्राता जग, त्राताका ए जीवो माता, जायो जिन मुकती को, दाता सोवै साता पाय, सेजपै मगन, सन सन ननन्नन इन हमकूं निस्तारे ॥ २ ॥ ऐसी विधि करत उछाव गीत गावन तव, घेर लियो जङ्गल ज़मीन असमान सब, जल थल वन घन घाट बाट कुंजरोक, पूजे राम मंदिर बजाये शंख ठोक ठोक, लाये धाये झोंकि कै

गजेंद्र थंचन नननन नरचौक परेसारे ॥ ३ ॥ शचीनें उतार जिन राज गोद मांहि लिये, जापे खाने मांहि जाय माताकूं प्रणाम किये, कैसे जिन माता कूं जगावै मीत गावै गीत, कैसे इंद्र प्रभु के पिता से करै वात चीत, कहो नैनानंद विरतंत तुम तन नननन ज्यों सुनैं संत सारे ॥ ४ ॥

१२७—चाल गंगावासी मेवाती ।

लिया ऋषभ देव अवतार, किया सुरपति नै निरत आके- लिया ऋषभ० । अजी निरत किया आके, हर्षा के, प्रभूजी के नव भव को दरशाके, सरर सरर कर सारंगी तँबूरा, नाचै पोरी पोरी मट काकै ॥ टेक ॥ अजी प्रथम प्रकाशी वानै, इंद्रजाल विद्या ऐसी, आज लों जगत में सुनी न काहू देखी तैसी, आयो वह छबीला चटकीला यों मुकट बांध—छम देसी कूदो मानूं आकूदो पुनों का चांद, मनकूं हरत, गति भरत प्रभू को पूजे धरणी सो सिरन्या कै ॥ १ ॥ अजी भुजों पै चढ़ाये हैं हज़ारों देवी देव जिन—हाथों की हथेली पै जमाए हैं अखाड़े तिन ता धिन्ना ता धिन्ना—किट किट धित्ता उनकी प्यारी लागै धुम किट धुम किट वाजै तब्ला नाजै प्रभुजी के आगै सैनों में रिझावै—तिर्छी तिर्छी एड लगावै—उड़ जावै भजन गाकै ॥ २ ॥ अजी छिन मैं जा वंदै वह तो नंदीश्वर द्वीप आप पांचूं मेरु वंद आ मृदंग पै लगावै थाप—वंदै ढाई द्वीप तेरा द्वीप के सकल चैत्य—तीनों लोक मांहि पूज आवै चित्र नित्य नित्य - आवै झपटि सम्-हा पै दौडा लेने दम—करे छमछम—मन मोहे जी मुसकाके ॥३॥ अजी अमृत के लागे झड़, बरसी रतन धारा—सीरी सीरी चालै

पौन—किए देव जै जै कारा, भर भर झारी, बरसावैं फूल देंदं ताल महकै सुगंध चहकै मुचंग, षडताल, जन्मे जिनेंद्र, भयो नाभि के अनंद- नैनानंद यों सुरेंद्र गए भक्ति कूं वतला के ॥ ४ ॥

१२८—मल्हार ।

शुभ के बदरवा झुक आएरी-शुभके हे झुकिआएझुकि आएरी ॥टे०
सखी अब नीके दिन आए-देखो जगत पुन्य घन धाए—१
सखि भविजन भाग विजोए-अहमेंद्र चयो अघ धोए—२
उझली सर्वारथ सृष्टी-भई ऋषभ जनम की वृष्टी—३
सखि जमे हरष अंकूरे-अब फले कलपतरु पूरे—४
घन फल दुर्भिक्ष हटायो-शिव फल को संवत आयो—५
अभिलाष अताप निवारी-चलै शीतल पवन पियारी—६
सखि बरसैं अमृत फुवारे-सुन जै जै कार उचारैं—७
सुर पुष्प रतन बरसावैं-गंधर्व प्रभु के जस गावैं—८
चलो अवधिनगर सुखदाई-प्रभु तात को देन बधाई—९
आवो दर्शन प्रभु जी का करलो-नयनानंद सैं घर भरलो—१०

(१२९)

जुग जुग जीवा ऋषभ अवतार—तुम जुग जुग ।
तुम सकल जगत दुख हरण करन सुख, जुग जुग ॥ टेक ॥
एक तो प्रभु तुम करी तपस्या, दूजे तीर्थंकर अवतार ।
तीजे धर्म तीर्थ के कर्ता, मोक्ष पंथ दर्शावन हार ॥ १ ॥
चौथे स्वयं बुद्ध वृत धरिहो, करिहो भविजन को उद्धार ।
तिरकै मोक्ष वरोगे साहिब, फेर न आवोगे संसार ॥ २ ॥

चरम शरीरी तुम हो साहिब, मैं चेरा तुमरा नरकार।
राखो नाथ चरण में अपने, तुम भगवत मैं भक्त तुम्हार ॥३॥
तारे बहुत भव्यजन तुमने, हमसे अधम रहे मझधार।
अब कै नाथ हमें निस्तारो, तुमरा जन्म हमारी वार ॥ ४ ॥
नाचैं इन्द्र जिनेंद्र निहारैं. लेत वलय्यां भुजा पसार।
लख २ मुख इखसुख न समावे, अविलोकै कर नयन हज़ार ॥ ५॥

१३०—रागनी देशवा सोरठा।

छाये पुन्य जगत जन शुभ की घड़ी, शुभकी घड़ी है शुभ की घड़ी-छाये ॥ टेक ॥ जगो सुहाग भाग जग जनका-परजा सकल निहाल करी। जन्मे तीर्थंकर या भूपर-नर्कादिक में चैन परी ॥ १ ॥ चिरजीवो यह बालक जग में- जापै शिव त्रिय माँग भरी। जुग जुग जीवो तुम मात पित नित सूवस वसो यह अवधिपुरी ॥ २ ॥ घर घर पुष्प सुधारस वरसैं- लग रही पंचाश्चर्य झड़ी नयनानंद सुरेंद्र भगति लख-भवि जन सम्यक् दृष्टि धरी ॥ ३ ॥

(१३१)

सुनरे अज्ञान, टुकड़े के कान अपनी समान, लख सबकी जान. दशप्राण किसी प्राणी के ना संहारे ॥ टेक ॥ मत काट पीट. सपरस कूं ढीठ, मतना घॅसीट, मतना उचीट, मत रस अनिष्ट. सींचे भींचे जारे मारे ॥ १ ॥ तू तो इष्ट मिष्ट खावे रस विशिष्ट, योंहि दिव्य दिष्ट लख हाल श्रिष्ट, होके वलिष्ट, रसना को न विदारे ॥ २ ॥ मत नाक तोड़, मत आंख फोड़,

मत कान मोड़, ये पांच खोड़, दुख दे कठोड़ कोसैं जीव जन्तु न्यारे ॥ ३ ॥ मन टूट जाय, सुध छूट जाय, बोला न जाय, झोला न जाय, सब देत हाय, अरु भाषैंगे हत्यारे ॥ ४ ॥ ले हाय हंस, भयो नष्ट कंस, रावण का बंश, भयो सब विध्वंस, कौरव समंस दुर्गति मे पधारे ॥ ५ ॥ मत रूंध स्वास, मूंद न उस्वास, है यही खास, जीवन की आस, मत करै नास, ये घर्साले हैं सारे ॥ ६ ॥ दिन दोकी जोत, है सिर पै मौत, जब लग उद्योत, ले जीत पोत, फिर रात होत, जीती बाजी मत हारे ॥ ७ ॥ सुन कर समंत, चित कर प्रशांत, है यह ही तंत, जा बैठ अंत, दिग सुख अनंत, मत अपने बिगारे ॥ ८ ॥

(१३२)

भज राम नाम-मत चोब चाम-दुनिया के नाम-आवै न कामै धन धाम गाम-तेरे संग ना चलैंगे ॥ टेक ॥ रख छिमा भाव कोमल सुभाव छल मत चलाव-रख सत मे चाव-लालच हटाव सब चरण मैं लगैंगे ॥ १ ॥ संजम कूं साध तपकूं अराध-तज आधि व्याधि-जग की उपाधि- कर दोष याद-हर कर्म गलैंगे ॥ २ ॥ नित पाल शील-मत करै ढील-खड़ो सीस झील-पर काल भील-तेरी फौज फील कूं-कुशील ये दलैंगे ॥ ३ ॥ यदि है अक़ील मनजा पिपील-मत कर दलील-मत बन रज़ील-तेरे सब वकील कर हील कूं टलैंगे ॥ ४ ॥ कहै नैनसुख-पलै मेट दुक्ख है यही मुख्य-मत रह विमुख्य तेरे हाड़ प्रमुख-सब खाक मैं रलैंगे ॥ ५ ॥

(१३३)

कहैं वार वार सतगुरु पुकार-सुनें दयाधार-पट मन को मार करो दान चार-दोनों भौ में सुख पावो ॥ टेक ॥ यहां हो जश अपार व्हांहो जग उद्धार-टलै, पाप भार-फलै पुन्यडार-कुछ ललोलार-खाली हाथों मत जावो ॥ १ ॥ दीजो रोग ज्ञान-ओषधि को दान-जामें गुण महान-औगुण जरान-शुभ खान पान-देथकान को मिटावै ॥ २ ॥ मूरख पिछान दीजो विद्यादान-जामें पापहानि-संपनि की खान-देके स्वर्थज्ञान-परमारथ सिखावो ॥ ३ ॥ भयवान जान-शक्ति प्रधान-धनजन मकान-पट भाजनानि-देकै दान मान समझावो भ्रम हटावो ॥ ४ ॥ लगैं भूख प्यास-अति होय त्रास-नरपशु अनाश-आवै संत पास-कणमण गिरास-देकै शुद्ध जल प्यावो ॥ ५ ॥ इन भांति यार-दीजो दान चार-ओषधि सुधार-विद्याउदार सब भय निवार-कै अहार करवावो-कहै दास नैन-आनंद दैन-बोलो मिष्ट वैन-पावै सर्व चैन-सीखो जैन पेन-जासूं सूधे शिवजावो ।

(१३४)

कब जगैं भाग-करूं जगत त्याग-होकै वीतराग-सेऊं धर्म जाग-कब कर्म नाग-बन आग को वुझाओ ॥ टेक ॥ जामें भर्म कांस-कुकरम की तांस-पापों की फांस-व्यसनों की धांस-उत्पत्ति नास-से निकास कब पांऊं ॥ १ ॥ जो में रोग भुंड-विषयन के झुंड-चौर्वास कुंड-पचीस रुंड-कब अग्नि तुंड-दुर्ध्यान को भगाऊं जामैं धर्म फोल-अधर्म की झोल-आकाश चील-पुद्गल के टील-भरे काल भील-क्या दलील ह्यांचलाऊं-३-आवै कब

मिलैं गुरू दयाल- टूटे मोह जाल-मेरा होनिहाल-कह अपना हाल-मस्तक जा झुकाऊं ॥ ४ ॥ हर अशुभ वृत्ति-करूं शुभप्रवृति-शुभ अशुभ कृत्ति-तजहो निवृत्ति-कब निज परमातम को एकी भावभाऊं ॥५॥ दृग सुखकुबुद्ध-कियो अती विरुद्ध-दर्शन विशुद्ध बिन रहो अशुद्ध-कब शुद्धप्रवृत्तिकर-शिवपदपाऊं-६-

१३५—जंगला ठुमरी गज़ल

जनम विरथा न गंवावोजी-पायो तरस तरस नर भव दुर्लभ-विर्थान-टेक—मतना मीत बिषयतरु बोवै-मत सूली चढ़ निर्भय सोवै-तज चारों पांचों सातों-मत पाप कमावो जी ॥१॥ त्रिषट स्रोवषट जीव चितारो-झटपट षट अरु पाच बिचारो-द्वादश-वाण चतुर शर धर तेरह मन ध्यावो जी ॥२॥ यही मोक्ष का मूल बतायो-अरिहंतादि महंतन गायो-कर प्रतीत वरतो सम्यक्त-सच्चे कहलावो जी ॥३॥ तज चौबीस अठाइस धारो-पाप पच्चीस छत्तीस संभारो-ले छयालीस-खपाआठों-सीधे शिवजावो जी ॥ ४ ॥ जो तैं। नाम नयन सुख पायो-तो तैं निजपर क्यों न लखायो-तज्ञ परमार्थ निज अर्थ गहो मत नाम लजावो जी ॥ ५ ॥

१३६—रागनी भैरवी-पूर्वी ठुमरी ।

देखो सुघड़ मधु बिंदु के कारण जग जीवन की मूढ़ दशा-टेक-
भूले पंथ फिरैं भव कानन-जैसें कटक विच व्याकुल शशा—
भटकैं चहुँगतिके पथ में नित-लागी अगनि जामें चारों दिशा—
लटकै भवतरु पकड़ कूप भ्रम-माखी परिजन खा तनसा—
काटत स्याम स्वेत चूहे जड़-निश दिन आयुर्घसा घसा—

नीचे नरक सरप मुख फाड़त-भक्षा गम लख हंसा हंसा—५
सिर पर काल बली गज गूंजत-कहत सुगुरु हाथ पसा पसा—६
काढूं तोहि विमान चढ़ाऊँ-पड़त बूंद मुख लागी चसा—७
भापत नाक चढ़ाय मूढ़ इम-कैसे तजूं मुख आयो गसा—८
टूटी जड़ पाताल पधारे—नर्क कुंड में जाय धंसा—९
धिग् धिग् भूल मूल हम खोयो-सारस में तज फेर फंसा-१०
नैनानंद अंध जन दुख को-मानत सुख तन डसा डसा ११

१३७—रागनी जंगला झंझोटी का जिला।

समझ मेरे प्यारे जरा-अब तो समझ मेरे प्यारे जरा-
हे प्यारे ज़रा मतवारे जरा -टेक-
तुम त्रिभवन में फिर आए-चौरासी में धक्के खाये - १
तैंने स्वर्ग विमान सजाए-पशुगति में डले बहु दोए—२
चढ़ तख्त निशान बजाये-पड़े नर्क शांस छिदवाये—३
तूंने सपरस सब करलीने-अरु पुद्गल सब चरलीने—४
तूंने दुग्धामृत बहुपीये-पड़ कुगति मूत पीजीये—५
तूंने सूंघे इतर हजारों-पड़ा नर्क सड़ा हर वारों—६
तैं तो जगत व्यवस्था निरखी-अपनी गत क्यूं ना परखी—७
तू तो नौ ग्रीवक लो मारे-गया नर्क अनंती वारे—८
किये ऊंच नीच सब काजा-भया पंडित मूरख राजा—९
रह्यो कौन काम तोहि वाकी-तुम आस करतहो वाकी-१०
तूंने जो कुछ करी कमाई-सो भी अपनी बतलाई-११
आए नंग धड़ंग उघारे-गये खाली हाथ पसारे-१२
क्यूं पाप करै पर कारण-कर सम्यक दर्शन धारण १३

तिहुँ काल अचल सुख पावो-तिहुँ लौकमें संत कहावो-१४
दृगसुख सब पाप गलैया-नहिं काल अनन्त रुलैया-१५

१३८—ठुमरी जंगला पूर्वी दादरा।

कुछ ले चल भवोदधिपार—मंज़िल दूर पड़ी ॥ टेक ॥
थोड़ा सा दिन है अटक है भयानक-कर्मों के विकट पहाड़—१
दिन तो छिपैगा झुकैगी अंधेरी-दुख देगी लुटेरन की डार—२
लूटैंगे धन तेरा चूटैंगे तन-तुझे देंगे नरक में डार—३
आश्रव रुकादे निराश्रव चुकादे-कोई रोके ना इस उस पार—४
मरजी पड़ै तो चुकादे भली विध-जैसा सुजन व्यवहार—५
मंदिर बनादे प्रभावनामैं देदै-साधू को देदे आहार—६
केवली प्रणीत जिन शासन लिखायदे-विद्याका करदे उद्धार—७
दुःखित को देदे खिलादे सुखित को-तीरथ पै करदे उपकार—८
तजदे कुवातों को सातों में देदे-सिर से पटक दे सारा भार—९
ग्रन्थ को विसारोपधारो शिवपंथ को-नहिं त्यागीकोटोकैसरकार-१०
भाषै दृगानंद सदानंद पावो-आवो न जावो संसार-११

१३९—रागनी सारंग।

वश कीजे-प्यारे वश कीजे-अरेहांरे गुमानी मन वश कीजे। ह्वै साधू उपधि तज सारी-जगत में जस लीजे ॥ टेक ॥ पाप करत गया काल अनंता-अब होजा ब्रह्मचारी-कमर दृढ़ कस-लीजे ॥ १ ॥ उदय विपाक सहा सब सुख दुख-जस अपजस सुनगारी-समाधी में धंस दीजे ॥ २ ॥ समता सुधा सिंधु में

घुसकर-हरो कलुषता खारी-निजआतम रस पीजे ॥ ३ ॥ नैनानंद बंध सब टूटैं-कटैं व्याधि हत्यारी-मुक्ती में बस लीजे ॥ ४ ॥

१४०—राग बरवा पीलू खम्माचका दादारा वा कजरी रागनी पूर्वी।

मेरी करो करुणा परूं जी थारे पांव-मेरी ॥ टेक ॥ लीनी तोरी शरणाजी-तीनों मोरे हरणा-जनम जरा मरणा ॥ १ ॥ मोसो नहीं दुखियाजो-तोसो नहीं सुखिया—मैं मंगता तुम राव ॥ २ ॥ काढ़ो कारागृह सैं जी-उभारो भवद्रहसैं-कर्म महा गढ़ढाव ॥ ३ ॥ दीजो नैना सुख तुम-कीजो सारे दुख गुम-रखियोमत उरझाव ॥४॥

१४१—बरवा जंगला।

हे किस बन ढूंढूं आली—तज गये गुरु म्हारे संसार ॥ टेक ॥ होय बिरागी ममता त्यागी—त्यागो मिथ्याचार—जन धन त्याग भये ब्रह्मचारी तृष्णा दई है बिसार ॥ १ ॥ साज दयारथ ले सत-सारथ-सर्वपदारथडार-करपुरुषारथ-जय मदनारथ-पटक भपभ-वपार ॥ २ ॥ भज भवभारथ-हरिभर्मारथ-धर्मारथ लियोलार-गये-कर्मारथ-विजय हितारथ-परमारथ पथसार ॥ ३ ॥ किस पर्वत किस कंदर अंदर किस समशान मंझार-ढूंढूं किस चौपट किस को टर-कौन नदी किसपार ॥ ४ ॥ के पद्मासन-कैखड्गासन-कैपर्यंक पसार-जानै कहां तिष्टैं किस आसन जिन शासन अनुसार ॥ ५ ॥ मुनि अर्जिका श्रावक पेय्यल—दुर्लभ इस संसार जो कहूँ दृष्टि पड़ै तो बतादे—मानूंगी उपगार ॥ ६ ॥ त्रिविध भेष

गुण दोष नयन सुख-त्रिविध त्रिकाल निहार-करियो नवधा भक्ति भवि-कजन दीजे शुद्ध अहार ॥ ७ ॥

१४२ जंगला झंझोटी ।

करले कुछ अपना उपगार-मूढ-तू तो बहुत रुला जग जाल में-अज्ञानी अब ॥ टेक ॥ एक तो तजदे तू तीन मूढता-दूजे अष्ट महामदछार-तीजै शंकादिकमल आठों खोकर तू मन को धोडार ॥ १ ॥ चौथे तज दे तू षट अनायतन-दर्शन मोहनी तीन विडार-चतु चारित्र मोहनि का मदहर-अवसर आवे हाथनयार ॥२॥ वसो अनादिनिगोद विषैशठ-काल लब्धि कर भयो निकार-नर नारक पशु स्वर्ग विषै किये पंचपरावर्तन बहुवार ॥ ३ ॥ चौदह लाख मनुष गति भरम्यो-पड्योसड्यो मल मूत्र मंझार-बोल सकै अनहाल सकैनन ऊंधे मुख लटको हरवार ॥ ४ ॥ चारलाख परजाय नरक की-भुगती मित्रकरम अनुसार-कुट कुटपिट पिट छिद छिद भिद भिद-कियो सागरां हा हा कार ॥ ५ ॥ भरमे बासठलाख पशुषु गति-नाना विधि किये मरण अपार । खिच खिच भिच भिच कुचल कुचल मर-स्वांस स्वांस मैं ठारहबार ॥६॥ चारलाख सुर योनि विडंब्यो-जहां सागरां सुख भंडार-झुर झुर मर मर रुल्यो जगत में-भोगे सुख ठाए विपति पहाड़ ॥ ७ ॥ कहत नैनसुख सुन मेरे मनवा-अब तो तज निज दोष गंवार-आगम आप्त गुरू तत्वारथ-परखहोय जासे वेड़ापार ॥ ८ ॥

१४३—ठुमरी ।

मैं पूजे पंच कुमार-मिटी भव बंध अटक मेरी ॥ टेक ॥
जब वासु पूज्य भगवान मल्लि मैं करी याद तेरी-
भए नेमिपार्श्व महावीर प्रगट गई टूट मोह बेड़ी ॥ १ ॥
आयो तुम दर्बार करी प्रक्षाल नीन बेरी-
भई जन्म जरामरणादि भवांतप शीतल जिनमेरी ॥ २ ॥
चर्चत चंदन शांति भए प्रभु पंच पाप बैरी-
भई अक्षय ऋद्धि समृद्धि करी जब अक्षत की ढेरी ॥३॥
पुष्प हरैं कंदर्प क्षुधा-नैवेद्य ठाय गेरी-
दीपक चढ़ाय चरणारविंद में आंख खुली मेरी ॥ ४ ॥
अष्ट कर्म को वंश भयो विध्वंस धूप खेरी-
फलतैं अजरामर आश भई-शिव संपत अवनेड़ी॥ ५ ॥
अर्घ अनर्घ आरती आरति मेटी सब मेरी-
कहै नैन चैन मांगै मंगत भव भव सेवा तेरी ॥ ६ ॥

१४४—चाल तुलसा महारानी नमो नमो—

तुमही प्रभु सिद्ध महेश्वर हो-हे महेश्वर हो परमेश्वर हो ॥टेक॥
निरावरण चिद्ब्रह्म स्वरूपी-तुम जित कर्म बलेश्वर हो ॥ १ ॥
तुम शंकर कल्यान के कर्त्ता-सुख भर्ता भूतेश्वर हो ॥ २ ॥
हर्ता हो सब कर्म कुलाचल-मृत्युं जय अमरेश्वर हो ॥ ३ ॥
निर्बंधन भव बंधन भेत्ता-नेत्ता-मुक्ति पथेश्वर हो ॥ ४ ॥
ध्यावै सुर नर मुनिगण तुमको-तातै आप गणेश्वर हो ॥ ५ ॥
पूजत पाप अताप मिटै सब-शांतिप्रद चंद्रेश्वर हो ॥ ६ ॥

इन्द्रादिक पद पंकज सेवैं-तातैं पूज्य पूजेश्वर हो ॥ ७ ॥
मेरो जन्म जरादि त्रिपुर दुख-तुम सच्चे मुक्तेश्वर हो ॥ ८ ॥
गृन्ह गृन्ह पर ब्रह्म आरत्ती-तुम दृग सुख प्रदेश्वर हो ॥ ९ ॥

१४५—देश की ठुमरी ।

जिनके हृदय सम्यक्त ना, करनी करै तो क्या करी ॥ टेक ॥
षट खंड को स्वामी भयो, ब्रह्मांड में नामी भयो ।
दिये दान चार प्रकार अरु, दिक्षा धरी तो क्या धरी ॥ १ ॥
तिल तुष परिग्रह तजि दिये, अति उग्र तप जप व्रत किये ।
पाली दया षट काय की, भिक्षा करी तो क्या करी ॥ २ ॥
कल्पों किया उपदेश को, छुटवा दिये दुर्भेष को ।
पहुँचा दिये बहु मुक्ति में, रक्षा करी तो क्या करी ॥ ३ ॥
आतम रहा वहिरात्मा, जाना अनातम आत्मा ।
परमात्म आतम नहिं लखा, शिक्षा करी तो क्या करी ॥ ४ ॥
गुरुमणिक रंड विषै कहैं, दृग सुख विना शिव पद चहैं ।
विन मूल तरु अनफूल फल, इच्छा करी तो क्या करी ॥ ५ ॥

१४६—रागनी धनाश्री ।

सकल जग जीव शिक्षा करयो ॥ टेक ॥ क्रुतकारित अपराध हमारे-सो सब पर हरियो । तजकर बैर प्रीति की परिणति-समता उर धरयो ॥ १ ॥ या भव जाल सदा फंस हम तुम-बहुते दुख भरियो-हाथ जोड़ अब दोष छिमाऊं आगै मत लड़यो ॥२॥ कोनो हम संवर तुम संवर, सै-कबहुँ न टरियो- नयनानंद पंथ संतन के चल भव जल तरयो ॥ ३ ॥

१४७—खम्माच रागनी झँझोटी ।

हमारी प्रभु नय्या उतार दीजै पार । टेक
अटक रही भव दधि के भँवर में, ऊरध मध्य अधो मँझधार ॥१॥
औघट घाट पड़ो टकरावै, चक्रित हरट घड़ी उनहार ॥२॥
अति व्याकुल आकुल चित साहिब, नाहो इधर नाहो उस पार ॥३॥
दल में रुद्ध शशाकी गति ज्यों, जित तित होत मार ही मार ॥४॥
अब चनीय मम दशा जिनेश्वर, कोई न शरण सहाय अवार ॥५॥
व्याकुल नैन चैन नहिं निश दिन, केवल तुमरो नाम अधार ॥६॥

१४८—भैरवी ।

जिस दिन सैं मैंने दरस तोरे पाये,
अनुभव घन बरसाए, दरश तोरे ॥ टेक ॥
भेद विज्ञान जगो घट अन्तर, सुख अंकुर रस रसाए ॥१॥
शीतल चित्त भयो जिम चन्दन, शिव मारग में धाए ॥२॥
प्रघटो सत्य स्वरूप परापर, मिथ्या भाव नशाए ॥३॥
नयनानन्द भयो अब मन थिर, जग में संत कहाए ॥४॥

१४९—रागनी जंगला-गंगावासी देहाती ।

तुम्हें त्रिभुवन के जन ध्यावैं, थारे सुन सुन गुण भगवान । टेक ।
अजी अर्ह धातुसे भये हो अर्हन्, बोधलब्धि से भयेहो भगवन ।
धरो अनन्त दरश सुख वीरज, किस मुख जस गावैं ॥ १ ॥
अजी आप तिरो औरन को तारो, शुभ शिक्षाकर भरम निवारो ।
तारण तरण निरख सुर नर मुनि, चरण शरण आवैं ॥ २ ॥

अजी षट २ की खटपट तज भविजन, सारभूत जिन चितमें धरमन
धर्म अर्थ अरु काम मोक्ष, पुरुषारथ फल पावैं ॥ ३ ॥
अजी शूकरसिंह नवल कपि तारे, भील भुजङ्ग मतंग उवारे।
दृग सुख के दृग दोष हरो, थारे सेवक कहलावैं ॥ ४ ॥

[१५०]

मैं तज दिये सर्व कुदेव अठारह दोष धरण हारे, अजी दोष धरन हारे सब टारे, निर्दोषी इक तुम ही निहारे, बीत राग सर्वज्ञ तरण तारण का विरद धारे ॥ टेक ॥
भूख प्यास तुमकूं नहीं दाता, राग द्वेष अरु नाहीं असाता।
जन्म मरण भय जरा न व्यापै, मद सब निर्वारे ॥ १ ॥
मोह खेद प्रस्वेद न आवै, बिसमय नींद न चिन्ता पावै।
भजगई रति अरु अरति कहैं, सुर नर मुनि जन सारे ॥ २ ॥
भूखा देव लिपटता डोले, प्यासा नित सिर चढ़ चढ़ बोले।
रागी छीन पराया धन दे, द्वेषी दे मारे ॥ ३ ॥
रोगी रोग सहित दुख पावै, जन्म धरै सो मर मर जावै।
डर कर बांधे शस्त्र बुढ़ापा, सुध बुध हर डारै ॥ ४ ॥
मद वाला नित मदिरा पीवै, मोह मूर्छित मरा न जीवै।
स्वेद खेद बिसमय कर व्याकुल, किसको निस्तारै ॥ ५ ॥
सोवै सो परमादी होवै, डूबै अरु सेवग कु डबोवै।
खोवै आतम गुण सुतुम्हारे, गुण कैसे निर्धारै ॥ ६ ॥
चिन्तातुर को चिन्ता सोखै, रति वेहोश अरति सें होके।
भूत भवानी ऊत मसानी, तजदो सब प्यारे ॥ ७ ॥
ब्रह्मा विष्णु महेश हैं वोही, जिसने करम कालिमा धोई।
दृगानन्द वोही देव हमारा, सेवो सब जन प्यारे ॥ ८ ॥

१५१—रागधानी ।

राखो रुचि वीरा मत रूसो धरम से, राखो रुचि वीरा,
हे रूसो ना धरम सै जिनमत के मरम सैं, राखो ॥ टेक ॥
धर्म प्रभाव तिरोगे भवसागर, पिण्ड छूटैगा तेरा आठोंही करमसैं ।
साचेदेव धरम ही को सेवो, याहीसैं तिरोगे न तिरोगे जी भरमसैं ॥
मान नयनसुख सयानी, भाषैं हैं सुगुरु तेरे जिया वेशरम सैं ॥३॥

१५२—रागनी भैरवी या खम्माच ।

जवसैं चरन की शरण मैं लई प्रभु,
जागी सुमति मोरी भागी कुमति, प्रभु० ॥टेक॥
छूटी अदर्शन अविद्या अनादि, जब से समाधी धरन मैं लई । १
अनुभव भयो मेरे मन मैं तुमारो, जवसैं तेरी जप करन मैं लई । २
साताभई भगाई सब असाता, जो पूर्व जम्मन मरन मैं लई । ३
भजी सर्व चिंता भया सुख अनंता, दृगानंद संपति भरनमैं लई । ४

१५३—चाल ।

मैं तो शान्ति पाई तृष्णा घटाने से ॥ टेक ॥
रागी मैं पूजे विरागा मैं पूजे, भ्रष्ट भयो बहकाने से ॥ १ ॥
धार कुभेष अनेक भरे दुख, दूर भगो जिन ध्याने से ॥ २ ॥
मिटी कुदृष्टि सुदृष्टि भई अब, श्री जिन के समझाने से ॥ ३ ॥
वंध मोक्ष का मारग सूझा, स्वपर स्वरूप पिछाने से ॥ ४ ॥
जाने पुण्य पाप दोउ बन्धन, शुद्ध भावना भाने से ॥ ५ ॥
नैनानन्द मिटे सब सुख दुख, सम्यक दर्शन पाने से ॥ ६ ॥

१५४—रागनी बरवा या धनासरी या पीलू ।

क्या नर देह धरी, हे बतादे प्यारे क्यों नर देह धरी ॥ टेक ॥
तोलै जोर गले पर मोलो, बोलै बात जरी, खोसै धन अरु नार
बिरानी पाप की पोट भरी, हे बतादे प्यारे क्यों नर देह धरी ॥१॥
तृष्णा बश न कियो सठ संबर, दुर्गति बांध धरी ।
तिर कर सिन्धु किनारे डूबो, यह क्या कुबुद्धि करी ॥ २ ॥
यह तो देह तपस्या कारण, काहू पुण्य धरो ।
तैं तप त्याग लाग विषियन में. राखो याहि सड़ी ॥ ३ ॥
बार अनन्त अनन्त जगत में, तैं सब देह चरी ।
क्या न कियो न कियो सो करले, परजा जात मरी ॥ ४ ॥
बहु आरम्भ परिग्रह में फँस, किसकी नाव तरी ।
हग सुख नाम काम अन्धन के, रे सठ खाक परी ॥ ५ ॥

१५५—खम्माच पीलू का दादरा ।

विकलपता सारी टरगई, विकलपता सारी,
हे जिनजी तुमरे ध्यान सैं ॥ टेक ॥
तुमरे सुगुण सुन सोधे मैंने निजगुण करम भरम रज झरगई ॥१॥
सिद्ध भये मेरे सकल मनोरथ, शुभ गति पायन परगई ॥ २ ॥
पूजत तुम पद डूबत भवदधि, टूटी नवका तिरगई ॥ ३ ॥
चहुँ गति सैं तिरआन भयोनर, उमर भजन में गिरगई ॥ ४ ॥
तिरत तिरत प्रभु थारे चरनन में, नाव हमारी अब अड़गई ॥५॥
जो न करोगे प्रभु पार हमारी नय्या, तौ अब आगे तरलई ॥६॥
नैन चैन प्रभु लोग कहैंगे, ऐसैं बाड़ खेत कूं चरगई ॥ ७ ॥

१५६—राग भैंरूवर ठुमरी ।

थारे दर्शन सूं लौ लगी लगी, थारे अजी लगी लगी लौ
लगी लगी, पर परसन सूं लौ लगी लगी, थारे ॥ टेक ॥
परमारथ की प्राप्ति भई अब, तत्वारथ रुचि पगी पगी ॥ १ ॥
सुन सुन जिन धुन मर्म भम्यो सब, ज्ञान कला उर जगी जगी॥२
आई सुमति सुगति की दायनि, कुमति कुभागन भगी भगी ॥३॥
नयनानन्द भयो मन मेरे, कर्म प्रकृति सब दगी दगी ॥ ४ ॥

१५७—संध्या आरती-चाल जै शिव ओंकारा ।

जै श्री जिन देवा—जै जै जिन देवा-पार लगादो खेवा—करूं चरण सेवा ॥ टेक ॥ वंदूं श्री अरहंत परमगुरु, दया धरम धारी-प्रभु दया धरमधारी—परमातम पुरुषोत्तम जग जन हितकारी ॥१॥ प्रभु भव जल पतित उधारण, चरण शरण थारी—प्रभु चरण—सद्वक्ता निर्लोभी, करम भरमहारी ॥ २ ॥ स्वामी तुम पद सेवत गज पति, भयो समता धारी—प्रभु भयो तीर्थंकर पद पारसपा, भयो भवपारी ॥ ३ ॥ आयो पिहिता श्रव मुनि मारन मृग पति बलधारी-प्रभु मृग पति—भयो बीरतीर्थंकर सुन शिक्षाधारी ॥४॥ स्वामी दोष कुशील धरो सीता प्रति दुर्जन अविचारी प्रभु दुर्जन—कूद पड़ी अग्नी में लेकै शरण थारो ॥ ५ ॥ खिल गए कँवल अगनी में प्रभु तुम मेटे भय भारी—प्रभु-अच्युतेंद्रपद दीनो फिरन होय नारी ॥ ६ ॥ बलि ने यज्ञ रचाय दुखी किये मुनि वर ब्रह्मचारी-विश्नुकुमार मुनीश्वर किये तुम उपगारी ॥७॥ पुष्पहार भए सर्प जिन्होंने तुम सेवा धारी-प्रभु-विदित कथा सतियन की गावैं नरनारी ॥ ८ ॥ स्वामी वज्र किरण नृप मूरति

तुमरी कर मुद्राधारी-जीत्यो सिंहोदरसैं राम गरद भारी ॥ ९ ॥ स्वामी तिरगये नृप श्रीपाल भुजन तैं महा सिंधुखारी-कुष्ट व्याधिगई छिन मैं तुमही निर्वारी ॥ १० ॥ महा मंडलेश्वर पददे तुम कियो अगत पारी-वादिराय मुनिवर की हरीव्याधि सारी ॥११॥ मानतुंग मुनिवर के तोड़े राज बंध भारी-चढ़े सुदर्शन शूलीवरी मुक्तिनारी ॥ १२ ॥ इत्यादिक भगवंत अनंती महिमा तुमधारी-तीनलोक त्रिभुवन मैं विदित कथा थारी ॥१३॥ शेष सुरेश नरेश मुनीश्वर जावैं बलिहारी-पावैं अखै अचलपद टरैं विपतसारी ॥१४॥ कहत नैन सुख आरति तुमरी करत हरन हारी-तारे जीव अनंते अबके बार हमारी ॥१५॥

१५८—आरती।

जय जय जिनवानी नमो नमो-त्रिभवन जनमानी नमो नमो गण धरने वखानी नमो नमो-जय जय ॥ टेक ॥ वीत राग हिम गिरतैं उछंरी-गणधर गुरुवों के घट में पसरी-मोह महा चल दमो दमो जय ॥ १ ॥ जग जड़ता तप दूर करो सब-समतारस भरपूर करो अब-ज्ञान विषैलेरमोरमो ॥ २ ॥ सततत्व षट दरब पदारथ-खो दिये तो विन मैं ये अकारथ, अब मेरे उर जमो जमो ॥ ३ ॥ जब लग शिव फल होय न प्रापत, चहुँ गति भ्रमण न होय समापत तबलों यह कृषि थमो थमो ॥ ४ ॥ शूकर सिंह नचल कपितारे, चील भील अरु फील उभारे, त्यों मेरे अघ क्षमो क्षमो ॥ ५ ॥ जै जग ज्योति सरस्वती प्यारी, हग सुख आरति करै तुम्हारी, अरतिहरो सुख समो समो ॥ ६ ॥

१५९—रागनी झंझौटी ।

सारे जीवों की भय्या दया पालोरे, हेदया पालोरे अदया टालोरे-सारे ॥ टेक ॥ भय्या काया न खंडो न जिह्वा विदारा-नासा में रस्से मती डालोरे ॥ १ ॥ भय्या आँख न फोड़ो न त्योरी चढ़ावो, कैड़े वचन के न घाव घालोरे ॥ २ ॥ भय्या भोजन खिलादो पिलादो जी पानी-रोगी को औषध दे बैठालोरे ॥ ३ ॥ ज्ञानी बनादो अज्ञानी को बीरन, करकै अभय सब के भय टालोरे ॥ ४ ॥ भय्या पालोगे अज्ञा तो होमे नयन सुख सुनलो जिनेश्वर के मतवालोरे ॥ ५ ॥

(१६०)

अब तो चेतो पियरवा चेतन चतुरप्यारे मेटो अनादी ये भूल ॥ टेक ॥ हाथों सुमरनी कतरनी बगल में, ये तो कुमनिया ऐसी बनाई जैसी होवै रजाई में शूल, पियारे प्यारे जैसी होवे रजाई में शूल, अब तो-चेतो पियरवा चेतन ॥ १ ॥ धाधा दया पर पीड़ा विसारो, बोलो वचन सतवादी, रहोजी डारो चोरी के माथे में धूल ॥ २ ॥ मतना करो परनारी की वांछा लघुदीरघ सारी ऐसी गिनो जी जैसी माता वहन समतूल ॥ ३ ॥ त्यागो परिग्रह की तृश्ना नयन सुख, भापै सुमति मतराखै कुमति भाई बोवो न काटे बबूल ।

(१६१)

जनम मतखोवै-जनम मत खोवै अरे मतवारे ॥ टेक ॥
मत खोवै तू धरम रतन को, मत भवसिंधु डबोवै—१

कंचन भाजन धूर भरै मतरे, गज सज खात न ढोवै—२
मत चढ़ चक्र बरत हो खरपै अमृत से ना पग धोवै—३
मत चाटे असि सहत लपेटी, मत शूली चढ़ सोवै—४
मत मधुबिंदु विषय के कारण, मग में काटे बोवै—५
श्री अरहंत पंथ में परले ज्यों नयनानंद होवै—६

(१६२)

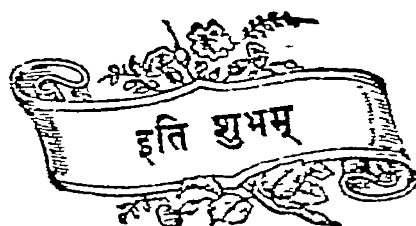
ले लेरे सरन सेले श्री भगवान ॥ टेक ॥ खेलरेतैं खेल घनेरे-पेलेरे पलान, सेले बांधे भेले कीये, पाप के सामान ॥ १ ॥ छोली रे तैं छाती ले ले जीवन के प्रान, खोसेरेतैं परधन मोसे कंठ बेई-मान ॥ २ ॥ देलेरे अनारी अपने हाथों से तू दान, जावोगे अकेले कागाखावैंगे मसान ॥ ३ ॥ पलेरे तू इग सुखदाई शिक्षा बुद्धिवान धेले को न लगा कोई, काया ये निदान ॥ ४ ॥

१६३ राग जंगला झंझौटी ।

अरे मन मान मेरी कही, तज पाप चेत सही, संसार में तेरो कौन है क्यों मूढ़ पक्ष गही ॥ टेक ॥ है परमब्रह्म तुही सर्वज्ञ ज्ञान मई, सम्यक्त बिन भया भ्रष्ट, तू चिरकाल विपति सही ॥१॥ स्वर्गादि विभव भई, तृश्ना तऊ न गई, तो ओस सम नर भागतैं यह रोग जाय नहीं ॥ २ ॥ किन सीख तोहि दई, कर बमन फेर चही-मत खाय चतुप सुजान यह बहुबार भोगलई ॥ ३ ॥ है समझमीत यही, तज भोग राख रही, कहै नैनसुख रहु विमुख इनसे, सीख सुगुरु की कही ॥ ४ ॥

१६४—राग समंदर खम्माच की धुन ।

तेरी नवका लगी है सुघाट किनारे, लागी मतना डबोवो जी ॥ टेक ॥ हर कर्म भर्म धर परम धरम मिथ्यातकरम से हाथ उठा, चिरकाल जगत में दुःख भरे जिस भांति बनै ले पिंड छुटा, भा भाव अनित्य अशर्ण सदा संसार हरट सा चलता है एकत्व दशा समझो अपनी वह तत्व क्यों नहिं टलता है तुम अशुचि अंग के संग शुद्धता अपनी ना खोवोजी ॥ १ ॥ दे आश्रव वाट में संवर डाट प्रकाश महा वलकर्म खिपा, ये पुरुषा कार है कारागार तू कैद पड़ा है वाद सफा, है दुर्लभबोध ले सोध ज़रा जिन धर्म की प्रापति दुर्लभ है, ले तत्व अतत्व विचार हदै इस वक्त तुझे सब सुर्लभ है, तैं पाई नर पर जाय अगामी मत कांटे वोवो जी ॥ २ ॥ ये भोग भुजंग भयानक हैं क्रोधादि अगन ह्यां जलती हैं, तुम जलते हो न सिंभलते हो ऐ यार बड़ी यह गलती है, जो इनको त्याग वसैं वन में वे मुक्ति वरांगन वरतें हैं निर्वाण अचल सुख पाते हैं, वे जन्म मरण, दुखहरते हैं, तू धरले सम्यक् दृष्टि नैन सुख जिन हित जोवोजी ॥ ३ ॥



सूचना

हमारे यहां सर्व प्रकार के जैन ग्रंथ व जैन पुस्तकें हर समय तैयार मिलती हैं व हस्त लिखित पुस्तकें भी लिखी जाती हैं व तैयार रहती है। बहुत सी पुस्तकें हमने प्रकाशित करी हैं।

स्वतन्त्र मुद्रणालय, मुज़फ़्फ़रनगर।

३०१०

ॐ

हितैषी गायन रत्नाकर

प्रकाशक—
तथा पुस्तक मिलने का पता—
मेनेजर भारत हितैषी पुस्तकालय
पो० सीकर (जैपुर)

मूल्य ॥)

गयादत्त प्रेस, बड़ा दरीबा देहली में छपा।

❋ प्रकाशक के दो शब्द ❋



प्रिय पाठक महाशयो ! मेरी बहुत समय से इच्छा थी कि एक पुस्तक गायन विषय की ऐसी प्रकाशित हो जावे जिसमें नवीन व प्राचीन कवियों के स्तुति रूप व उपदेशी भजन, वीनती, ड्रामे, आरती, आदि हों जिसे पास रखने से प्रत्येक विषय का गाना पढ़ने को मिल सके। परन्तु अनेक कारणों से इच्छा पूर्ण न हो सकी। अब अनेक प्रयत्न कर यह अपूर्व रत्न तैयार कराया है। प्रार्थना है धर्म्म का कार्य्य आवश्यक व उत्कृष्ट समझ एवं देशोन्नति की सदिच्छा से भारतवर्ष के प्रत्येक व्यक्ति के यह पुस्तक हस्तगत करने का प्रयत्न करें। तथा जिन जिन कवियों के भजन व गायन संग्रह किये हैं उनको शुद्धान्तः करण से कोटिश धन्यवाद समर्पण करता हूं।

विनीत,

प्रकाशक।

सूची अकारादि क्रम से

(प)

(फ)

(भ)

(म)

* ओ३म् *

हितैषी-गायन रत्नाकर

प्रथम भाग

भजन नं० १ स्तुति महावीर भगवान।

धन्य तुम महावीर भगवान, लिया पुण्य अवतार-
जगत का, करने को कल्याण ॥ टेक ॥

बिलबिलाहट करते पशुकुल को, देख दयामय प्राण।
परम अहिंसामय सुधर्म्म की, डालीनीव महान ॥धन्य० ॥१॥
ऊंच नीच के भेद भावका, बढ़ा देख परिमान।
सिखलाथासबकोस्वाभाविक,समतातत्वप्रधान ॥धन्य० ॥२॥
मिला समवश्रित में सुरनरपशु, सबको सबसम्मान।
समता और उदारता का यह कैसा सुभगविधान ॥धन्य० ॥३॥
अन्धी श्रद्धा का ही जगमें, देख राज बलवान।
कहा न मानो बिना युक्तिके, कोई वचनप्रधान ॥ धन्यतुम० ॥४॥
जीव समर्थ स्वयं करता है, स्वतः भाग्यनिर्माण।
यों कह स्वावलम्ब स्वाश्रयका दियासुफलप्रदज्ञान ॥ धन्य० ।५।
इनही आदर्शों के सन्मुख, रहनेसे सुखखान।
भारतवासी एकसमय थे भाग्यवान गुनवान ॥धन्य तुम० ॥६॥

भजन नं० २ (लावनी)

तुम सुनो दीनकेनाथ विनय इकमेरी, अब कृपा करो भगवान शरणमें तेरी ॥ टेक ॥ यह दास आपकी शरण चरण में आया, रखलीजे दीनकी लाज विश्वपतिराया। तुमनाम अनन्तअपार शास्त्र में गाया, गुणगावत गनधर आदि पार ना पाया ॥ मैं क्या वरनन करसकूं अल्पमति मेरी अब कृपा करो भगवान शरण में तेरी ॥१॥ तुम नेमीश्वर महाराज जगत के स्वामी, सच्चिदानंद सर्वज्ञ सकलजगनामी। मैं महामलिन मतिमन्द कुटिलखलकामी मोहिकीजेनाथ अब शुद्ध ज्ञान अनुगामी देउ मोको भक्तिवरदान करो मति देरी ॥ अब कृपा० ॥ २ ॥ इस जगमें जन्मत मरत महादुखपाया, लखचौरासीमें भ्रमत भ्रमत घबराया। करुणानिधान जनजान करो अब दाया अति दुखित हुआ तब शरण आपकी आया ॥ काटो श्री पार्श यह कठिन कर्म्म की बेड़ी ॥ अब० ॥३॥ मैं किसे सुनाऊं व्यथा अपने मनकी, यहां अपना कोई नहीं आश करूंकिनकी। मैं कहांलगकरूं बखान दशा निजतन की, तुम सब जानत सर्वज्ञ पीर निजजन की ॥ अतिआरत हो फूला ये कहत प्रभु टेरी, अब कृपा करो भगवान शरण में तेरी ॥ ४ ॥

भजन नं० ३ (गुरु स्तुति)

मिलें कब ऐसे गुरुज्ञानी ॥ टेक ॥

यश, अपयश, जीवन, मरण—जिन—सुख दुख, एकसमान ।
मित्ररिपु इकसमलखै—ज्योंमंदिर त्योंसमशान । एकसमगिनैं
लाभ हानी मिलें कब ऐसे० ॥ १ ॥

कांचखंड, और रत्न, बराबर—ज्यों धन त्योंही धूल,
एक है दासी और रानी मिलें कब ऐसे० ॥ २ ॥
ऊंच नीच नही लखैं किसीको, सब जियजिनको एक
दोष अठारह त्याग जिन्होंने गुण मन धरे अनेक ।
है जिनकी सिद्धारथ बानी ॥ मिलैं कब ऐसे० ॥ ३ ॥
जगजीवन का हित करें, अरु तारें भवदधि पार—
ज्ञानजोति जगमगै जिन्होंकी—तिन्हें नमूं हरबार ।
सुफल हो जासे जिंदगानी ॥ मिलैं कब ऐसे० ॥ ४ ॥

भजन नं० ४ (जिनवानी महिमा)

जगत में सांची जिनवानी ॥ टेक ॥

महावीर स्वामी ने, भाखी, जगतजीव, कल्याण,
गौतम गनधर ने, समझाकर, उदय किया रविज्ञान ।
तिमिर मिथ्यात की कर हानी ॥ जगत में सांची० ॥ १ ॥

पापी, अघतापी, कुटिलनर संतापी, अतिघोर,
मिथ्याती,घाती, अधम, खल, हिंसक, हिये कठोर।
सुगतिलई बनकर श्रद्धानी ॥ जगत में सांची० ॥ २ ॥
सिंघ, वाघ, बानर, गज, शूकर कूकर, आदिक जीव,
भील, चोर, ठग, गनिका, जाने—कीनेपाप सदीव।
किया निजहित बनकर ज्ञानी ॥ जगत० ॥ ३ ॥
पुन्य-उदय जिसजीव का, सोईपढै, सुनै जिनवैन
तीनलोक की दिपै सम्पदा, खुलैं ज्ञान के नैन,
इसी से जोती उरद्यानी ॥ जगत में सांची० ॥ ४ ॥

भजन नं० ५ (जिनवानी स्तुति)

दोहा—प्रगट वीरमुख से भई, गनधर किया प्रकाश।
हे माता जगदीश्वरी, करो हृदय ममवास ॥

छन्द पद्धडी।

किया अज्ञानतिमिर सब दूर—किया मिथ्यात सभी तुमचूर।
किया गुणज्ञान प्रकाश महान, विनय मनधार नमूं जिनवान ॥
लई जिनआन शरण तुम मात, किये तिनजीवों के दुखघात।
तुम्ही शिवमंदिरको सोपान विनय मनधार नमूंजिनवान ॥१॥
हुए वृषभादिजिनेश महेश—दिया जगजीवन को उपदेश।
किया खलपापिनका कल्यान विनय मनधार नमूं जिनवान ।२।

चहे नरघाती हो विकराल, चहे मिथ्यामति हो चंडाल ।
चहे विषलम्पट हो नादान. विनय मनधार नमूं जिनवान ॥३॥
चहे हो भील चहे ठग चोर—चहे गनिका अवकीने घोर ।
दिया गुणज्ञान सभीकोदान विनय० ॥ ४ ॥
चहे गजवोवृक सिंह सियाल—चहे शुकवानर शूकर व्याल ।
चहे अज, महिषा, गर्दभ स्वान, विनय० ॥ ५ ॥
दिया उपदेश किये सत्रबार--किया भूमंडल माँहिविहार ।
हरो मिथ्यात प्रकाशो ज्ञान । विनय मन० ॥ ६ ॥
किया फिर गौतम ने उपकार दिया उपदेश सुना संसार ।
हुये बहुजीवन के दुखहीन । विनय मन० ॥ ७ ॥
भये श्रुतकेवलि-केवलि आदि—भये मुनिराज जयोजिन ।
यादि रचे तिनग्रंथसुपंथ दिखान । विनय मन० ॥ ८ ॥
तुही जिनवानि तुही जिनग्रंथ, तुही जिनआगम है शिवपंथ ।
तुही तम दूर करे अज्ञान, विनय मनधार नमूं० ॥ ९ ॥
भया मम मात मेरे मन शोक, भया अज्ञान दशा विचलोक ।
किया जो मात तेरा अपमान—विनय० ॥ १० ॥
तुझे संदूकन में ली रोक—अलीगढ़ के दृढ़ ताले ठोक ।
नमैं नित दूरखड़े अज्ञान—विनय० ॥ ११ ॥
नहीं दिन एक भी धूप दिखात—बड़े सुखचैन से दीमक खात ।
विनय बतलावत याहि अज्ञान—विन० ॥ १२ ॥
लई मन मूर्खजनों ने धार, न होय किसी विधि तोयप्रचार ।

न आगमभेद कोई ले जान—विनय० ॥ १३ ॥
लखी सब महिमा पञ्चमकाल, हुये मतिहीन फंसे भ्रमजाल।
पढ़ैं कोई शास्त्र न सुनियत कान विन० ॥ १४ ॥
क्रिया तीर्थंकर आदि प्रचार-यह रक्खें मूंदके मूढ़ गंवार।
भला इनकेसम कौन अज्ञान, विनय मन० ॥ १५ ॥
यदि तुझ बैन न पढ़ै नविकोय, यदि परचार न तेरा होय।
तो कैसे हो फिर जग कल्यान, विनय मन धार० ॥ १६ ॥
न तुझबिन धर्म बढ़ै जगमांहि, फहरावै जैनपताका नाहि।
न हो उद्योत रवी शशि ज्ञान, विनय० ॥ १७ ॥
करो अब मात दया की दृष्टि, करो अब मात सुबुद्धिवृष्टि।
हरो सब जीवन का अज्ञान, विनय मन० ॥ १८ ॥
करो सब जीवन का उपकार, यह दो सब जन के मन में धार।
करें प्रचार बनें गुणवान विनय० ॥ १९ ॥
न होय प्रचार में तुमरे रोक, करैं सब सत्यविनयदें थोक।
सभीजगवीच प्रकाशो ज्ञान, विनय मन० ॥ २० ॥

घत्ता

जयजय जिनबानी, शिवसुखदानी, जगजिय प्रानीहितकरनी।
दुष्ट उधारन, पापी तारन, कुमति कुमतियों की हरनी।
भील उतारे चोर उभारे, पशुवन को तारन तरनी।
पार किये जगजीव अनन्ता, यों महिमा ज्ञाती बरनी॥ २१ ॥

भजन नं० ६ प्रार्थना।

भगवन समय हो ऐसा—जब प्रान तन से निकले।
तुम से ही लौ लगी हो, तुम नाम मन से निकले ॥ टेक ॥
सिद्धगिर के शिखर पर, तेरी ही, टोंक भीतर।
तुझ ध्यान हूं रहा धर, भक्ति दहन से निकले-भगवन० ॥१॥
गुरुजी दरश दिखाते, उपदेश भी सुनाते,
आराधना कराते मीठे वचन से निकले भगवन० ॥ २ ॥
भूमीपै हो संथारा, लगता हो ध्यान थारा,
त्यागूं सभी आहारा, तुझनाम धुनसे निकले भगवन० ॥३॥
सम्मुख छवी तेरी हो—उसपर निगाह मेरी हो।
संसार से वरी हो, आत्मा चमन से निकले। भगवन० ॥४॥
भक्तो के तेरे नारे, चहुंओर जां उचारे।
जैनी कहे पुकारे, प्राणी मगन से निकले, भगवन० ॥५॥

भजन नं० ७ (गज़ल शान्तनाथ स्तुति)

शान्त प्रभू शान्तिता का स्वाद हम को दीजिये।
नष्ट करके कर्म सारे, पार खेवा कीजिये ॥ टेक ॥

भक्ती से ती शक्ती हमारी, हो प्रगट परमात्मा।
सुधरे भारत की दशा, होवें सभी धरमात्मा ॥ शांति० ॥१॥

विद्या की हो उन्नति, और नाश हो अज्ञान का ।
प्रेम से पूरित हों सारे, ढूंढें मग कल्यान का ॥ शान्ति० ॥२॥
खोटे कर्मों से बचें, और तेरी भक्ति मन बसैं ।
शान्ति पावें प्रानी सारे, दुःख सब के ही नशै ॥ शान्ति० ॥३॥
सारी विद्याओं को सीखें, ज्ञानावरनी नाश कर ।
धर्म क्रिया नित्य करें पूजन सामायिक ध्यान धर ॥ शांति० ॥४॥
क्रो गीमानी माया, वो लोभी हम में से कोई न हो ।
सप्त विरनों से बचें, और छोड़ देवें मोह को ॥ शान्ति० ॥ ५ ॥
कर्म आठों कारने में, मन लगा रहवे सदा ।
होवें सभी पुरुषार्थी उपकार में चित रह लगा ॥ शान्ति० ॥६॥
सत्संग अच्छे में रहें, और जैन मारग पर चलें ।
तेरे ही रहवें उपासक, सब कुकर्मों से टलें ॥ शान्ति० ॥७॥
जैनी जवाहरलाल को, विनती प्रभु स्वीकार हो ।
होवे सुधार समाज का, भारत का बेड़ा पार हो ॥ शांति० ॥८॥

भजन नं० ८ (अर्हन्त देव से प्रार्थना)

ग़ज़ल

अर्हन्त देव तुम से, यह मेरी प्रार्थना है ।
जौहर अनादि से, जो मुझ में भरा हुआ है ॥

वो ढक रहा कर्म से, ज़ाहिर हो इल्तजा है ।
आदर्श जिंदगी हो, यह मेरी भावना है ॥ १ ॥
शक्ती हो मुझ में ऐसी, सब की मदद करूं मैं ।
सब की भलाई कारन, आगे कदम धरूं मैं ॥
ताकत हो मुझ में ऐसी, जैसी थी भीम अर्जुन ।
पालूं मैं शील ऐसा, ज्यों सेठ थे सुदर्शन ॥
मुहब्बत हो ऐसी पैदा, ज्यों राम अरु लक्ष्मण ।
स्थूल भद्र जैसा, राखूं मैं पवित्र मन ॥ २ ॥
बाहू बली सा मुझ में, बल और वीरता हो ।
गज सुखमाल के मुताबिक, हो ध्यान धीरता हो ॥
अभय कुमर जैसी, बुद्धि मेरी हो निर्मल ।
गुरु हेमचन्द्र जैसा, आत्मवन् में आमिल ॥
सिद्ध सैन की तरह से, विद्या करूं मैं हांसिल ।
दुनियां के प्राणियों का, दुख मेट दूं मैं कामिल ॥३॥
हरिभद्र कालिकाचार्य्य, विश्नुकुमार स्वामी ।
रक्षा करूं धर्म्म की, ऐसे ही बन के हामी ॥
धन्ना वो शालिभद्र, जैसी हो अस्तक़ामत ।
खंदक मुनि वो अर्जुन, माली सी हो वो हिम्मत ॥
वस्तुपाल की तरह से, खर्चूं धर्म्म में दौलत ।
विजय वो विजिया जैसा, कायम रख मैं जतसत ॥४॥
रिद्धी हो भरत जैसी, वैराग भी हो पूरा ।

बनजाऊं फेवना में, श्रीपाल जैसा सूरा ॥
खातिर वतन के ज़रदूं मैं भामाशाह जैसा ।
बहबूदी मुल्क की में हो सर्फ मेरा पैसा ॥
सेवक बनूं गुरु का, कुमारपाल जैसा ।
श्रेयांस की तरह से दूं दान मैं भी वैसा ॥ ५ ॥

गुरु आत्माराम मानिंद, चर्चाधर्म फैलादूं ।
रहकरके ब्रह्मचारी, अज्ञान को हटादूं ॥
दिक्षा के वास्ते में, ऐलान कृष्ण सा दूं ।
गुण ग्रहण की भी आदत, उनकीसी में बनालूं ॥
खातिर वतन के अपना, सर्वस्व में लगादूं ।
ग़फलत की नींद से में, हरएक को जगादूं ॥ ६ ॥

दुनियां के प्राणियों को, रस्ता धर्म्म बताकर ।
सेवा करूं धर्म्म की, तन मन सभी लगाकर ॥
साबितकदम रहूं मैं गरचे कोई सतावे ।
खुश हो तमाम सहलूं, पेशानी खम न खाये ।
इस तन से सर जुदा हो, और जान तक भी जाये ।
लेकिन धर्मपै मेरे मुतलक हर्फ न आये ॥
खिदमत करूं मुलक की, और धर्म्म को बढ़ाऊं ।
जैनी धर्म्म का डंका चहुंओर में बजाऊं ॥ ७ ॥

भजन नं० ९ (गजल प्रार्थना)

सन्मति भवसागर के मांहि, नैय्या पार लगानेवाले ॥ टेक॥
आये पावापुर के बीच, मारे वैरी आठो नीच।
अपने धनुध्यान को खींच, कर्म के काठ उड़ानेवाले ॥
सन्म० ॥ १ ॥
लेकर चक्रसुदर्शनज्ञान, करके मिथ्यामत का भान।
निकलाकर न्यामत परवान, मुक्ति की राह बतानेवाले ॥
सन्त० ॥ २ ॥

भजन नं० १० (लावनी देश)

तन मन सारेजी सांवरिया, तुमपर वारनाजी ॥ टेक ॥
बालापन में कमठनिवारो, अगनीजलता नाग उबारो।
वैरी करमन मारो तपबल धारनाजी तन मन० ॥ १ ॥
जीवाजीव द्रव्य बतलाये, सब जीवन के भरम मिटाये।
शिवमारग दरसाये, दुख पर हरनाजी तन मन सा० ॥ २ ॥
स्याद्वाद सतभंग सुनायो, नय प्रमान निश्चय करवायो।
झूठे मत किये खंडन सतको धारनाजी तन मन० ॥ ३ ॥
न्यामत जिन पारस गुन गावे, पुनिपुनि चरनन शीस निवावे।
वीतरागसर्वज्ञ तुही हितकारनाजी तन मन सारेजी० ॥ ४ ॥

भजन नं० ११ (दादरा थियेटर)

प्रभू लीजो खबरिया हमारीजी ॥ टेक ॥

मुझको कर्म डबोते हैं इस मोहजाल में, इससे बचाओ मुझको, करूं अर्ज हाल में करो पार नवरिया हमारीजी प्रभु०॥ १ ॥

निद्रा अनादि बीचपड़ा मैं ही तो सोताहूं, सुमरन नकी भक्ति तिहारी योंही खोताहूं सुधलीजो सरबरिया हमारीजी प्रभु० ।२

तुम जगको त्याग जाय बसे, मुक्तद्वार मे। दिखलाओ राह मुक्त कहूं बार २ में। रली मोक्ष डगरिया हमारीजी प्रभु० ॥ ३

मुझपर दया करो प्रभु होकर दयालतुम । सुकबन है तुम्हारा दास, करो प्रतिपालतुन नहीं तुमबिन गुजरिया हमारीजी प्रभु लीजो० ॥ ४ ॥

भजन नं० १२ (दादरा थ्येटर)

चलोहूं जिनडगरिया तुम्हारीजी ।
मिले मुक्तिनगरिया हमारीजी ॥ टेक ॥

(शेर)

भटका फिरा मैं आन मगों में जगह जगह ।
भ्रमता रहा हूं नीचगतों में जगह जगह ॥
पाई अब मैं खबरिया तुम्हारीजी चलोहूं० ॥ १ ॥
भवउधि से पार आके हो सम्यक्त के घाटपर।
डाले न आंख भूल कभी राजपाट पर ॥

पड़ी जिस पै नजरिया तुम्हारी जी चालो हूं जि०॥ २ ॥ बाजों की लागती है भयानक भनक मुझे, भाता नहीं है राग जगत् का तनक मुझे, सुन शासन बसरिया तुम्हारी जी। चालो हूंजि० ॥ ३ ॥ करमों की घास फेंकी प्रभू ने उखाड़ कर, वैराग्ञ की वढाई है खेती की वाढ़ कर, छाई करुणा वदरिया तुम्हारी जी। चालो हूं जी डगरिया० ॥४॥

१३

(दादरा थ्येटर)

लीजो २ खबरिया हमारी जी ॥ टेक ॥ धोखे में आगये हैं कुमतिया की चाल में, रक्खा है हम को बांध के कर्मों के जाल में, लीजो० ॥ १ ॥ बीता अनादिकाल हाल कह नहीं सक्ते, जो दुख हमें दिये है वो अब सह नहीं सक्ते, लीजो० ॥ २ ॥ तन धन का नाथ कुछ भी भरोसा मुझे नहीं, माता पिता भी कोई संगाती मेरे नही, लीजो० ॥३॥ सच है कहा संसार में कोई न किसी का, न्यामत को सिवा तेरे भरोसा न किसी का, लीजो० ॥४॥

१४

(प्रभु तार २ भव सिंधु०)

प्रभु तार तार भवसिंधु पार, संकट मंझार, तुम ही

अधार, दुकदो सहार, तारो तारो म्हारी नैय्या ॥टेक॥ परमाद चोर, किये हम पै जोर, भवसिंधु पोत, दियो मंभ में वोर, तुम सम न और तारन तर नैय्या। प्रभु तार तार० ॥ १ ॥ मोहि दंड२ दियो दुख प्रचंड, कर खंड २ चहु गति में भंड, तुम हो तरंड, काढ़ो काढ़ो गहि वहियां। प्रभु० ॥ २ ॥ दग सुखदास, तेरो उदास, मेरी काट फांस, हरो भव को वास, हम करत आस, तुम हो जग उधरैय्या। प्रभु० ॥ ३ ॥

१५

(दादरा थ्येटर)

अवार मोरे स्वामी भव दधि से कर मुझ को पार ॥ टेक॥ चहुं गति में रुलता फिरा मोरे स्वामी, दुखड़े सहे हैं अपार अपार, मोरे स्वामी। भव दधि० ॥ १ ॥ मिथ्या अंधेरा, मगर मोह ने घेरा, कर्मों के विकट पहार, पहार मोरे स्वामी भवदधि से कर मुझ को पार ॥ २ ॥ सातों विषय क्रोध मद लोभ माया, आये लुटेरे दहार दहार मोरे स्वामी। भवदधि से० ॥ ३ ॥ सम्पति की चेड़ी भॅवर में पड़ी है, वेगी से लेना उभार। उभार मेरे स्वामी भवद० ॥ ४ ॥

१६

(तर्ज—चाहे बोलो या न बोलो)

चाहे तारो या न तारो चरणों में आ पड़ा हूं ॥टेक॥
तेरे दरश को मैं आया, मन में तुही समाया, अति दीन हो खड़ा हूं। चाहो त्यारो० ॥ १ ॥ सब जगत में फिर आया, शरना कही न पाया, तेरी शरन आ गिरा हूं। चाहे त्यारो० ॥ २ ॥ निज दास जान लीजे, शिव मग बताय दीजे, बन २ भटक फिरा हूं। चाहो त्यारो० ॥३॥

१७

(गज़ल)

लीजिये सुधि अय प्रभू जी, अब तो हमारी इन दिनों। गरदिशे दुनियां से हैगी बेकरारी इन दिनों ॥टेक॥ आठ अरि घेरे पड़े हैं कर दिया खाना खराब, बचने की सूरत नही इन से हमारी इन दिनों। लीजि० ॥ १ ॥ गुस्सागर हा बुराज लालच से नहीं मुझ को पनाह, हो गई बन बन के तबिअत की खराबी इन दिनों। लीजि० ॥ २ ॥ क्या करूं किससे कहूं, कहां बचके इन से जाऊं मैं, कोल्हू केसे बैल जैसी गति हमारी इन दिनों। लीजि० ॥ ३ ॥ तुम को बिन जाने दयानिधि चार गति भ्रमता

रहा, अब तो कदमों की शरण लीन्ही तुम्हारी इन दिनों। लीजि० ॥ ४ ॥ तुम गरीब निवाज हो, और मैं गरीबों का गरीब, जग उद्धारक की विरद जाहर है थारी इन दिनों। लीजि० ॥ ५ ॥ सख्त आफत में फंसा हूं अय मेरे मुश्किल कुशां, कर दो मुश्किल सख्त को आसान मेरी इन दिनों। लीजि० ॥ ६ ॥ अपनी महफिल आलीका दीजे ज़रा रस्ता बता, मथुरा की ख्वाहिश बरारी होगी पूरी इन दिनों। लीजि० ॥ ७ ॥

१८

(कव्वाली)

आज जिनराज दर्शन से भयो आनद भारी है ॥ टेक ॥ लहे ज्यों मोर घन गर्जे, सुनिधि पाये भिखारी है, तथा जो मोद की बातें, नहीं जाती उचारी है। आज० ॥ १ ॥ जगद् के देव सब देखे क्रोध भय लोभ भारी है, तुम्ही दोषावरन बिन हो कहा उपमा तिहारी है। आज़० ॥ २ ॥ तुम्हारे दर्श बिन स्वामी, भई चहु गति में ख्वारी है, तुम्ही पदकंज नमते ही मोहनो धूल झारी है। आज० ॥ ३ ॥ तुम्हारी भक्ति से भविजन, भये भवसिंधु पारी है, भक्ति मोहि दीजिये अविचल सदा याचक बिहारी है। आज० ॥ ४ ॥

१९

(गज़ल)

मेरी नाव भवदधि में पड़ी कर पार अब सुन लीजिये, जग वन्धु वामानंद से अरदास अब सुन लीजिये ॥ टेक ॥ है झांझरी नैय्या मेरी मंझधार गोते खा रही, वसु कर्म बाम झकोरती, जगतार अब सुन लीजिये । मेरी नाव०॥ १ ॥ गति चार जलचर जहां बसैं मुख फाड़ फाड़ डरावते, तिन से बचाओ दीन पति इस बार अब सुन लीजिये । मेरी नाव० ॥ २ ॥ भव जल अथाही में मेरा तुम बिन नहीं है दूसरा, मेरी बांह को गहले प्रभु चितधार, अब सुन लीजिये । मेरी नाव० ॥ ३ ॥ सब कारज अब मेरे भये घट राम रत्न खुशाल है, दिन रैन जिनवर नाम का आधार, अब सुन लीजिये । मेरी नाव भवदधि में पड़ी० ॥ ४ ॥

२०

(ठुमरी झंझोटी)

नेम प्रभू की श्याम वरन छवि नयनन छाय रही, मणिमय तीन पीठ पर अम्बुजता पर अधर ठही ॥ टेक ॥ मार मार तपधार जार विधि केवल रिद्ध लई । चार

तीस अतिशय गुण नव दुग दोष नहीं ॥ नेम० ॥ १ ॥ जाहि सुरासुर नमत सतत मस्तक तें परस मही । सुरगुरु वर अम्बुज प्रफुलावन अद्भुत भान सही । नेम प्रभु० ॥३॥ धरि अनुराग विलोकत जाको, दुरित नशै सब ही दौलत महिमा अतुल जा सकी कापै जात कही नेम प्रभु० ॥४॥

२१

(गज़ल कव्वाली)

तुम्हारे दरश विन स्वामी, मुझे नहीं चैन पड़ती है। छवी वैराग तेरी सामने आंखों के फिरती है ॥ टेक ॥ निराभूषण विगत दूषण पद्म आसन मधुर भाषन, नजर नैनों की नासा की अनी परसै गुजरती है । तुम्हारे० ॥ १ ॥ नहीं कर्मों का डर हम को, कि जब लग ध्यान चरनन में, तेरे दर्शन से सुनते है कर्म रेखा बदलती है। तुम्हारे० ॥ २ ॥ मिले गर स्वर्ग की सम्पति अचम्भा कौन सा इस में, तुम्हें जो नयन भर देखे गति दुरगति की टलती है। तुम्हारे० ॥ ३ ॥ हजारों मूरतें हमने वहुत सी ग़ौर कर देखीं, शान्ति सूरत तुम्हारी सी नहीं नज़रों में चढती है। तुम्हारे० ॥ ४ ॥ जगत सिरताज हो जिनराज न्यामत को दरश दीजे, तुम्हारा क्या विगड़ता है मेरी विगड़ी सुधरती है। तुम्हारे० ॥ ५ ॥

२२

(चाल प्रभु तार २ भव०)

आईं इन्द्र नार कर कर सिंगार, ठाढीं समुद्र द्वार, शिव देवी माय चरनन मंझार मस्तक धरि दीनों ॥टेक॥ लखि भजोरीएम, सुत भयोरी नेम, तन आकृत यमचल मोर जेम, उर आर्त प्रमोद धर कर कर लीनो । आईं इन्द्र० ॥ १ ॥ दृग जोर जिन प्रभु मुख निहार, कर नमस्कार हर गोद धार, पुलकंत गात गज चढ़ दीनों । आईं इन्द्रनार० ॥ २ ॥ गिर शीशधार कर नट तवार, नाटिक त्रियार वलि वलि जुवार, ऐरावत पैं भयो हरिय नवीनों । आई० ॥ ३ ॥

२३

(पार्शनाथ स्तुति)

भुजंग प्रयातछंद—नरेन्द्रं फनेन्द्रं सुरेन्द्रं अधीशं, शतेन्द्रं सुपूजे भजै नायशीशं, मुनेन्द्रं गनेन्द्रं नमै जोड़ हाथं नमों देव देवं सदा पार्श्वनाथं ॥ १ ॥ गजेन्द्रं मृगेन्द्रं गह्यौ तू छुड़ावै, महा आगतें नागतें तू बचावे, महावीर तें युद्ध में तू जितावे । महा रोग ते बंध ते तू खुलावे ॥२॥ दुखी दुख हर्त्ता सुखी सुख कर्त्ता, सदा सेवकों को

महानंद भरता, हरेयक्ष राक्षस भूतं पिशाचं, विषमडाकनी विघ्न के भय अवाचं ॥ ३ ॥ दरिद्रीन को द्रव्य के दान दीने, अपुत्री को तैं भले पुत्र कीने, महा संकटों से निकाले विधाता । सबै संपदा सर्व को देहि दाता ॥४॥ महा चोर को वज्र को भय निवारै, महा पौन के पुंजते तूं उबारे, महा क्रोध की आग को मेघ धारा । महा लोभ शैले सको वज्र भारा ॥ ५ ॥ महा मोह अंधेर को ज्ञान भानं, महा कर्म्म कान्तारकों दो प्रधानं, किये नाग नागिन अधो लोक स्वामी, हगे मान को तू दैत्य को हो अकामी ॥ ६ ॥ तुम्ही कल्पवृक्षं, तुम्ही कामधेनू तुम्ही द्रव्य चिन्तामणीनाग एलं, पशू नर्क के दुख सेती छुड़ावे । महा स्वर्ग में मुक्ति में तू वसावे ॥ ७ ॥ करे लोह को हेम पाषाण नामी, रटै नाम सो क्यों न हो मोक्ष गामी, करैं सेव ताकी करे देव सेवा । सुनै वैन सोही लहै ज्ञान मेवा ॥ ८ ॥ जपै जाप ताको नहीं पाप लागे, धरै ध्यान ताके सबै दोष भाजैं, बिना तोहि जाने धरे भव घनेरे, तिहारी कृपा से सरे काज मेरे ॥ ६ ॥ दोहा—गनधर इन्द्र न कर सके तुम विनती भगवान । द्यानत प्रीति निहार के, कीजे आप समान ॥ १० ॥

२४

(संकट हरन वीनती)

हो दीन बंधु श्रीपती करुणानिधान जी, अब मेरी विथा क्यों न हरो बार क्या लगी ॥टेक॥ मालिक हो दो जिहान के जिनराज आप ही। एबो हुनर हमारा तुमसे छिपा नहीं। बेजान में गुनाह जो मुझ से बन गया सही, कंकरी के चोर को कटार मारिये नही। हो दीन ०॥१॥ दुख दर्द दिलका आपसे जिसने कहा सही। मुश्किल को हर वहर से लई है भुजा गही॥ सब वेद और पुरान में परमान है यही, आनंद कंद श्री जिनंद देव है तुही। हो दीन० ॥२॥ हाथी पै चढी जाती थी सुलोचना सती, गंगा में ग्राह ने गही गजराज की गती॥ उस वक्त में पुकार किया था तुम्हें सती, भय टारके उभार लिया हे कृपापती। हो दीन० ॥३॥ पावक प्रचंड कुन्ड में उमंड जब रहा, सीता से सत्य लेने को जब राम ने कहा, तुम ध्यान धार जानकी पग धारती तहां, तत्काल ही सरस्वच्छ हुआ कमल लहलहा। हो दीन० ॥४॥ जब चीर द्रोपदी का दुःश्शासन था गहा, सब ही सभा के लोग कहते थे अहा अहा, उस वक्त भीर पीर मे तुमने करी सहा, परदा ढका सती का सो यश जगत मे रहा। हो दीन० ॥५॥ सम्यक्त शुद्ध

शील व्रती चंदना सती, जिसके नजीक लगती थी जाहिर रती रती, बेड़ी में पड़ी थी तुम्हें जब ध्यायती हुती, तब वीर धीर ने हरी दुख द्वंद की गती। हो दीन० ॥६॥ श्री पाल को सागर विषैं जब सेठ गिराया, उसकी रमना से रमने को आया वो बेहया, उस वक्त के संकट में सती तुम को जो ध्याया, दुख द्वंद फंद मेटके आनंद बढाया। हो दीन० ॥७॥ हरि खेन की माता जहां सौत सताया, रथ जैन का तेरा चले पीछे यों बताया, उसवक्त के अनशन में सती तुमको जो ध्याया, चक्रेश हो सुत उसके ने रथ जैन चलाया। हो दीन० ॥८॥ जब अंजना सती को हुआ गर्भ उजारा, तब सासने कलंक लगा घर से निकारा, वन वर्ग के उपसर्ग में सती तुमको चितारा प्रभु भक्त व्यक्त जान के भय देव निवारा। हो दीन० ॥ ६ ॥ सोमा से कहा जो तू सती शील विशाला, तो कुम्भ मेंसे काढ भला नाग जो काला, उस वक्त तुम्हें ध्याय के सती हाथ जो डाला, तत्काल ही वह नाग हुआ फूल की माला। हो दीन० ॥१०॥ जब राज रोग था हुआ श्रीपाल राज को, मैना सती तब आपको पूजा इलाज को, तत्काल ही सुंदर किया श्रीपाल राज को, वह राज भोग भोग गया मुक्त राज को। हो दीन० ॥ ११ ॥ जब सेठ सुदर्शन को मृपा दोप लगाया, राणी के कहे भूप ने सूली पै चढाया,

उस वक्त तुम्हें सेठने निज ध्यान में ध्याया, सूली से उतार उसको सिंघासन पै विठाया। हो दीन० ॥१२॥ जब सेठ सुधन्ना जी को वापी में गिराया, ऊपर से दुष्ट था उसे वह मारने आया उस वक्त तुम्हें सेठ ने दिल अपने में ध्याया, तत्काल ही जंजाल से तब उनको बचाया। हो दीन० ॥ १३ ॥ एक सेठ के घर में किया दारिद्र ने डेरा, भोजन का ठिकाना था नहीं सांझ सवेरा, उसवक्त तुम्हें सेठ ने जब ध्यानमें घेरा, घर उसके में झट करदिया लक्ष्मी का वसेरा। हो दीन बंध० ॥१४॥ बलिवाद में मुनि राज सो जब पार न पाया, तब रात को तलवार ले सठ मारने आया, मुनि राज ने निज ध्यान में मन लीन लगाया उस वक्त हो प्रत्यक्ष जहां जक्ष बचाया। हो दीन बंध ॥ १५॥ जब राम ने हनुमंत को गढ लंक पठाया, सीता की खबर लेन को फिलफौर सिधाया, मग बीच दो मुनि राज की लखि आग में काया, झठ वार मूसल धार सों उपसर्ग बुझाया। हो दीन बं० ॥१६॥ जिन नाथ ही को माथ निवाता था उदारा, घेरे में पड़ा था सो कुलिश करन विचारा, रघुवीर ने सब पीर तहां तुर्त निकारा। हो दीन बं० ॥१७॥ रनपाल कुंवर के पड़ी थी पांव में वेड़ी उस वक्त तुम्हें ध्यान में ध्याया था सवेरी, तत्काल ही सुकुमार की सब झड़ पड़ी वेड़ी, तुम राज कुंवर की

सभी दुख द्वंद निवेरी । हो दीन० ॥ १८ ॥ जब सेठ के नंदन को डसा नाग जो कारा, उस वक्त तुम्हें पीर में धरि धीर पुकारा, तत्काल ही उस बालक का विष भूर उतारा, यह जाग उठा सो के मानो सेज सकारा। हो दीन० ॥१९॥ मुनि मान तुंग को दई जब भूपने पीड़ा, ताले में किया बंद भरी लोह जंजीरा, मुनिईश ने आदीश की स्तुति की है गम्भीरा, चक्रेश्वरी तब आन के झट दूर की पीड़ा। हो दीन० ॥२०॥ शिव कोट ने हठ था किया समन्त भद्रसों, शिवपिंड की वंदन करो शंको अभद्र सों, उस वक्त स्वयम्भू रचा गुरु भाव भद्र सों, जिन चंद्र की प्रतिमा तहां प्रगटी अनंद सो। हो दीन० ॥२१॥ सूवे ने तुम्हें आन के फल आम चढाया, मेंडक ले चला फूल भरा भक्ति का भाया, तुम दोनों को अभिराम स्वर्ग धाम वसाया, हम आप से दातार को लखि आज ही पाया। हो दीन वं० ॥२२॥ कपि स्वान सिंह नवल अज वैल विचारे, तिर्यंच जिन्हे रंच न था बोध चितारे, इत्यादि को सुर धाम दे शिव धाम मे धारे, हम आप से दातार को प्रभु आज निहारे। हो दीन वं० ॥२३॥ तुम ही अनंत जन्तु का भय भीर निवारा, वेदो पुरान में गुरु गनधर ने उचारा, हम आपकी शरणागत में आके पुकारा, तुम हो प्रत्यक्ष कल्पवृक्ष इच्छित कारा। हो दीन वं० ॥२४॥

प्रभु भक्त व्यक्त जगत भगत मुक्त के दानी, आनंद कंद वृंद को हो मुक्ति के दानी, मोह दीन जान दीन बंधु पातक भानी, संसार विषम पार तार अन्तरजामी। हो दीन० ॥ २५ ॥ करुणा निधान बान को अब क्यों न निहारो, दानी अनंतदान के दाता हो संभारो, वृषचंद नंद वृंद का उपसर्ग निवारो, संसार विप मखार से प्रभू पार उतारो। हो दीन० ॥ २६ ॥

२५

(गजल)

मुझे आधार है तेरा तुही जिनराज है मेरा, पड़ा भवदधि अथाही में शरण तेरा ही हेरा है॥ टेक॥ करम जल चर भरै तामे दुखी करते है जानो हो, अनादि काल से जिन जी इन्हों ने मुझको घेरा है। रोप मद लोभ माया की तरंगे उठ रही ऐसी, किनारे पर से लेजा कर बीच मंझधार गेरा है। मुझे आधार० ॥ १ ॥ लोकत्रय छूटके भाई जगह ऐसी नहीं कोई, उरध पाताल मध्यन्तर काल का जान फेरा है। करमसंयोग अपनेसे मिली जिन नाम की नौका, सेवक अब बैठके उतरो भला यह दाव तेरा है। मुझे आ० ॥२॥

———

२६

(मल्हार)

रुम झुम रुम झुम बरषै बदरवा, मुनि जन ठाढे तर वर तलवा ॥ टेक ॥ काली घटा तें सबही डरावे वे न डिगे मानो काठपुतलवा । रुम झुम० ॥ १ ॥ बाहर को निकसे ऐसे में ठाढ़े रहै गिरवर गिरवा । रुम झूम० ॥२॥ झंझा वायु वहै अति सियरी वेन हिले जिन बल के धरौवा रुम झुम० ॥३॥ देख सुनें जो आप सुनावे ताकी तो करहू नौछरवा । रुम झुम० ॥४॥ सुफल होय शिर पांव परस वे वुध जनके सब काज सरौवा । रुमझुम ॥ ५ ॥

२७

(गजल)

मंगल नायक भक्ति सहायक स्वामी करुना धारी, प्रभु मंगल मूर्ति सुनामी चहुं घातिया चूर अकामी, शीश नमाऊं तव गुन गाऊं तुम पर जाऊं वारी ॥ टेक॥(शेर) लगा के ध्यान आतम चिदानंद रूप दिखलाया, जराके कर्म्म रिपु आठों अमर पद आपने पाया, बिना कुछ गर्ज के तुमने हिताहित ज्ञान बतलाया, गया जो गर्ज ले तुम पै वह खुद बेगर्ज हो आया । प्रभु राग द्वेष सब त्यागे घट ज्ञान अनन्ता जागे, विघन विनाशक ज्ञान प्रकाशक भवि

जन आनंदकारी। मंगल नायक० ॥ १ ॥ तुम्हारा देश भारत में नहीं जब से हुआ आना, तभी से भेद निज पर का प्रभु हमने नहीं जाना, पड़े है घोर दुखों में सभी क्या रंक क्या राजा, हुई भारत की यह हालत नहीं है आब अरु दाना। जहां मक्खन दूध मलाई वहां अन्न पै बाजी आई, यह पाप हमारा नशै हत्यारा पुण्यको हो बढवारी। मंगल नायक भक्ति० ॥२॥ नहीं है ज्ञान की बातें न तत्वों की रही चर्चा, नहीं उपयोग रुपये का बढ़ा है व्यर्थ का खर्चा, उठा व्यापार का धंधा गुलामी का लिया दरजा, छुड़ा के शिल्प शिक्षा को किया है देश का हरजा, सब नौकर होना चाहते, नहीं शिल्प कला सिखलाते, सब नौकर होके पेशा खोके, निशदिन सहते ख्वारी। मंगल नायक भक्त० ॥ ३ ॥ धरम के नाम से झगड़े यहां पै खूब होते हैं, बढाके फूट आपस की दुखों का बीज बोते हैं, निरुद्यमी आलसी हो द्रव्य अपने आप खोते हैं, हुआ है भोर उन्नति का यह भारत वासी सोते हैं, हम मेल मिलाप बढावें, कर उद्यम धन घर लावें, भारत जागे सब दुख भाजे यह ही विनती हमारी। मंगल नायक०॥४॥

२८

(सोरठ)

प्रभु हरो मेरा प्रमाद मुझे परमाद सताता है ॥टेक॥

भोर भये पूजा की वेला सो टल जाता है। सांझ समय सामायक करना याद न आता है। प्रभू हरो मेरा प्रमाद०॥१॥ गुरु भक्ति अरु शास्त्र स्वाध्याय वन नहीं आता है तप संजम अरु दान का देना मन नहीं भाताहै। प्रभू हरो० ॥ २॥ यह षट कर्म श्रावक जिन शासन दरसाता है। एक नहीं पूरा होता दिन वीता जाता है। प्रभू हरो मेरा परमाद० ॥३॥ पाता है वृष अर्थ काम शिव जो शरणाता है। दो शक्ती दीना नाथ सदा, न्यामत गुन गाता है। प्रभू हरो० ॥४॥

२९

(लावनी देश तुम पर वार)

जाऊं जाऊं जाऊं जी आदीश्वर तुम पर वारना जी टेक ॥ प्रभु तुम गर्भ विषै जब आये षट नवमास रतन व्रषाये सची सची प्रतिछाये मंगलचारना जी । जाऊं जाऊं० ॥ १ ॥ न्हवन हेत ले इन्द्र गये, आकर पांडुकशिला मेर गिर जाकर, सहस अठोतर कलशा तुम सिर ढारना जी। जाऊं जाऊं० ॥२ ॥ रतन जड़ित भूषण पहिरा कर, धारे तीन छत्र माथे पर, लाये पुष्प सो माल बना कर, तुम गल डारना जी। जाऊं जाऊं० ॥ ३॥ इन्द्र नृत्य को तुमरे आये, अष्ट द्रव्य पूजन को लाये, सारे

तुमरे चरन नवावे तुम पर वारना जी। जाऊं जाऊं ॥४॥ कुन्दन शरण तुम्हारी आयो, दर्शन पाय परम सुख पायो, स्वामी मुझको पार लगाओ, तुम जग तारना जी। जाऊं जाऊं जी आदीश्वर तुम पर वारना जी ॥ ५ ॥

३०

(लावनी तुम पर वारना०)

जाऊं जाऊं जी वामा सुत तुम पर वारना जी तुम पर वारना जी तुम पर वारना जी जाऊं जाऊंजी वामा० टेक॥विश्वसैन घर जन्म लहायो, वामा देवी सुत कहलायो, भव्यजीव मन हरप मनायो तुम पद निरखन कारनाजी। जाऊं जाऊं०॥१॥ शचि पति सुरगन संघ भुलायो शिशु माया मय जननी धायो सहस अठोतर कलशा लायो सुर गिर पर सिर ढारना जी। जाऊं जाऊं० ॥ २ ॥ सम रस विवसन मुद्रा सोहैं देखत सुर नर मुनि मन मोहैं भुजगराज तव सिर पर जोहैं कमठस्मय के टारने जी जाऊंजाऊं॥३॥तन आभाशोभा जलधर की पैडी दरसावत शिव धर की सुर गिर भासित घटा जल धर की छटा जो शोभा कारना जी। जाऊं जाऊं जीसॉवरिया०॥४॥

३१

(स्तुति व सुख आशीर्वाद)

हे प्रभु अशरण शरण तुम दीन रक्षक देव हो, काल तीनों हस्त रेखावत लखो स्वयमेव हो ॥ टेक ॥ दुख सिंधु ते तुम पार करते प्राणियों के वास्ते, तुम पंथ खोटे को छुड़ा कर लावते शुभ रास्ते ॥ १ ॥ हे ईश तव जो ध्यान धरता शर्म्म वह पाता सदा, भक्त तेरा जो रहै नहीं दुख उसको हो कदा। हे प्रभु० ॥ २ ॥ डूबते को तुम सहारा अन्य कोई है नहीं, तुम सा दयालु देव भी कोई नहीं देखा कहीं। हे प्रभु अशरण० ॥ ३ ॥ स्वामी तुम्हारी कीर्ति को मैं किस तरह वरनन करूं, वरनन नहीं मैं कर सकूंगा सहस रसना भी धरूं। हे प्रभु अशरन० ॥ ४ ॥ हे विभो मम भावना है राज वोही नित रहै, साम्राज्य जिस के में सदा न्याय की धारा बहै। हे प्रभु अश० ॥ ५ ॥ न्याय होवे छान करके राज्य जिसके में अहो, दुख न हो जिस राज में वह ही सुशासन नित रहो, । हे प्रभु० ॥ ६ ॥ दीन दुखियों के लिये बिल्कुल सताता जो न हो, साम्राज्य जिसके में कभी अन्याय भी होता न हो। हे प्रभु० ॥ ७ ॥ दोषी पुरुष ही जहां दंड पावे नीति का जहां राज हो श्रेष्ठ नर ही श्रेष्ठ हो सम्यक वही साम्राज्य हो। हे प्रभु० ॥ ८ ॥ जिस राज्य में निवसे सदा सब मग्न हों नारी व नर, आनंद की ध्वनि हो तथा चारों तरफ वा हर नगर। हे प्रभु० ॥ ९ ॥

३२

(मेरी समाधि)

इतना तो करदे स्वामी जब प्राण तन से निकले, होवे समाधि पूरी जब प्राण तन से निकले ।। टेक।। माता पितादि जितने हैं ये कुटम्ब सारे, उनसे ममत्व छूटे जब प्राण तन से निकले। इतना० ।। १ ।। वैरी मेरे बहुत से होवेंगे इस जगत में, उनसे क्षमा करालूं जब प्राण तन से निकले। इतना०।।२ ।। परिग्रह का जाल मुझ पर फैला बहुत सा स्वामी, उससे ममत्व छूटे जब प्राण तन से निकले। इतना तो करदे० ।। ३ ।। दुष्कर्म दुख दिखावें या रोग मुझको घेरे, प्रभू का ध्यान छूटे जब प्राण तन से निकले। इतना० ।।४।। इच्छा क्षुधा तृषा की होवे जो उस घड़ी में उनको भी त्याग करदूं जब प्राण तनसे निकले। इतना० ।। ५ ।। अय नाथ अर्ज करता विनती ये ध्यान दीजे होवे सफल मनोरथ जब प्राण तन से निकले। इतना तो० ।। ६ ।।

३३

(यह कैसे बाल बिखरे०)

तुम्हारा चंदमुख निरखै स्वपद रुचि मुझको आई है, ज्ञान चमका परापर की मुझे पहिचान आई है ।। टेक।।

कला बढ़ाती है दिन दिन, काम रजनी बिलाई है अमृत आनंद शासन ने शोक तृष्णा वुझाई है। तुम्हारा०॥१॥ जो इष्टानिष्ट में मेरी कल्पना थी नशाई है मैंने निज साध्य को साधा उपाधी सब मिटाई है। तुम्हारा० ॥ २ ॥ धन्य दिन आज का न्यामत छवी जिन देख पाई है, सुधर गई सब बिगड़ी अचल सिद्धि हाथ आई है। तुम्हारा०॥३॥

३४

(तर्ज—इलाजे दर्द दिल से मसीहा०)

अपूरब है तेरी महिमा कही हम से नहीं जाती, तुम्ही सच्चे हितू सबके तुम्ही हरएक के साथी ॥ टेक ॥ पाप जब जग में फैला था गरम बाजार हिंसा का, विचारे दीन जीवों को कभी नहीं चैन थी आती। अपूरब० ॥ १ ॥ हजारों यज्ञ में लाखों हवन में जीव मरते थे, कि जिसको देख कर भर आती थी हर एक की छाती। अपूरब०॥२॥ जगत कल्यान करने को लिया औतार जब तुमने, सुरासुर चर अचर सबको तेरी वानी थी मन भाती। अपूरब०॥ ३ ॥ दया का आपने उपदेश दुनियां में दिया आके वरने जालिमों के हाथ से दुनियां थी दुख पाती। अपूरब०॥ ४ ॥ जो था पाखंड दुनियां में हुआ सब दूर इक दम में, धुजा हरस नजर आने लगी जिनमत की

लहरानी। अपूरव०॥ ५॥ जगत कर्ता के और हिंसा के जो झूठे मसायल थे, न्याय परमाण से तुमने किया रद्द सब को इक सार्थी। अपूरव०॥ ६॥ हटा हिंसा किया तुमने दया मय धर्म को जारी, न्यामत जात बलिहारी है दुनियां यश तेरा गाती। अपूरव० ॥७॥

३५

(स्तुति चाल लावनी)

हे करुणा सागर त्रिजगत के हितकारी, लखि निज शरणागत हरो विपत्ति हमारी ॥ टेक ॥ जो एक ग्राम पति जन की विपता टारे, मनोवांछित जन के कार्य्य तरण में सारे, तो तुम त्रिभुवन के ईश्वर विश्व पुकारे, विश्वास भक्त ताही विधि उर में धारे, फिर भूल गये क्यों ईश हमारी वारी, लखि निज शरणागत हरो विपति हमारी ॥ १ ॥ मैं निज दुख वरनन करों कहा जग स्वामी, तुम तो सब जानत घट २ अन्तर्यामी, तुम सम दर्शी सर्वज्ञ यशस्वी नामी, मम हरो अविद्या प्रगटे सुख आगामी, बर भक्ति तुम्हारी लगै हृदय को प्यारी। लखि निज शरणागत हरो विपत्ति हमारी० ॥ २ ॥ तुम अधमोद्धारक विरद जगत में छाया, मैं सुना सन्त शारद गनेश जो गाया, यासे आश्रय तक शरण तुम्हारी आया, सब हरो हमारा संकट

करके दाया तुमको कुछभी नही अशक्य विपुल वलधारी, लखि निज शरणागत हरो विपती हमारी ॥३॥ ज्यों मात पिता नही शिशुके दोष निहारे, पाले समेम अरु सर्व आपदा टाले, तुम विश्व पिता ज्योंही हम निश्चय धारे, या से शरणागत हो के विनय उचारे, जन नाथुराम यह जाचत वारम्वारी । लखि निजशरणात हरो विपती हमारी ॥४॥

३६

(आरती)

जय जिनवर देवा प्रभु जय जिन वर देवा, आरती तुमरी तारों दीजे प्रभु नित सेवा ॐ जय ॐ जय जिन वर देवा ॥ टेक ॥ कनक सिंहासन मनिमय ऊपर राजैं, चौंसठ चमर ढुरैं सित शोभा अती छाजै ॐ जय ० ॥ १ ॥ तीन छत्र सिर ऊपर सोहै झालर में मोती दिपै महाभामंडल कोटिक रवि जोती ॐ जय ॐ जय० ॥ २ ॥ फूल पत्र फल संजुत तरु अशोक छाया पाश्व वरण पुष्पांजलि वरषा झड़ लाया ॐ जय० ॥ ३ ॥ दिव्य वचन सब भाषा गर्भित, शिव मग संकेत दुन्दुभि ध्वनी नभ बाजत मोदन मन हेतु ॐ जय० ॥४॥ इन अष्टप्रातिहारज संयुत प्रभुजी अति सोहैं सुर नर मुनी भविजन का निरखत ॐ जय ० ॥ ५ ॥ सहस एक अठ लक्षण संजुत शोभित

तन प्रभू का, सासोश्वास सुगंधित पद्मासन नीका । ओं जय० ॥ ६ ॥ चौंतीस अतिशय शोभित पैंतिस गुणवानी निज निज भाषा मांही समझन सब प्राणी ओंजय०॥७॥ ज्ञान अनन्ता दर्शन सुख वीर-जनंता लोकालोक यथारथ जानत भगव ता ओं जय० ॥ ८ ॥ चौंसठि इन्द्र सहित इन्द्राणी देवी अरु देवा नाचै गावैं अद्भुत सुर सारे सेवा ओं जय० ॥६ ॥ नाटक निरख भविक जन मनमें हम भावैं ये जड़ पुद्गल तन रचना तज आतम ध्यावे । ओं जय० ॥१०॥ या महिमा को देख भविक जन जनम सुफल माने, धन सुर धन सुरललना जिन भक्ति ठाने॥ ओं० जय० ॥ ११ ॥ वीतराग जिनवर की आरति रुचि सों जो गावै, अमरदास मनवाञ्छित निश्चै फल पावै । ओं जय० १२॥

३७

(आरती दूसरी)

जय जय जिन देवा जय श्री जिन देवा खेवा पार लगादो करूं चरन सेवा ॥ टेक ॥ बंदो श्री अरहन्त परम गुरु परम दयाधारी प्रभु परम दयाधारी, परमात्म पुरुषोतम जग जन हितकारी जय । जय०॥१॥ प्रभू भव जल पतित उधारन चरण शरण थारी प्रभु चरण शरण थारी सद्वक्ता-

निरलोभी करम भरम हारी। जय जय० ॥ २ ॥ आगे ध्यान करत अरविंद मातंगज लखि समताधारी प्रभु लखि समताधारी, तीर्थंकर पद पारस पाय भयो भवपारी। जय जय० ॥३॥ खिहिताश्रव मुनि मारन आयो मृगपति वल धारी, प्रभु मृगपति वलधारी, भयो वीर तीर्थंकर सुनि शिक्षा धारी। जय जय० ॥४॥ स्वामी दोष कुशील दियो सीता को, दुर्जन अविचारी प्रभु दुर्जन अविचारी, कूद पड़ी अग्नी में लेय शरण थारी। जय जय० ॥५॥ खिल गये कमल अगन में स्वामी चढ़गये जल भारी, प्रभु चढ़गये जल भारी, अच्युतेन्द्र तुम कीनो फिर न होय नारी। जय जय० ॥ ६ ॥ वलि ने यज्ञ रचाय दुखी किये मुनि जन ब्रह्मचारी प्रभु मुनि जन ब्रह्मचारी, विष्णुकुमार मुनीश्वर कियो तव उपगारी। जय जय० ॥ ७ ॥ सर्प किये फूलन के गजरे जिन सेवा धारी, प्रभु जिन सेवा धारी, विदित कथा सतियन की जानत नर नारी। जय जय० ॥८॥

३८

(आरती तीसरी)

सांझ समय जिन वंदो भवि तुम सांझ समय जिन वंदो ॥टेक॥ लेकर दीपक आगे बालो, कटत पाप के फंदो। भवि तुम० ॥ १ ॥ प्रथम तीर्थंकर आदि जिनेश्वर

मेटन होय आनंदो । भवि तु० ॥२॥ पुष्प माल धरि ध्यान लगाऊं खेऊं धूप सुगंधो । भवि तुम० ॥३ ॥ रतन जड़ित की करूं जी आरती बाजत ताल मृदंगो । भवि तुम० ॥४॥ कह जिन दास सुमरि जिय अपने सुमरत होय अनंदो । भवि तुम० ॥ ५ ॥

३९

(गजल)

प्रभू मैं शरण हूं तेरी विपत को तुम हरो मेरी ॥टेक॥
मुझे कर्म्मों ने घेरा है चहुं गती मांह पेरचा है, ये हैं दिग्गज मेरे वैरी विपत को तुम हरो मेरी । प्रभु० ॥ १ ॥
विषय विषरस में फूला हूं जगत माया में भूला हूं, कुमति मति आन मोहि घेरी, विपत को तुम हरो मेरी । प्रभु०॥२॥
समय थोड़ा रहा बाकी, अवधि इस देह की पाकी, करूं क्या आय जम फेरी विपत को तुम हरो मेरी। प्रभू०॥३॥
पतित मुझसा न है कोई,पतित तारक हो तुम सोई लगाते क्यों हो अब देरी विपत को तुम हरो मेरी। प्रभू० ॥ ४॥
त्रिलोकीनाथ कृपासिंधु दया करिये जगत बंधू , कुगति हरिये दास केरी, विपति को तुम हरो । मेरी प्रभू० ॥५॥

४०

(उपदेशी)

सब स्वारथ का संसार है तू किस पै प्यार करता

है ॥ टेक ॥ जब तक प्यारे करे कमाई, तब तक सारे करें बड़ाई, चचा भतीजे सुसर जमाई, कुनबा ताबेदार है दिल भरीका दिल भरता है। तू किस पै प्यार करता है०॥१॥ जब तू शक्ति हीन होजावे, अपनी हाजत कुछ फरमावेयार दोस्त कोई निकट न आवे करत न कोई सतकार है, कमबख्त नाम पड़ता है। तू किस पै प्यार करता है० ॥२॥ जिसके प्यार में प्रभु हि विसारा, धर्म्माधर्म्म न तनिक विचारा, उस कुनबे ने किया किनारा अब नहीं कोई गमख्वार है, फहिर के यही मरता है। तू किस पै प्यार करता है० ॥ ३ ॥ मत बन जान बूझ कर भोला, है खुद गर्ज यार मिबोला यह 'वसुधा' मानुष का चोला फिर मिलना दुश्वार है, जप उसे जो दुख हरता है। तू किस पै० ॥ ४ ॥

४१

(भजन उपदेशी)

सुनियो भारत के सरदार, म्हारी धीर बंधानेवाले॥ टेक॥ देखो इस भारत के बीच किरिया कैसी होगई नीच, बैठे हाथ दान कर खींच लाखों द्रव्य रखानेवाले। सुनि० ॥ १ ॥ भूखों की नहीं सुनते टेर, उनको लालच ने लिया घेर, करते दया धर्म में देर धन को व्यर्थ लुटाने

वाले । सुनियो० ॥ ३ ॥ बन गये मुसलमान ईसाई लाखों ने है जान गवाई होते कोई नहीं सहाई, म्हारे प्राण बचाने वाले । सुनियो० ॥४॥ आये अब तुमरे दरबार, न्यामत दिल में दया विचार, करो अनाथों का उद्धार दया का भाव दिखाने वाले । सुनियो० ॥५ ॥

४२

(गजल)

देख कर हालत वतन की अब रहा जाता नहीं बिन कहे मन की विथा यह धीर मन आता नहीं ॥ टेक॥ ऐशो अशरत के वो सामां हाय भारत क्या हुये, क्या हुई पहली वो हालत कुछ कहा जाता नहीं । देख कर हालत० ॥ १॥ प्रेम की खेती है सूखी फूट का है बाग सब्ज क्या, तुझे भारत वतन अब प्रेम कुछ भाता नहीं । देख कर० ॥२॥ सब हैं अपनी अपनी उन्नति सीढ़ियों पर चढ़ रहे तूने दी क्यों हार हिम्मत क्या चढ़ा जाता नहीं । देख कर० ॥ ३ ॥ जुल्म क्या क्या कर चुका है बस कर चरखे कुहन नीम जां हम हो चुके हैं गम सहा जाता नहीं ॥४ ॥ याद बरबादी जब अपनी आती है हम को कभी, वसुधा रोदेती है पर कुछ बस बसाता नही। देख कर हालत वत०॥५ ॥

४३

(लावनी)

अवला तन लखि अल्प धीर जी मोही मानुष फंसते हैं सो दुर्बुद्धी छोड़ नर्क में पड़ते हैं ॥ टेक ॥ मृगनयनी के नयन रसीले श्याम श्वेत छवि अरुनाई, चंचलनाई निरख कर नर की न रहे थिरथाई, मुख सरोज अरु उर सरोज लखि मूरख मन अति उलझाई, परवसताई महा दुख आप आप को प्रगटाई, मनके चलते लाज तजै फिर चलते खोटे रस्ते है। अवला तन० ॥ १ ॥ लज्जा रहित कुधी पर त्रिय को निरख निरख बहु बात करें, परिचय राखें वक्र पर हो निश्शंक वृषघात करें कर विश्वास निसंक अंक भर नर त्रिय शीतल गात करें, अधम काज यह न होवे जाहर यह विचार दिनरात करे, शंका तज गुरु तात मात की पर नारी से हंसते है। अवला० ॥ २ ॥ लज्जावान पुरुष भी क्रम क्रम शंका तज विश्वास करे फिर क्रम क्रम से प्रिय वचन सुनत उर आस करे प्रीत वढै आशक्त होय अति दोनों वचनालाप करें, मिल कर रहना विरह मे दोनों उर सन्ताप करें, क्षोभित मन पापी नर कुल की मर्य्यादा सो खोते हैं। अवला० ॥३॥ एकाकी कामिन से नर को कभी न वतलाना चाहिये अंधकार में लाज तज कभी न ढिग जाना चाहिये शील

रहित नर नारी की सोहवत में नही आना चाहिये, जो हित चाहो 'जिनेश्वर' वचन हृदय लाना चाहिये विषय फंसे नर को विधि विषधर समय२ प्रति डसते है। अवला तन० ॥ ४ ॥

४४

(घड़ी क्या कहती है)

टिक टिक करती घड़ी रात दिन हम को यही सिखाती है, जल्दी करो काम मत चूको घड़ी बीतती जाती है। महा शक्ति शाली क्षण क्षण की यदि सहायता पाओगे, तो भी शीघ्र नही कुछ दिन में तुम मनुष्य वन जाओगे टिक०॥१॥ पूरी करनी है जीवन वड़ी २ जिम्मेदारी, जिसके विना न होसकते हो मनुष्यता के अधिकारी इससे जग प्रसिद्ध उद्योगी महाजनों की गैल गहो, उठो और आलस्य छोड़ कर प्रतिक्षण के सन्निकट रहो। टिक २ करती० ॥ २ ॥ क्षण को नहीं तुम्हारी चिन्ता तुम्हें छोड़ भग जाता है, सावधान! वह गया हुआ फिर कभी न वापिस आता है इस कारण से तुम सचेत हो करो रात दिन रखवाली, करते रहो काम कुछ भरसक कभी नही वैठो ठाली। टिक टिक करती०॥३॥ सदा सामने से वह प्रति क्षण सुख दुख के साधन सारे, साथ लिये भागा जाताहै रुका

न रोक रोक हारे; विघ्न तुम्हारे कर्म्मों से जब उसकी गति में आवेगा, तब वह खुश होकर सुख संपति शान्ति तुम्हें दे जावेगा । टिक टिक करती० ॥४॥ क्षण का है आलस्य शत्रु यदि उसके मित्र कहाओगे, तो क्षण दुख दे दे मारेगा तुम अधीर होजाओगे, जो क्षण बीत चुके हैं उस में तुमने क्या क्या काम किये, या मानुष्य कहलाने के शुभ साधन कितने जान लिये । टिक टिक क० ॥५॥ शोक शोक तुमने किया कुछ तुम्हें न लज्जा आती है, उठो देर मत करो जवानो घड़ी बीतती जाती है । टिक टिक करती घड़ी रात दिन हमको यही सुनाती है, रामनरेश सुनो यह स्वर से क्षण क्षण के गुण गाती है॥ ६ ॥

४५

(स्वारथ महिमा)

समझ मन स्वारथका संसार ॥ टेक ॥ हरे वृक्ष पर पक्षी बैठा, गावै राग मल्हार । सूखा वृक्ष, गयो उड़ पक्षी तजकर दम मे प्यार । समझ मन० ॥१॥ बैल वहौ मालिक घर आवत तावत बांधो द्वार, वृद्ध भयो तब नेह न कीनो दीनो तुरत बिसार, समझ मन० ॥ २॥ पुत्र कमाऊ सब घर चाहै पानी पीवै वार, भयो निखट्टू दुर दुर पर २ होवत वारम्बार । समझ मन० ॥ ३॥ ताल पाल पै डेरा

क्षीना सारस नीर निहार, सूखा नीर ताल को तज गये उड़ गये पंख पसार। समझ मन स्वारथ० ॥ ४ ॥ जब तक स्वारथ सधै तभी तक अपना सब परिवार, नातर बात न बूझै कोई सब बिछड़े संग छार। समझ मन०॥५॥ स्वारथ तज जिन गह परमारथ किया जगत उपकार, ज्योती ऐसे अमर देव के गुण चिन्ते हरबार। समझ मन० ॥ ६ ॥

४६

(दशलक्षण धर्म्म)

धरम के है दश लक्षण जान ॥टेक॥ क्षमा, मार्दव, और आर्जव, सत्य शौच गुण खान। संजम, तप, और त्याग अकिंचन ब्रह्मचर्य्य महान। धर्म के हैं दश लक्ष० ॥ १ ॥ क्रोध नशाओ, मान मिटाओ, छल छोड़ो बुधवान, झूठ बचन कबहू मत बोलो जांय भले ही प्रान धर्म्म के दश० ॥ २ ॥ त्यागो लोभ करो बश इन्द्रिय निज आतम का ध्यान, धन सम्पति दो दया धर्म्म और जाति देश हित दान। धर्म्म के० ॥३॥ तजो परिग्रह लेश न राखो इच्छा दुख की खान, राखो बल और बीर्य्य सुरक्षित होय ब्रह्म का ज्ञान। धरम के हैं०॥४॥ या से दुख दारिद्र नसै सब हो पापों की हान, जोती-धार धरम दश लक्षण जो चाहै कल्याण। धर्म्म के है दश लक्षण० ॥ ५ ॥

४७

(हंस नामा)

अजब तमाशा देखा हमने कहै गुरु सुन चेरा रे ॥ टेक ॥ एक वृक्ष पर एक हंस ने कीना रैन बसेरा रे। सुन्दर पक्षी देख उसे सब पक्षियों ने आ घेरा रे। अजब० ॥१॥ सब ने कहा हंस से यहां पर कोई दिन कीजे डेरा रे। ठहरा हंस वहीं उन सबसे उपजा प्रेम घनेरा रे। अजब तमा० ॥२॥ एक दिवस यह कहा हंस ने हम कल जांय सवेरा। यह सुन पक्षी दुख माना हम संग तजैं न तेरा रे अजब तमाशा० ॥३॥ सुबह हंस ने लई उडेरी पक्षिन लिया उडेरा रे। कोई कोस दो कोस पै हारा, सबही ने दम गेरा रे। अजब० ॥४॥ सब पक्षी रह गये यहां पर उड़ गया हंस अकेला रे। या विधि जोति जाय अकेला ना संगी कोई मेरा रे अजब० ॥५॥

४८

(उपदेशी)

मुसाफिर क्यों पड़ा सोता भरोसा है न इक पलका, दमा दम बज रहा डंका तमाशा है चला चलका ॥टेक॥ सुबह जो तख्त शाही पर बड़ी सज धज से बैठे थे। दुपहरे वक्त मे उनका हुआ है वास जंगल का। मुसाफिर०

॥१॥ कहां है राम अरु लच्मण कहां रावन से बलधारी, कहां हनुमन्त से योधा पता जिनके न था बल का। मुसाफिर०॥२॥ उन्हों को काल ने खाया तुझे भी काल खावेगा, सफर सामान उठकर तू बनाले बोझको हलका। मुसाफिर० ॥३॥ जरासी जिंदगानी पर, न इतना मान कर मूरख। यह बीते जिंदगी पल मे कि जैसे बुद बुदा जलका। मुसाफिर० ॥ ४ ॥ नसीहत मान ले जोती, उमर पल पल में कम होती। जो करनां आज ही करले, भरोसा कर न कुछ कल का। मुसाफिर० ॥ ५ ॥

४६

(कव्वाली)

जैन मत जब से घटा मूरख ज़माना होगया, यानी सच्चा ज्ञान इकदम रवाना होगया ॥टेक॥ गल्तफ़हमी झूठ ला-इल्मी गई हद्दसे गुज़र, सच अगर पूछो तो सब उलटा ज़माना होगया ॥ जैनमत० ॥१॥ जाते पाक ईश्वर को करता हरता दुनिया का कहें, हाय भारत आजकल बिल्कुल दिवाना होगया॥ जैनमत०॥२॥ कर्म्मफल दाता भी कोई और है कहने लगे, कैसी उलटी बात का दिलमें ठिकाना होगया ॥ जैनमत० ॥३॥ कोई कोई जीव की हस्ती से भी मुनकिर हुए, कैसा यह अज्ञान का दिल पै

निशाना होगया । जैनमत० ॥४॥ जैनमत प्रचार हटने का नतीजा देखलो, रहम उल्फत छोड़कर हिंसक ज़माना होगया । जैनमत० ॥५॥ झूठ चोरी और दग़ाबाज़ी कहां तक बढ़ गई, पाप करते आप कलजुग का बहाना होगया । जैनमत० ॥६॥ बुग्ज़ कीना फूट घर २ में नज़र आने लगी, वात्सल्य जाता रहा अपना बिगाना होगया । जैनमत० ॥७॥ न्यायमत जैनमत की अब तो इशाअत कीजिये, सोते २ मोह निद्रामें ज़माना होगया । जैनमत० ॥८॥

५०

(जुए का ड्रामा)

जुआरी—आओ खेलें जुआ आओ खेलें जुआ, पलमें
फकीर अमीर हुआ, आओ खेलें जुआ० ॥
विरोधी—मत खेलो जुआ, मत खेलो जुआ, पल में
अमीर फकीर हुआ, मत खेलो जुआ० ॥
जुएबाज़ की सुनो कहानी, मन चित लाके भाई ।
द्रोपदी नारी पांडव हारे, ज़रा शर्म्म नहीं आई ॥ मत
खेलो जुआ० ॥ १॥
जुआरी—जुआ खेला जो दुर्योधन ने, जीती पांडव नार ।
एक घड़ी में बनगये यारो परनारी भरतार ॥ आओ
खेलें जुआ, आओ खेलें जुआ० ॥२॥

विरोधी—जुएवाज़ और चोर डाकू का कौन करे इतबार ।
जिधर जावे धक्के पावे, मिले न पाई उधार ॥ मत
खेलो जुआ० ॥३॥
जुआरी—जुएवाज़ और चोर डाकू से कोई न करते तक-
रार । जिधर जावे दौलत पावे, मिलें एक के चार ।
आओ खेलें जुआ, आओ खेलें जुआ० ॥४॥
विरोधी—जुएवाज़ के पास जो होता, एकदम देत लगाय ।
बाल बच्चे चाहें भूखे मरजांय, करे नहीं परवाय ॥
मत खेलो जुआ मत खेलो जुआ पलमें, अमीर० ॥५॥
जुआरी—जुएवाज़ के पास जो होता, करता मौजबहार ।
ऐश उड़ावे घर में नारी, मजे करे परवार ॥ आओ
खेलें जुआ आओ खेलें जुआ, पलमें फकीर ०॥६॥
विरोधी—अगर वो जावे हार जुएमें, फिर चोरीवो करते ।
हरदम नानक राज द्वारे, दंड भोगने पड़ते ॥ मत
खेलो जुआ मत खेलो जुआ, पलमें अमीर० ॥७॥
जुआरी—बेशक जावें हार जुए में, फिक्र नहीं वो करते ।
अगले दिन जब जीत के आवे, मोटर गाड़ी चढ़ते ॥
आओ खेलें जुआ आओ खेलें जुआ० ॥८॥
विरोधी—सब विषयों में विषय यह खोटा, समझो मेरे
भाई । नर्क बीच लेजाने वाला समझो मेरे भाई ॥
मत खेलो जुआ मत खेलो जुआ, पलमें० ॥ ९॥

जुआरी—सुनी नसीहत तेरी भाई, दिलमें किया ख़याल। इस पापी चण्डाल जुए ने, कर दीना कंगाल। नहीं खेलूं जुआ, नहिं खेलूं जुआ ॥१०॥

विरोधी—विद्यानन्द भव भव तिरना प्यारे, सबसे नियम कराओ। एस. आर. कहै लानत भेजो, खाक इस के सर डालो। मत खेलो० ॥११॥

जुआरी—जुआ बड़ा जंजाल है भाइयो इसका मत लो नाम। पैसे मारो फेंक ज़मीं से दूरसे करो प्रणाम। नहीं खेलूं जुआ, नहीं खेलूं जुआ, आज से मैंने नियम लिया ॥१२॥

५१

(सट्टे का ड्रामा)

सट्टेबाज़–ज़रा सट्टा लगा, जरा सट्टा लगा, घर बैठे तू मौज उड़ा।

विरोधी–मत सट्टा लगा, मत सट्टा लगा, कर देगा यह तुझको तबाह ॥ मत सट्टा० ॥ सट्टेबाज की कहूं कहानी, सुनलो मेरे भाई। धन तो सारा दिया लुटा फिर होश ज़रा नही आई, मत सट्टा लगा, मत सट्टा लगा० ॥१॥

सट्टेबाज़-सट्टे की कुछ कहूं हकीकत सुनलो करके कान।
एक अंक जो निकले बस फिर होजावे धनवान।
जरा सट्टा लगा, जरा सट्टा लगा० ॥२॥
विरोधी-एक अंक की आशा करते, हो जाते कंगाल।
जगह जगह पर मारे फिरते, बुरा होय अहवाल।
मत सट्टा लगा, मत सट्टा लगा० ॥३॥
सट्टेबाज-एक दाव जो आजावे बस फिर हो मौज बहार।
एक के बदले मिलें कईसौ, क्या अच्छा व्यौपार।
जरा सट्टा लगा० ॥४॥
विरोधी-सट्टेबाज कोई धनी न होता, देखे सब कंगाल।
बुरा शौक सट्टे का भाई, कर देता पामाल। मत
सट्टा लगा० ॥५॥
सट्टेबाज-सट्टे में जो जीत के आवे, पावे ऐश आराम।
मज़ा करे परवार जोसारा, क्या अच्छा यह काम।
जरा सट्टा लगा० ॥६॥
विरोधी- सट्टे के शौकीन जो भाई, ढूंढैं साधु फकीर।
सौ २ गाली सुनकर आवें, क्या उलटी तकदीर।
मत सट्टा लगा० ॥७॥
सट्टेबाज-साधू सन्त जो गाली देवें, तू क्या जाने यार।
सट्टेबाज ही अर्थ निकालें, दिल में सोच विचार।
जरा सट्टा लगा० ॥८॥

विरोधी—वाह मजेदार यह प्याला, मोरीमें गिरानेवाला
जूतों से पिटाने वाला, इज्ज़त को घटाने वाला।
शराबी—यह मस्त बनावे ऐसा, बस बादशाह है जैसा।
विरोधी—(शेर) अय अहले हिंद तुमको खोया शराब ने,
जाहो जलाल मरतबा खोया शराब ने। वेसुध पड़े
हो ऐसे कि अपनी खबर नहीं, उल्लू बना दिया
तुम्हे गोया शराब ने॥ अब मंज़िले तरक्क़ी पर
पहुंचोगे किस तरह, कांटों का बीज राह में बोया
शराब ने॥ ग़ैरत नहीं तुम्हें जरा देखो तो हालको,
फिहरिस्त नंगों के नाम में लिखाया शराब ने॥

(चलत)

यह हालत देखो कैसी, बिल्कुल है मुर्दा जैसी,
अब होश में आओ छोड़ नशेको इसकी ऐसी तैसी।
शराबी—क्या अजब हाल हुआ मेरा, किस बदमस्ती ने घेरा,
यह कैसा छाया अन्धेरा, दिखता नही शाम सवेरा।
विरोधी—तू हटको छोड़दे भाई, नही इसमें कोई बड़ाई,
यह नशा बड़ा दुखदाई, कहता हूं सुन चितलाई।
शराबी—तेरी मान नसीहत छोडूं, बोतल को जमींमें तोडूं
ना पियूं कभी यह प्याला, बे इज्ज़त करने वाला।
ना पियो कोई यह प्याला, लानत २ यह प्याला॥

५४

(भजन—शराब निषेध)

राम नाम रस के एवज़ में, शराब का अब है प्याला,
पिलादे साक़ी, रहै न बाकी, कुछ बोतल में गुललाला ॥
पी पी शराब बनकर नवाब, गलियों में टक्कर खाते हैं।
अड़ंग बड़ंग मुंह से बकते हैं, टेढ़ी चाल दिखाते हैं। नशे
का चक्कर जिस दम आया, नाली में गिर जाते हैं। कम
करनेको नशा महरबान, कुत्ते उन्हें न्हलाते है। नंबर वन
की मुंह में बरांडी, छोड़ रहा कुत्ता काला। पिलादे साक़ी
रहै न बाकी, कुछ बोतल में गुललाला ॥ १ ॥ भंगी और
भिस्ती ने जब यह आकर देखा नज्जारा । नाली में से
उठ ओ भड़वे, कहां से आया हत्यारा। कौन कहै सोओ
न पलंग पै, यह तो उल्लू घर मारा। टांग पकड़ भंगी ने
खींची, जोर से एक पंजर मारा। ऐसा केस एक दिन
हमने आंखों देखा भाला। पिलादे साकी रहै न बाकी,
कुछ बोतल मे गुल लाला ॥ २ ॥ आते जाते लोग देखकर
कहने लगे मयख्वार पड़ा, कोई कहै भले घरोंका नालायक
बदकार पड़ा। कोई कहै मोहताज है भूखा, पैसेसे लाचार
पड़ा। कोई कहै हैजे सेग का ताजा ही बीमार पड़ा।
सिविल पुलिस में खबर करादो, पिलादे साकी रहैन बाकी

कुछ० ॥ ३ ॥ घर जमीन बरबाद करी, घर पै औरत बीबी रोती । बेच दिये मेरे हंसले कठले, बचे नथली के मोती । एक रेज जब मिली न पाई, कलाल को जा दी धोती । बेहद पीने वालों की अकसर, हालत ऐसी होती। रामचंद सतसंग रंगका, पिया करो मित्रो प्याला । पिलादे साकी रहै न बाकी कुछ बोतल में गुललाला ॥ ४ ॥

५५

(भजन—शराब निषेध)

मयकशी में देखलो, यारो मजा कुछ भी नहीं, खुदबखुद बेखुद बने, लेकिन मजा कुछ भी नहीं ॥ टेक ॥ सारे घर का मालोजर, बोतल के रस्ते खोदिया । मुफ्त में इज्जत गई, पाया मज़ा कुछ भी नहीं ॥ मय कशी० ॥१॥ जब नशा उतरा तो हालत, और बदतर होगई । खाली बोतल देखकर बोले मज़ा कुछ भी नहीं ॥मयकशी०॥२॥ रात दिन नारी बिचारी, जान को रोया करे । ऐसी मय-ख्वारी पै लानत है मज़ा कुछभी नहीं ॥ मयकशी० ॥३॥ न्यायमत इस मय की उलफत का, नतीजा देख लो । बस खराबी के सिवा इसमें मजा कुछभी नही ॥ मयकशी मे देखलो यारो मजा कुछ भी नहीं० ॥ ४ ॥

५६

(भंग का ड्रामा)

पीने वाला—चलो भंगिया पियें, चलो भंगिया पियें, इस बिन मूरख योंही जियें ॥ कून्डी सोटा बजे दमादम, छने छनाछन भंग । मजा जिंदगी का जब यारो, हो चुल्लू में दंग । चलो भंगिया पियें चलो भंगिया पियें ॥ १ ॥

विरोधी—मत भंगिया पियो मत भंगिया पियो, इस से अच्छे योंही जियो ॥ खुश्की लावे अकल नशावे, बेसुध करके डारे । होश रहे नहीं दीन दुनी का, बिना मौत ही मारे ॥ मत भंगिया पियो मत भंगिया पियो इस बिना० ॥ २ ॥

पीने वाला—तू क्या जाने स्वाद भंग का, है यह रस अनमोल । मगन करे आनंद बढ़ावे, दे घट के पट खोल ॥ चलो भंगिया पियें० ॥ ३ ॥

विरोधी—सिर घूमे और नथने सूखें, नींद घनेरी आवे, कल की बात रही कल ऊपर, भूल अभी की जावे । मत भंगिया पियो मत भंगिया पियो० ॥४॥

पीने वाला—भंग नही यह शिव की बूटी, अजर अमर है करती । जनम जनम के पाप नशाकर, सब रोगोंको हरती ॥ चलो भंगिया पियें चलो भंगिया पियें ॥५॥

विरोधी—भंग नही यह विष की पत्तियां, करे मनुष को ख्वार। जीते जी अंधा कर देती, फिर नरकों दे डार ॥ मत भंगिया पिये मत भंगिया पिये ॥ ६॥

पीने वाला—कूंडीमें खुद बसै कन्हैया, अर सोटेमें श्याम। विजिया में भगवान बसैं हैं, रगड़ रगड़ में राम ॥ चलो भंगिया पियें चलो भंगिया पियें ॥ ७ ॥

विरोधी—अरे भंग के पीने वालो, भंग बुद्धि हर लेत। होशियार और चतुर मर्द को, खरा गधा कर देत॥ मत भंगिया पियो मत भंगिया पियो० ॥ ८ ॥

पीनेवाला—झूंठी वातें फिरे बनाता, ले पी थोड़ी भंग। एक पहर के वाद देखना, कैसा छावे रंग ॥ चलो भंगिया पीयें चलो भंगिया पियें ॥ ६ ॥

विरोधी—लानत इसपर लानत तुझ पर, चल चल होजा दूर। भंग पिये भंगी कहलावे, अरे पातकी क्रूर ॥ मत भंगिया पिये, मत भंगिया पिये ॥ १० ॥

पीनेवाला—(शेर) भंगके अद्भुत मजे को तूने कुछ जाना नहीं। रंग को इसके जरा भी मूढ़ पहिचाना नहीं ॥
आंख में सुरखी का डोरा, मन में मौजों की लहर।
शान्ती आनंद इसके विना, कभी पाना नहीं॥११॥
(चलत) साधू संत भंग सब पीते क्या कंगाल अमीर,

ईश्वर से लोलीन करावे, यह इसकी तासीर ॥
चलो भंगिया पियें चलो भंगिया पियें० ॥ ११॥

विरोधी-(शेर) है नहीं यह भंग, क़ातिल अक़्ल को तलवार है
करती है यह बेहोश, जानो यह मुरदार है ॥
खौफ जिनको है नरक का, वो इसे छूते नहीं ।
बात सच मानो पियारे, यह नरक का द्वार है ॥

(चलत) यह सब सच्ची बातें भाइयो, भंग नरक डारै ।
आंखें खोल जगत में देखो, लाखों काम बिगारै॥

पीनेवाला-सुनकर यह उपदेश तुम्हारा, मुझे हुआ आनंद ।
लो मैं छोड़ी भंग आज से, ईश्वर की सौगन्द ॥
मत भंगिया पियो, मत भंगिया पियो० ॥ १२ ॥

विरोधी—भला किया यह काम आपने, दई भंग जो छोड़ ।
और भी सबसे नियम कराओ, कूंडी सोटा तोड़ ॥
मत भंगिया पियो, मत भंगिया पियो० ॥

पीनेवाला—कूंडी तोडूं सोटा तोडूं, भंग सड़क पर डारूं ।
कोई मत पीना भंग भाइयो, बारम्बार पुकारूं ॥
मत भंगिया पियो मत भंगिया पियो० ॥ १३ ॥

५७

(हुक्के का ड्रामा)

हुक्केबाज—अहा हाहा क्या अच्छा हुक्का है, है कोई हुक्केका पीने वाला ।

(चलत) क्या हुक्का बना ये आला, भर भर पी लो तुम लाला, जो पीवें इसे पिलावें, वे लुत्फ़ ज़िंदगी पावें ।

विरोधी—बुरी आदत है ये भाई, मत इसकी करो बड़ाई ।
दूर दूर हो लानत लानत, क्यों बनता सौदाई ॥
यह तनको खूब जलावे, बलग़म को बहुत बढ़ावे ।
जो मुंहको इसे लगावे, ना लज़्ज़त कुछ भी पावे ॥

हुक्केबाज—जिसको इक चिलम पिलाई, बलग़म की करी सफाई ।

विरोधी—दूर दूर हो लानत २ क्यों बनता सौदाई ॥

हुक्केबाज—क्या हुक्का बना ये आला, भर भर पीलो तुम लाला, जो पीवें इसे पिलावें, वह अकलमंद कहलावें ॥

विरोधी—जो हुक्के का दम लावें, ले चिलम आगको जावें,
सो सौ गाली फिर खावें, यह मान बड़ाई पावें ।

हुक्केबाज—यह कैसी बात बनाई, कुछ कहते शर्म न आई ।

विरोधी—दूर दूर हो लानत २ क्यों बनता सौदाई ।

हुक्केबाज—क्या खूब बना ये आला, गंगाजल इसमें डाला

पीते हैं अदना आला, यह घर में करे उजाला।
विरोधी—क्या खाक बनाये आला, दिल जिगर सब करे काला, अच्छा नशा यह निकाला, दोज़ख में गिरानेवाला
हुक्केबाज—यह महफ़िलका सरदार, क्या जाने मूढ़ गंवार।
विरोधी—(शेर) कब तक कि हुक्का नोशो मुहल्ला जगाओगे, बंसी बजाके नाग को कब तक खिलाओगे। मारे आस्ती डसेगा बस तुम्हें, पंजे से ऐसे देव के बचने न पाओगे। गर ज़िंदगी चाहते हो तो इसको तर्क करो, खुद अपना वरना खिरमनेहस्ती जलाओगे। (चलत) जिस इससे प्रीत लगाई, आखिर में हुई दुखदाई। मान कहा क्यों पागल बनता कहांगई चतुराई।
हुक्केबाज—तेरी मान नसीहत छोड़ूं, ले अभी चिलम को तोड़ूं। नहचे को तोड़ मरोड़ूं हुक्के को ज़मीसे फोड़ूं।
ना पिऊं कभी यह हुक्का, लानत २ यह हुक्का,
ना पियो यह हुक्का, बेशक लानत यह हुक्का॥

५८

(सिगरेट का ड्रामा)

पीनेवाला—यारो मुझे सिगरेट या बीड़ी दिलाना यारो मुझे सिगरेट या बीड़ी दिलाना, बीड़ी दिलाना माचिस लगाना कैसा यह फैशन बना।

विरोधी—शेम २-छोडो जरा सिगरट का पीना पिलाना, पीना पिलाना दिलको जलाना, नाहक क्यों करते गुनाह। छोडो जरा०।

पीनेवाला—दूर २-है जेब खाली डिबिया भी खाली छुटता नहीं यह नशा।

विरोधी—शेम २-मदिरा पड़ी इसमें लीद भरी है लानत है लानत नशा।

पीनेवाला—दूर २-बातें हैं कैसी दीवानों जैसी, गमशप लगाते हो क्या

विरोधी—शेम २-होवेगी ख्वारी नरकों की त्यारी, हठ को तो त्याग जरा।

पीनेवाला—दूर २-पीवो पिलावो ज़रा मुंह को लगाओ, कैसा यह शीरीं अहा!

विरोधी—शेम २-सी० एल० पुकारे जिनदास प्यारे, सोचो तो दिल में ज़रा।

पीनेवाला—यस २-सोचा विचारा दिल में यह धारा, बेशक बुरा है नशा।

विरोधी—शाबास-छोडो ज़रा सिगरेटका पीना पिलाना।

पीनेवाला—सिगरेट तोड़ूं डिबिया मरोड़ूं लानत है लानत नशा।

विरोधी—शाबास छोडो ज़रा सिगरेट० ॥

५९

(नशा निषेध)

जो चाहते हो खुशी से जीना, नशा न पीना नशा न पीना
बुरी बला है यह जामो पीना, नशा न पीना नशा न पीना ॥ टेक ॥
शराबो अफयूनो चरसगांजा, है एक से एक कहर मौला,
पुकार कर कह रहा है बंदा, नशा न पीना नशा न पीना० ॥ १ ॥
शराबियो की जो देखी हालत, किसी के कपड़े हैं कैसे लतपत, कोई है कहता बचश्मे इब्रत, नशा न पीना नशा न पीना० ॥ २ ॥
कोई बदरों में पड़ रहा है, किसी का मुंह कुत्ता चाटता है,
कोई यह चिल्ला के कह रहा है, नशा न पीना नशा न पीना० ॥ ३ ॥
अगर तुम्हारी है चश्मे बीना, न खाना अफयून न भंग पीना । डबोऐंगे यह तेरा सफीना, नशा न पीना नशा न पीना० ॥ ४ ॥

६०

(रंडी निषेध ड्रामा)

(रंडी नचानेवाला)–ज़रा रंडी नचा ज़रा रंडी नचा, दौलत

का दुनिया में यह है मज़ा ।

(विरोधी)—मत रंडी नचा मत रंडी नचा, नरकोंमें तुझको यह देगी पौंचा ।

फिज़ूल करो बरबाद रुपैय्या ज़रा तो सोचो भाई ।
देख देख सन्तान तुम्हारी विगड़ जाय अन्याई ।
मत रंडी नचा मत रंडी नचा० ॥ १ ॥

(नचाने०) तालीम सीखने रंडी घर औलाद हमारी जावे,
सभी बात में ताक़ बने फिर कहीं ख़ता ना खावे ।

(विरोधी) रंडी की खातिर जो देखे सो नारी ललचावे,
मन में उनके उठें उमंगें रंडी फैशन बनावे । मत रंडी नचा मत० ॥ ३ ॥

(नचाने०) समधी के दरवाजे सीठने रंडी आय सुनावे ।
दे जवाब समधन जब उसको वाग वाग होजावे ॥
जरा रंडी नचा० ॥ ४ ॥

(विरोधी) नाच देखने के शौक़ीनो ज़रा सुनो दे कान ।
रुपया तुम्हारेसे कुरबानी होवे बेपरमान ॥ मत रंडी नचा मत रंडी नचा० ॥ ५ ॥

(नचाने०) हम रुपया रंडी को देते ना कुछ कहते भाई ।
गान सुनै सो आनंद पावै खूब शान्ती छाई ॥ जरा रंडी नचा० ॥ ६ ॥

(विरोधी) रातों जगने से महफिल में होते हो बीमार ।
वहुत जगह बुनियाद इसी पर चलते खूब पैजार ॥
मत रंडी नचा मत रंडी नचा० ॥ ७ ॥
(नचाने०) महफिलमें रंडीकी शोहरत सुनकर सब आजावें
रौनक बढे, विवाह की भारी रुपया सभी चढ़ावें ।
ज़रा रंडी नचा जरा रंडी नचा० ॥ ८ ॥
(विरोधी) रंडी का सुन नाम सभासे धार्मिकजन उठ जावें
नंगों के बैठे रहने से मजा नहीं कुछ आवे ॥ मत
रंडी नचा मत रंडी नचा० ॥ ९ ॥
(नचाने०) बिन इसके रौनक नहीं आवै सूनी लगे बरात
दिन तो जैसे तैसे बितावें कटै न खाली रात ॥
जरा रंडी नचा जरा रंडी नचा० ॥ १० ॥
(विरोधी) धर्मोपदेशक बुलवा करके, कीजे धर्म प्रचार ।
रंडी भड़वे तुम्हें बनावे करदें खाने खराब ॥ मत
रंडी नचा मत रंडी नचा० ॥ ११ ॥
(नचाने०) नित्य नहीं हम नाच करावें कभी २ करवावें ।
नेग टेहले को साधे है, नहीं खता हम पावें ॥ जरा
रंडी नचा जरा रंडी नचा० ॥ १२ ॥
(वरोधी) एक दफै का लगा ये चस्का, कर देता है ख्वार ।
धन दौलत सब खोकर प्यारे, होजायगा बेज़ार ॥
मत रंडी नचा मत रंडी नचा० ॥ १३ ॥

(नचाने०) सुनी नसीहत तेरी भाई मन में हुआ विचार ।
रुपया तवा होके क्या, जाना होगा नर्क मंझार ॥
जरा सच्ची वता जरा सच्ची वता० ॥ १४ ॥
(विरोधी) सत्य कहूं मैं नर्क पड़ोगे सुनलो रंडी वालो ।
कहै जवाहर जैनी तुम से कसम धर्म की खालो ॥
मत रंडी नचा मत रंडी नचा० ॥ १४ ॥
(नचाने०) सुनकर शिक्षा तेरी भाई कसम धर्म की खाऊं
नाच देखने और करवाने का मैं हलफ़ उठाऊं ॥
नहीं रंडी नचाऊँ नही रंडी नचाऊँ आज से लो मैं
हलफ़ उठाऊँ ॥ १६ ॥

६१

(वेश्या निषेध)

रंडी बाज़ी में ग़र्क ज़माना हुआ, वड़े अपनों को दाग़
लगाना हुआ ॥ टेक ॥
जिनके धन थे अपार, फंदे इसके पड़े यार, खोया ज़रमाल
सार, हुई इज्जत ख्वार, खाली दौलत का सारा खजाना
हुआ । रंडी बाजी मे० ॥ १ ॥
एक पाई का यार, नहीं मिलता उधार, कहे आदम वदकार
मुंह से थूके संसार, फल वेश्याकी प्रीती का पाना हुआ ।
रंडीवाजी में ग़र्क जमाना० ॥ २ ॥

गरचे रंडीके यार, गर्भ तेरा रहजाय, कन्या जन्मे जो आय, जग से मैथुन कराय, बेशुमार जमाई बनाना हुआ। रंडी बाज़ी में० ॥ ३ ॥

यदि गर्मी होजाय, फिरो टहनी हिलाय, कहीं जाओ चलाय, देख तुम को घिनाय, कहैं उठजाओ, खूब याराना हुआ। रंडी बाज़ी में० ॥ ४ ॥

जबलों पैसा है पास, रंडो रहती है दास, नही पैसा रहा पास, देवे बाहर निकास, घरसे मुवे निकल क्या दिवाना हुवा। रंडी बाजी में० ॥ ५ ॥

जाओ फिर कर जो यार, मारे जूते हजार, दौड़ लावे पुकार, मुश्क बांधै सरकार, पुलिस आगई इज़हार लिखाना हुआ। रडी बाजी में गर्क जमाना हुआ ॥ ६ ॥

फौरन थाने मे आन किया तेरा चालान, हुक्म डिप्टी ने तान, दिया ऐसा लो जान, छह की सजा, दस जुर्माना हुआ। रंडी बाजी में० ॥॥ ७ ॥

कहता जैनी ललकार, कर इससे न प्यार, जाओ नरकों मंझार, नहीं हरगिज जिनहार, प्रीति इससे न कर, क्यों दिवाना हुआ। रंडीबाजी मे गर्क ज़माना हुआ ॥ ८ ॥

६२

(रंडी निषेध)

हया और शर्म तज रंडी सरे महफिल नचाई है, न समझो

इसमें कुछ इज्जत सरासर बेहयाई है ॥ टेक ॥

निगाहे बद से देखें बाप बेटा और भाई सब, कहो यह मा हुई भावी बहन अथवा लुगाई है। हया और० ॥ १ ॥

दिखा कर नाच और रुपया उनसे दिला कर के, अरे अन्याइयो बच्चों को क्या शिक्षा दिलाई है। हया० ॥२॥

लखें कोठे झरोखों से तुम्हारे घर की सब नारी, असर क्या नेक दिलपै पैदा होता भाई है। हया और० ॥ ३ ॥

यह खातिर देख उसकी सबके दिल में आग लगती है, है आपस में यह कहती वाह क्या उमदा कमाई है। हया और शर्म० ॥ ४ ॥

कभी बिछुवे न नथ बाली हमें स्वामी ने बनवाई, मगर इस बेवफा औरत को दी सारी कमाई है। हया० ॥५॥

हुई खातिर कभी ऐसी न जैसी इसकी होती है, बनी बेगम पड़ी दिन रात तोड़े चारपाई है। हया और शर्म० ॥६॥

६३

(वेश्या निषेध)

मत वेश्या से प्रीति लगाओ जी ॥ टेक ॥

लाखो हजारों घर ग़ारत हुए है नालिश करादी, कुरकी फैलादी नीलामों की होय मनादी। हा। मत वेश्या० ॥१॥

लाखों हजारों प्राणी भूखे मरे है धनको खोकर, निर्धन

होकर, फिरें भटकते है दरदर। हा। मत वेश्या से० ॥२॥
लाखों करोड़ों की जानें गई हैं वीरज खोकर, निर्बल होकर हों बीमार मरें सड़ सड़ कर। हा। मत० ॥ ३ ॥
हजारों गरमी से सड़ रहे है नीम की टहनी पड़ेगी लेनी, होय मुसीबत भारी सहनी, हा मत वेश्या से प्रीति०॥४॥
लाखों प्रमेह रोग भुगत रहे हैं, तेल खटाई मिरच मिठाई, खावें तो कमबख्ती आई। हा। मत वेश्या से ॥ ५ ॥
होवे जो रंडी के पुत्री तुम्हारी, करती कमाई दुनिया से भाई गिनो तो कितने भये जमाई। हा। मत वेश्या०॥६॥
कहता जैनी अब कुछ चेतो, माल बचाओ इज्जत कमाओ, भूल कभी वेश्या के न जाओ। हा। मत वेश्या से प्रीति लगाओ जी ॥ ७ ॥

६४

(एक बूढे के दिल में शादी की उमंग) गद्य

भाई बूढो! मेरी बडी उमर के दोस्तो! कुछ तुम्हें अपनी भी खबर है, न तो तुम्हारे घर है न दर है। भाई तुमको कुछ ख्याल हो या न हो लेकिन मैं अपनी क्या कहूं, जब से घर की औरत का साथ छूटा तब से मेरा तो बिलकुल ही भाग फूटा है। उसके मरने के बाद न कुछ खाना है न पीना है। न मरना है न जीना है। क्या

कहूं जब मैं अपने बेटों और पोतों की जोरुओं के बिछुओं की झंकार सुनता हूं तब हाथ मलता हूं और सिर को धुनता हूं। न दिन को चैन है और न रात को आराम है। सच पूछो तो बिला जोरु के यह जिंदगी हराम है। भाइयो! जिंदगी के दिन तो बुरी भली तरह से गुजर ही जायेंगे और मरने को वह क्या सभी हम भी एक न एक दिन मर ही जायंगे लेकिन सब से ज्यादा फिकर तो यह है कि बाद मरनेके चूड़ियां कौन तोड़ेगी, करवा कौन फोड़ेगी बिछुवे कौन उतारेगी, चूनड़ी कौन फाड़ेगी। हाय! जब इस बात का ख्याल आता है तो छाती पर को सांप सा चला जाता है। भाइयो; मत सुनो इन नौजवानोंकी, मत सुनो इन आलिम और विद्वानों की। यह तो अपने मतलब की कहते हैं, खुद मजे में रहते हैं। इनको हमलोगों की क्या खबर है। मुरदा बहिश्त में जाय या दोजख में। इनको तो अपने हलवे मांडे से काम है।

बस बस, आओ! भाइयो शादी करावें। कोई सात आठ बर्ष की नन्ही सी दुल्हन ब्याह कर लावें। लेकिन ख्याल रखना अगर कोई बड़ी दुल्हन आवेगी तो वह कमबख्त हमको ही नोंच नोंच कर खाजावेगी। इस लिये खूब सोच समझ कर काम करना चाहिये मेरी तो यह राय है कि बिला जोरु के रंडवेपन की हालत मे हरगिज न मरना

चाहिये वाह! वाह? वाह! आहा! आहा! भाई खूब मैं
तो जरूर ही शादी कराऊंगा। (बूढ़े का गाना)
बूढ़ा—मैं तो शादी करूं मैं तो शादी करूं, शादी से
खाना आबादी करूं ॥ टेक ॥
नई नवेली छैलछबीली इक जोरू ब्याह लाऊं,
बूढ़ा होकर दुल्हा कहाऊं, सरपर मौड़ धराऊं।
मैंतो शादी करूं ॥ १ ॥
रिफार्मर—मत शादी करे, मत शादी करे, भारत की
क्यों बरबादी करे ॥ टेक ॥
साठ बरस का बूढ़ा खूसट, मुंह में रहा न दांत।
गड़ गड़ हाले गर्दन तेरी, थर थर कांपे गात।
मत शादी करे मत शादी करे ॥ भारत० ॥ २॥
चेहरा तेरा है मुर्झाया, पोले पड़ गये गाल।
बातें करते हुए टपकती मुंह से टप टप राल ॥
मत शादी करे मत शादी० ॥ ३ ॥
बूढ़ा—हाथ पैर से हूं मैं चंगा, बदन गठीला मेरा।
जो इक थप्पड़ कसकर मारूं तो मुंह फिरजावे तेरा ॥
मैं तो शादी करूं० ॥ ४ ॥
रिफार्मर—बस बस रहो बढ़ो मत आगे, बड़े न बोलो
बोल। आंखों के अन्धे हो, फिर भी देखो आंखें
खोल ॥ मत शादी करो मत शादी०॥ ५ ॥

बूढा—देख मेरा आंखों का सुरमा, कैसा लगे पियारा ।
हाथों कंगन पहन लगूं मैं, जैसे राज दुलारा ॥
मैं तो शादी करूं ॥ ६ ॥
रिफार्मर—बेटे पोते अर पड़पोते, कुटुंब तेरे घर बारी ।
तुझे लगी शादी की, बिलकुल गई तेरी मत मारी ॥
मत शादी० ॥ ७ ॥
बूढा—बेटे पोते अपने घर के, मेरा तो घर खाली ।
घर की लाली जभी रहे जब हो घर में घरवाली ॥
मैं तो शादी करूं मैं तो शादी० ॥ ८ ॥
रिफार्मर—घर वाली क्या तेरी जानको रोवेगी नादान ।
आज कराता है तू शादी, कल चढ़ चले विमान ॥
मत शादी करे मत शादी० ॥ ९ ॥

शेर

बैठ कर अरथी पै तू, कल जायगा स्मशान में ।
करके जायगा दुल्हन को, रांड तू इक आन में ॥
क्या भरोसा ज़िंदगी का और फिर बूढा है तू ।
पैर तेरे गोर में, और हाथ कबरिस्तान में ॥
क्यों करे ज़ालिम किसी की ज़िंदगी बरबाद तू ।
क्या धरा अब ब्याह में और ब्याह के अरमान में ॥
गर तू जोती चाहता है आक़बत में हो भला ।
मन लगा भगवान में और धन लगा पुन्य दान में ॥

(चलत)

मत कर शादी, घर बरबादी, तुझे सलाहदी सुखकारी
सोच समझ कर देख ज़रा तू इसमें निकलेगी ख्वारी ॥
बूढा—कुछ परवा की बात नहीं जो हूं कल रथी सवार ।
करवा फोड़े चुड़ियां तोड़े नई नवीली नार ॥
मैं तो शादी० ॥ १० ॥

(शेर)

क्या भला यह कम नफा है जो हो घरमें स्त्री ।
तोड़े चुड़ियां फोड़े करवा सर की फाड़े चुनरी ॥
और घर के सब करेंगे शोक लोकालाज को ।
पर वह सच्चे दिल से मेरा शोक माने गम भरी ॥
एक तो वैसे मरना है बुरा संसार में ।
और फ़िर रंडवे का मरना बात है कितनी बुरी ॥
यह समझ कर मैंने इरादा ब्याह करने का किया ।
अब नहीं मानूंगा ज्योती इसी में है वेहतरी ॥

(चलत)

होवे शादी घर आबादी, मनकी मुरादी बर आवे ।
हट्टा कट्टा हूं मैं पट्ठा, तू क्यों रोड़ा अटकावे ॥
रिफार्मर—मैं कहता हूं तेरे भले की समझ २ नादान ।
बच्चा बने मत ब्याह करे मत, बात मेरी ले मान ॥
मत शादी० ॥ ११ ॥

वूढा—नहीं भले की बात कही तैं वुरे की सारी ।
जा घर अपने बैठ छोकरे अकल गई तेरी मारी ॥
मैं तो शादी० ॥ १२ ॥
हाय हाय बूढों के ब्याह ने किया देश का नाश ।
तीस लाख भारत की विधवा भोग रही हैं त्रास ॥
मत शादी करे मत शादी करे ॥ १३ ॥

बूढा—फिर क्या भारत की रांडों का मैं हूं जिम्मेदार ।
उन कमबख्तों के सिर आकर पड़ी कर्म्म की मार ॥
मैं तो शादी करूं० ॥ १४ ॥

रिफार्मर—नहीं कर्म की मार पड़ी है तुझ जैसों ने कीना
खुशी खुशी से शादी करके महापाप सिर लीना ॥
मत शादी करे मत शादी० ॥ १५ ॥

वूढा—बात कही तें सच्ची प्यारे आंख खुली अब मेरी ।
मैं नहीं हरगिज़ ब्याह करूंगा, सुनी नसीहत तेरी ॥
नहीं शादी करूं नहीं शादी करूं आज से लो मैं
नियम करूं, नहीं शादी करूं नही शादी करूं ॥

(बूढे के ब्याह का ड्रामा)

वुड्ढा छोटीसी छोकरीको ब्याह लिये जाय । शेम शेम ॥ टेक
गोदी खिलायगा, बेटी बनायगा । नन्हीसी बाला को ब्याह
लिये जाय, बूढा छोटीसी छोकरी० ॥ शेम शेम ॥ १ ॥

हिये का फूटा, दांतों का टूटा । बोकेसे मुंह का यह व्याह लिये जाय ॥ बूढा छोटी० ॥ शेम शेम ॥ २ ॥
डाढी मुंडाई, मूछें कटाई । चहरे पै उबटन मलाय लिये जाय । बूढा छोटी० ॥ शेम० शेम० ॥ ३ ॥
सिर को रंगाया, सुरमा लगाया । मुखपै तो पौडर लगाय लिये जाय । बूढा छोटी० ॥ शेम शेम० ॥ ४ ॥
गर्दन है हिलती, आंखें है मिलती, हाथों में कंगना बंधाय लिये जाय । बूढा छोटी० । शेम शेप० ॥ ५ ॥
मिस्सी लगाई, महंदी रचाई । सिर पै तो सेहरा बंधाय लिये जाय । बुड्ढा० ॥ शेम शेम ॥ ६ ॥
पोती सी दुल्हन, बाबा सा दुल्हा । रोती रोती छोकरी उडाय लिये जाय । बुड्ढा० ॥ शेम शेम० ॥ ७ ॥
ग्यारह की बन्नी, अस्सी का बन्ना । रुपयों की थैली झुकाय लिये जाय । बुड्ढा छोटी० ॥ शेम शेम ॥ ८ ॥
देखो यह बूढा बुद्धि का कूढा, करनेको विधवा ये व्याह लिये जाय । बुड्ढा छोटी सी० ॥ शेम शेम ॥ ६ ॥

६५

(चोरी का ड्रामा)

(चोर) चलो चोरी करे चलो चोरी करें, जाकर किसीका धन हम हरैं ॥ टेक ॥

चोरी करने वाले यारो मन माना धन पाते, मजे करें
है अपने घर में बैठे ऐश उडाते। चलो चोरी० ॥१

(विरोधी) मत चोरी करो मत चोरी करो, नाहक किसी
का धन क्यों हरो ॥ टेक ॥
इस दुनियां में धन है भाइयो, प्राणों से भी प्यारा।
जो कोई चोरी करके लावे वो होवे हत्यारा ॥ मत
चोरी करो मत० ॥ २ ॥

(चोर) चोरी करने वाला यारो कभी न हो कंगाल।
सारा कुनबा ऐश उडावे मिलै मुफ्त का माल ॥
चलो चोरी० ॥ ३ ॥

(विरोधी) चोर उचक्के डाकू का, कोई न करे इतबार।
घर बाहर नहीं इज्जत पावे, बुरा कहे संसार ॥
मत चोरी० ॥ ४ ॥

(चोर) चोर उचक्के डाकू जगमें, जवांमर्द कहलाते।
नाम हमारा सुनके भाई, सभी लोग थर्राते ॥
चलो चोरी० ॥ ५ ॥

(विरोधी) बुरा काम चोरी है भाइयो, मतलो इसका नाम।
पड़ै जेलखाने में जाकर, नाहक हों बदनाम ॥
मत चोरी करो मत चोरी करो० ॥ ६ ॥

(चोर) चोरी करने वाले यारो, जरा फिक्र नहीं करते।
चाहे कैद होजांय वहां भी, पेट मजे से भरते ॥

चलो चोरी करें चलो चोरी करें । ७ ॥

(विरोधी) क्या करता तारीफ कैद की, सुनकर दिल थरवि
चक्की पीसे बुने बोरिये, मार रान दिन खावे ॥
मत चोरी करो मत चोरी करो० ॥ ८ ॥

(चोर) जो असली है चोर, कैद में नहीं मार वो खाते ।
करके काम मजे से सारा, मुफ़्त रोटियां खाते ॥
चलो चोरी करें चलो चोरी करें ॥ ६ ॥

(विरोधी) नहीं चैन दिन रात कैद में, भरते रहै तवाई ।
महा कष्ट से प्राण छोड़कर सहै नरक दुख भाई ॥
मत चोरी करो मत चोरी करो० ॥ १० ॥

(चोर) नरकों के कुछ दुखका भाइयो, मतना करो बिचार ।
देखे भाले नहीं किसी ने, योंही कहै संसार ॥
चलो चोरी करें० ॥ ११ ॥

(विरोधी) शेर

नरकों के दुख की कुछ तुम्हें यारो खबर नहीं ।
दूसरो का धन हरो हो, फिर भी मनमें डर नहीं ॥
मारें छेदें चीर फारैं नर्क गति में नारकी ।
याद रक्खो चोर का इसके सिवा कोई घर नहीं ॥
गर तुम्हें मंजूर होवे बहतरी अपनी सदा ।
मत हरो धन और का इसका समर अच्छा नहीं ॥

(चलत) जो चोरी से नहीं डरते वो दुख नरकों का भरते,

मान कहा मूरख अज्ञानी चोरी कभी न करना ।
(चोरी) अब मेरी समझमें आई, बेशक है बहुत बुराई,
त्याग किया चोरीका मैंने आजसे मैंतो नियम करूं॥

६६

(हिन्दी भाषा की प्रशंसा)

सकल भाषाओं में रे उत्तम देवनागरी भाषा ॥ टेक ॥
देवनागरी है वो भाषा, जो लिक्खो सो पढ़लो ।
और किसी में सिफत नहीं है चाहे परीक्षा करलो ॥
सकल भाषाओं में रे देव० ॥ १ ॥
अक्षर केवल चार नागरी शब्द बना हरिद्वार ।
सात हरफ उरदू के मिल कर बनता हरी दिवार ॥
सकल भाषाओं में रे उत्तम० ॥ २ ॥
एच. ए. आर. डी. डब्ल्यू. ए. आर. (HARDWAR)
अंग्रेजी में यार, इतनी दूर में लिखा जावे फिरभी हरी
डुआर ॥ सकल भाषाओं में रे० ॥ ३ ॥
किसी ने उर्दू में खत लिखकर मंगवाये थे आलू ।
पढ़ने वाले ने क्या भेजा इक पिंजरे में उल्लू ॥
सकल भाषा० ॥ ४ ॥
शुड (SHOULD) में एल लिखा जाता है पढने में नही आवे
कौन खता के वगैर मतलब बिरथा पकड़ा जावे ॥
सकल भाषा० ॥ ५ ॥

सुन्दर नाम नागरी लिक्खो प्रियवर मोतीदत्त। अंग्रेजी में लिक्खा जावे डीयर मोटीडट्ट॥ सकल भाषाओं० ॥ ६ ॥

इंगलिश के स्पेलिंग देखकर क्यों ना हांसी आवे। बी यू टी तो बट हो किन्तु पी यू टी पुट होजावे॥ सकल भाषाओं में रे० ॥ ७ ॥

मुद्दत से यह संस्कृत भापा मुरदा हुई थी सारी।
पुनः जीवित कर गये इसको अकलंकदेव निस्तारी॥
सकल भाषाओं में रे० ॥ ८ ॥

६७

(ड्रामा बाल विवाह)

कर्ता—मेरे भाई का ब्याह मेरे भाई का ब्याह, चलकर
खुशी मनाऊंगा आज, मेरे भाई का ब्याह ॥ टेक ॥
(दोहा) मामी मौसी मिल सभी, करत सुमंगल गान
गीत नृत्य के रग में, सब घर है इक तान ॥
मेरे भाई० ॥

विरोधी—मुख तेरा खुश दीखता, अरु प्रमुदित सब गात।
भ्रात बता दे क्या हुई, आज खुशी की बात ॥
तेरे भाई का ब्याह तेरे भाई का ब्याह चलकर खुशी
मनायेगा आह ॥ २ ॥

कर्ता—हां भ्राता जी सत्य है, आनंद कारण आज।
मेरे प्यारे भ्रातका, हुआ ब्याहका साज ॥ मेरे०॥३

विरोधी—वुरी भारत की राह वुरी भारत की राह, मत
कर छोटे से भाई का व्याह वुरी भारत की राह० ॥
(दोहा) क्या कहते हो भ्रातजी, भाई अति ही वाल,
आठ वर्ष की उमर में, क्या व्याहन का काल ॥
वुरी भारत की राह० ॥ ४ ॥

कर्ता—क्यों होगा आनंद नहीं, भाई का है व्याह ।
वात खुशी की है वड़ी, सवको होगी चाह ॥
मेरे भाई का व्याह० ॥ ५ ॥

विरोधी—धूम मचाई अटपटी, खुशी मनाई भूर ।
तुम सव कुछ नहीं समझते, गलती है भरपूर ॥
वुरी भारत की राह० ॥ ६ ॥

कर्ता—मेरी भावज को अभी, लगा वारहवां वर्ष ।
जोड़ी अच्छी देखके, सवने माना हर्ष ॥
मेरे भाई० ॥ ७ ॥

विरोधी—भावज भाई से वड़ी, लगा वारहवां वर्ष ।
लानत ऐसे व्याह पर, क्यों माना है हर्ष ॥
वुरी भारत की० ॥ ८ ॥

कर्ता—लड़की भी है वो वड़ी, रक्खें कैसे लोग ।
पढ़ने से क्या होयगा, कहते हैं सव लोग ॥
मेरे भाई का व्याह० ॥ ९ ॥

विरोधी—अरे अरे अफसोस है, दुख भरा संसार।
जिस्में रोने आदि की, शिक्षा का प्रचार॥
बुरी भारत की० ॥ १० ॥
कर्ता—पढ़ने से क्या होयगा, करना क्या व्यापार।
इतना ही बस बहुत है, करना शिष्टाचार॥
मेरे भाई का० ॥ ११ ॥
विरोधी—भ्राता लड़की एक है, देवी अति ही बाल।
छोटे पन में लेगया, उसके पति को काल॥
बुरी भारत० ॥ १२ ॥
कर्ता—बड़े भाग के योगतें, आवे यह संयोग।
लाड़ लड़ाकर बहू का, धनका हो उपयोग॥
मेरे भाई० ॥ १३ ॥
विरोधी—नहीं बुद्धि विद्या कछू, नहीं जाने कुछ राह।
पढ़ता पहिली क्लास में, क्या जाने वह व्याह॥
बुरी भारत० ॥ १४ ॥
कर्ता—नाई ब्राह्मण मिल सभी, घर पर आये आज।
खुशी मनाते है सभी, सुनकर साज समाज॥
मेरे भाई० ॥ १५ ॥
विरोधी—पढ़ी लिखी भी है नहीं, जाने न कुछ भी राह।
जल्दी इतनी क्यों करी, पीछे होता व्याह।
बुरी भारत० ॥ १६ ॥

कर्ता—माता इसकी अनपढ़ी, करे कौन जब गौर ।
रोना धोना आगया, अब क्या करना और ॥
मेरे भाई० ॥ १७ ॥
विरोधी—स्वार्थ बुद्धि हैं ये पिता, माता उनकी क्रूर ।
जिससे भाई होगये, धन के नशे में चूर ॥
बुरी भारत० ॥ १८ ॥
बहुत कहूं क्या मेरे भाई, बाल विवाह अनीत ।
यह कुरीत निखार कर, फैलाओ जग कीर्ति ॥
बुरी भारत की राह० ॥ १९ ॥
कर्ता—भाई बात यह सत्य है, हम सब धरें जु ध्यान ।
तो होजावे जल्द ही, भारत का उत्थान ॥
बुरी भारत की राह० ॥ २० ॥
भगवत से हम प्रार्थना, करते हैं धरि ध्यान ।
भारत की सुख शान्त का, हो जावे उत्थान ॥
बुरी भारत की० ॥ २१ ॥

६८

(भजन उपदेशी)

फिरे अरसे से होता तू ख्वार दिला, देखा तुझसा तो मैंने बशर ही नहीं । जिसे नादां तू समझे है अपना मकां, यह तू करले यक़ी तेरा घरही नहीं ॥ टेक ॥ जैसे

गैर की लेकर कोई ज़मीं बना झोपड़ी अपनी को लेवे सजा, जब मालिक आनके करदे जुदा चलै उस दम कोई उज़र ही नही ॥ फिरे अरसे से० ॥ १ ॥ पी मोह शराब खराब हुआ, पड़ा गाफिल खोकर होश को तू, बड़ा बेडर होके बैठ रहा, यहां के तो बराबर डर ही नहीं ॥ फिरे अरसे०॥२॥ कहै मेरा मेरा सब माल व ज़र, परवार मेरा अरु बाग़ो चमन । तेरा यार नहीं परवार नहीं, तेरा माल नहीं तेरा ज़रही नहीं ॥ फिरे अरसे से० ॥ ३ ॥ करै ग़ैर की चीज़ पै दावा दिला, अरु चीज को अपनी तू भूल गया । तू ने जुल्म पै बांधी है कस के कमर, इन्साफ पै तेरी नज़र ही नहीं ॥ फिरे अरसे० ॥ ४ ॥ तू तो जाल में दुनियां के ऐसा फंसा, तुझे आगे का ख्याल ज़रा भी नही । तुझे अपने वतन का न सोच दिला, तुझे अपने तो घर का फिकर ही नहीं ॥ फिरे अरसे से० ॥ ५ ॥ चलो जोतीस्वरूप वतन को दिला, परदेश से दिल को अपने हटा । कर हिम्मत कस कर बांधो कमर, फिर हटके जो आओ इधर ही नहीं ॥ फिरे अरसे से० ॥ ६ ॥

६९

(चार मत खंडन)

भज अरहन्तं भज अरहन्तं भज अरहन्तं भय हरणं॥ टेक॥

ब्रह्मा कहावइ तप्तन तावइ चावइ इन्द्र सुपद लेवा,
मृगछाला चाम जु आला फेरइ माला कर सेवा।
तब इन्द्र पठाई देवी आई जाई पासइ नृत्य ठयो, तब इच्छा
जागी भयो सरागी त्यागी पदते भृष्ट भयो, निज आव
गमाई लोग हंसाई सो क्यों नहिं टारचो निज मरणं॥
भज अरहन्तं० ॥ १ ॥

कृष्ण मुरारी गऊ आचारी दे दे तारी हरखायो,
गूजर की लड़की सिर मटकी झटकी पटकी दधि खायो।
जोरं जोरी बांह मरोरी गागर फोरी जल ढोरी, घर घर
डोले मुख ना बोले औलें छिप माखन चोरै। भगत उधारै
राक्षस मारै सो किम हो तारन तरनं॥ भज अर० ॥२॥

पी भांग धतूरा अमली पूरा सांप गुहेरा कंठ धरै,
चढ़ि पशु असवारी साथ में नारी प्यारी प्यारी भजन
करै, गौरा संग राचै गावै नाचै सांचे मन सेवा सारै, नर
सिर माला धरै विशाला शक्ति कपाला कर धारै। भोगी
होय कहावे जोगी सो किस विध हो तारन तरनम्॥
भज अरहन्तं भज अरहन्तं० ॥ ३ ॥

मच्छी मासं करइ ग्रासं छिन छिन नासं जगत कहै,
ये वचनविलासा झूंठो भाषा भगत बिलासा किम लहियं,
करम कमावइ कियो न पावइ यों समझावै बोध मती,
साध कहावइ क्या फल पावै इह मन भावै ए करती,

मिथ्या वांनी कहै अज्ञानी ताको कौन करै वर्णन् ॥ भज अरहन्तं भज अर० ॥ ४ ॥

वहु सुरगतें आवइ उदर समावइ पावइ छत्रीकुल नीके सुर इन्दर आवैं नगर रचावैं सब गुण गावैं प्रभु जी के, होय विरागी माया त्यागी जागी अगनी ज्ञानमयी, सब कर्म्म नसावइ केवल पावई वेद बतावइ ईश थई, पट भूषण अष्टादश दूषण नाही जिसमें सो शरणं ॥ भज अ० ॥५॥

पांच भेवको देव जगत में सेव करीजे परख करी, अनन्तकाल का जगतजालमें उलझ रहा नही गरज सरी, लख चौरासी की गल फांसी कीया पासी जहां जासी, देखि विमासी तजके हांसी निज घर आसी सुख पासी, बारंबारा करो विचारा ईश्वर शुद्ध हिये धरणं ॥ भज अरहन्तं० ॥ ६ ॥

ज्ञान कमाया मोल विकाया रीस रिसाया भेष धरे, काम मरोरे माया जोरे व्याज बहौरे तोप हरे । गुरु बिन अज्ञानी चेला मानी मानी की दुरगति न्यारी, डोरी गावइ जग परचावई माल उड़ावइ छै भारी, धर्म्म न धरही उलटा लरहि डरै नही परवपु हरणं ॥ भज अर० ॥७॥

पांच भेवको देव जगत में सेव करीजे परख करी, अनन्तकाल का जगतजाल में उलझर रहा नहीं गरज सरी, लख चौरासी की गल फांसी किया पासी जहां जासी,

देखि विमासी तजके हांसी निज घर आसी सुख पासी, वारंवारा करो विचारा ईश्वर शुद्ध हिये धरणं । भज अर हन्तं भज अरहन्तं० ॥ ८ ॥

सुमति जागी भयो विरागी घर वनवास वसै, ज्ञान अभ्यासी परम उदासी सिवासी पिणनाहि नसै, आठ वीस गुण धरै मुनी सुर इम रीस रहित थिरता ठानै, चाले मन माने वसन विगाने आय आय पर पर आने, वह मुनिराज विराजत जहां जहां तहां सुभ थोक हुओ चरणं ॥ भज अरिहन्तं भज अरिहन्तं० ॥ ६ ॥

मतचार अनारज कीने खारज आचारज अकलंक मुनी, जिस डंक वजायो सभा सुनायो मैं गुनगायो ग्रंथ सुनी । तजो कुदेवा भजो सुदेवा कुगुरु सुगुरु को भेव लहो, परजग सारा को न तम्हारा क्यों पापी की पक्ष गहो, जैतराम कहैं इष्ट नाम जप काटौ कर्म्म जु आवरनं ॥ भज अरहन्तं० ॥ १० ॥

सम्मत उनीसै साल इकीसै दीसै दीले मत गाये, धर्म्मी न रीसई पापी रीसई खीसई पापी जाडयन भाये । ऐवी खासा चोर उजासा पूरै न आसा नही लोगो, मैं बलिहारी देव तिहारी भारी कर्म्म हणो मोरे । सुख संसार क्षार को लेपन चाहूं भव दधि उद्धरनं ॥ भज अरहन्तं० ॥ ११ ॥

७०

(भजन उपदेशी)

नहीं कुछ हम किसीके हैं, हमारा को न प्यारा है ।।टेक।। सुता सुत बहन परवारा, पिता माता हितू दारा । ये तन सम्बन्ध कुटुम्ब न्यारा हमारा क्या हमारा है ।। नहीं कुछ० ।। १ ।। सराये सम जगत पाता, कोई आता कोई जाता । मुसाफर से कहा नाता, कोई दमका गुजारा है ।। नहीं कुछ० ।। २ ।। विषय सुख पुन्य की माया, घोर दुख पाप से पाया । ये सुख दुख कर्म्म की छाया, अलग चेतन विचारा है ।। नहीं कुछ० ।। ३ ।। मिटा भ्रम नंद उद्योती, तेरे घटमें परम जोती । सकल जग रीत लखि थोथी, किया सबसे किनारा है । नहीं कुछ।।४।।

७१

(वीनती पार्श्वनाथ)

पारस पुकार मेरी, सुनिये करी क्या देरी ।। टेक ।। भ्रमियो मैं लक्षचौरासी, धर धरके देहनाशी । जन्मा फिर मरन ताईं, अति घोर दुख लहाई ।। पारस पुकार०।।१।। पाया में कष्ट भारी, बरनों मैं तुम अगारी । तुम हो जगत के स्वामी, बाधा हरन को नामी ।। पारस पुकार०।।२।।

अंजन से चोर तारे, श्रीपाल उदधि उबारे। जल तै उरग बचाये, धरनेन्द्र पद ते पाये ॥ पारस पुकार० ॥ ३ ॥
संकट पड़ा सिया को, अगनी से जल किया जो। मुनि मान तुंगराई, बंधन तुरत छुड़ाई ॥ पारस पुकार० ॥ ४ ॥
सीझे अनेक जीवा, सुमिरन अरहन्त देवा। तारक है नाम थारा, तो क्या गुनाह हमारा ॥ पारस पुकार० ॥ ५ ॥
भवि जन शरण तुम्ही हो, कर्मन हरन तुम्ही हो। तारन तरन तुम्ही हो, शिव सुखकरन तुम्हीं हो ॥ पारस० ॥ ६ ॥
देखे कुदेव सबते, फिरते जगत को ठगते। क्रोधी कोई लुभ्यारे, विषयी कोई शिकारे। तुमही अदोष पाये, कहां लो तुमरे गुन गाऊं महिमा कहो तुम्हारी, कीजे दया हजारी ॥ पारस पुकार० ॥ ७ ॥

७२

(भजन फूट के विषय में)

इस फूट ने बिगाड़ा हिन्दोस्तां हमारा, सब खाक में मिलाया ये बोस्तां हमारा ॥ टेक ॥
हर कौम ने चखा है, इस फल के जायके को। इस से बचा न कोई, पीरो जवां हमारा ॥ इस फूट ने० ॥ १ ॥
इतनी करी तरक्की, इस नख्त ने यहां पर। खाली रहा न कोई कोनो मकां हमारा ॥ इस फूट के० ॥ २ ॥

अब भूखों मर रहे हैं, दाना नहीं मुयस्सर । इक दिन कि देश था ये, गौहर फिसां हमारा ॥ इस फूट ने० ॥ ३ ॥
सातों विलायतों में, मशहूर होरहे थे । अब कौन जानता है नामो निशान हमारा ॥ इस फूट ने० ॥ ४ ॥
इल्मो हुनर में यक्ता, यह देश हो रहा था । चरचा था जा वजा ये, हर दो जुबां हमारा ॥ इस फूट ने० ॥ ५ ॥
अब पास क्या रहा है, हुए हैं तीन तेरह । वो लद गया खजाना, वो कारवां हमारा ॥ इस फूट ने० ॥ ६ ॥
भूलेंगे याद तेरी, हरगिज न फूट दिलसे । बरबाद कर दिया है, सब खानुमां हमारा ॥ इस फूट ने० ॥७॥
पन्ना तू बक रहा है, जाने जुनू में क्या क्या । आसान सब करेगा, वो महरबां हमारा ॥ इस फूट ने० ॥ ८ ॥

७३

(संसार की अनित्यता)

जरा तो सोच अय गाफिल, कि दमका क्या ठिकाना है।
निकल तन से गया चेतन, तो सब अपना बिगाना है ॥टेक॥
मुसाफिर तू है और दुनियां, सराय है भूल मत गाफिल।
सफर परलोक का आखिर, तुझे परदेश जाना है ॥
जरा तो सोच० ॥ १ ॥ लगाता है अबस दौलत पै, क्यों तू दिल को अब नाहक । न जावे संग कुछ हरगिज,

यहीं सब छोड़ जाना है ॥ जरा तो सोच० ॥ २ ॥
न भाई बंधु है कोई, न कोई आशना अपना ।
बखूबी ग़ौर कर देखा, तो मतलब का जमाना है ॥
जरा तो सोच० ॥ ३ ॥
रहो नित याद में प्रभुकी, अगर अपनी शफा चाहो ।
अबस दुनियां के धंधों से, हुआ क्यों तू दिवाना है ॥
जरा तो सोच० ॥ ४ ॥

७४

(भजन वैरागी)

काल अचानक ले जायगा, गाफिल होकर रहना क्यारे ॥टेक॥
छिनहू तोकूं नाहि बचावे, तो सुभटन का रखना क्यारे । काल अचानक० ॥ १ ॥ रंच सवाद करन के काजे, नरकन में दुख भरना क्यारे ॥ कुलजन पथिकन के हित काजे, जगत जालमें परना क्यारे । काल अचानक० ॥२॥ इन्द्रादि कोऊ नाहि बचावे, और लोकका शरना क्यारे । निश्चय हुआ जगत में मरना, कष्ट परे तो डरना क्यारे॥ काल अचानक० ॥ ३ ॥ अपना ध्यान करता खिरजावे, तो करमन का हरना क्यारे । अब हित कर आलस तज बुध जन, जन्म जन्म में जरना क्यारे॥ काल अचानक० ॥४॥

७५

(मारवाड़ी पञ्चायत का उपदेशक को जवाब)

फुरसत नहीं म्हनें ले हम एकरी, थे रस्ते लागो ॥ टेक ॥ थाका सिरसा ज्ञान सुणावा, अठै मोकला आवे । म्हाने नहीं फुरसत मरने की, आकर पाछे जावो जी ॥ थे रस्ते० ॥ १ ॥ म्हाने नहीं सुहावे थांकी वातां तुसज्यो रीती, किन वातांका करो सुधारा म्हे नही करां अनीती ॥ जी थे रस्ते लागो० ॥२॥ खाली बैठा थां लोगो ने निवरी वातां सूझे, जगह २ थे फिरो रवड़ता, पण नही कोई पूछे ॥ जी थे रस्ते लागो० ॥ ३ ॥ हुआ अनोखा मंडल वाला, नई चलावे चालां । म्हें नहीं त्यागी रीत वड़ांकी, चाल पुरानी चालां ॥ जी थे रस्ते लागो० ॥ ४ ॥ रुको थाखे बांच लियो है, थे पाछे लेजावो । फेर अठै आवन के ताईं मत तकलीफ उठावो ॥ जी थे रस्ते लागो० ॥ ५ ॥

७६

(भजन उपदेशी)

प्यारो ज़रा विचारो, कहता जमाना क्या है ।
गफलत की नींद त्यागो, देखो जमाना क्या है ॥ टेक ॥
विद्या की धूम छाई, चहुं ओर मेरे भाई । विद्या विना तुम्हारा, जीना जिलाना क्या है ॥ प्यारे जरा विचारो० ॥ १ ॥

काले गंवार तुमको, विद्या विना बताते । डूबी तुम्हारी इज्जत, तुमको ठिकाना क्या है ॥ प्यारो जरा० ॥ २ ॥ सन्तान किसकी तुमहो, पुरखा तुम्हारे कैसे । इतिहास कह रहा है, मेरा बताना क्या है ॥ प्यारे जरा० ॥ ३ ॥ शिक्षा अगर न दोगे, मूरख यों ही रहोगे । संतान होगी दुखिया, मेरा जताना क्या है ॥ प्यारें० ॥ ४ ॥ विद्या के जो हितेच्छू उनके बनो सहाई । नुक्तों में द्रव्य प्यारो, विरथा लगाना क्या है ॥ प्यारो जरा विचारो० ॥ ५ ॥ उठके कमर कसो अब, विद्या का चौक बांधो, भारत चमन खिले तब । सोना सुलाना क्या है ॥ प्यारे जरा विचारो० ॥ ६ ॥

७७

(भजन उपदेशी)

उठाके आंख अब देखो, ज़माना कैसा आया है । संभालो देशकी हालत, अंधेरा कैसा छाया है ॥ टेक ॥ मेरे प्यारो अब विचारो, अब दरिद्री होगया भारत । गई विद्या कला कौशल, धर्म भी सब भुलाया है ॥ उठाके आंख० ॥ १ ॥ ज़माना एक था यहां पर, मिले था अन्न भरका । तुम्हीं देखो अकालो ने, हमें आ आ सताया है ॥ उठाके० ॥ २ ॥ शरीरों से गई ताकत, परिश्रम है नहीं हममें । गई हिम्मत की सब बातें, पड़ा रहना सुहाया है ॥

उठा के० ॥ ३ ॥ कहूं कबतक विपत कहानी, मेरे प्यारे तुम्हीं देखो। जगादो जोती विद्या की भला इसमें समाया है ॥ उठाके० ॥ ४ ॥

७८

(भजन उपदेशी)

दुनिया मे देखो सैंकडों आये चले गये, सब अपनी करामात दिखाये चले गये ॥ टेक ॥

अर्जुन रहा न भीम, न रावन महाबली। इस काल बली से सभी हारे चले गये ॥ दुनिया में० ॥ १ ॥

क्या निर्धनो गुणवन्त व मूर्खो धनवन्त। सब अन्त समय हाथ पसारे चले गये ॥ दुनिया मे देखो० ॥ २ ॥

सब जन्त्र मन्त्र रह गये कोई बचा नहीं। इक वह बचे जो कर्म को मारे चले गये ॥ दुनिया में देखो० ॥ ३ ॥

सम्यक्त धार न्यामत, नहीं दिलमें समझले। पछतायगा जो प्राण तुम्हारे चले गये ॥ दुनिया में देखो० ॥ ४ ॥

७९

(विनती पं० भूधरदास कृत)

पुलकन्त नयन चकोर पक्षी हसत उर इन्दीवरो, दुर्बुद्धी चकवी विलख विछुर निवड़ मिथ्यातम हरो। आनन्द अम्बुज उमंगि उछर्यो अखिल आतम निरदले, जिन-

वदन पूरनचन्द्र निरखे सकल मनवांछित फले ॥ १ ॥
मुझ आज आतम भयो पावन आज विघ्न विनाशिया, संसार सागर नीर निवर्यो अखिल तत्व प्रकाशिया। अब भई कमला किंकरी मुझ उभय भव निर्मल ठये, दुख जरो दुर्गति वास निवर्यो आज नव मंगल भये ॥ २ ॥
मन हरण मूरति हेर प्रभु की कौन उपमा लाइये, मम सकल तन के रोम हुलसे हर्ष और न पाइये । कल्याण काल प्रत्यक्ष प्रभु लखि कौन उपमा लाइये, मम सकल तन में भये आनंद हर्ष उर न समाइये ॥ ३ ॥
भर नयन निरखै नाथ तुमको और वांछा ना रही, मम सब मनोरथ भये पूरन रंक मानो निधि लई । अब होउ भव भव भक्ति तेरी कृपा ऐसी कीजिये, कर जोड़ भूधर-दास विनवै यही वर मोहि दीजिये ॥ ४ ॥

८०

(विनती पं भागचंदजी कृत)

दोहा—सिद्धारथ प्रियकारणी, नंदन वीर जिनेश ।
शिव कर वंदूं अमित गति, कर्ता वृप उपदेश॥१॥

(पञ्चपरमेष्टी की स्तुति) गीताछंद

मनुज नाग सुरेन्द्र जाके ऊपरि छत्र त्रय धरें, कल्याण पञ्चकमोद माला पाय भव भ्रम तम हरे । दर्शन अनंत

अनंत ज्ञान अनंत सुख वीरज भरे, जयवंत ते अरहन्त शिवतिय कन्त मो उर संचरे ॥ १ ॥ जिन परम ध्यान कृशाऽनुवान सुतान तुरत जला दये, युतमान जन्म जरा-मरण मय त्रिपुर फेर नहीं भये । अविचल शिवालय धाम पायो स्वगुणतें न चलें कदा, ते सिद्ध प्रभु अविरुद्ध मेरे शुद्ध ज्ञान करो सदा ॥ २ ॥ जे पञ्च विधि आचार निर्मल, पञ्च अग्नि सुसाधते । पुनि द्वादशांग समुद्र अवगाहत सकल भ्रम बाधते, वरसूर सन्त महन्त विधिगण हरण को अति दक्ष है । ते मोक्ष लक्ष्मी देहु हमको जहां नाहि विपक्ष है ॥ ३ ॥ जो घोर भव कानन कुअटवी पाप पञ्चानन जहां, तीक्षण सकल जन दुखकारी जासको नखगण महा, तहां भ्रमत भूले जीवकों शिव मग बतावें जे सदां, तिन उपाध्याय मुनिंद्र के चरणारविन्द नमूं सदां ॥ ४ ॥ बिन संग उग्र अभंग तपतें अंगमें अति खीन है, नहिं हीन ज्ञानानंद ध्यावत धर्म्म शुक्ल प्रवीन हैं, अति तपो कमला कलित भासुर सिद्ध पद साधन करें, ते साधु जयवन्तो सदां जे जगत के पातिक हरें ॥ ५ ॥

८२

(वीनती सकल)

दोहा—सकल ज्ञेय ज्ञायक तदपि, निजानंद रसलीन ॥१॥
सो जिनेन्द्र जयवन्त नित, अरिरज रहस विहीन ॥

पद्धरी छंद—जय वीत राग विज्ञान पूर, जय मोह तिमिर को हरन सूर। जय ज्ञान अनंतानंत धार, दृग सुख वीरज मंडित अपार ॥ २ ॥ जय परम शान्त मुद्रा समेत, भविजन को निज अनुभूत हेत। भवि भागन वच जोगे वशाय, तुम धुनि सुनिके विभ्रम नशाय ॥ ३ ॥ तुम गुण चिन्तंत निज पर विवेक, प्रगटैं विघटैं आपद अनेक। तुम जग भूषण दूषण वियुक्त, सब महिमा युक्त विकल्प मुक्त ॥ ४ ॥ अविरुद्ध शुद्ध चेतन स्वरूप, परमात्मा परम पावन अनूप। शुभ अशुभ विभाव अभाव कीन, स्वाभाविक परणतिमय अछीन ॥ ५ ॥ अष्टादश दोष विमुक्त धीर, स्वचतुष्टय मय राजत गम्भीर। मुनि गनधरादि सेवत महन्त, नव केवल लब्धि रमा धरन्त ॥ ६ ॥ तुम शासन सेय अमेय जीव, शिव गये जांहि जैहैं सदीव। भवसागर में दुख छारवार, तारन को औरन आपटार ॥७॥ यह लखि निज दुख गद हरण काज, तुमही निमित्त कारण इलाज। जाने ताते मैं शरण आय, उचरों निज दुख जो चिर लहाय ॥ ८ ॥ मैं भ्रम्यो अपन पौ विसरि आप, अपनाये विधि फल पुन्य पाप। निज को पर को करता पिछान, परमें अनिष्टता इष्ट ठान ॥ ९ ॥ आकुलित भयो अज्ञान धार, ज्यों मृग मृगतृष्णा जानि वार। तन परणति में आपौ चितार, कबहूं न अनुभयो स्वपद

सार ॥ १० ॥ तुमको विन जाने जो कलेश, पाये सो तुम जानत जिनेश । पशु नारक नर सुरगति मंझार, भव धरि धरि मर्‍यो अनंत वार ॥ ११ ॥ अव काल लब्धि वलतें दयाल, तुम दर्शन पाय भयो खुशाल । मन शान्त भयो मिट सकल द्वंद, चाख्यो स्वातम रस दुख निकंद ॥ १२ ॥ तातें अव ऐसी करो नाथ, विछुरैं न कभी तुम चरण साथ । तम गुण गणको नहीं छेवदेव, जग तारन को तुम विरद एव ॥ १३ ॥ आतम के अहित विषय कषाय, इनमें मेरी परणति न जाय । मैं रहों आप में आप लीन, शिव करों होंउ ज्यों निजाधीन ॥ १४ ॥ मेरे न चाह कुछ और ईश, रत्नत्रय निधि दीजे मुनीश । मुझ कारज के कारण जु आप, शिव करो हरो मम मोह ताप ॥ १५ ॥ शशि शान्त करण तप हरन हेत, स्वयमेव तथा तुम कुशल देत । पीवत पीयूष ज्यों रोग जाय, त्यों तुम अनुभव तें भव नशाय ॥ १८ ॥ त्रिभुवन तिहुं-काल मझार कोय, नहिं तुम विन निज सुखदाय होय । मो उर निश्चै यह भयो आज, दुख जलधि उतारन तुम जिहाज ॥ १९ ॥

दोहा—तुम गुण गण मणि गणपती, गणत न पावे पार ।
दौल स्वल्प मति किम कहै, न मूं त्रियोग्य समार ॥२०

८३

(वीनती)

प्रभु पतित पावन मैं अपावन चरण आयो शरण जी,
यह विरद आप निहार स्वामी मेटो जामन मरन जी ।
तुम ना पिछाना आन मान्या देव विविध प्रकार जी,
या बुद्धि सेती निज न जाना भ्रम गिना हितकारजी ॥१॥
भव विकट वनमें कर्म बैरी ज्ञान धन मेरा हरयो,
तब इष्ट भूल्यो भ्रष्ट होय अनिष्ट गति धरतो फिरयो ।
धन घड़ी यो धन दिवस योही धन जन्म मेरो भयो,
अब भाग मेरो उदय आयो दरश प्रभुको लखि लियो ॥२॥
छवि वीतरागी नगन मुद्रा दृष्टि नासा पै धरयो,
वसु प्रातिहार्य्य अनंतगुण जुत कोटि रवि छविको हरैं ।
मिट गयो तिमिर मिथ्यात मेरो उदय रवि आतम भयो,
मो उर हरष ऐसो भयो मानो रंक चिन्तामणि लयो ॥३॥
मैं हाथ जोड़ नमाय मस्तक वीनऊं तुम चरण जी,
सर्वोत्कृष्ट त्रिलोक पति जिन सुनो तारन तरन जी ।
जाचूं नही सुखास पुनि नरराज परिजन साथ जी,
बुध जाचहूं तुम भक्ति भव भव दीजिये शिवनाथ जी ॥४॥

८४

(अर्हन्त देव से पुकार)

नाथ सुधि लीजै जी म्हारी, मोहि भव भव दुखिया जान के सुधि लीजो जी म्हारी ।। टेक ।। तीन लोक के स्वामी नामी तुम त्रिभुवन दुखहारी । गनधरादि तुम शरन लई, लखि लीनी शरन तुम्हारी ।। नाथ सुधि लीजो० ।।१।। जो विधि अरी करी हमरी गति सो तुम जानत सारी, याद किये दुख होत हिये बिच लागत कोट कटारी ।। नाथ सु० ।। २ ।। लब्धि अपर्यापत निगोद में, एकहि स्वास मंझारी । जनम मरन नव दुगुन विथा की कथा न जात उचारी ।। नाथ सुधि० ।। ३ ।। भूजल ज्वलन पवन प्रत्येक तरु, विकल त्रय दुख भारी । पञ्चेंद्री पशू नारक नर सुर विपति भरी भयकारी ।। नाथ सुधि० ।।४।। मोह महारिपु नें न सुखमई हौंन दई सुधि थारी । ते दुठ मंद होत भागन ते पाये तुम जगतारी।। नाथ सुधि० ।।५।। यदपि विराग तदपि तुम शिव मग सहज प्रगट करतारी, ज्यों रवि किरन सहज मग दर्शक, यह निमित अनिवारी ।। नाथ सुधि० ।। ६ ।। नाग छाग गज बाघ भील दुठ तारे अधम उधारी, शीश निवाय पुकारत अबके दौल अधम की बारी ।। नाथ सुधि० ।। ७ ।।

८५

(२४ भगवान स्तुति)

करो मिल वंदे वीरम् गान ॥टेक॥ आदि अजित संभव अभिनंदन, सुमति नाथ भगवान। पद्म सुपार्श्वचंदा प्रभु स्वामी, चमकत चन्द समान ॥करो मिल० ॥ १ ॥ पुषपदन्त शीतल जग नायक, तारक सकल जहान। श्री श्रेयांस प्रभु श्रेय करें नित, देंय हमें बुध ज्ञान ॥ करो मिल वंदे० ॥ २ ॥ वास पूज्य प्रभु विमल अनंतः, धर्म्म शान्त की खान। कुंथ कंथ हो शिव रमणी के, पाया शुभ निर्वाण ॥ करो मिल० ॥ ३ ॥ अरह मार्दव स्वामी मुनि सुव्रत, व्रत तप जपकी खान, नमि नेम प्रभु पार्शनाथ जी, महावीर गुणवान ॥ करो मिल० ॥ ४ ॥ ये चौबीसों वीर जिनेश्वर, इनका नित प्रति गान। सुख दायक शुभ शान्त प्रदायक, मेंटत दुख अज्ञान ॥ करो मिल वंदे वीरम गान ॥ ५ ॥

॥ इति भजन रत्नाकर समाप्त ॥

जैन संसार में सुप्रसिद्ध तेरापंथाम्नाय संरक्षक व प्रचारक बालब्रह्मचारी श्री १०८ बाबाजी दुलीचंदजी महाराज कृत अद्वितीय २ जैन ग्रंथोंका प्रकाश।

जैनागार प्रक्रिया।

इसमें श्री १००८ देवाधिदेवके प्रतिबिम्बकी प्रतिष्ठा कराने वाले सेठके लक्षण, मूर्ति बनानेकी विधि, जिनमंदिर बनवानेकी विधि, जैन गृहस्थीके आचार आदिका वर्णन बहुत विस्तारके साथ है। बढ़िया कपड़ा लगा हुआ २ गत्ते और आठ२ पृष्ट के जुज़ सिले हुए २२० पृष्टके ग्रंथ का मूल्य सिर्फ २) डा० म० ।≡)

धर्मोपदेश रत्नमाला।

इसमें २२ अभक्ष, अकृत्रिम जिनमंदिर, मृत्यु महोत्सव, निर्वाण भक्ति, ज्ञान प्रकाश, चौबीसठाणा, जैन यात्रा दर्पणका वर्णन अपने पूर्ण अनुभवसे लिखा है, पृष्ठ संख्या बड़े आकार २२० ऊपर नीचे अच्छे कपड़ेके २ गत्ते और आठ २ पृष्टके जुज़ सिले हुए महान ग्रंथका मूल्य सिर्फ २) डा० म० ।≡)